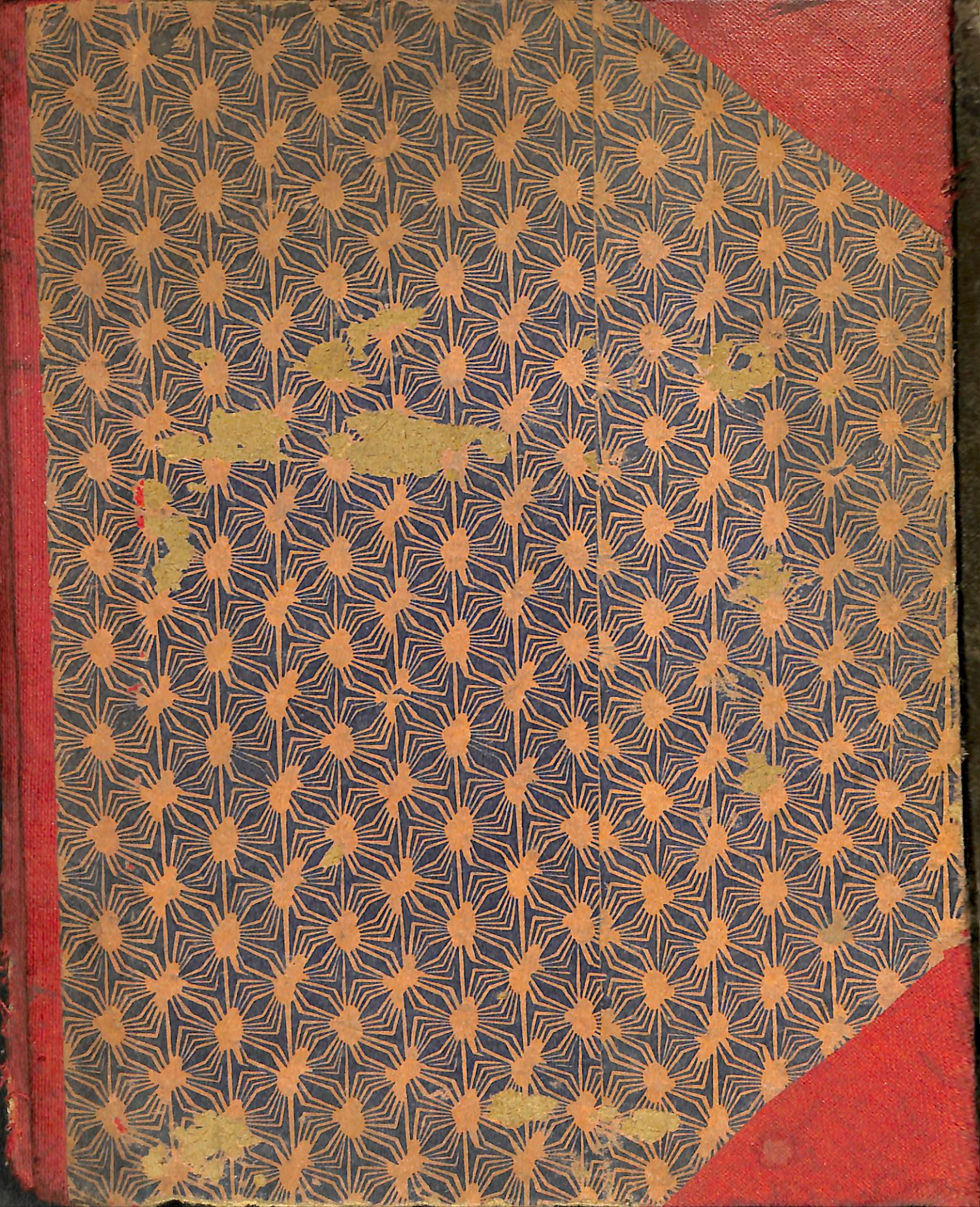

शको पातेहैं और यथार्थअर्थके लाभसे शून्य रहितहैं, वो प्रबलप्रमाणोंके तथा स्पष्टदृष्टान्तोंके और [illegible]प्रोंके निरूपणकियेविना विवादक्लेश निवृत्तहोसकें नहीं और सत्यअर्थका लाभभी होसके नहीं, अतः उनप्रबल प्रमाणादिकोंके निरूपणालिये इस भ[illegible]निर्णयभास्करग्रन्थका उदयकरणा अवश्यही चाहताथा ॥

हेपाठको—वेदोंके [illegible]भागोंमें, तथा ब्राह्मणभागोंमें उपनिषद्भागोंमें, वेदान्तउपनिषदों[illegible] सायणभाष्यआदिकोंमें, शाङ्करभाष्यमें, आश्वलायनगृह्य[illegible], पारस्कर गृह्यसूत्रप्रभृतिगृह्यसूत्रोंमें, कात्ययनश्रौतसूत्रादि श्रौतसूत्रोंमें, तथा [illegible]ष्णवोंकेआदिआचार्य्य श्रीरामानुजस्वामिकृत श्रीभाष्यमेंभी, और मनुस्मृति, वसिष्टस्मृति, व्यासस्मृति, याज्ञवल्क्यस्मृतिआदिक स्मृतिओंमें, [illegible]शरीयधर्मशास्त्रमें, तथा कूर्मपुराण, वराहपुराण, पद्मपुराण भगवद्भागवत[illegible]दिक पुराणोंमें, और महाभारत,वाल्मीकीय रामायण,अध्यात्मरामायण[illegible]न्थनमें, इत्यादिअसंख्यआर्षग्रन्थनमें अजशशहरिणप्रभृतिपशुओंके [illegible] व मांसभक्षणका विधान हजारों वाक्यनसें कराहुआहै ॥

उनसर्ववाक्यनको सनातनधर्मीपण्डितजन तो यथार्थही मानतेहैं अर्थात् प्रक्षिप्त नहींमानते, और केईक समाजीभाईभी उनवाक्यनको प्रक्षिप्त नहींमानते किंतु यथार्थहीमानतेहैं परंतु बहुतसे नवीनसमाजीभ्राता उनवाक्य-

...नुज स्वामी भगवत्शंकराचा...

... दृष्टिमें साधुमहात्मापुरुष नहींथे, तथा मनुव्यास वसिष्ट पराशर याज्ञवल्क्य आश्वलायन कात्यायन बाल्मीकी आदिक योगीन्द्रमहर्षिओंनेभी वेदानुसारी अपने२ धर्मग्रन्थनमें बलिप्रदान का और मांसभक्षणका विधान कराहै तो वो मुनियाज्ञवल्क्य वसिष्ट पराशर प्रभृतिभी क्या उनकी दृष्टिमें साधुमहात्मा धर्मात्माजन नहींथे हेमित्र यिह उक्तमनु वसिष्ट याज्ञवल्क्यआदिकोंसेलेकर श्रीशंकराचार्य श्री रामानुजस्वामीआदिक महानुभावपुरुष तो साधुमहात्मापुरुषोंसेंभी परममाननीय हुएहैं अतःउनसें विरुद्धकथन तो भ्रान्तिसें और नास्तिकतासेंहीहै, इस्सें वो माननीय नहींहोसक्ता ॥

शंका—स्मृतिइतिहासपुराणआदिकोंमें महर्षिओंने जीवहिंसाका और मांसभक्षणका निषेधभी कराहुआहै तो वो महर्षिओंके वाक्य क्या माननीय नहींहैं ॥

समाधान— मनु व्यास वसिष्ट याज्ञवल्क्यप्रभृति महर्षिओंके सर्ववाक्य माननीयहैं, महर्षिओंका कोईभीवाक्य अमाननीय नहींहोसक्ता, परंतु इसमें विचारकराचाहिये कि—

स्मृतिआदिकोंमें महर्षिओंने बहुतजगें तो देवतापितरअतिथिआदिकोंके उद्देशसें पशुहिंसाका विधानकराहै, ऐसीपशुहिंसाका स्वर्गादिकोंकी प्राप्तिरूप श्रेष्ठफल कहाहै, फिर देवता पितर अतिथिआदिकोंप्रति समर्पण करके शेषमांसके भक्षणका विधानकराहै, ऐसे मांसभक्षणसें निर्दोषताकहीहै, और विहितमांसके नहींखानेसें नरकादिकोंकी प्राप्तिरूप अनिष्टफल कहाहै ॥

और केईजगें हिंसाका मांसभक्षणका निषेधकराहै, हिंसाका मांसभक्ष

णका अतिदोष कहाहै, हिंसाके मांसभक्षणके त्यागसें उ
तो हेपाठको–उनमहर्षिओंके वाक्य उन्मत्तप्रलापवत् विरोधीहे
ऐसेनहीं, किंतु मनुव्यास वसिष्ट याज्ञवल्क्यप्रभृतिमहर्षि तो परमधर्मान
योगीन्द्रहुएहैं अतःभ्रमादिदोषोंसें रहितहुएहैं इस्सें उनमहर्षिओंके वाक्य
विरोधी नहींहैं, क्योंकि उनवाक्यनका विषय भिन्नभिन्नहै सो मैं दिखलाताहुं
देखिये ॥

महर्षिओंके जोवाक्य हिंसाका मांसभक्षणका निषेधकर्तेहैं, हिंसासें मांसभक्षणसें अतिदोष कहतेहैं, हिंसाके मांसभक्षणके त्यागसें पुण्य कहतेहैं, ऐसे२ सर्ववाक्यनका तो अविहित हिंसाका अविहितमांसके भक्षणका त्याग विषयहै ॥

और जो महर्षिओंके वाक्य देवता पितर आतिथिआदिकोंके उद्देशसें हिंसाका व देवताअतिथिआदिकोंको समर्पणकर्के मांसके भक्षणका विधानकर्तेहैं, देवताऽऽदिकोंके निमित्तसें करीहिंसाका श्रेष्ठफल कहतेहैं, देवकर्मपितृकर्मआदिकोंमें मांसके नहींखानेसें नरकादिकोंकी प्राप्तिरूप अनिष्टफल कहतेहैं, ऐसे२ सर्ववाक्यनका विहितहिंसा, विहितमांसकाभक्षण विषयहै ॥

एवं अविहितहिंसाका अविहितमांसकेभक्षणका त्याग भिन्नविषयहै, और विहितहिंसा विहितमांसकाभक्षण भिन्नविषयहै, भिन्नभिन्नविषयवाले वाक्यनका विरोध नहींहोसकता अतः वो महर्षिओंके वाक्य अविवेकीजनोंको विरोधीभास्तेहुएभी विरोधी नहींहैं इस्सें महर्षिओंके सर्ववाक्य माननीयहीहैं ॥

अथर्ववेदकी मुण्डकोपनिषद्–**सत्यमेवजयते ।** मु० ३॥ खण्ड १॥६॥ अर्थ–सत्यही जयका हेतुहै अर्थात् सत्यसेंही श्रेष्ठधर्म व ब्रह्मलोकादिकजीतेजातेहैं ॥

अथर्ववेदकी प्रश्नोपनिषद्—**समूलोवाएष परिशुष्यति योऽनृतमभिवदति ॥** प्रश्न६ ॥ १ ॥ अर्थ—भाग्यरूपमूलके सहित यिह पुरुषरूप वृक्ष सूकजाताहै जो झूठ बोलताहै अर्थात् मिथ्यावादी-पुरुष इसलोकके परलोकके सुखसें रहितहोजाताहै ऐसे सत्यके और मिथ्याके फलको जाननेवाला पुरुष हृदयमें सत्यव्रतको दृढकर्केही लेखनीको ग्रहण कर्ताहै--जोपुरुष सत्यमिथ्याके फलमें दृष्टिको न देकर कलमको उठातेहैं वहपुरुष विद्वज्जनोंमें धर्मवेता नहींकहलायसक्ते अतः मांसविषयमें जैसाअर्थ श्रुतिस्मृतिओंमें लिखाहै वैसेहीअर्थको मैं दिखलाताहुं ॥

—०—

शंकासमाधानकर अर्थकेनिरूपणमें सुन्दरता और सुखसेंबोध होताहै अतः शंकासमाधानकर ग्रन्थकी रचना कीजावेगी—वहां शंकाकाकर्ता वेदस्मृतिओंके प्रतिकूलनिश्चयवालेको पूर्वपक्षीनामसें, और समाधानकाकर्ता श्रुतिस्मृतिओंके अनुकूलनिश्चयवालेको आस्तिकनामसें लिखेंगे ॥

—०—

पूर्वपक्षी—सात्त्विकआहारके विषयमें श्रीभगवान् ऐसाकहतेहैं—**आयुः सत्त्वबलारोग्य सुखप्रीतिविवर्धनाः ॥ रस्याः-स्निग्धाःस्थिराहृद्या आहाराःसात्त्विकप्रियाः ॥** गी-अ-१७ ॥८॥ आयुः उत्साह पराक्रम नीरोगता सुख और प्रसन्नताके बढानेवाला रसीला चिकना और बहुतकालतकशरीरमें बलरखनेवाला आनन्ददायक भोजन सत्त्वगुणवाले पुरुषोंको प्यारा लगताहै, जैसे बनके कन्द मूल फल श्यामाकादि मुनियोंके अन्न एवं गेहूंजौंआदिअन्न गोदुग्ध-दधि मक्खन इक्षुरस गंगाऽऽदि पवित्रनदीयोंका जल यहसब सात्त्विक-आहारहैं इसके विरुद्ध रोगआलस्यादिदोषोंके उत्पन्नकरनेवाले आहार सब

राजस और तामस कहातेहैं जैसे लशुन प्याज मस्सरआदि, ६
बढकर भारतके धर्मधनआदि चारपुरुषार्थोंसें भ्रष्टकरनेवाले, भ
दुर्भाग्यसें भारतमें प्रविष्टहुआ २ मद्य और मांसहै इसके सेवनसें
मनुष्यतासें गिरकर राक्षस और पिशाच कहातेहैं और परमात्माको
जानकर निरंतर जन्ममरणके प्रवाहमें एवं नरकमेंही पडे रहतेहैं अत
ऐसेदुष्टभोजनको केवलइन्द्रियारामही कियाकरतेहैं और मुक्तिकी इच्छावाले
सर्वदा सात्त्विकआहारही कियाकरतेहैं ॥

—०—

आस्तिक०—हेमित्र जबसें सृष्टि व वेद उदयहुएहैं तबसें वेदादिवि-
हित मांसभक्षणका प्रचारहै, हेपाठको देखो प्रमाणांक २२० आदिकोंमें
मनुआदिकोंनें स्पष्टकहाहुआहै किंवा—पहिले सत्ययुग त्रेताआदिक
समयोंमें वेदविहित मांसकेभक्षणका प्रचार बहुतथा, इसीसें वेदवेता महर्षि
जन, तथा इक्ष्वाकु विकुक्षि अम्बरीष दिलीप भरत नल श्रीरामचन्द्र
युधिष्ठिरप्रभृतिधर्मात्माराजे, और सीतादमयन्तीआदिक सतीकुलीनस्त्रीजन
भी वेदविहितमांसको खाते खुलातेरहेहैं, फिर केईवर्षोंसें जैनीसाधुओं के
व्याख्यानोंद्वारा वैदिकमतवालोंमें बेसमझीसें जैनमतका असरहुआ तबसें
वेदविहित बलिप्रदानका तथा मांसभक्षणका प्रचार प्रतिदिन कमती होता
गया अतः पहिलेसमयोंकीदृष्टिसें इससमयमें बहुत कमहै ॥

यदि विहितमांसका भक्षण धर्मधनआदि चारपुरुषार्थोंसें भ्रष्टकरणेवाला
होतातो उसको वेदवेतामहर्षिजन और इक्ष्वाकु रामचन्द्र युधिष्ठिरप्रभृति
धर्मात्माजन कैसे खायसक्तेथे ॥

हेभ्रातः क्या उन धर्मात्मामहर्षि और महाराजोंके चारोंपुरुषार्थ नष्ट
होगएथे, यिह नास्तिकोंसें बिना कौन कहसक्ताहै, वेदविहितमांसके भक्षण
सें क्या वो महर्षि और रामचन्द्र युधिष्ठिरआदि महाराजे राक्षस और
पिशाच कहेजातेथे, क्या वो सर्वउत्तमब्राह्मण और महाराजे परमात्माको न

र नरकमेंही पड़ेहैं, बहुत क्या इत्यादिक तुमारेलेख नास्तिकतासेंबिना नहींजासक्ते--

देखो प्रमाणांक २८१ आदिकोंको आदिसमयसें वेदविहितमांसके भक्षणका प्रचारहै भारतखण्डमें किसी देशान्तरसें प्रविष्ट नहींहुआ किन्तु भारतके दुर्भाग्यसें जैनमतका असरहोनेकर बहुतही अदीर्घदृष्टिवाले स्वल्प दृष्टि पुरुष वैदिकमतसें गिरपडेहैं, जो कि वेदस्मृतिआदिकोंमें मांसभक्षणके विधानोंको देखतेहुएभी वैदिकमतको नास्तिकतासें दुराग्रहकर बदलतेहैं ॥

भगवद्गीता—**कट्वम्ललवणात्युष्ण तीक्ष्णरुक्ष विदाहिनः । आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामय प्रदाः** ॥ अ० १७ ॥ ९ ॥

अर्थ--अतिकटु अतिखट्टा, अतिलवण, अतिगर्म, अतितीक्ष्ण, अति रुक्ष, अतिविदाही, ऐसे आहार जो तत्काल पीड़ाशोक रोगोंके देनेवालेहैं सो राजसपुरुषोंको प्रियहैं अर्थात् सो राजसआहारहैं ॥

हेभ्रातः--यिह राजसआहारका गुणघट्टितलक्षण भगवत्नेकहाहै, सो यिहलक्षण मांसमें नहींहै अतः मांसको राजसआहार कहना अयुक्तहीहै क्योंकि, अजशशहरिणादिकोंका मांस अतिकटु नहीं, अतिखट्टा नहीं, तीक्ष्ण नहीं, रुक्ष नहीं, विदाही नहीं, पीड़ाशोकरोगदेनेवाला नहीं, क्योंकि, सर्व रोगोंका नाशकरणेवाला मांसका रसहै, यिह चरकसंहितामें कहाहै, तथा होर बहुतगुण मांसके चरकसंहिता निघण्टुरत्नाकरआदिकोंमें कहेहैं ॥

—०—

शंका-जब खटाई, वा अतिलवण, वा अतितीक्ष्ण मिर्चीआदिगेर कर वा अतिउष्ण खायाजावे तो मांस राजसआहार क्यों नहींहै ॥

समाधान-ऐसे तो खटाई अतिलवण अतिमिर्ची आदि अ
अतिउष्णभोजन घृतसहित मुंगकीदाल भातआदिक जोभी कुछ
पीयाजावे वोसब राजस आहार होजातेहैं अतः इतनेसे आप मांसको
आहार नहींकहसक्ते ॥

भगवद्गीता-यातयामंगतरसं पूतिपर्युषितंचयत
उच्छिष्टमपिचामेध्यं भोजनंतामसप्रियम् १७।

अर्थ – जिसको पकाय एकप्रहर व्यतीतहुआहै ऐसाअतिशीतलभोजन और जिसका रस जलगया वा निकासदिया ऐसा गतरसभोजन और दुर्गंधवाला, दिनान्तरका पकायाबासी, उच्छिष्ट और अशुद्ध अपवित्र भोजन तामसजनोंको प्रियहै अर्थात् वो तामसआहारहै ॥

शंका-तो क्या मांस अशुद्ध अपवित्र नहींहै ॥

समाधान-हेमित्र देखो प्रमाणांक १ आदिकोंको मनुस्मृति आदिक धर्मग्रन्थोंमें मांसको घृततैलकीन्याईं शुद्धपवित्रकहाहै तोफिर कौनआस्तिक पुरुष विहितमांसको अशुद्धअपवित्र कहसक्ताहै औरभी इसविषयमें अधिक शंकाहुए विशेषसमाधान इसग्रन्थमें लिखाजावेगा ऐसे भगवत्के उक्तराजस तामसआहारके लक्षण मांसमें नहींहैं अतः यादे खटाई वा अतिलवण अति मिर्ची आदि नहींगेरें व नांही अतिगर्म खावें और नाहीं उच्छिष्ट वा बासीकर्के खावें तो मांसको राजस तामस आहार कहना अयुक्तहीहै ॥

हेमित्र—सात्त्विकआहारके निरूपणमें भगवत्ने कन्द मूल फलगेहूं आदिकोंकी गणना नहीं की किंतु भगवत्ने सात्विकआहारका गुणघटित लक्षण कहाहै अतः उनगुणोंमेंसे जिसआहारमें थोड़ेगुणहों वो थोड़ा सात्त्विकहै जिसमें अधिकगुणहों वो अधिक सात्त्विकहै, जिसआहारमें भगवत्के उक्त सर्वगुणहों वो पूर्णसात्त्विक जाननाचाहिये ।

पूर्वपक्षी – ऐसे कौनपुरुष कहसक्ताहै कि भगवत्के उक्त सात्त्विक हारके गुण मांसमेंभीहै ॥

आस्तिक०—यद्यपि शास्त्रानभिज्ञपुरुष वा दुराग्रहवान्जन ऐसेनहीं कहसक्ता तथापि शास्त्रवेता सत्यवक्ता पुरुष कहसक्ता है जैसे सर्वशास्त्रवेता भीष्मपितामहजीने महाभारतमें कहाहै—

एवमेतन्महाबाहो यथावदसिभारत ॥ नमांसात्परमंकिञ्चिद् रसतोविद्यतेभुवि पर्व १३॥अ० ११६ ७॥ क्षतक्षीणाभितप्तानां ग्राम्यधर्मरतात्मनाम् ॥ अध्वनाकर्शितानांच नमांसाद्विद्यतेपरम् ॥८॥ सद्योवर्द्धयतिप्राणान् ॥ पुष्टिमग्र्यांदधातिच नभक्ष्योऽभ्यधिकःकश्चि न्मांसादास्तिपरंतप ॥९

अर्थ–हेमहाबाहो युधिष्ठिर जैसे तूं कहता है यिह ऐसेहीहै कि भूमिमें कोईवस्तु मांससे श्रेष्ठ रसवाला नहींहै ॥७॥ व्रणवालेको, क्षयरोगसेंपीडित जनोंको मैथुनमें रागवालोंको, मार्गसे कृशहुएजनोंको, मांससे अन्यवस्तु श्रेष्ठहितकर नहींहै अर्थात् इनचारोंजनोंको मांसअतिहितकरहै ॥८॥प्राणोंको अर्थात् आयुको शीघ्रबढावेहै और अत्यन्तपुष्टिको करेहै, हेपरंतप युधिष्ठिर मांससेश्रेष्ठ कोईखानेयोग्य वस्तुनहींहैं ॥९॥

महर्षिचरकका रचित चरकसंहिता—

अतोऽन्यथाहितंमांसं वृंहणंबलवर्द्धनम् । प्रीणनःसर्वभूतानां हृद्योमांसरसःपरम् अ० २७ ॥३०५ शुष्यतांव्याधियुक्तानां कृशानांक्षीणरेतसाम् ॥

no: 167
10.3.64

बलवर्णार्थिनांचैव रसंविद्याद्यथाऽमृतम् ॥३०६॥
सर्वरोगप्रशमनं यथास्वंविहितंरसम् । विद्यात्स्व
र्य्यंबलकरं वयोबुद्धीन्द्रियायुषाम् ॥३०७॥

अर्थ-वहांपूर्वश्लोकमें जोकहाहै कि रोगसे मरेहुए बकरेआदिकोंका मांस, बाल वा वृद्ध अजआदिकोंका मांस, विषसे वा सर्पाऽऽदिकोंसे मरे हुएका मांस, इनमांसोंको न खावे (अतोऽन्यथा) उन मांसों से अन्यप्रकारका अर्थात् युवा नीरोग मारेहुए अजआदिकोंका जो मांसहै वो हितकारीहै, वीर्यका वर्द्धकहै,बलका वर्द्धकहै, अबमांसके रसके गुणकहतेहैं मांसका रस सर्व जीवोंको तृप्तकरेहै, हृद्यहै अतिरुचिरहै ॥३०५॥ क्षयरोगवालोंको और रोगी जनोंको; कृशजनोंको, सुष्टुरूपकी कामनावालोंको, मांसका रस अमृतके तुल्य जानना ॥३०६॥ जिसरोगमें जैसा बनाना चाहिये वैसा यथायोग्य बनाया हुआ मांसका रस सर्वरोगोंका नाशकरेहै, स्वरको आवाज को सुंदर करेहै, अवस्थाको इन्द्रियोंको आयुको बलकरणे वाला मांसका रसहै अर्थात् मांसके रससे आयु बुद्धिआदिक बलवान्होतेहैं ॥३०७॥

यद्यपि—भीष्मजीके और चरकसंहिताके वाक्य प्रबलप्रमाणहैं अतः इनसेभिन्न होर चिकित्साशास्त्रके अधिकप्रमाण लिखनेकी आवश्यकता नहींहै तथापि प्रसंगानुसार इसग्रंथमें होरभी चिकित्साग्रंथनके प्रमाण प्रमाणांक १३६ आदिकों में दिखलाय जावेंगे ॥

देखिये--गीतामें भगवत्ने सात्त्विकआहारके जो गुणकहेहैं भीष्म पितामहजीने और आर्षग्रंथचरकसंहिताऽऽदिकोंमें सोगुण मांसके वा मांस रसके कहे हैं और अत्यन्त पुष्टि व स्वरको सुंदर करना, शरीरके रंगका सुन्दर करना, आयुःइन्द्रियबुद्धिआदिकोंको बलदेना इत्यादिक अधिकगुण मांसके रसमें कहेहैं ॥

हेभ्रातः—भगवत्ने सात्विकआहारके जो गुण कहेहैं वोगुण मांसमें व मांसके रसमें उक्तप्रमाणोंसें सिद्धहीहैं—

श्रुतिस्मृतिआदिकोंनेभी हजारोंवाक्यनसें विहितमांसके भक्षणका विधान-कराहुआहै, तथा विहितमांसकेभक्षणमें हजारों श्रेष्ठपुरुषोंके आचार रूप दृष्टान्तभीहैं और इस्में बहुतप्रबलयुक्तिआंभीहैं तो फिर श्रुतिस्मृतिआदिक धर्मपुस्तकोंमें जैसाअर्थ लिखाहै वैसेही सत्यअर्थको प्रकटकरना साधुमहा-त्माजनोंका उचितधर्महै—

और श्रुतिस्मृतिआदिप्रमाणोंसें तथा दृष्टान्तोंसें और प्रबलयुक्तिओंसें सिद्धअर्थको छिपाना वा बुद्धिपूर्वक उससिद्धअर्थका बदलना नास्तिकताहै क्योंकि, जिनको विश्वासहै कि, 'युक्तयोगीईश्वर व युंजानयोगीमहर्षिओंसें वेद व स्मृतिसूत्रग्रन्थ प्रकटहुएहैं, ऐसेविश्वासवाले आस्तिकपुरुष श्रुतिस्मृति सूत्रोंके अर्थको छिपा व बदल नहींसक्के,

अतः विद्वज्जनोंसें प्रार्थना कर्ताहुं कि-यदि कोईविद्वान् किसीविषयमें लेखलिखाचाहे तो उनकेलिये योग्यहै कि-सत्य व मिथ्याके फलका बोधक जो उपनिषद्वाक्य दिखाचुकाहुं उनवाक्यनके अर्थको स्मरणकर्केही कलमको ग्रहणकरें, क्योंकि सर्वधर्मों का मूल सत्यहै, ऐसेसत्यका त्याग-करने वाला पुरुष धर्मनिष्ठजनोंमें सम्मानको नहींपायसक्ता, व नांहीं वो धर्मवेता कहलायसक्ताहै ॥

जो साधनोंसें विना योगारूढहै उसको युक्तयोगी कहतेहैं, ऐसा एक ईश्वरहीहै। और जो साधनोंके अनुष्ठानकर योगावस्थाको प्राप्तहुएहैं वो युञ्जानयोगी कहजातेहैं जैसे कि-वसिष्ट पराशर याज्ञवल्क्य अगस्त्य भरद्वाजआदि हुएहैं इति ॥

———

अनुबन्धचतुष्टय

जोजानेहुए ग्रन्थके पठनादिकोंमें प्रवृत्तकरें वह अनुबन्ध कहेजातेहै ऐसे 'विषयानुबन्ध' प्रयोजनानुबन्ध, अधिकारीअनुबन्ध, संबन्धानुबन्ध, यिहचार अनुबन्धहोतेहैं वो, ग्रन्थकेआदिमें दिखलानेयोग्यहैं अतः दिखलाताहूं ॥

१—श्रुतिस्मृतिआदिकोंके विधिवाक्यनसें विहितअजशशहरिणादिकों का बलिप्रदान, व विहितमांसकाभक्षण, इसग्रन्थका विषयहै ॥

२—उसविषयद्वारा अधिक बुद्धिबल पुष्टिआदिकोंका लाभ और उनविधिओंकेपालनसें पुण्योत्पत्तिद्वारा सद्गति प्रयोजनहै ॥

३—आस्तिकगृहस्थजन अधिकारीहैं ॥

४ - विषय और ग्रन्थका प्रतिपाद्यप्रतिपादकभाव सम्बन्धहै, अधिकारी और विषयका कर्तृकर्त्तव्यभाव सम्बन्धहै, फल और अधिकारी का प्राप्य प्रापकभाव सम्बन्धहै, इत्यादिक सम्बन्ध यथायोग्य जानलेने ॥

—०—

शंका—क्या जीवहिंसासेंभी पुण्यउदय व सद्गति होसकेहै—

समाधान—हां विहितहिंसासें अवश्यंहोवेहीहै, हेभ्रातृजनों प्रबलप्रमाणोंसें तथा प्रामाणिकदृष्टान्तोंसें, और युक्तिओंसेंभी यिहअर्थ सिद्धहीहै तथाहि दिखलाताहुं, ॥

१—देखो प्रमाणांक ५६ में श्रीरामानुजस्वामीभी वेदमंत्रसें विहित हिंसाका सद्गतिरूप श्रेष्ठफलही लिखतेहैं, हेपाठको एकतो वेदमंत्र सें लिखना, दूसरा वैष्णवोंके आदिआचार्य्य श्रीरामानुजस्वामी लिखने वालेहैं ऐसे प्रबलप्रमाणको देखकरभी यदि तुम्हारी शंका दूर नहीं होती तो और देखो प्रमाणांक ५७, व ६५, व ६९, व ७१, व ७४, व ७५, व १९२,

व २४२, व २४४, आदिकोंसें विहितपशुहिंसाकर धर्म और दोनोंकी सद्गति सिद्धहीहै—

इसीसें प्रमाणांक ४८ आदिबहुतप्रमाणोंमें विहितहिंसा, अहिंसारूपही मानीहै, जैसे मनुस्मृति-**यज्ञार्थंपशवःसृष्टाः, स्वयमेवस्वयंभुवा। यज्ञोऽस्यभूत्यैसर्वस्य, तस्माद्यज्ञेवधोऽवधः** ॥ अ० ५ ॥ ३९ ॥

इसश्लोककी टीकाओंभी प्रमाणांक ६१ आदिकोंमें दिखादीहैं—

अर्थ—यज्ञकी सिद्धिलिये आपब्रह्माजीने पशु रचेहैं, वो यज्ञ सबजगत् की वृद्धिका और ब्राह्मणक्षत्रियादिकोंके ऐश्वर्यकाकारणहै, इस्सें यज्ञमें जो वधहै वो अवधहीहै, अहिंसाहीहै क्योंकि, वो दोषकाकारण नहींहै ॥

हेपाठको—जैसे वृत्तिज्ञानके नाशसें होनेंवाले स्मृतिज्ञानके कारण जो संस्कारहैं वह अतीन्द्रियपदार्थहैं, वैसेही शुभाशुभ कर्मोंकर चित्तमें होने वाले सुखदुःखके और सुखदुःखके साधनोंके कारण जो 'पुण्यपापहैं' धर्माधर्महैं वहभी अतीन्द्रियपदार्थहैं, ऐसेअतीन्द्रियपदार्थोंका प्रत्यक्ष योगारूढ पुरुषोंकोही योगकर होसक्ताहै, अयोगीजनोंको नहीं ॥

इसीसें पुण्यपापमें नानामतवालेमनुष्योंके विवाद होतेहैं, जैसे शौचस्नानआदिकोंसें वैदिकमतवाले पुण्य और जैनमतवाले पाप मानतेहैं इसीसें जैनीसाधु ढूंढिएआदि वर्ष२ दो२ वर्ष स्नानादि नहींकरते ॥

अयोगीजनोंको पुण्यपापका प्रत्यक्ष नहींहोसक्ता किंतु योगावस्थामें देखकर योगारूढमहर्षिओंने जो स्मृतिआदिशास्त्र रचेहैं, उनशास्त्रोंसेंही अयोगीजनोंको पुण्यपापका निश्चय होसक्ताहै ॥

जैसे अविहितहिंसाका, निषिद्धहिंसाका पापफल श्रुतिस्मृतिआदिकोंसें सिद्धहैं, वैसेही विहितहिंसाका दोनोंको सद्गतिरूप श्रेष्ठफल श्रुतिस्मृति-आदिकोंसें सिद्धहै, अतः वह आस्तिकजनोंसें अमाननीय नहींहोसक्ता ॥

विदितहो कि-इसग्रन्थमें जो पशुबलिदान व मांसविषयके प्रमाण स्थूलअक्षरोंसें दिखलाएहैं उनमें हरएक प्रमाणके साथहीप्रथम प्रमाणांक लिखदियाहै, क्यों कि---जिस्सें वहप्रमाण फिर जहां २ दिखलाना आवश्यकहो वहां२ बहुतजगें न लिखना पड़े, किंतु प्रमाणांक दिखलानेंसें प्रमाण देखा जाए ॥

२-देखो दृष्टान्त-महाराजादशरथके यज्ञमें रामजीकी माताकौसल्यानें आप तीन कृपाणोंसें अश्वका बलिदानकिया, महाराजारन्तिदेव नित्य मांससहितअन्नका दान करते रहे श्रीरामजीने चित्रकूटमें कृष्णमृगके मांससें देवतोंको बलिदानकर्केही कुटीकी प्रतिष्ठाकी, महाराजायुधिष्ठिरने भी इन्द्रप्रस्थ, देहलीमें मांसआदि भोजन खुलाकर ही सभास्थानमें प्रवेश किया, पापोंकी निवृत्तिलिये युधिष्ठिरके श्रीगंगाजीके तटपर यज्ञमेंभी ३०१ अजआदिपशुओंका बलिप्रदान किया गया, ॥

पांचोपांडव बनमें हजारोंमृगोंको मारकर मांसोंको खुलाते खातेरहे;

देखो प्रमाणांक २८१ को पुरातनऋषिओंके यज्ञनमेंभी मांसके पुरोडाश होतेरहे, तो इत्यादिक वो सबमहाशय सद्गतिओंकोही प्राप्तहुएहैं ॥

३-यद्यपि प्रबलप्रमाणोंके तथा दृष्टान्तोंके होते आस्तिकपुरुषोंको युक्तिकी अपेक्षा नहीं, तथापि अब युक्तिओंसेंभी विचारिये,—

रामलक्ष्मणादिअवतार, व परमधर्मनिष्ठ अगस्त्यादिमहर्षि, व और वेदवेता पुरुष उनहीकर्मोंमें विशेषतासें प्रवृत्तहोसक्तेहैं जो सद्गतिके देनेवालेहों, वोपरमपूज्यपुरुष उसमें प्रवृत्तहुए हैं अतः जानाजाताहै कि-विहितपशुबलि प्रदान सद्गतिकाही कारणहै ॥

आयुर्वेदविहित औषधोंके दानसें व सेवनसें, व्रणकृमि रुधिरकृमि मलकृमि दद्रुआदिरोगकृमि कूपकृमि इत्यादिअसंख्यजीवोंकी हिंसाद्वाराही पुण्य उदय होताहै ॥

हेभ्रातृजनों-यद्यपि इससमयमें प्रायः किसीको किसीकीभी सद्गति व दुर्गतिका प्रत्यक्ष नहींहै तथापि, देखो प्रमाणांक ३० को जबसें जैनमत का असर होनेकर वैदिकमतवालोंमें पशुबलिप्रदानका प्रचार दूरहुआहै, तब सें प्रतिदिन अधोऽधःपतनरूपही फल प्रत्यक्षदेखनेमेंआयाहै, इत्यादिक युक्तिओंसें व प्रबलप्रमाणोंसें तथा सद्दृष्टान्तोंसें विधिविहितहिंसा सद्गति का ही कारण सिद्धहै ॥

—०—

अब विद्वज्जनोंसें प्रश्नपूर्वक प्रार्थनाकी जातीहै सुनिए-

प्रश्न-श्रौतसूत्र गृह्यसूत्र स्मृतिआदिग्रन्थोंके कर्ता जो पुरातन महर्षिहैं वहभी क्या नवीनपण्डितोंजैसेही हुएहैं अथवा वह योगजन्य अतीन्द्रिय पदार्थोंके प्रत्यक्ष ज्ञानवाले योगारूढ़ हुएहैं ॥

इनमें प्रथमपक्ष कहो तो बस धर्माधर्म व योगशास्त्र व योगके साधन ध्यानादिकभी व्यर्थही सिद्धहोंगे उस्सें नास्तिकमतकोही पुष्पाञ्जलि देनी होगी क्योंकि पुरातन महर्षिओंकोभी ध्यानादिकोंकी परिपक्वतारूप योग व परमात्मा जीवात्मा प्रकृति धर्माधर्म, आदि अतीन्द्रियपदार्थोंका प्रत्यक्ष नहीं हुआ तो नवीनपण्डितोंके योगारूढ़ता, व अतीन्द्रियपदार्थोंका प्रत्यक्ष तो हैही

नहीं, इस्सें उक्तअतीन्द्रियपदार्थोंकी सिद्धि नहीं होनेसें नास्तिकमत सिद्ध होगा ॥

यदि द्वितीयपक्ष कहो तो—उन परमपूज्यपुरुषोंके योगजमहत्त्वको विस्मृतकर्के लोकवासनासें, वा अधीरतासें, वा अन्याकिसीनिमित्तसें उन दीर्घदृष्टि योगारूढ महर्षिओंके विधिवाक्यनसें बाहिर क्यों होतेहो, उन परमपूज्यपुरुषोंके वाक्यनको क्यों छिपातेहो, ।

क्या उनको तुम अपनेजैसे महात्मा नहीं समझते हो, वा उनको क्या तुम्हारेजैसा धर्मज्ञान नहींथा, वा उनके आचारको क्या तुम शिष्टाचार नहीं समझतेहो ।

हेभ्रातृजनों—तुम्हारे ख्याल किदर लगेहुएहैं, चित्तको सावधानकर्के विचारिये कि–वो योगारूढमहर्षि योगजपरमधर्मनिष्ठ प्रसिद्धहीहैं तो उनके आचरणकों कौनआस्तिकपुरुष सदाचार नहीं कहसक्ता, ।

हेपाठको–ऋतम्भराप्रज्ञ होनेसें वो महर्षिही महात्मापदका वाच्यहैं, औरमेरेजैसे तो मानात्माहैं ॥

अथवा इससमयमें अपने२ ख्यालसेंही धर्माधर्म मानाजाताहै, पुरातन योगारूढ महर्षिओंके तो कहां श्रीस्वामिदयानन्दसरस्वतीजीकेभी वाक्यनका सम्मान नहींकराजाता, हे प्रियभ्रातृजनो–देखो संस्कारविधिग्रन्थमें स्वामीजी मांसभक्षणविषयका परमप्रमाण बृहदारण्यकउपनिषत्का मंत्र, तथा आश्वलायन गृह्यसूत्र लिख गएहैं, फिर उसका अर्थभी मांसभक्षणही लिखगएहैं, तो आप स्वामिजीके लेखका अनादर क्यों करतेहो, व अपनी जिदोजिदीकर क्यों क्षति पहुंचातेहो देखो प्रमाणांक ३२९में श्रीबालगंगाधरतिलकजीके भाषणको,तिलकमहाराजकेभी भाषणसें सिद्धहै कि जैनउपदेशकोंके कथनसें ही वेदविहित पशुयज्ञ व मांसभक्षण छोडा गयाहै, तो उनसबमहानुभावोंके

वाक्यनका मान न रखकर आप प्रक्षिप्त२ क्यों कहतेहो,

समाजी महात्मा स्वामीदर्शनानन्दजीनें 'स्थावरजीवविचार' कताबके सफ़ा १३ पर लिखाहै कि–सत्यार्थप्रकाशके आठवेंसमुल्लासमेंभी किसीमहात्माने इस मज़मूनको मिलायाहै स्वामीदर्शनानन्दजीके इत्यादिलेखसेंभी जाना जाताहै कि–समाजीभाईओं ने सत्यार्थप्रकाश का पाठ कहीं अधिक कहीं न्यून करडालाहै ॥

प्रार्थनासें कहताहुं कि–ऋतुम्भराप्रज्ञ दीर्घदृष्टि महर्षिओंके बराबर अयोगिजनोंकी बुद्धि नहींहोसक्ती अतः जिदोजिदीको छोडकर ऋतुम्भराप्रज्ञ महर्षिओंके विधिवाक्यनके अनुकूलही वर्ताव परमहितकर होगा ॥

पदोंके	अर्थ
अज–छाग	बकरा
शश	खरगोश
प्रभृति	आदि
मत्स्य	मछी
आर्ष	वेद व ऋषिओंका
ध्येय	जिसका ध्यान करें वो
ऋतम्भराप्रज्ञ	संप्रज्ञात योगावस्थामें जो ध्येयका संशयविपर्ययसें रहित यथार्थ प्रत्यक्षज्ञान हुआकरताहै उससत्यार्थको विषयकरने वाले प्रत्यक्षज्ञानकी ऋतम्भरा संज्ञाहै, वो ऋतम्भरा 'प्रज्ञा' ज्ञान जिनमहानुभावोंके उदयहुआहै वो ऋतम्भराप्रज्ञ, इसनामसें कहजातेहैं

* भूमिकाऽऽदिका *

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
१	१०	कात्य	काल्या
५	१	णका	क्षणका
५	२	वाक्य	वाक्य क्या
१२	१५	स्मण	स्मरण
१३	२०	दख	देख
१८	३	लहास	ह्रास

१	१	श्रागण	श्रीगण
२	१२	निर्पक्ष	निष्पक्ष
,,	१५	निर्पक्ष	निष्पक्ष
३	१	पदाथ	पदार्थों
४	५	ध्यय	ध्येय
६	१३	शन	शन
७	१९	स्नेद्रा	स्नेहा
९	२	योबल	योगबल
११	१०	वावस	वापस
१२	३	विवृत्त	निवृत्त
१५	१	दि	यदि
१६	१६	मूल	भूल
१९	२	वदन्ति	वदन्ति
२६	६	मूत्र	सूत्र
३४	२०	गृह्म	गृह्य
३५	२३	नहाथा	नहींथा
३८	३	ग्रन्थों	ग्रन्थ
४१	१७	गृह्य	गृह्य
४४	१९	पितृ	पितृं
४६	८	के	को
४७	५	ब्राह्माणो	ब्राह्मणों
४९	२	देवादी	देवादि
४९	१६	वदमते	वेदमत
४९	२०	बाधेक	बोधक
५०	२१	तोनंमत्र	तीन मंत्र
५२	२१	बाधेक	बोधक
५३	५	हाकेर	होकर
६३	७	अलप	अल्प
६३	१८	जन्य	जन्या
६५	८	कारण	कारिण
६६	१	दवे	देव
६७	७	यज्ञस्य	यज्ञोऽस्य
६९	२१	ञ्र	श्र
७६	१३	पशवच्छी	पशवश्छा
७४	१२	यग्नि	अग्नो
७९	४	ब्रह्मणो	ब्राह्मणो
७९	१५	तोवे	ताव
८०	१	श्राद्ध	श्राद्धे
८०	२	सुत्सृ	मुत्सृ
८०	१९	स	इस
८२	४	परन्तु	परन्तु
८४	१६	द्विज	द्विजः
८४	२४	+ हिंसा को करे और	
८५	२	युक्त	नियुक्त
८६	२१	पयुस्करः	पयुपस्करः
८८	५	मूढा	मूढाः
८९	१४	बिश्चद्	किञ्चिद्
९१	१३	चकर	चरक
९४	१२	रूप	रूप
९७	९	दस्त्यो	दगस्त्यो
१०१	१३	श्रितः	श्रुतः
१०४	९	उनमें ले ऐक	उनमें से एक
१०४	२०	महमत	सहमत
११२	४	थका	थंका
११४	२०	तात्पय्यहै	तात्पर्य्यहै

१२१	२०	साख्य	सांख्य
१२३	५	साख्य	सांख्य
१२४	४	शाम्त्र	शास्त्र
१२६	१३	रूष	रूप
१३३	१	दशर्न	दर्शन
१३३	६	विशं	विंशं
१३३	६	वा	वो
१३३	९	अषराध	अपराध
१३४	८	षक्षी	पक्षी
१३४	८	जोषक्षी	जोपक्षी
१३५	१	हकिर्म	ही कर्म
१३६	१०	होना	होना का
१३६	२२	प्रशण	पुराण
१४०	१०	कतह	कर्त्ते हैं
१४२	१४	छिपा	छिपा
१४२	१९	भाव	भागव
१४३	१८	पत्र	पुत्र
१४५	१३	लोभ	लोम
१५०	२०	ब्राह्मण	ब्राह्मण
१५१	१	ब्राह्मण	ब्राह्मण
१५१	७	नरः	नराः
१५१	१३	ती	तीः
१५३	१५	रजों	राजों
१५४	१६	कारस०	कार सें
१६०	२१	निवार	नीवार
१६२	५	थोड़ेस	थोड़ेसे
१६३	११	शांकुने	शाकुने
१६७	२	ज्ञुए	हुए
१६८	१७	दयान्द	दयानन्द
१७१	६	रज्ञा	राज्ञा
१७३	२	मृर्षि	मृषि
१७४	६	दस्या	दस्यो
१७४	१३	भालभेत	मालभेत
१७५	६	ब्रवी	ब्रुवी
१७५	८	मन्त	न्त
१७६	१२	हाये	होय
१७७	५	जाके	जोक
१७८	२	ब्रवी	ब्रुवी
१७८	७	सके	सकें
१७९	९	मबु	मनु
१७९	१७	मत्रों	मंत्रों
१८०	६	एव	एष
१८१०	५	याग्ये	योग्य
१८२	३	कुर्वन्वि	कुर्वन्त्वि
१७८	११	यच्छो	यच्छो
१८४	२	ही हो	ही है
१९२	१०	कुकल्लू	कुल्लूक
१९४	१६	समाचीन	समीचीन
१९४	१८	मिष	मिष
१९७	१	अभक्ष	नभक्ष
१९७	२	प०३	प०१२
१९८	१	भष्यं	भक्ष्यं
१९९	३	विनामि	विनाभि
२०१	२०	मांसमें	मासमें
२०२	२०	व्यंनज	व्यंजन
२०७	१४	दोप	दोष
२०७	१५	त्राक्य	वाक्य
२०८	४	पालं	पलं
२१०	५	का	कां
२१२	१५	नूखलुदर्शितंच-नमि धातुमेव	
२१३	१६	भाष्म	भीष्म
२१७	२	हिसां	हिन्सा
२१८	६	रेभे	रेमे
२१९	६	वामाय	वासाय
२१९	१३	हित्व	हित्वा
२२०	३	मांके	मांसके
२२२	१	भता	भर्त्ता
२२६	५	आरे	और
२२७	४	ग्रहा	ग्रहो
२३१	७	नजा	प्रजा

२३४	४	यणक	यणके
२३४	१६	क्ष्या	क्षया
२३६	१	पत्रसें	पात्रसें
२३८	१६	कमृग	केमृग
२३९	६	मुक्त	भुक्त
२४१	३	ततस्तौ	ततस्ते
२४१	८	मांसनं	मासनं
२५०	१५	पट	पेट
२५१	५	पक्षा	पक्षी
२५२	१६	नचिा	नीचा
२५३	७	कर्मोंको	कर्मोंको
२५४	६	कंहीं	कहीं
२५४	२२	मेंसें	सें
२६०	६	स्मृ	स्मृति
२६२	३	ऽथार्धर्मः	ऽर्थोधर्मः
२६२	११	निदार्षे	निर्दोष
२६४	७	ग्रा	ग्रो
२७४	६	कल्ल	कल्प
२७७	२	श्रति	श्रुति
२७७	२०	हे	हैं
२८०	१	जीवनन	जीवन
२८०	२१	एंव	एवं
२८१	१२	जवि	जीव
२८२	११	होथी	हाथी
२८६	८	आवं	आंब
२८६	२०	रागेके	रोगके
२८९	२१	सकल	सफल
२८६	२१	इत	इस
२९६	१४	जा	जो
२९९	७	सदि।	सर्वदा
३०१	७	वदेवतो	वेदवेता
३०२	६	ज्वला	ज्वाला
३०६	११	व्यते	श्रूयते
३०६	१६	पशु	पशु
३०७	२१	रहेह	रहेहैं
३०८	१	मिथाला	मिथिला
३०८	२	मांम	मांस
३०८	१७	कथता	कथना
३०८	२०	श्रति	श्रुति
३१०	५	नश	नाश
३११	१४	कसाथ	केसाथ
३१२	२२	रुधिर	रुधिर
३१३	१	विशेप	विशेष
३१३	१४	मांसक	मांसके
३१६	१६	महारजे	महाराजे
३१५	७	बेंहैं	बनेहैं
३१६	२	रवहशी	क्रूर वहशी
३१६	३	तक्त	ताक्त
३१७	५	हिन्द	हिन्दू
३१९	३	कर्तिक	कार्तिक
३२०	२०	पौत्रोंसे	पौत्रोंसे
३२३	६	निर्णसें	निर्णयसे
३२८	२०	तोने	ताने
३२८	२१	दशोंमें	देशोंमें
३२९	५	पादेश	पैदायश
—	१८	मुश्कहै	मुश्कलहै
३३०	१२	०००	१०००
३३१	३-८	पादेश	पैदाइश
३३१	२	पोपण	पोषण
३३१	६	जैने	जैन
३३१	१७	प्रत्पुत	प्रत्युत
३३५	१४	केदव	कदेव
३३८	६-९	तया	तथा
३३९	१	ग्रन्य	ग्रन्थ

ॐ

भक्ष्य निर्णय भास्कर

श्रीगणनाथायनमोनमः श्रीसरस्वत्यैनमोनमः ।
ध्याकरबन्दोताईशानं सबतेअधिकजोशक्तिमानं ।
हमरिधियोंकाप्रेरकजोई, सर्वकर्मफलदातासोई ॥

अथनिर्विघ्नग्रन्थकी समाप्तिलिये शिष्टाचारसें प्राप्त मंगलाचरणको प्रथम दो श्लोकोंसें कर्तेहैं ॥

ध्यात्वावन्देतमीशानं यःसर्वाधिकशक्तिमान् ।
धियोनः प्रेरयेद्यस्तु सर्वकर्मफलप्रदः ॥१॥
अत्रिकश्यपभृग्वाद्या येषांलोकेष्विमाःप्रजाः ॥
धर्मप्रवर्तकान्वन्दे सर्वांस्तानपिसादरम् ॥२॥

टीका—उस परमेश्वर को ध्यानकर्के मैं वन्दना कर्ताहुं जो सर्वतें अधिकशक्तिमानहै व जो हमारीबुद्धिओंको प्रेरे है क्योंकि सर्वजीवोंको सर्वकर्मोंके फलोंका देनेवालाहै अर्थात् सर्वकर्मोंके फलभोगवानेकेलिये सर्व जीवोंकी बुद्धिओंका प्रेरक है ॥ १ ॥ भूआदि लोकोंमें जिनोंकी यिह प्रत्यक्ष सन्तानाहैं ऐसेजो अत्रिकश्यप भृगु वसिष्टादि महर्षिजन धर्मोंके प्रवर्तकहैं उनसर्वयोगीन्द्र महर्षिओंकोभी मैं आदरसें वन्दना कर्ताहुं ॥२॥

ग्रन्थरचनाके हेतुको बोधनकर्तेहुए ग्रन्थके रचनकी अब प्रतिज्ञाकर्तेहैं ॥

विवदन्तेहिभक्ष्येषु तमसारुद्धबुद्धयः ॥ उदयामि ततश्चण्डम् भक्ष्यनिर्णयभास्करम् ॥ ३ ॥

टीका—तमकीन्याई तमोगुणसे वेष्टितबुद्धिवालेपुरुष अजशशहरिणाऽऽदिकोंके भक्ष्यमांसोंमें विवादकर्तेहैं, विवादसें अतिक्लेश पाते हैं उसहेतुसें चण्डसूर्यवत् तमकोदूरकरणेवाले भक्ष्यनिर्णयभास्करग्रंथको मैं उदयकर्ताहूं । इसग्रंथमें तीन विभागहोंगे उनमें प्रथम प्रमाणप्रकाश द्वितीयदृष्टान्तप्रकाश तृतीययुक्तिप्रकाश, नामसें होगा ॥३॥

हेपाठको—अन्यायसें सहायताका नाम पक्षपातहै जब किसीमतका वा पुरुषका पक्षपातहोताहै तब सत्यअर्थका निर्णय नहींहोसक्ता किंतु तब अवश्यंही अन्याय मिथ्याभाषणादि होतेहैं सो महापापहैं इस्से पक्षपातको त्यागकर आर्षमतानुसारी यिहग्रन्थ रचियेहै, यिहअबकहतेहैं ॥

पक्षपाताद्भवेत्पापं पुण्यंनिष्पक्षपाततः । निष्पक्षपातमाश्रित्य लिखाम्यार्षमतानुगम् ॥४॥

टीका—पक्षपातसें पाप और पक्षपातके त्यागसें पुण्यउदयहोताहै इस्से निष्पक्षपातको आश्रयकरके, आर्षमतका वेद व ऋषिओंके मतका अनुसारीग्रंथकोमैं लिखताहूं ॥४॥

सर्वसांसारिक सुखसें विरक्तहुए जो केवलपरमात्माके ध्यानाभ्यासपरायणहैं उनपुरुषोंके खानेयोग्यअन्नको अबप्रथमकहतेहैं ।

दृष्टश्रुतार्थेष्विहवीतरागा विश्रान्तिमिच्छन्तिपरावरेये । तैःस्निग्धमन्नंमृदुभक्षणीयं वेदेमनोह्यन्नमयंप्रसिद्धम् ॥५॥

टीका—स्त्रीपुत्रपति, धनभूमिगृह शब्दस्पर्शरूपरसादिक दृष्टपदार्थों में और इन्द्रलोकादिकोंके दिव्यश्रुतविषयोंमें विरक्तहुए जोपुरुष परमात्मामें चित्तकी समाधिरूपस्थितिकोचाहतेहैं अर्थयिह दृढवैराग्यसें ध्यानाभ्यास परायणहैं, इसजगतमें ऐसेनिवृत्तिमार्गवाले उनमनुष्योंने, स्निग्ध, गोके घृतदुग्ध आदिकोंसें मिश्रित मूंगदाल भातआदिक कोमलअन्न खानाचाहिये क्योंकि छान्दोग्यउपनिषदमें मनको अन्नमय कहाहै अतः जैसा २ कोमल वा बलिष्टपौष्टिकभोजन कराजाताहै वैसा २ मन होजाताहै, कोमलभोजनकरणें सें चित्तभी कोमलहोजाताहै, कोमलहुए चित्तको दीर्घकाल अभ्यासकर योगधारणामें स्थिर कर सकीताहै, अतः वीतराग ध्यानाभ्यासीपुरुषोंने अतिपौष्टिक मांसभोजनको त्यागकर दालभातदुग्धादिक कोमलआहार कराचाहिये, फिर धारणाकी दृढतासें अनन्तर ध्यानकी परिपक्वतालिये दालभातकाभी त्यागकर्के जलसेंमिश्रित, दुग्धकोहीपीवे, देखो महाभारत—

अपःपीत्वा पयोमिश्रा योगीबलमवाप्नुयात् ॥

पर्व १२ ॥ अ० ३०१ ॥ ४५ ॥ अर्थ—दुग्धसेंमिश्रितजलको पानकर योगाभ्यासीपुरुष, योगबलकों, चित्तास्थित करणेके बलकों प्राप्तहो ।

गोरक्षशतक—**अङ्गानांमर्दनंकृत्वा श्रमसंजातवारिणा ।**
कट्वम्ल लवण त्यागी क्षीरभोजनमाचरेत् ॥५३॥

अर्थ—प्राणायामादिकोंके प्रयत्न कर जो पसीना आवे उस पसीने के जलसें उर पृष्ठ उदर बाहुआदिअंगोंका मर्दनकर्के, कटु खट्टा लवणको त्यागकर योगाभ्यासीपुरुष दुग्धका भोजनकरे ॥

अब विचारिये कि जब निवृत्ति मार्गवाले योगाभ्यासीकेलिये कटु खट्टा लवनकाभी श्रीगोरक्षनाथजीने त्याग कहाहै तो उसलिये मांसादिकों-का खाना कैसे उचित होसक्ताहै

प्रश्न—ध्यानाभ्यासको निवृत्तिमार्ग क्यों कहतेहैं—

उत्तर—योगावस्थामें स्थाणुकीन्यांई शरीरभी वाहु ग्रीवा करचरणादिकोंके व्यापारसें निवृत्तहोताहै, और श्रोत्रत्वक्नेत्रआदिक इन्द्रियभी स्वस्व व्यापारसें निवृत्तहोतेहैं, और देशकालस्वशरीरआदिकोंको विस्मृतकर्के एकध्येयमात्रमें स्थिरहुआ चित्तभी अन्यसर्वदिव्यादिव्य विषयोंसे निवृत्त होताहै, अर प्राणअपानआदिकभीअपने २ व्यापारसें निवृत्तहोतेहैं, अतः ऐसेयोगकी ध्यानाभ्यासरूप साधनावस्थामें क्रम२सें शरीरके करचरणादिक अंगोंकोभी श्रोत्रत्वक् नेत्रआदिक इन्द्रियोंकोभी प्राणअपानआदिकोंकोभी चित्तकोभी स्वस्वव्यापारसें निवृत्त कराजाताहै अतः ध्यानाभ्यासको निवृत्ति मार्ग कहतेहैं ॥

सो योगाभ्यासरूप निवृत्तिमार्ग यद्यपि वैराग्य उदयहुए चारोंआश्रमों का धर्महै तथापि बानप्रस्थआश्रमका और संन्यासाश्रमका ग्रहण तो वैराग्य हुएहीयोग्यहै अतःबानप्रस्थका संन्यासीका साधुमात्रका तो यिहनिवृत्तिमार्ग नियत आवश्यक धर्महै, इस्से बानप्रस्थ संन्यासी साधुमात्रने अतिपौष्टिक मांसाहारको त्यागकर्के दालभात दुग्धका मिताहारही करणायोग्यहै—

प्रश्न—यदि साधुमात्रने मृदुमिताहारही करणायोग्यहै तो वहुतसें साधु योगी कहलातेहुएभी मांसभक्षण क्यों कर्तेहैं

उत्तर—उनका नाम योगीहै परन्तु वो योगके लक्षणको, योगके अवान्तरभेदोंको, योगके साधनोंको योगके विघ्नोंको, योगके अवान्तरफल को योगके मुख्यफलको योगाभ्यासमें पथ्यअपथ्यको नहींजानते अतः अज्ञानसें मांसभक्षणकर्तेहैं ॥

ऐसे योगीओंसों मैंभी प्रार्थना कर्ताहूं कि—हेभ्रातृगण तुमारा योगी नामहै इस्से आप कृपया योगके लक्षणादिकोंको योगाभ्यासमें पथ्यापथ्य

no: 167
10.3.64
no: 167
10.3.64

को योगग्रन्थनमें देखो—श्रीगुरुगोरक्षनाथजीनेभी उक्तश्लोकमें योगाऽभ्यासी लिये लवणकाभी त्यागकर्के दुग्धही भोजनकरणाकहाहै अतः आपको मांसका त्यागकरणाहीयोग्यहै क्योंकि—आपप्रवृत्तिमार्गको त्यागचुकेहैं इस्सें मांसको त्यागकर मृदुमिताहार कर्तेहुए निवृत्तिमार्गपरायणहोना आपकोयोग्यहै ॥५॥

प्रश्न यदि निवृत्तिमार्गवाले विरक्तजनोंने दालभाताऽऽदिक कोमल भोजन कराचाहिये तो प्रवृत्तिमार्गवाले गृहस्थजनोंने कैसाभोजन करणा योग्यहै, इसकाउत्तर अब कहतेहैं—

दारासुत स्वामिसुतादिसक्ता गोऽजाधरा धाम-धनादिरक्ताः ॥ येकर्मिणोह्यार्षमता नुगास्तै र्मेध्यंपलंवृष्यमपीहभोज्यम् ॥६॥

टीका—स्त्रीपुत्रपतिकन्याभ्राता सासूसुसरआदिकोंमें आसक्त, गौबकरी हस्तीअश्व रथादिकोंमें तथा भूमि गृह धनादिकोंमें रागवाले जोपुरुष संध्योपासन अग्निहोत्रादिककर्मकरणेवाले वेद व ऋषिओंके मतानुसारीहैं ऐसे उन प्रवृत्तिमार्गवाले गृहस्थजनोंने 'मेध्य' शुद्ध पवित्र, वीर्यवर्द्धक अतिपुष्टिकारक मांसभी भोजनकराचाहिये ॥

विदितरहेकि—सत्यधर्मानुकूल शरीरकी प्रवृत्तिसें, नेत्र घ्राण कर चरणादिक इन्द्रियोंकी प्रवृत्तिसें लाभाऽलाभविषयक विचारादिरूप चित्तकी प्रवृत्तिसें, जो धनका उपार्जनहोवे उस धनसें उक्तत्रिविध प्रवृत्तिमय पंचम हायज्ञोंका करणा, अपनेआश्रितबालवृद्धादिकोंका पालन, और संन्यासादि-आश्रमिओंका पालन, धर्मानुसार संततिका उत्पादन, इत्यादिक प्रवृत्तिमार्ग है क्योंकि यह शरीरइन्द्रियमनकी प्रवृत्तिसें सिद्ध होनेवाला है ॥

हेपाठकभ्रातः—यद्यपि निवृत्तिमार्ग अत्युत्तमहै ॥

तथापि—बालवृद्धआर्तजनोंउपरि उपकारक होनेसें, और निवृत्तिमार्ग वाले संन्यासादिआश्रमोंकाभी मूल होंनेसें आधारहोंनेसें, अन्नवस्त्रादिकोंकी सेवाकर षष्ठांशपुण्यका भागीहोनेसें, गृहस्थाश्रमीओंका प्रवृत्तिमार्गभी अत्युत्तमहै ऐसे गृहस्थजनोंने वीर्यवर्द्धक अतिपुष्टिकारक पवित्रमांसभोजनभी करणा आवश्यकहै ॥

पूर्वपक्षी०—कोई मांसको भी शुद्ध व पवित्र कहता है ॥

आस्तिक०—जिनोंने धर्मशास्त्रों को सम्यक्नहीं विचारदेखा वा दुराग्रहवालेहैं सो विहितमांसको अशुद्ध कहते हैं, धर्मशास्त्रोंमें तो श्वानके चण्डालआदिकों केभी मारे हुए अजशशहरिणादिकोंका मांस घृततैलकी न्याईं शुद्धहीकहाहै ॥

अब मांसकी शुद्धताके पवित्रताके प्रतिपादकप्रमाणोंको प्रथमदिखलाताहूं॥

ऋग्वेदसंहिता प्र० १—**मेधंशृतपाकंपचन्तु ॥**

अष्टक ३॥ मं० १॥ सूक्त १६२ ॥१०॥

इसमन्त्रपर सायणभाष्य प्र० २—**मेधंमेध्यंयज्ञार्हंपश्ववयवं शृतपाकं देवयोग्यपाकोपेतं यथाभवतितथापचन्तु ॥** अर्थ—पकानेवालेपुरुष यज्ञके योग्य पवित्र पशुके अवयव मांसको पूरापाकवाला पकावें अर्थात् देवतोंके योग्य जैसापाक होताहै वैसा पकावें ॥

मनुस्मृति प्र० ३—**श्वभिर्हतस्ययन्मांसं शुचि तन्मनुरब्रवीत् ॥ क्रव्याद्भिश्चहतस्यान्यै श्चण्डाला**

द्यैश्चदस्युभिः ॥ अ० ५॥१३१॥ अर्थ--कुत्तेआदिकोंकर मारेहुए और चोरचण्डालआदिकोंकर मारेहुए अजआदिकोंका जो मांसहै उस मांसको मनुजी शुद्ध कहते भए अर्थात् ब्राह्मणक्षत्रियादिकोंकर मारे हुए अजआदिकोंके मांसका तो क्या कहनाहै श्वानचंडालादिकोंकर मारेहुए अजआदिकोंका मांसभी शुद्धहै ॥

बृहत्पाराशरीय धर्मशास्त्र प्र० ४—क्रव्याद्यैःसार मेयाद्यै र्हतंमृगादिकंहरेत् ॥ इदंशाकवदिच्छन्ति पवित्रं मुनिसत्तमाः॥ अ० ४॥३२१॥

अर्थ--कच्चामांसखानेवाले श्वानआदिकोंने मारेहुए मृगआदिको लेआवे इसको शाककीन्याईं पवित्र श्रेष्ठ मुनिजन कहते हैं ॥३२१॥

उसीका प्र० ५--क्रव्यादाद्यैर्हतंमांसं सर्वदाशुचि-कीर्तितम् ॥३३१॥ अर्थ—महर्षिपराशरजी कहते हैं कि श्वान बाज आदिकोंकर मारेहुए मृगादिकोंका मांस सर्वदाशुद्ध धर्मशास्त्रोंमें कहाहै ॥

याज्ञवल्क्यस्मृति प्र० ६—शुचिगोतृप्तिकृत्तोयं प्रकृति-स्थंमहीगतम् ॥ तथामांसश्वचण्डाल क्रव्यादादि निपातितम् अ० १॥१६२॥

अर्थ—अपने शुद्धरूपसें स्थित, गोतृप्तिपरिमाणवाला महीगत जल शुद्धहै तथा श्वानचण्डालआदिकोंने मारेहुए मृगादिकोंका मांस शुद्ध है ॥

लिखितस्मृतिप्र०७ आमंमांसंघृतंक्षौद्रं स्नेहाश्चफल संभवाः अन्त्यभाण्डस्थिताह्ये ते निष्कृताः

शुचयःस्मृताः ॥९३॥ अर्थ–कच्चामांस, घृत, शहत, नारिकेल आदिफलोंके तेल, यिहचारों चण्डालके भाण्डेमें स्थितहों तो चण्डालके भाण्डेसें निकालेहुए यिहशुद्ध स्मृतिओंमें कहेहैं अर्थात् चण्डालके भाण्डेसें निकालाहुआभी कच्चा मांसघृततेलशहतकी न्याई शुद्धहीहै ॥

———

साक्षात्ब्रह्माकेपुत्र अत्रिमहर्षिकी अत्रिस्मृति प्र० ८

आर्द्रमांसंघृतंतैलं स्नेहाश्चफलसंभवाः॥
अन्त्यभाण्डास्थितास्त्वेते निष्क्रान्ताःशुद्धि-
माप्नुयुः ॥२४९॥

अर्थ–अशुष्कमांस घृततेल बादामआदिकोंके रोगन, यिह चंडालके भांडेमेंरखेहुएभी चंडालकेभांडेसें निकालेहुए शुद्धहोतेहैं, हेपाठक–देखो घृततेलके समान मांसको शुद्धकहाहै

———

साक्षात्ब्रह्माकेपुत्र वसिष्ठजीकी वसिष्ठस्मृति प्र० ९–

श्वहताश्चमृगावन्याः पातितंचखगैःफलम् ।
बालैरनुपरिक्रान्तं स्त्रीभिराचरितंचयत् ॥
परिसंख्यायतान्सर्वान् शुचीनाहप्रजापतिः ॥
अ० ३ ॥४४॥४६॥

अर्थ–श्वानोंने मारेहुए बनकेमृग, पक्षीओंने गिराए फल, बालोंने पकड़ा खाद्यवस्तु, स्त्रीओंने किया गृहका आचरण, गिनकर्के उनसर्वको ब्रह्माजी शुद्धकहते भए ॥

———

जब मुनिवर भरद्वाजजीने ससैन्य भरतजीको निमंत्रणकराथा तब योबलसें भरद्वाजजीने देवतोंका आह्वानकर्के नानाप्रकारके मांसादिक भोज्यपदार्थ रचे, तब भरद्वाजजीनेकहा—बाल्मीकीयरामायण प्र० १०

मांसानिचसुमेध्यानि भक्ष्यन्तांयोयदिच्छति ॥

काण्ड २॥सर्ग९१॥५२॥

अर्थ—सुष्टु पवित्र मांसोंको खावो और जोपुरुष जिस वस्तुको खाया चाहे सो उसको खावे ॥

हेमित्र—देखो जहां गंगायमुनासरस्वतीके प्रवाह चलरहेहैं तहां तीर्थराजप्रयागमें मुनिवर भरद्वाजजीने मांससें निमंत्रणकरा, और मांस मेध्य, पवित्रकहाहै ॥

———

बाल्मीकीयरामायण प्र० ११

तांतदादर्शयित्वातु मैथिलींगिरिनिम्नगाम् ॥
निषसादगिरिप्रस्थे सीतांमांसेनछन्दयन् ॥

कां २॥ स० ९६ ॥१॥

इदंमेध्यमिदंस्वादु निष्टप्तमिदमग्निना ।
एवमास्तेसधर्मात्मा सीतयासहराघवः ॥

२॥ इसकीटीका प्र० १२—

छन्दयन् मांसविशेषप्रदर्शनेन लालयन् सान्त्वयन् ॥

अर्थ—तब चित्रकूटमें श्रीरामजी जानकीको मन्दाकिनीनदी दिखलाय के पर्वतकी निवासयोग्यभूमिमें स्थितहुए सीताको मांसविशेषसें प्रसन्नकर्ते

हुए कहा कि - यिह मांस 'मेध्यहै' पवित्रहै यिह स्वादुहै, यिहमांस अग्निसें भुनाहुआ गर्महै, ऐसे सीताको प्रसन्नकर्तेहुए सोधर्मात्मा रामजी सीताके सहित स्थितहोतेभए ॥

बाल्मीकीयरामायण प्र० १३

क्रोशमात्रंततोगत्वा भ्रातरौरामलक्ष्मणौ ।
बहून्मेध्यान्मृगान् हत्वा चेरतुर्यमुनावने ॥

का० २॥सर्ग५५॥३२॥

अर्थ—भरद्वाजके आश्रमसें चलकर यमुनासें पार होकर उस्सें एक कोसमात्र जाकर रामलक्ष्मणदोनोंभ्राता यमुनाके बनमें बहुत पवित्रमृगोंको मारकर खातेभए ॥

भगवद्भागवत प्र० १४

सएकदाऽष्टकाश्राद्ध इक्ष्वाकुःसुतमादिशत् ।
मांसमानीयतांमेध्यं विकुक्षेगच्छमाचिरम् ॥

स्कन्ध ९॥अ०६॥६॥

सोइक्ष्वाकुमहाराजा एकसमय अष्टकाश्राद्धलिये विकुक्षि पुत्रको आज्ञा कर्ताभया कि-हेविकुक्षे श्राद्धलिये पवित्रमांसको ल्यावो, जाओ चिरमतकर ॥

हेपाठक—पौषमाघ फाल्गुनकी कृष्णाष्टमीमें जो श्राद्धहो सो अष्टका श्राद्ध कहाजाताहै ॥

मार्कण्डेयपुराण प्र० १५

शुचिगोतृप्तिकृत्तोयं प्रकृतिस्थंमहीगतम् ।
तथामांसंचचण्डाल क्रव्यादादिनिपातितम् ॥

अ० ३२॥२५॥

अर्थ—अपने शुद्धरूपसेंस्थित, गोतृप्तिपरिमाणवाला, महीगतजल पवित्रहै, तथाचंडालादिकोंके मारेहुए मृगआदिकोंका मांस पवित्रहै ॥

विदितरहेकि—श्रुतिस्मृतिओंमें जिनअजशशहरिणादिकोंके तथा तित्तिर आदिकोंके मांसभक्षणका विधानहै उनकाही मांस शुद्ध कहाजानना क्योंकि वो श्रुतिस्मृतिओंसें विहितहै। और जिन उष्ट्रवानरश्वानादिकोंके मांसभक्षण का निषेधहै उनका मांस शुद्ध नहींजानना क्योंकि वो श्रुतिस्मृतिआदिकोंसें निषिद्धहै, यिह व्यवस्था अर्थसें जानीजातीहै ॥

वेदस्मृतिओंसेंविहित मांस शुद्धहै इसीसें स्मृतिआदिक धर्मशास्त्रोंमें कहाहै कि—यदि कोई ब्रह्मचर्य्यसें पीछे ब्राह्मणको मांसदेवे तो उस मांसको 'हटावे नहीं' वापस नहीं फेरे किन्तु ग्रहणकरलेवे, इसअर्थके विधायक प्रमाणोंको अब दिखलाताहूं ॥

मनुस्मृति प्र० १६

शय्यांगृहान्कुशान्गन्धा नपःपुष्पंमणीन्दधि।
धानामत्स्यान्पयोमांसं शाकंचैवनानिर्णुदेत् ॥

अ०४॥२५०॥

अर्थ—शय्या गृह कुशा कपूरादिगन्ध जल पुष्प मणि दधि भूनेयव मत्स्य मांस शाक, इनवस्तुओंको 'हटावे नहीं' वापस नहींफेरे ॥

आपस्तम्बस्मृति प्र० १७—

आमंमांसं मधुघृतं धानाः क्षीरंतथैवच।
गुडस्तक्रंरसाग्राह्या निवृत्तेनापिशूद्रतः ॥

अ० ८ ॥ १७ ॥— उसी का प्र० १८—

शाकंमांसंमृणालानि तुम्बरुः सक्तवास्तिलाः।

रसाःफलानिपिण्याकं प्रतिग्राह्याहिसर्वतः ॥१८॥

अर्थ—कच्चामांस, शहत घृत भूनेयव दुग्ध गुड तक्र रस, यिह पदार्थ निवृत्तपुरुषनें भी शूद्रसें ग्रहणकरलेने ॥१७॥ शाक मांस, कमलमूल, धनिआं सतु तिल रस फल तिलोंकी खल, यिहपदार्थ सर्वतें ग्रहणकरलेने ॥

बृहत्पाराशरीयधर्मशास्त्र प्र० १६

दधिक्षीराज्यमांसानि गन्धपुष्पाम्बुमत्स्यकान् ।
शय्यातथासनंशाकं प्रत्याख्येयंनकर्हिचित् ॥

अ०४॥२३३॥

अपिदुष्कृतकर्मभ्यः समायातमयाचितम् ।
पतितेभ्यस्तदातेभ्यः प्रतिग्राह्यमसंशयम् ॥२३४॥

दधि दुग्ध घृत मांस कपूरादिकगन्ध पुष्प जल मत्स्य शय्या आसन शाक, यिहपदार्थ कबीभी वापस नहींहटाने ॥२३३॥ जब बिनामांगे दुष्कृत कर्मीओंसें भी प्राप्तहोवें तब उनपतितोंसें यिहपदार्थ संशयरहितहोकर ग्रहण करलेने ॥२३४॥

याज्ञवल्क्य स्मृति प्र० २०

कुशाःशाकंपयोमत्स्या गन्धःपुष्पंदधिक्षतिः ॥
मांसंशय्याऽऽसनंधानाः प्रत्याख्येयंनवारिच ॥

अ० १॥२१४॥

अयाचिताहृतंग्राह्य मपिदुष्कृतकर्मणः ।
अन्यत्रकुलटाखण्ड पतितेभ्यस्तथाद्विषः॥२१५

अर्थ—कुशाशाक दुग्ध मत्स्य कपूरादिगन्ध पुष्प दधि भूमि मांस शय्या आसन भूनेयव जल, यिह पदार्थ वापस नहींहटाने ॥२१४॥ बिनामांगे किसीनेदिये यिहपदार्थ दुष्कृतकर्मीओंसेंभी ग्रहणकरलेने परन्तु व्यभिचारिणी स्त्री, नपुंसक, पतित, शत्रु, इनचारजनोंसें यिहपदार्थ ग्रहण न करें ॥२१५॥

हेपाठक—पहिले बृहत्पाराशरीयप्रमाणमें पतितशब्दसें दुष्कृतकर्मीका ग्रहण है, और यहां पतितशब्दका जातिपतित अर्थजानना ॥

———

हेभ्रातः—इत्यादिक मांसकी शुद्धताके और ग्राह्यताके प्रतिपादक वाक्यनको तथा वक्ष्यमाण अजशशहरिणादिकोंके बलिप्रदानके और मांस भक्षणके विधायक वाक्यनको केईनवीनसमाजी भ्रातृजन प्रक्षिप्तकहतेहैं वो उनका कथन असत्यहीहै, क्योंअसत्यहै तथाही कहताहूं सुनिये ॥

१—श्रीस्वामीदयानन्दसरस्वतीजीनें अपने बनाए सत्यार्थप्रकाशके समुल्लास ३ पृष्ट ४५ वेंपर वेदानुसारी लिखाहै—सत्यार्थप्रकाश प्र० २१

वेदब्राह्मण और सूत्रपुस्तकोंमें चारप्रकार के पदार्थ होमकेलिखेहैं एक तो जिसमें सुगंध गुण होय जैसेकि—कस्तूरी केशरादिक, और दूसरा जिसमें मिष्टगुणहोय जैसेकि—मिश्री शर्करादिक, और तीसरा जिसमें पुष्टिकारक गुणहोय जैसाकि—दूधघी और मांसादिक, और चौथा जिसमें रोगनिवृत्तिकारक गुणहोय जैसा कि—वैद्यकशास्त्रकी रीतिसें सोमलतादिक

औषधिआं लिखीहैं, इनचारोंका यथावत् शोधन उनका परस्परसंयोग और संस्कार कर्के होमकरै सायं और प्रातः ॥

इससत्यार्थप्रकाशके समुल्लास ४ पृष्ठ १४८ पर स्वामी दयानन्दजी लिखतेहैं देखो प्र०२२ इसके कहनेसें अजामेधादिकोंका त्याग नहींआया ॥

अर्थयिह वहां–पहिले स्मृतिश्लोकमें जो अश्वमेध गोमेधादिकोंकाकरणा कलियुगमें विवर्जित कराहै इसपर स्वामीजी लिखतेहैं कि—इसके कहनेसें अजामेधादिकों का त्यागनहींआया अर्थात् अजमेधादिकोंके करणेका तो कलियुगमेंभी निषेध नहींकरा ॥

सत्यार्थप्रकाश प्र० २३–मांसको जो खाताहोय तो उसके वास्ते मांसके पिण्डकरनेका विधानहै इस्सें मांसके पिण्डदेनेमेंभी कुछपाप नहिं ॥ समुल्लास ४॥ पृष्ठ १४६॥

सत्यार्थप्रकाश प्र० २४—जो मांस खाय अथवा घृतादिकोंसें निर्वाहकरे वेभी सब अग्निमें होम के विना न खाय ॥ समुल्लास १०॥ पृष्ठ ३०३॥ सत्यार्थप्रकाश में इत्यादिक बहुतलम्बे २ मांसविषयके स्पष्टलेख स्वामीदयानन्दजीनें

लिखेहुएहैं सो हेभ्रातृजन यदि मांसविषयकेवाक्य प्रक्षिप्त होते तो स्वामीजी ऐसेलेख न लिखसक्ते परंतु स्वामीदयानन्दजीने वेदब्राह्मण और सूत्रपुस्तकों के अनुसारी सायंप्रातः मांसके होमकरनेका विधानलिखाहै अजामेधादिकों के विधानको अंगीकार कराहै, मांसके पिण्डदानसें निष्पापता कहीहै, मांस वा घृतादिकोंको होमकेबिना न खाय, इसकथनसें होमकर्के मांसादिकों के खानेका उपदेशकराहै तो अपने आचार्यसें विरुद्धकहना समाजीभ्राताओं का समीचीन नहीं किंतु असत्यहीहै ॥

हेपाठकभ्रातः-जोसत्यार्थप्रकाश स्वामीजीने रचकर्के संवत् १९३२ सन् १८७५ ईसवीमें राजाजयकृष्णदासद्वारा बनारसमें छपवायाथा वोही प्रथमावृत्तिछपा सत्यार्थप्रकाश स्वामी दयानन्दसरस्वतीजीका बनायाहुआ माननेयोग्यहै क्योंकि-फिर संवत् १९४० कार्तिकवदि १५-तदनुसार सन् ईसवी १८८३ अकटोवर तारीख ३० में स्वामीजी परलोकगामी होगए तबतक द्वितीयवार सत्यार्थप्रकाश नहीं छपा । और जो स्वामीजीके परलोकगमनसेंपीछे सन् १८८४सें लेकर द्वितीयावृत्तिप्रभृति सत्यार्थप्रकाश समाजीभ्रातृजनोंने छपवाएहैं वो स्वामीदयानन्दजीके रचित माननेयोग्य नहीं क्योंकि स्वामीजीके छपवाए प्रथमावृत्तिसत्यार्थप्रकाशसें पीछेछपे सत्यार्थप्रकाशनमें बहुतपाठ समाजीभाईओंने कहीं न्यून कहींअधिक कर दियाहै, कहीं अदलबदल करडालाहै ॥

समाजीभ्राता०—जो सत्यार्थप्रकाश संवत् १९३२ में स्वामीजीने छपवायाथा उससें तीनवर्षपीछे संवत् १९३५ में स्वामीजीने एकविज्ञापनपत्रभी निकालाथा उसमें स्वामीजीने लिखने और शोधनवालोंकी भूलकहीहै ।

ग्रन्थकर्ता—सत्यार्थप्रकाश छपानेसें तीनवर्षपीछे जो विज्ञापनपत्रमें स्वामीजीने लेखकशोधककी, भूललिखीहै सो तर्पण और श्राद्धविषयमेंही भूललिखीहै क्योंकि उसविज्ञापनपत्रमें स्वामीजी ऐसे लिखतेहैं देखो-

इत्यादि तर्पण और श्राद्धके विषयमें जो लिखा गयाहै सो लिखने और शोधनेवालोंकी भूलसें छप गयाहै—इत्यादि इसविज्ञापनपत्रमें स्वामीजीने तर्पण और श्राद्धको छोड़कर होरकोईलेख सत्यार्थप्रकाशका अशुद्ध नहीं बतलाया इस सें निश्चितजानाजाताहै कि तर्पण और श्राद्धसेंबिना होरसमग्र प्रथमावृत्ति सत्यार्थप्रकाश स्वामीदयानन्दजीको स्वीकृतथा—

सत्यार्थप्रकाशके बहुतजगोंमें जो स्वामीजीने वेदब्राह्मण और सूत्र पुस्ककोंके अनुसारी मांसके होमका, मांसके पिण्डदानका, होमकर्के मांसके खाने का विधानकराहै, इत्यादिक मांसके बहुतलेखोंमें तो स्वामीजीने किसेकी कोईभूल नहींलिखी और नाहीं विज्ञापनपत्रमें उनवाक्यनको प्रक्षिप्त लिखाहै तो अपनेस्वामीजीसें विरुद्धकहना समाजीभाईओंका समीचीननहीं किंतु असत्यहीहै ॥

हेभ्रातः—उससंवत् १९३५के विज्ञापनमें स्वामीजी आपलिखतेहैं कि

—,,मेरे बनाये सत्यार्थप्रकाश व संस्कार विधि,, अर्थात्—सो प्रथमावृत्तिछपा सत्यार्थप्रकाश स्वामीदयानन्दजीने बनायाहै स्वामीजीने छपवायाहै उसमें यदि भूलरहैगईथी तो उससत्यार्थ-प्रकाशमें शुद्धिपत्रभी स्वामीजीने लगायाहै उसशुद्धिपत्रमें स्वामीजी भूलनि-कालदेते—फिरजबग्रन्थ छापकर तियारहोगए स्वामीजीने अधिकारीजनोंको देदिये बाहिर भेजदिये अर तीनवर्षतक अतिदीर्घकाल व्यतीतहोगया इतने दीर्घकालमें उससत्यार्थप्रकाशको स्वामीजी केईपुरुषोंको सुनातेरहे पढातेरहे उसका उपदेशकर्तेरहे तोफिर इतना तीनवर्षरूप दीर्घकालपर्य्यन्त स्वामी-जीको अपने ग्रन्थके लम्बे लम्बे प्रसंगोंकी भूल प्रतीतही नहींहुई यिहभी

एक अतिआश्चर्यकीबातहै, हेपाठक—क्या ऐसेहोसक्ताहै किजोविद्वान् आप-ग्रन्थको बनावे, आप छपावे, फिर ग्रन्थको बांटकर तीनवर्षोंतक ग्रन्थका प्रचार करे तो ऐसेकरनेपरभी तीनवर्षोंतक अपने बनाए ग्रन्थमें लम्बे२ प्रसंगोंकी भूलग्रन्थकर्ताको बनीहीरहे, यिह क्या विचारमें आसक्ताहै ॥—

सत्यार्थप्रकाशके ४७ वें पृष्ठसें स्वामीजीने मृतपितरोंके तर्पण और श्राद्धकरणेसे सातगुण अर्थात् सातलाभ दिख लाएहैं सो स्वामीदयानन्द-जीका लिखा पाठ मैं यहां लिखताहुं देखिये—**मरेभये पित्रादि-कोंका तर्पण और श्राद्धकरताहै उस्सें क्या आ-ताहै किजीतेभयेकी अन्न और जलादिकोंसें सेवा अवश्यकरनीचाहिये यह जानागया, दूसरा गुण जिनके ऊपर प्रीतिहै उनकानामलेके तर्पण और श्राद्ध करेगा तब उसके चित्तमें ज्ञानका संभवहै कि—जैसे वे मरगये वैसे मुझको भी मरनाहै मरणकेस्मरणसें अधर्मकरनेमें भयहो-गा धर्मकरनेमें प्रीतिहोगी, तीसरा गुण यहहै कि—दायभाग बाटनेमें संदेह न होगा क्योंकि इसका यह पिताहै इसका यह पितामहहै इसका यह प्रपितामहहै ऐसेही छःपीडीतक सभोंका नाम कण्ठस्थ रेहेगा वैसेही इसका यह पुत्रहै इसका यह पौत्रहै इसका यह प्रपौत्रहै इस्सें दायभा-**

गमें कभी भ्रम न होगा, चौथागुण यहहै कि-
विद्वानोंको श्रेष्ठधर्मात्माओंहीको निमंत्रण भो-
जनदान देनाचाहिये मूर्खोंकोभी नहीं इस्सें क्या
आताहै कि--विद्वान्लोग आजीविकाकेबिना क-
भी दुःखी नहोंगे निश्चिन्तहोके सबशास्त्रोंको
पढावेंगे और विचारेंगे सत्य२ उपदेशकरेंगे
और मूर्खोंका अपमान होनेसें मूर्खोंकोभी विद्या-
के पढनेमें और गुणग्रहणमें प्रीतिहोगी पांच-
वांगुण यहहै कि--देवऋषिपितृसंज्ञा श्रेष्ठोंकीहै
देवसंज्ञा दिव्यकर्म करनेवालोंकीहै पठनपाठ-
नकरनेवालोंकी तो ऋषिसंज्ञाहै और यथार्थ-
ज्ञानियोंकी पितृसंज्ञाहै उनको निमन्त्रणदेगा
तब उनसें बातभी सुनेगा प्रश्नभी करेगा उस्सें
उनको ज्ञानकालाभहोगा, छठवांप्रयोजन यहहै
कि--श्राद्धतर्पणसबकर्मोंमें वेदोंके मन्त्रोंको कर्म-
करनेकेलिये कण्ठस्थ रक्खेंगे इस्सें उसपुस्तकका
नाश कभी न होगा फिर कोई उसविद्याका प्रचार
करेगातब पदार्थ विद्या प्रगटहोगी इस्सें मनुष्यों-

को बहुतलाभ होगा, सातवां प्रयोजन यहहै कि-वसून्वदन्तिवैपितॄन् रुद्रांश्चैवपितामहान् ॥ प्रपितामहांश्चादित्यान् श्रुतिरेषासनातनी ॥—यह मनुस्मृतिका श्लोकहै इसका यहअभिप्रायहै कि—वसुजोहै सोई पिताहै जोरुद्रहै सोई पितामहहै जोआदित्यहै सोई प्रपितामहहै येतीनों नाम परमेश्वरहीकेहैं इस्से परमेश्वरहीकी उपासना तर्पणसे और श्राद्धसे आई—

हेभ्रातः – इत्यादिक होरभी सत्यार्थप्रकाशके केईजगोंमें स्वामीदयानंद जीने जो मृतपितरोंके तर्पण और श्राद्धके विधान निस्तृतयुक्तिओंसें लम्बे२ लेखोंमें लिखे हैं वोभी युक्तियुक्तलम्बे२ लेख किसेंकीभूलसें नहींलिखेजासक्ते किंतु स्वामीजीके बुद्धिपूर्वक लिखेहुएहैं क्योंकि इसलेखमें देवपितृआदिकों का अर्थभी समाजकीही रीतिसें कराहुआहै इससें जानाजाताहै कि—पहिले ख्याल होरथा स्वामीजीका फिर ख्याल बदलगया–ऐसे तर्पणश्राद्धमेंकी न्यांई यदि मांसविषयकभी स्वामीका ख्याल बदलजाता तो स्वामीजी संवत् १९३५ के विज्ञापनपत्रमें अवश्यं२ बोधनकर्ते परंतु सत्यार्थप्रकाशके बहुत जगोंमें जो मांसके विधानलिखेहैं उनमेंसे एककोभी स्वामीजीने विज्ञापनपत्र में अस्वीकृत नहींबोधनकराहै इस्सें जानाजाताहै कि—पशुबलिप्रदानेक व मांसभक्षणादिकोंके विधायक सर्ववाक्य स्वामीदयानन्दजीको स्वीकृतथे, मनजूरथे तो अपनेस्वामीदयानन्दजीसें विरुद्धकथन समाजीभाईओंका समीचीननहीं किंतु असत्यहीहै ॥

२ -हेभ्रातृजन इससमयमें तो छापा प्रचलितहै उसमें छपते ग्रन्थमें कोई पुरुष एकवाक्यको प्रक्षिप्तकरडाले तोभी हजार ग्रन्थमें वा जितनेछपवायें उतने ग्रन्थों में वो एकवाक्य प्रक्षिप्त जायसक्ताहै, भारतवर्षके सर्वग्रन्थनमें वो एकवाक्यभी नहींजायसक्ता, जबपहिले रेलगाड़ीभी नहींथी अतः समग्रभारतवर्षमें एकपुरुषका भ्रमणभी असंभवहीथा, छापाभी नहींथा, तब कौनपुरुष भारतखण्डके असंख्यग्रन्थन में हजारोंवाक्यनको प्रक्षिप्तकरसक्ताथा ॥

दृष्टान्त सुनिये—जैसे एक मनुस्मृतिग्रन्थ भारतखण्डमें लाखोंथे उनलाखों मनुस्मृतिग्रन्थनमें एकश्लोककोभी कोई पुरुष प्रक्षिप्त नहींकरसक्ता था क्योंकि—एकनगरमेंभी जिन २ विद्वानोंके गृहमें मनुस्मृतिग्रन्थथे उनमें एकविद्वान्भी अपने अनुकूल विश्वस्तपुरुषसेंबिना अन्यकिसीको ग्रन्थ देता नहीं, ऐसे यदि किसीपुरुषको जो विद्वान्पुरुष ग्रन्थ देवेभी तोफिर वोपुरुष उसग्रन्थमें कोईश्लोक प्रक्षिप्तकर देवे तो उसप्रक्षेपकपुरुषको सोविद्वान्पुरु क्या कुछ नहींकहता अर्थात् उसका तिरस्कार नहींकर्ता, फिर उसप्रक्षिप्त श्लोकको सोविद्वान्पुरुष अपनेग्रन्थसें निकाल नहींडालता, तथा उसनगरके मनुस्मृतिग्रन्थोंवाले सर्वविद्वान् अपना२ग्रन्थदेकर प्रक्षिप्तश्लोकको लिखवाते ही जातेथे, ऐसे कबीनहींहोता, हेमित्र ऐसे कबीनहींहोसक्ता ॥

एवंयदि एकनगरके सर्वमनुस्मृति ग्रन्थनमें कोईपुरुष किसीश्लोकको प्रक्षिप्त नहींकरसक्ता तो वो प्रक्षेपकपुरुष समग्रभारतवर्षके लाखोंमनुस्मृतिग्रन्थन में एकश्लोकको प्रक्षिप्त कैसेकरसक्ताहै, यदि भारतखण्डके लाखोंमनुस्मृति ग्रन्थनमें एकश्लोककोभी कोईपुरुष प्रक्षिप्त नहींकरसक्ता तो मनुस्मृतिके उन लाखोंग्रन्थनमें पशुबलिप्रदानके और मांसभक्षणके विधायक अनेकश्लोकों को प्रक्षिप्त कौन करसक्ताथा ॥

हेमित्र – इसप्रकार जैसेभारतखण्डके समग्र एक मनुस्मृतिग्रन्थनमें कोईपुरुष किसीश्लोकको प्रक्षिप्त नहीं करसक्ता तो भारतवर्षके वेदस्मृतिसूत्रा-

दिक असंख्य पुस्तकोंमें कौनपुरुष किसी वाक्यको प्रक्षिप्तकरसक्ताथा, अतः उनवाक्यनको प्रक्षिप्तकहना असत्यहीहै ॥

३—यदि आप कहेंकि—इतिहास पुराणादिकोंमें प्रक्षिप्तश्लोकभी प्रक्षिप्तअध्यायभी देखने सुननेमें आतेहैं तो वोठीकहै परन्तु उक्तप्रकारसें दूसरोंके ग्रन्थमें तो कोईपुरुष प्रक्षिप्त नहींकरसक्ता और जोकोई धर्मानभिज्ञ-पुरुष अपनेग्रन्थमें किसीश्लोकको अथवा अध्यायको लिखडाले तो टीकाकार सूचनकर देतेहैं कि—यिहश्लोक प्रक्षिप्तहै, यिहअध्याय प्रक्षिप्तहै, फिर उस प्रक्षिप्तश्लोकको अध्यायको संख्यामें नहींल्याते, अतःयदि इतिहासपुराणा-दिकोंमें मांसविधायकवाक्य प्रक्षिप्तहोते तो उनके टीकाकार अवश्यंबोधनकर्ते परन्तु उनके टीकाकारोंने तो पशुबलिप्रदानके व मांसभक्षणके विधायक वाक्यनको प्रक्षिप्त तो नहींलिखाहै किंतु उन वाक्यनका पशुबलिप्रदान अर मांसभक्षणही अर्थलिखाहै अतः इतिहासपुराणोंमेंभी पशुबलिदानके व मांस भक्षणके विधायकवाक्यनको प्रक्षिप्तकहना असत्यहीहै ॥

४—हेभ्रातृजन पहिलेभी ऐसाकोईसमय नहींहुआ कि जिससमय शैव वैष्णव शाक्त जैनआदिकमतोंमें किसीएकही मतके विद्वान्थे समग्रभारतवर्ष में उसएकही मतका प्रचारथा, ऐसाकोईसमय न हुआहै, नाहींहोसक्ताहै किंतु केई नगरोंमें शैवमतके वा शाक्तमतके विद्वान् बहुतहुए अन्य मतके विद्वान् थोड़ेहुए, होरकेईनगरोंमें जैनमतके विद्वान् बहुतहुए अन्यमतोंके थोड़ेहुए, ऐसीही व्यवस्था पहिलेहुईहै ऐसीही दशा अब है—ऐंसीदशामे अन्यमतके विद्वान्पुरुषोंके विद्यमान होते वेदस्मृति आदिक धर्मपुस्तकोंमें कौनपुरुष किसी वाक्यको प्रक्षिप्त करसक्ताहै ॥ यदि कोईपुरुष अपनेपुस्तकमें किसीवाक्यको अध्यायको प्रक्षिप्त करदेवे तोफिर जब उसको अन्य विद्वान् देखेहै तब सो विद्वान् पुरुष कदापि उसप्रक्षिप्तवाक्यको सहन नहीं करसक्ता किंतु उसप्रक्षिप्तको अवश्यबोधन करदेताहै—

जैसे बाल्मीकीयरामायणकी रामायणतिलक टीकामें षष्ठेकाण्डके २३वें सर्गसें अनन्तर बोधनकराहै देखिये ॥

इतउत्तरंपञ्चसर्गाःप्रक्षिप्ताबोध्याः॥

अर्थ—इससें अनन्तर पांचसर्ग प्रक्षिप्तजानने ॥—ऐसे पांच सर्गोंको प्रक्षिप्तबोधनकर्के ग्रन्थके सर्गोंकी संख्यामें इनपांच सर्गोंको मिलाया नहीं अतः ग्रन्थसें पृथक् बोधनकरेहैं, इसीप्रकार इतिहासपुराणोंमें जहांजहां कोई श्लोक वा अध्याय प्रक्षिप्तहोवे तो वहां टीकाकार अवश्यसूचनकर देतेहैं परंतु इतिहासपुराणोंमेंभी जो पशुबलिप्रदानके और मांसभक्षणके विधायक अनेक २ श्लोकहैं उनको प्राचीनटीकाकारोंनेभी प्रक्षिप्तबोधन नहींकराहै अतः इतिहास पुराणोंमेंभी उनवाक्यनको प्रक्षिप्त कहना नवीन समाजीभाईओंका असत्यहीहै ॥

———

५—यदि तुम कहो कि-किसीदेशमें किसीने कोईवाक्य प्रक्षिप्तकर दिया, अन्यकिसीदेशमें होरकिसीने कोई वाक्य प्रक्षिप्त करडाला, इसप्रकार बहुतवाक्य प्रक्षिप्त होगए तो यिह आपका कथनभी संमीचीननहीं क्योंकि जिनोंने प्रक्षिप्तकरेहैं उनोंने केईवाक्य निकालभी डालेहोंगे यदि ऐसेहोता तो एकएकग्रन्थके नानाप्रकारके विलक्षण २ पाठ होजाते और देशदेश में तो बहुत पाटोंका भेद होजाता जैसे मनुस्मृति का पंचनददेशमें विलक्षण, गौड़देशमें विलक्षण, द्रविडदेशमें विलक्षण, मरुस्थलदेश में, विलक्षण, बहुत क्या एकएकनगरमें विलक्षण २ पाठ होजाना चाहियेथा परंतु ऐसे तो हुआनहीं क्योंकि देखो—कलकत्ता मुंबई पूनाऽऽदिकों के छापाखानोंमें जोग्रन्थपहिले छापतेहैं उसग्रन्थकी केई प्रतिएं केईदेशोंसें मगाकर छापतेहैं, उनप्रतिओंमें जहां कुछ पाठभेद होवे तो सूचन करदेतेहैं, ऐसे प्रामाणिक कलकत्ता मुंबई प्रयाग पूना करांची लखनऊ देहली लाहौर आदिकोंके—छापाखानोंमें छपेहुए गृह्यसूत्र श्रौतसूत्र मनुस्मृतिआदिक

धर्मपुस्तकोंमें ऐसा विलक्षण२पाठ नहींहै कि कलकत्तामें छपेमनुस्मृतिग्रन्थ में पशुबलिप्रदानके विधायक श्लोकहैं और मुंबईमें छपेमनुस्मृतिग्रन्थमें सो श्लोक नहींहैं, लाहौरमें छपे मनुस्मृतिपुस्तकमें मांस भक्षणकेविधायक श्लोक हैं और लखनऊमें छपेमनुस्मृतिग्रन्थमें सोश्लोक नहींहैं, ऐसाविलक्षण २ पाठहैनहीं हुआनहीं–ऐसेही समग्रभारतखण्डमें तथा यूरप आदिकोंमेंभीसर्व वेदग्रन्थोंका श्रौतसूत्रगृह्यसूत्रग्रन्थोंका स्मृतिपुस्तकोंका 'सदृशही' एकजैसाही पाठहै इसहेतुसेंभी वेदसूत्रस्मृतिग्रन्थन में पशुवलिविधायक मांसभक्षण विधायक वाक्यनको प्रक्षिप्तकहना असत्यहीहैं ॥

६—स्वामीदयानन्दजीके देहान्तसें पीछे छपाए संस्कार विधिग्रन्थमें भी संन्यासप्रकरणमें तैत्तिरीयआरण्यकके प्रबलप्रमाणसें संन्यासीका यज्ञरूप कर वर्णनकराहै वहांभी जो संन्यासीमेंक्रोधहै वह पशुकहाहै यहांनिर्णय करिये कि–वेदोंनें यज्ञमें पशुबलिप्रदानका विधान कराहुआहै तबी तो संन्यासीरूपयज्ञमें मारणेयोग्यक्रोधको पशुरूप वर्णनकराहै तो आप क्यों हठसें उनवाक्यनको प्रक्षिप्तकहतेहो वा अर्थ बदलतेहो । और ऊंहांसंस्कार विधिग्रन्थनमें जो "मलवत् छोड़ने योग्यहै" ऐसे अर्थ लिखाहै सोभीमूलसें विरुद्ध लिखने कर असत्यहीहै क्योंकि मूलतैत्तिरीय आरण्यकमें क्रोध पशुरूप कहाहै वहां क्रोध मलरूप नहींकहाहै ॥

७—यदि पशुबलिप्रदानके व मांसभक्षणके विधायक वाक्य वेदसूत्र-स्मृतिओंमें प्रक्षिप्तहोते तो जैनमतवाले जैनी भाई वेदस्मृतिआदिकोंको त्याग-कर पृथक् क्यों होजाते, अर्थयिह–जैनमतभी अतिबहुतकालसें प्रचलितहै, ऐसे जैनमतके पुरातनविद्वानोंने भी अपनेग्रन्थनमें कहींयिह तो नहीं कहाहै कि–वेदस्मृतिआदिकोंमें मांसविधायक वाक्य प्रक्षिप्तहैं यद्यपि जैनमतवाले वेदन को पौरुषेय मानतेहैं तथापि वेदसूत्रस्मृतिओंमें उनवाक्यनको प्राक्षिप्त नहीं

कहते किंतु उनवाक्यनको वेदसूत्रस्मृतिओंकेही वाक्य मानतेहुए वेदमतको छोड़दिया, इसहेतुसेंभी पशुबलिप्रदानके मांसभक्षणके विधायक वाक्यनको प्रक्षिप्त कहना नवीनसमाजीभाईओंका असत्यहीहै ॥

———

८—यदि वेदनमें सूत्रग्रन्थोंमें पशुबलिप्रदानादिकोंके विधायकवाक्य प्रक्षिप्तहोते वा उनका कुछहोरहीअर्थ होता तो वैष्णवोंके आदिआचार्य्य श्रीरामानुजस्वामीजी शारीरकके अ०३॥पाद१॥सूत्र२५वेंके श्रीभाष्यमें अग्नीषोमीयआदिपशुके मारणको स्वर्गलोककी प्राप्तिका हेतु क्यों लिखते, अहिंसारूप कैसे मानसक्तेथे ॥

अर्थयिह—वोश्रीभाष्य तो प्रमाणांक ५६ में लिखूंगा वहां देख लीजियेगा, उसश्रीभाष्यमें श्रीरामानुज स्वामीजी स्पष्ट लिखतेहैं कि—अग्नीषोमीयआदिपशुका मारणा स्वर्गप्राप्तिका हेतुहै अतः वोहिंसा नहींहै किंतु वोरक्षाहै जैसे चिकित्साके गुणजाननेवालेपुरुष तब अल्पदुखकारीभी चिकित्सकको रक्षकही कहतेहैं अर पूजतेहैं ॥

अग्नि और सोमदेवतानिमित्त जो अजपशुका मारणा वेदमें कहाहै उस 'अजका' बकराका नाम अग्नीषोमीय पशुहै हेभ्रातृजन—यहां विचार कीजिये कि—वैष्णवग्रन्थनमें तो कोईभीपुरुष किसीवाक्यको प्रक्षिप्त न कर सक्ताथा अर नांही प्रक्षिप्त करसक्ताहै क्योंकि—जबसें श्रीमहानुभाव रामानुज स्वामीजीसें वैष्णवसंप्रदाय प्रचलितहुआहै तबसें वो वैष्णव मतवाले उत्तर२ अधिकबलको प्राप्तहैं अद्यावधि दृढबलवान्हैं अतः उससंप्रदायके आदि आचार्य्य श्रीरामानुज स्वामीकृतग्रन्थमें तो वाक्यके प्रक्षेपकी मूढजनोंकोभी संभावना नहींहोसक्ती, उसरामानुजस्वामीने वेदप्रमाणदेकर वेदविहितहिंसाको स्वर्गप्राप्तिका हेतु मानीहै अतः 'अहिंसा रूप' मानीहै इस्सें उनवाक्यनको

प्रक्षिप्त कहना नवीनसमाजीभाईओंका असत्यहीहै ॥

९—श्रीपण्डित चतुर्वेदी गिरिधरशर्माजीनेभीस्मृतिविरोधपरिहारग्रन्थमें स्पष्टलिखाहै देखिये प्र० २५—**यह कौन प्रतिज्ञा करसक्ताहै कि—यज्ञोंमें (पशुहिंसा) व मांसभक्षण श्रुतिविहित नहींहै। यदि ऐसाहीहोता तो जैनबौद्धआदिसंप्रदाय सनातनआर्य्यधर्मसें पृथक्ही क्यों होते हां आज कहींके नव्यसमाजी व कोई २ वैष्णवभी किसीकी देखादेखी विना अपनेधर्म समझे चाहे यह कहनेका साहसकरे कि वेद में पशुहिंसा नहींहै परन्तु वैष्णवोंके आदि आचार्य्य भगवान् श्रीरामानुजस्वामी अशुद्धमितिचेन्नशब्दात् ।३।१।२५।सूत्रके भाष्य में स्पष्ट वेदमें पशुहिंसा स्वीकारकर्तेहैं ॥** श्रीपण्डित चतुर्वेदी गिरिधरशर्माजीके ऐसेस्पष्टलेखसेंभी उनवाक्यनको प्रक्षिप्तकहना समाजीभाईयोंका असत्यहीहै ॥

———

१०—अपनेबनाए, आपछपवाए सत्यार्थप्रकाशके बहुतजगेंजो स्वामी दयानन्दजीनें वेदानुसारी मांसके विधान लिखेहैं वो केवल सत्यार्थप्रकाश मेंही नहींलिखे किन्तु अपनेबनाए अपनेछपवाएहुए प्रथमावृत्ति संस्कार विधिग्रंथमेंभी ११वें पृष्ठपर गर्भाधानसंस्काराविधिमें बृहदारण्यकउपनिषद मन्त्रके व्याख्यानमें स्वामीदयानन्दजीनें सबवेदोंके पढानेवाले अर्थात् अति

श्रेष्ठपुत्रकी उत्पत्तिलिये मांसखानेका विधानालिखाहै वो स्वामीजीका लेख तो प्रमाणांक १८६में लिखुंगा वहांसें देखलेना—हेभ्रातृजन इस उपनिषदमन्त्रको स्वामीजीने प्रक्षिप्त नहींलिखाहै किन्तु इसमंत्रका मांसभक्षणहीअर्थ लिखा है अतः स्वामीदयानन्दजीसें विरुद्धकहना समाजीभाईओंका समीचीननहीं अर्थात् असत्यहीहै ॥

११—बृहदारण्यकउपनिषद्की टीकामें डी० ए० वी० कालिजके संस्कृतप्रोफैसर श्रीपं० राजारामजीनेंभी अथय इच्छेत् इत्यादिकइसमंत्रका अर्थ ऐसालिखाहै—प्र० २६—**और जो चाहे कि—मेरे पुत्र पं०प्रख्यात सभामें जानेवाला,,सबकी भलाईके कामोंमें सम्मिलितहोनेवाला,, जिसको लोग सुननाचाहतेहैं ऐसीबाणीका बोलनेवाला प्रसिद्धवक्ता उत्पन्नहो सारेवेदोंको जाने और पूरी-आयु भोगे तो वे दोनों दम्पती, मांसौदन पकाकर घीडालकर खाएं तो वे ऐसीसन्तान उत्पन्नकरनेको समर्थहोंगे ॥**

हेभ्रातः—यदि मांसभक्षणके विधायक वाक्य प्रक्षिप्तहोते तो पण्डितराजाराम-जी अवश्यंबोधनकर्ते परन्तु प० राजारामजीने इसमंत्रको प्रक्षिप्त तो नहींलिखा किंतु इस मंत्रके अर्थमें मांसभक्षणका विधानही लिखाहै इस्सेंभी मांसभक्ष-णके विधायकवाक्यनको प्रक्षिप्त कहना (समाजीओंका) असत्यहै ॥

१२—केवलबृहदारण्यकके मंत्रपरहीनहीं किंतु पास्करगृह्यसूत्रादिकोंके हिन्दी भाष्य में भी पं० राजारामजीने सूत्रोंकेअनुसारी मांसभक्षणके बहुत विधान लिखेहैं उस डी०ए०वी० कालिजके संस्कृत प्रोफैसर पं० राजाराम-जीसें विरुद्धकथन केईसमाजीभाईयोंका असत्यहीहै

१३ - बहुतलिखनेसें क्याहै जब समाजीभाईयोंने अपने आचार्यस्वामी दयानन्दजीके रचितग्रंथके पाठको तोड़फोड़देनेमें पाठको बदलदेनेमें संकोच नहींकरा तो होरग्रंथनके वाक्यनकोप्राक्षिप्त कहदेना वा उनका पाठ तोड़ फोड़ देना, पाठबदलदेना, उनसमाजीभाइयोंके आगे क्या बड़ीबातहै, यदि आपपूछेंकि—ऐसेकिससमाजीनें कराहै, तोहेभ्रातः यद्यपि समाजीजनभी मेरे भ्रातृजनहीहैं वो प्रायः पढे लिखेहैं अतः मेरेप्रियभ्राताहैं तथापि सर्व धर्मोंकामूल सत्यहै, सर्वसुखोंका मूल धर्महै अतः सत्यधर्माभिलाषसें सत्यअर्थका निर्णयकर्के सत्यअर्थका प्रकटकरना श्रेष्ठविद्वानोंका मुख्यधर्महै इसलिये सुभ्रातृभावसें कुछक लिखताहूं देखिये

प्रथमावृत्तिसंस्कारविधिग्रन्थके ११वें पृष्ठपर जो स्वामीदयानन्दजीने बृहदारण्यकउपनिषदका अथयइच्छेत्,, इत्यादिक मन्त्रलिखाहै उसमें "मांसौदनम्" ऐसापाठहै स्वामीदयानन्दजीनेंभी ऐसाहीपाठ लिखाहै फिर स्वामीजीने उसकाअर्थभी मांसही लिखाहै

उपनिषद्पुस्तकोंमेंभी "मांसौदनम्" ऐसाही पाठ है शांकर भाष्य में भी 'मांसौदनम्' ऐसा पाठ लिखकर मांसयुक्तभात अर्थकराहै।

बृहदारण्यकउपानिषदके मिताक्षराटीकामेंभी 'मांसौदनम्" ऐसाहीपाठहै मांसयुक्तभातही अर्थ लिखा है॥

डी० ए० वी० कालिजके संस्कृत प्रोफैसर पं० राजारामजीनेभी "मांसौदनम्" ऐसाहीपाठलिखाहै मांसौदनही अर्थलिखाहै—

ऐसेही होरभाषाटीकाओंमें तथा संस्कृतटीकाओं में **मांसौदनम्** ऐसाहीपाठहै इनसबनोंसें विरुद्ध अर्थात् भाष्यकारों सें टीकाकारोंसें विरुद्ध तथा पं० राजारामजीसें और अपने आचार्य्यस्वामी दयानन्दजीसेंभी विरुद्ध शिवशंकरशर्मासमाजीभाईने अब पाठ बदलादिया अर्थयिह "**मांसौदनम्** इसकीजगेमें माषौदनं लिखडाला इस्सें सर्वधर्मोंके मूल सत्यधर्मकी अपेक्षा नहींरखी किन्तु अपनेरायकोही धर्म समझा ॥

खेदहै कि – उपनिषद्ग्रन्थमें अबतक किसीने ऐसे नहींकराथा बहुत क्या जैनीभाईओंको नास्तिककहतेहैं उनजैनीविद्वानोंनेभी वेदादिकों को छोडदिया परंतु पाठको नहींबदला अब समाजीभ्राताओंने ऐसाअसद व्यवहारभी करदिखलाया—

सत्य है कि—**पूर्णः पूर्णंजगत्पश्ये त्कामुकः कामुकंजगत्॥ आर्तोऽप्यार्तिमयंविश्वं लुब्धो लुब्धंस्वचित्तवत् ॥** अर्थात् पूर्णपुरुष को जगत् पूर्ण भास्ता है, कामुक पुरुषको जगत् कामुक भासेहै, दुःखीपुरुषको समग्रजगत्, दुःखी प्रतीत होता है, लोभी को जगत् लोभीही दीखे है, भावयिह जैसा अपनाचित्त होता है वैसाही सब जगत् भास्ता है, इसीसे समाजीभाई प्रक्षिप्त प्रक्षिप्त पुकारते रहते हैं, और आप उपनिषद्ग्रन्थोंके पुरातन पुस्तकोंके क्या अपने स्वामीजी के पाठों को भी बदल देनेमें तोड-फोड देने में कुछभी संकोच नहीं कर्ते ।

हे भ्रातृजन—शिवशंकरशर्माने जैसा अयोग्य कार्य्य किया वो किया परंतु यदि सत्य में श्रद्धा व रुचि होती तो समाजीभाई शिवशंकर-

शर्मासें पूछते कि—महाराजजी जब पुरातन भाष्यकारों ने तथा टीकाकारों नें अर भाषाटीकाकारोंने और डी॰ ए॰ वी॰ कालिजके संस्कृत अध्यापक पं॰ राजारामजी ने तथा हमारे परमआचार्य्य स्वामी दयानन्द जीनें भी "मांसौदनम्" ऐसापाठ लिखाहै तो इनसबके लेखों का निरादर कर्के तुमने उपनिषद् के पाठ को क्युं बदलादिया।

हें पाठकभ्रातः—इससमय में तो, हम सत्यका ग्रहण और असत्य का त्याग कर्ते हैं" यिह कथनमात्र किया जाता हैं क्योंकि उपनिषद्पाठ के बदलदेनेकर असत्यका ग्रहण और सत्यका त्याग कर दिखलाया है॥

समाजी भाईओं ने महाभारतप्रभृति इतिहासादिकों के भी पाठ तोडफोड डाले हैं अर्थात् 'अपनीसम्मति को, अपने रायकोही धर्म समझा है, युक्तयोगी परमेश्वरके और युञ्जानयोगी महर्षिओं के वाक्यन में विश्वास नहीं रखा॥

हेमित्र—शुभाशुभ कर्मों सें जन्य जो चित्त में पुण्यपापहैं वो अतीन्द्रियपदार्थ हैं, अपने रायसें अतीन्द्रियपदार्थों का विज्ञान नहीं हो सक्ता किंतु उनके विज्ञान में योगयुक्त पुरुषोंकृत वेदशास्त्रही कारण हैं, यिह देखो प्रमाणांक ५७ में श्रीशंकराचार्य्यों ने भी स्पष्ट कहाहै॥

तात्पर्य्य यिह है कि—दृढसमाधि करही अतीन्द्रिय पदार्थों का प्रत्यक्ष होता है, युक्तयोगी ईश्वरने और युञ्जान योगीमहर्षिओं नें प्रत्यक्ष देखकर जिस जिस कर्म सें पुण्य वा पाप कहा है, उन वाक्यनसेंही अयोगीजनोंका पुण्य पाप का निश्चय होसक्ता है उन वाक्यन का अनादर कर्के जो पुरुष अपने रायसेंही धर्माधर्म को कथन कर्ते हैं वो पुरुष योग्यबुद्धिमानोंमें धर्मवेता नहीं कहलायसक्के, व उनका कथन भी माननीय नहीं होसक्ता॥

द्वितीयावृत्तिछपे सत्यार्थप्रकाश के समुल्लास ८ पृष्ठ २२३ में [मनुष्याऋषयश्चये ततोमनुष्याअजायन्त, यह यजुर्वेद में लिखा है] ऐसापाठ है ॥ पंचमावृत्ति के छपे सत्यार्थप्रकाश में भी द्वितीयावृत्ति सत्यार्थप्रकाश के सदृशही पाठ है, बारवींवार के सत्यार्थप्रकाश में (मनुष्याऋषयश्चये ततोमनुष्या अजायन्त ॥ यह यजुर्वेद और उसके ब्राह्मण में लिखा है] ऐसा पाठ करदिया ॥

और प्रथमावृत्ति के सत्यार्थप्रकाश में वहां यिह पाठ स्वामीदयानन्द जी ने लिखाही नहीं ॥

हे भ्रातः—अब कहो कि—इन तीनों में स्वामीजी का लिखा हुआ कौनसा पाठ मानना चाहिये इनमें यदि सम्यक् विचार करें तो प्रथमावृत्ति सत्यार्थप्रकाश ही स्वामी दयानन्दजी का रचाहुआ है क्योंकि यिह मंत्र यजुर्वेद में हैही नहीं अतः वो स्वामीजी ने आप छपवाए प्रथमावृत्ति सत्यार्थप्रकाश में यिह मंत्र लिखाही नहीं फिर स्वामीजी के देहान्त सें एक वर्ष पीछे समाजी भाइयों ने जो द्वितीयावृत्ति सत्यार्थप्रकाश छपवाया है उसमें किसी समाजी भाईने यह मनोघट्टित संस्कृतपाठ लिखकर 'यह यजुर्वेद में लिखा है, ऐसेलिखडाला फिर बहुत वर्ष ऐसाही पाठ छपाते रहे पुनः देखभाल पूछ होने पर जब यिहमंत्र यजुर्वेदमें नहींमिला तो वो संस्कृतपाठ लिखकर (यह यजुर्वेद और उसकेब्राह्मणमें लिखाहै) ऐसे पाठको अधिककरडाला परन्तु उससमाजी-भाईने यिह तो नहींलिखा कि—यिहमंत्र यजुर्वेदके कौनसे अध्यायमेंहै कितनी संख्याका मंत्रहै क्योंकि यजुर्वेदमें यिहमंत्र हैही नहीं तो वो कैसे

लिखसक्ताथा इस्सें उसनें (और उसके ब्राह्मणमें) इतना होरअधिकपाठ लिखकर रौलेमें रौला करडाला ॥

द्वितीयावृत्तिछपे सत्यार्थप्रकाशके समु०३। पृष्ठ४० वींमें—[प्राणायामादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः ॥ यह योगशास्त्रका सूत्रहै] ऐसापाठहै पंचमावृत्तिआदिक सत्यार्थप्रकाशोंमें। [योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः—योगसाधनपादे सू० २८] ऐसापाठ करडाला परन्तु— अर्थ वो प्राणायामहीरखा॥—

और प्रथमावृत्ति सत्यार्थप्रकाशमें यिहमूत्र स्वामीजीने लिखाहीनहीं—

हे भ्रातृजन—अब कहियेकि—इनमें स्वामीजीकालिखा कौनसापाठहै; यदि वास्तवनिर्णयकरें तो प्रथमावृत्ति सत्यार्थप्रकाशही दयानन्दस्वामीका रचितहै क्योंकि —द्वितीयावृत्तिके सत्यार्थप्रकाशमें जो सूत्रलिखाहै सो मनोघट्टितहै; और सूत्रका अर्थभी असंगतही लिखाहुआहै क्योंकि इससूत्रमें प्राणायाममात्रका फल नहींकहाहै और नांही प्राणायाममात्रके करणेसें आत्माका ज्ञान होसक्ताहै ॥ —

योगदर्शनके साधनपाद ४९वें सूत्रमें प्राणायामका साधारणलक्षण कहकर ५०वें और ५१वें इनदोसूत्रोंमें चारप्रकारके प्राणायामका निरूपण कराहै फिर —

ततःक्षीयतेप्रकाशावरणम् ॥ पाद२॥५२॥

धारणासुचयोग्यतामनसः ॥ २॥५३॥

अर्थ—उसप्राणायामके अभ्याससें प्रकाशरूपबुद्धिका पापरूपआवरण क्षीण होजाताहै ॥५२॥ और धारणाओंमें मनकी योग्यता होतीहै ॥ ५३ । इनदो सूत्रोंमें प्राणायामकाफल कहाहै और तुमारे लिखेसूत्रमें तो समाधिपर्य्यन्त अष्टअंगोंके अनुष्ठानकर क्रम२सें अविद्याऽऽदिपंचक्लेशरूप और कर्मोंरूप अशुद्धिके क्षयहुए विवेकख्यातिपर्य्यन्त ज्ञानका प्रकाश होताहै; यिहअर्थहै ॥

हेपाठक—आत्माके प्रत्यक्षज्ञानरूप जो विवेकख्यातिहै सो संप्रज्ञात योगावस्थामें योगरूपहीहोतीहै क्योंकि-आत्मा अतीन्द्रियपदार्थहै अतीन्द्रिय वस्तुका प्रत्यक्ष समाधिविना नहींहोसक्ता; यिह आत्मेक्षणप्रमाणार्कग्रंथमें युक्तिप्रमाणोंसें निर्णयहोचुकाहै; वोऐसी योगरूपविवेकख्याति धारणाध्यान समाधिकी परिपक्वताविना केवलप्राणायामकरही नहींहोसक्ती क्योंकि— संप्रज्ञातयोगके धारणाऽऽदिसाधनत्रय अन्तरंगहैं और यमआदिकपंचसाधन तो वहिरंगहै यिह पातंजलदर्शनके - **त्रयमन्तरङ्गं पूर्वेभ्यः- ॥पाद३॥७॥** इससूत्रमेंभी प्रतिपादनकराहै ॥

सूत्रका अर्थ—यमानियम आसन प्राणायाम प्रत्याहार, इन पहिलेपांच वहिरंगोंसें धारणाऽऽदित्रय संप्रज्ञातयोगके अन्तरंगहैं—

हेमित्र—जो परम्परासें साधन हो वो वहिरंग कहलाताहै —

विदितहो कि पापदुर्वासनाऽऽदिक जो चित्तका मलहै और स्थूलता स्पन्दादिक जो प्राणोंका मलहै अर विषयोंमें अभिमुखतादिक जो इन्द्रियों का मलहै; और स्थूलताऽऽदिक जो शरीरका मलहै; ऐसायिह चित्तप्राणादि-कोंके मल समाधिके प्रतिबन्धकहैं ॥

चित्तप्राणादिकोंके मलरूप प्रतिबन्धकोंकी निवृत्तिद्वारा यमानियमासन प्राणायामादिक पांच संप्रज्ञातयोगके साधनहैं साक्षात्साधननहीं इससें प्राणायामादिक पांचअंगोंके अनुष्ठानकर उनमलोंकी निवृत्तिहुएतें अनन्तर

धारणाध्यानसमाधिद्वाराही संप्रज्ञातयोगावस्था उदयहोतीहै तब आत्माका विवेकख्यातिरूप प्रत्यक्षज्ञानका प्रकाशहोताहै वो प्राणायाममात्रकरही नहीं होसक्ता ॥

यदि प्राणायाममात्रकरही विवेकख्यातिपर्य्यंत ज्ञानकाप्रकाशमानोंगे तो योगशास्त्रमें कथनकरे धारणाध्यानसमाधिरूप अन्तरंगत्रय व्यर्थहोंगें इस्से प्राणायामकरही विवेकख्याति पर्य्यंत ज्ञानका प्रकाशलिखना असंगतहै ॥

हेभ्रातृजन—ऐसाअसंगत अर्थ व असंगतअर्थके अनुकूल मनोघट्टित सूत्र स्वामीदयानन्दजीका लिखामानना योग्यनहींहै ॥

स्वामीदयानन्दजीके बनाए स्वामीजीके छपवाए प्रथमावृत्तिसत्यार्थ-प्रकाशमें यिहसूत्र व असंगतअर्थ स्वामीजीनें लिखाभी नहींहै ॥

फिर—सन् १८८३ ईसवीमें स्वामीजीके देहान्तसें एकवर्षपीछे सन् १८८४ में समाजीभाईओंने छपवाए द्वितीयावृत्तिके सत्यार्थप्रकाशमें मनोघट्टितसूत्र व असंगतअर्थलिखडाला, फिर पंचमावृत्तिप्रभृतिसत्यार्थप्रकाशमें सूत्रतो ठीककरदिया परंतु अर्थ वोही असंगतहीरहा, ऐसेपाठकों अधिकन्यूनसमाजी भाईकरदियाकर्तेहैं ॥

यदि आप कहोकि—द्वितीयवृत्तिसत्यार्थप्रकाशमेंभी स्वामीजीनेही लिखाहै, तो ऐसाअसंगतअर्थस्वामीजीकालिखा नहींहोसक्ता ॥

और प्रथमावृत्तिसत्यार्थप्रकाशके तो बहुतप्रसंगही निकालडालेहैं ॥

समाजीभ्राता०—वो सत्यार्थप्रकाश प्रमाण नहींहै—

ग्रन्थकर्ता०—यिहनवीनही आश्चर्य्यकथनहैकि जो स्वामीजीके परलोक गमनसें पीछे छपवायाहै वो तो प्रमाणहै और जो सत्यार्थप्रकाश आप बनाकर स्वामीदयानन्दजीने आपही छपवायाहै वो प्रमाणनहींहै, ऐसाकथन क्या हासगोचर नहींहै ॥

समाजी०–स्वामीजीने पहिलेसत्यार्थप्रकाशके छपवानेसें तीनवर्षपीछे जो विज्ञापनपत्र निकालाथा उसमें लेखकशोधककी भूललिखदी तो फिर क्या–

ग्रन्थकर्ता०–स्वामीदयानन्दजीने विज्ञापनपत्रमें यिह तो नहींलिखाकि प्रथमावृत्तिसत्यार्थप्रकाश प्रमाण नहींहै तो तुम कैसे कहसक्तेहोकि–वो प्रमाण नहींहै और उसविज्ञापनमें स्वामीजीलिखतेहैं कि- "**मेरेबनाए सत्यार्थप्रकाश व संस्कार विधि**" इस्सें वो सत्यार्थप्रकाश स्वामी दयानन्दजीका बनायाहै यिह उनकेलेखसेंही सिद्धहै और लेखकशोधककी भूलतो अक्षरकी पदकी पंक्तिकीहोसक्तीहै लम्बे२ बुद्धिपूर्वकप्रसंगोकी भूल नहीं होसक्ती

और लेखकशोधककी भूलभी स्वामीदयानन्दजीने तर्पणश्राद्धमेंही लिखीहै, उससत्यार्थप्रकाशके बहुतजगोंमें जो मांसके नानाविधान लिखेहैं उनमें तो स्वामीजीने लेखकशोधककी भूल नहींलिखी इस्सें वो मांसके सर्वविधानस्वामीजीको स्वीकृतहीरहे, मन्जूरहीरहे वो मांसके अनेकप्रसंगभी समाजीभाईओंनेही निकालडालेहैं

और प्रथमावृत्तिछपे संस्कारविधिग्रन्थमेंभी जो स्वामीजीने बृहदारण्यक उपनिषदका मंत्र और आश्वलायन गृह्यसूत्र मांसभक्षणके विधायक लिखे थे वो भी समाजीभाईओंने निकालडालेहैं

अब कहिये कि-संस्कारविधिग्रन्थमें तो स्वामीजीने किसीकी कहीं भी भूल नहींलिखी तो संस्कारविधिग्रन्थसें वोमन्त्र और गृह्यसूत्र क्यों निकालडाले

समाजी०—वोमंत्र और गृह्यसूत्र अत्यन्तउपयोगीनहींथे

ग्रन्थकर्ता०–यिह आपका कथन समीचीननहीं क्योंकि वहां संस्कार

विधि ग्रंथके ११वें पृष्ठपर जो बृहदारण्यकउपनिषदका मन्त्र स्वामीजीने लिखाहै वोमन्त्रसबवेदोंकेजाननेवाले अतिश्रेष्ठगुणोंवाले पुत्रकी उत्पत्तिलिये मांसयुक्तभातखानेका विधानकर्ताहै, ऐसाहीउसमन्त्रका अर्थ स्वामीजीने भी लिखाहै तो वो मंत्र अत्यन्तउपयोगीक्यों नहींहै अर्थात् ऐसेअतिश्रेष्ठ पुत्रहोनेलिये यिहमन्त्र अत्यन्तउपयोगीहीहै।

और संस्कारविधिग्रंथके ४२वें पृष्ठपर अन्नप्राशनसंस्कारमें जो स्वामी दयानन्दजीने आश्वलायनगृह्यसूत्रलिखाहै वोसूत्रभी "ब्रह्मतेजालिये" वेदादि विद्यामें निपुणतालिये बालकको तित्तिरके मांसखुलानेका विधानकर्ताहै तो वोसूत्र अत्यन्तउपयोगी क्योंनहींहै अर्थात् पुत्रके विद्वान्होनेकेलिये भक्ष्य वस्तुका विधायकहोनेसें यिहसूत्रभी अत्यन्तउपयोगीहीहै ॥

समाजी०—पहिले सत्यार्थप्रकाशके और संस्कारविधिके मांसविषयके प्रसंग स्वामीजीनें आपही निकालडालेहैं क्योंकि–हमविचारकर्तेहैं कि—

पहिले श्रीस्वामीदयानन्दजी—परमात्मा निराकारको शिवनामसें बतलायाकर्तेथे, रुद्राक्ष और भस्मभी पहनते व लगाते और दूसरोंकोभी उपदेश कर्तेथे ,यिह लेखरामके बनाए स्वामीदयानन्दजीके जीवनचारित्रमें हिस्सादूसरेके सफा ३८में स्पष्टलिखाहीहै ॥

फिरजब सत्यार्थप्रकाश बनाकर संवत् १९३२ में छपवायाथा तब वो रुद्राक्षके भस्मके ख्याल तो स्वामीजी के नहींरहे किंतु मृतपितरोंके तर्पण व श्राद्धका उससत्यार्थप्रकाशमें केईजगे दृढयुक्तिओंसें विधान कराहै अतः- तब तर्पणमें श्राद्धमें स्वामीजीका विश्वास हैहीथा, फिर तीनवर्षपीछे संवत् १९३५ में तर्पण श्राद्धका ख्यालभी स्वामीजीका बदलगया अतएव संवत् १९३५ में विज्ञापनपत्र निकालाउसमें मृतपितरोंके तर्पणका श्राद्धका प्रतिषेध लिखदिया परन्तु मांसविषयक ख्याल तो संवत् १९३५ मेंभी बदला नहींथा क्योंकि–पहिले सत्यार्थप्रकाशमें अपनेलिखेहुए मांसके अनेकविधानोंमें

किसीएककाभी स्वामीजीने उसविज्ञापनपत्रमें प्रतिषेध नहींकराहै ॥

एवंहेमित्र– जैसे रुद्राक्षके भस्मके धारणका ख्याल स्वामीजीका बदलगया फिर तर्पणका श्राद्धका ख्यालभी बदलगया ऐसेही फिर मांसविषयक ख्यालभी स्वामीजीका बदलगयाहोगा।

ग्रन्थकर्ता०–यिहकथनभी समीचीननहीं क्योंकि जो सत्यार्थप्रकाशकी भूमिका संवत् १९३९ में स्वामीजीनें उदयपुरमें लिखीथी उस १९३९ संवत्की भूमिकामें भी पहिलेसत्यार्थप्रकाशमें लिखेहुए मांसके विधानों का स्वामीजीने प्रतिषेध तो नहींकराहै प्रत्युत उसभूमिकामें स्वामीजीनें लिखाहै कि— **[अर्थकाभेद नहीं कियागयाहै प्रत्युत विशेष तो लिखागयाहै]** यहां विचारकरिये कि—जब पहिले सत्यार्थप्रकाशसें अर्थका भेद नहींकियागया प्रत्युत विशेष लिखागयाहै तो इसस्वामीजीके लेखसें जानाजाताहै कि–संवत् १९३९ पर्य्यन्त स्वामीजीका पहिलेलिखे मांसके विधानोंका ख्याल बदलानहींथा–फिर १९४० संवत्में स्वामीजी परलोकगमन करगए यदि १९४० संवत्मेंभी स्वामीजीका ख्याल बदलजाता तो स्वामीजी विज्ञापन पत्रद्वारा अवश्यबोधन करदेते ,,—

और जब वेदब्राह्मणसूत्रउपनिषदपुस्तकोंके अनुसारी मांसके होमका, मांसके पिण्डदानका, मांसके भक्षणका विधान स्वामीदयानन्दजी लिखचुकेहैं तो एकस्वामीदयानन्दजीके खाल बदलनेसें वेदशास्त्रादिकोंके असंख्यवाक्य प्रक्षिप्त तो सिद्ध नहींहोसक्ते ,,—

होर जब संवत् १९३९ की भूमिकामें स्वामीजीने लिखाहै कि— पहिलेसत्यार्थप्रकाशसें अर्थका भेद नहीं कियागया प्रत्युत विशेषलिखागयाहै, तो स्वामीदयानन्दजीके इसलेखसें जानाजाताहै कि—पहिलेसत्यार्थप्रकाशके

अनेकप्रसंग समाजीभाईओंनेही निकाल कर अर्थकेभेद कर डालेहैं"

स्वामीदयानन्दजीके देहान्तसेंपीछे समाजीभाईओंनेही सत्यार्थप्रकाश संस्कारविधि आदिक ग्रन्थोंके पाठ तोड़फोड़ अधिक न्यून कर दिये हैं—इसीपर स्वामी ज्ञानानन्दजी ने मांसमीमांसाग्रन्थमें विस्तार सें लिखा है जिसको देखने की इच्छा हो वो मांसमीमांसाग्रन्थ में देखसक्ता है॥

१४—समाजीभ्राता०—संवत् १९३५ के विज्ञापनपत्रमें स्वामीजी लिखते हैं कि—**मेरे बनाये सत्यार्थप्रकाश व संस्कार-विधि आदि ग्रन्थों में गृह्यसूत्रों मनुस्मृति आदि पुस्तकों के वचन बहुतसे लिखे हैं वे उनउन ग्रन्थों के मतोंको जतानेके लिये लिखेहैं॥**

ग्रन्थकर्ता०—हेभ्रातः—स्वामीदयानन्दजीके इसलेखसेंही तुम्हारा प्रक्षिप्तवाद खण्डित सिद्धहोताहै अर्थात् मांसभक्षणके विधायक वाक्यन को प्रक्षिप्त कहना असत्यही सिद्ध होताहै, क्योंकि—स्वामी दयानन्दजीने संस्कारविधिग्रन्थमें मांसभक्षणका विधायक बृहदारण्यकउपनिषद्का मंत्र और आश्वलायन गृह्यसूत्र लिखे हैं, और यहभी तुमारी बात मानली कि—वे उनउनग्रन्थोंके मतोंको जतानेके लिये लिखेहैं तथापि—स्वामीदयानन्दजीके इसलेखसें ही सिद्ध हुआ कि—संस्कारविधि ग्रन्थ के गर्भाधान संस्कार में जो मांस भक्षणका विधायक बृहदारण्यक उपनिषदका मंत्र लिखाहै श्रेष्ठ गर्भाधानलिये मांससहित भातका भक्षण उसका विषय है वो बृहदारण्यकउपनिषद्का मत है, और अन्नप्राशनसंस्कारमें जो मांस भक्षणके विधायक आश्वलायन गृह्यसूत्र लिखेहैं ब्रह्मतेजआदिकों लिये छीमहीनेके बालको मांससें भोजन खुलाना, उन गृह्यसूत्रोंका विषयहै

वो गृह्यसूत्रोंका मतहै, यिह स्वामीजीके लेखसेंही सिद्धहुआ हेभ्रातः वो वाक्य प्रक्षिप्त सिद्ध नहीं होसक्ते अब विचारो कि–सनातनधर्म में तो वेदकाही भाग उपनिषद्ग्रन्थ हैं, और स्वामी दयानन्दजीके मत में ब्राह्मणभाग–उपनिषद् हैं, ईशावास्यउपनिषद् तो संहिताभागकी है दोनोंप्रकारसें इतिहासपुराणादिकोंते उपनिषदवाक्यगृह्यसूत्र अतिबलवान् प्रमाणहैं ॥

हेभ्रातः—जब स्वामीदयानन्दजीके लेखसें मांसभक्षणके विधायक उपनिषदवाक्यहैं गृह्यसूत्रादिकोंकेवाक्यहैं तो उपनिषदकेगृह्यसूत्रोंके अनुसारी ही मांसभक्षणकेविधायक इतिहासपुराणादिकोंके वाक्यहैं अतःअपने आचार्य्य स्वामीदयानन्दजीसें विरुद्धकहना अर्थात् मांसभक्षणकेविधायक उपनिषद् वाक्यकों वा गृह्यसूत्रादिकोंके वाक्यनको वा तदनुसारी मांसभक्षणके विधायक इतिहासपुराणादिकोंके वाक्यनको प्रक्षिप्तकहना, दुराग्रह नहींहै तो होर क्याहै अर्थात् अपनेस्वामीदयानन्दजीके लेखसें विरुद्धकहना समाजी भाईओंका असत्यहीहै ॥

१५—हेभ्रातृजन सत्यधर्मसें आपही निर्णयकरलीजियेकि—वेदोंके भाष्यनमें सायणाचार्य्यआदिकोंनेभी पशुबलीप्रदानके व मांसभक्षणके विधायकवाक्यनको प्राक्षिप्त नहींकहाहै,और कात्यायन आश्वलायन पारस्कर गोभिल गौतमप्रभृतिमहर्षिओंनेभी श्रौतसूत्र गृह्यसूत्रग्रन्थनमें उनवाक्यनको प्राक्षिप्त नहींलिखाहै व उनके कर्कभाष्यादिकोंमेंभी उनवाक्यनको प्रक्षिप्त नहींकहाहै, और मनु वासिष्ट याज्ञवल्क्य पराशर व्यासप्रभृतिमहर्षिओंनेभी स्मृतिग्रन्थनमें उनवाक्यनको प्राक्षिप्त नहींलिखाहै, तथा मनुस्मृतिआदिकोंके कुल्लूकभट्टआदिक टीकाकारोंनेभी उनवाक्यनको प्राक्षिप्त नहींलिखाहै, और सांख्यन्यायमीमांसाप्रभृतिशास्त्रोंमेंभी उनवाक्यनको प्राक्षिप्त नहींकहाहै तथा उन शास्त्रोंके भाष्यकारभगवद्व्यास विज्ञानभिक्षु शबरस्वामी शंकराचार्य्य

रामानुजस्वामीआदिकोंनेभी उनवाक्यनको प्रक्षिप्त नहींलिखाहै ॥

प्रत्युत-सायणाचार्य्यआदिक भाष्यकारोंनेभी, सूत्रग्रन्थनके स्मृतिग्रन्थनके कर्तामहर्षिओंनेंभी उनके टीकाकारोंनेंभी,तथाशंकराचार्य्य रामानुजस्वामीजी नेंभी वेदसूत्रस्मृतिआदिकोंके उनवाक्यनका पशुबलिप्रदान व मांसभक्षणही अर्थलिखाहै उनवाक्यनको प्रक्षिप्त नहींकहाहै ॥

तो मनुस्मृतिकीभांषाटीकाकरणेवाले तुलसीरामस्वामीके कानोंमें क्या कोईफरिश्ता प्रक्षिप्त२ सुनागयाहै ॥

शंका—

नियुक्तस्तुयथान्यायं योमांसंनात्तिमानवः ।
सप्रेत्यपशुतांयाति संभवानेकविंशतिम् ॥

मनुस्मृतिअ०५-श्लोक३५कीटीकामें तुलसीरामजी लिखतेहैं कि-"नखावे तो२१ जन्मतक पशुबने"क्या इसमेंभी मांसभक्षीवाममार्गिओंका प्रक्षेप नहींजानपड़ता—

समाधान-केवलमनुस्मृतिमेंही नहीं किंतु देखो प्रमाणांक ८२ आदिकों में व्यास वसिष्ट प्रभृतिमहर्षिओंनेंभी विहितमांसके नहींखानेसें अतिदोष लिखेहैं तो तुलसीरामजीको इसमें क्यों असंभव प्रतीतहुआ ॥

हेभ्रातः-जब हाकमोंकी हुकमअदूलीसें और वैद्यजनोंकी आज्ञाके नहीं पालनेसें अतिदोष अतिकष्ट प्राप्तहोताहै तो युक्तयोगीपरमेश्वर युंजानयोगी महर्षिओंके राचितश्रुतिस्मृतिओंके विधिवाक्यनका उल्लंघनकरणेकर अति-दोषका अतिकष्टका होना संभवेहीहै, इसअर्थमें इसमनुअ०५के३५वें श्लोक पर देखो कुल्लूकभट्टकी टीका प्र०२७—**श्राद्धे मधुपर्केच यथा शास्त्रंनियुक्तःसन्योमनुष्योमांसंनखादाति समृतः सन्नेकविंशतिजन्मानिपशुर्भवाति। यथाविधिनि-युक्तास्त्वित्येतन्नियमातिक्रमफलाविधानामिदम् ॥**

अर्थ-श्राद्धमें और मधुपर्कमें यथाशास्त्र प्रेराहुआ जो मनुष्य मांसकोनहींखाता वो मनुष्य मरकर २१जन्म पशुहोताहै-इसमें कुल्लूकभट्ट टीकाकार कहते हैं कि-जैसेशास्त्रविधिसें प्रेराहुआहै ऐसे इसनियमके उल्लङ्घनके फलका विधान यिहहै ॥

इसीअर्थमें इसमनु अ०५के ३५वें श्लोकपर देखो गोविन्दराजकी टीका प्र०२८— श्राद्धमधुपर्कयोः शास्त्रमर्यादानातिक्रमेण नियुक्तःसन्योमनुष्योमांसंनाश्नाति समृतः सन्नेकविंशतिजन्मानि पशुत्वंप्राप्नोतिइति ॥ यथाविधिनियुक्त स्त्विति एतान्नियमव्यतिक्रमफलकथनम् ॥

अर्थ-शास्त्रकी मर्यादाको नहींउल्लंघनकर्के नियमविधिसें प्रेराहुआ जो मनुष्य श्राद्धमें और मधुपर्कमें मांसको नहींखाता वो मनुष्य मरकर २१जन्म पशु बनेहैं। इसमें गोविन्दराजटीकाकार कहतेहैं कि-जैसेशास्त्रविधिसें प्रेराहुआहै ऐसे इसशास्त्रीयनियमके उल्लंघनके फलका कथनकराहै ॥

हेपाठक—देखो इन टीकाओंमेंभी संस्कृतटीकाकारोंने नियम विधिके उल्लंघनकाही यिह अशुभ फल स्पष्टकहाहै तो तुलसीरामजी क्यों दुराग्रहकररहेहैं ॥

विचारदेखिये कि-बहुतकालसें जैनीसाधुओंके व्याख्यानोंद्वारा जैनमतका हिन्दुओंमें वेसमझीसें असर पड़नेकर जबसें बलिप्रदानका व विहितमांसके खानेका संकोच हुआहै तबसें वैदिकमतवाले हिन्दू नीचेसें नीचे गिरते गए यहांतककि-इनको मरी हुई कोम कहने लगे अर्थात् मरी हुई कोम बनगए ॥

तुलसीरामजीसें पूछाचाहिए कि—डी० ए० वी० कालिजके संस्कृत प्रोफैसर पं० राजारामजीने जोमांसभक्षणविषयका बृहदारण्यक उपनिषद्कामंत्र और पारस्कर गृह्यसूत्रादि लिखे हैं, उनका अर्थभी मांसभक्षणही लिखा है तो क्या राजारामजीके ग्रन्थोंमेंभी वाममार्गिओंका प्रक्षेपहै, यिह इसवर्तमान समयमें कोई कहसक्ता है स्वामीदयानन्दजीने प्रथमावृत्ति छपवाए संस्कारविधिग्रन्थमें जो उपनिषद् मंत्र और आश्वलायनगृह्यसूत्र लिखे हैं उनका अर्थभी मांस भक्षणही स्वामीजीने लिखाहै तो क्या संस्कारविधिग्रन्थमेंभी वाममार्गिओंका प्रक्षेप है, यिहतो कोई भूलकरभी नहीं कहसक्ता फिर देखो संवत् १९३५ का स्वामीदयानन्दजीका लिखा विज्ञापन पत्र प्र० २९—**मेरे बनाये सत्यार्थप्रकाश व संस्कारविधिआदिग्रन्थोंमें गृह्यसूत्रों मनुस्मृतिआदिपुस्तकोंके वचनबहुतसे लिखेहैं वे उन२ग्रन्थोंके मतोंको जनानेकेलिये लिखेहैं॥**

हेपाठक—यहां विचारकरोकि—प्रथम तो स्वामीदयानन्दजीनें संस्कारविधिग्रन्थमें मांसभक्षणका विधायक बृहदारण्यकउपनिषदका मंत्र और गृह्यसूत्र लिखेहैं उनकेनीचे अर्थभी मांसभक्षणही लिखाहै तो स्वामीजीके इसलेखसेंही यिह सिद्धहोताहै कि—उपनिषद् काही मंत्र मांसभक्षणका विधायकहै और गृह्यसूत्रभी मांसभक्षणके विधायकहैं, स्वामीजीके इसलेखसेंभी यदि तुलसीरामजीका भ्रमदूर नहींहुआ तो फिर तीन वर्षपीछे स्वामीदयानन्दजीनेंजो एकविज्ञापनपत्र निकाला उस संवत्१९३५के विज्ञापनपत्रमें स्वामीजीने तुलसीरामजीका तथा होरसमाजी मेरेसब भ्राताओंका भ्रम दूर-

करणेवाला यिहलेख लिखाहै कि—मेरे बनाये सत्यार्थप्रकाश व संस्कार-विधिआदिग्रन्थोंमें गृह्यसूत्रआदिकोंके वचन उनउनग्रन्थोंके मतोंको जताने-केलिये लिखेहैं

हेभ्रातृजन—जबस्वामीदयानन्दजी गृह्यसूत्रादि ग्रन्थोंका मत लिखतेहैं तो तुलसीरामजीका वारंवार प्रक्षिप्तलिखना अपनेआचार्य्यस्वामीदयानन्दजी सें विरुद्ध तथा मनुस्मृतिके संस्कृतटीकाकारोंसें विरुद्ध दुराग्रहहीहै ॥

हेपाठक—उनवाक्यनको प्रक्षिप्त कहसक्तेहैं जिनको पुरातन भाष्यकार टीकाकारोंने प्रक्षिप्तकहाहो उक्तमहर्षिओंने उनवाक्यनको प्रक्षिप्तनहींकहाहै किन्तु उनवाक्यनके अनुसार विहितमांसके भक्षणका विधानकराहै तो उनसर्वपुरातन भाष्यकार सूत्रकार स्मृतिकार शास्त्रकार टीकाकारप्रभृतिमहर्षिओंसें विरुद्ध नवीनसमाजीजनोका प्रक्षिप्तवाद असत्यहीहै ॥

१६—जब जब किसीनें अत्याचार कराहै व करियेहै तबतब उस २ अत्याचारके बोधकग्रन्थ रचकर विद्वज्जनोंने प्रचलित करेहैं अर करियेहैं, जैसे रावणआदिराक्षसोंके और कंसदुर्योधनआदिकोंके अत्याचारोंके बोधक संस्कृतइतिहासग्रन्थ विद्वज्जनोंके रचित प्रचलितहैं, और राजोंके पातशाहोंके अत्याचारोंविषयकभी अंगरेजीमें फारसीमें, हिन्दीभाषाऽऽदि-कोंमें असंख्य तारीखें, इतिहासग्रन्थ रचेगएहैं ॥

यदि—वेदोंके संहिताभागोंमें, ब्राह्मणभागोंमें, उपनिषद्भागोंमें उनके भाष्यपुस्तकोंमें, श्रौतसूत्र गृह्यसूत्रग्रन्थोंमें, स्मृतिओंमें, उनकी टीकाओंमें, इत्यादिक असंख्यग्रन्थनमें असंख्यवाक्य प्रक्षिप्त करेजातेतो ऐसेमहाऽत्याचारोंके बोधकभी अनेकग्रन्थ रचकर विद्वज्जन अवश्यंप्रचलित कर्ते क्योंकि—असंख्यपुस्तकोंमें असंख्यवाक्यनको दश वीस मनुष्य तो प्रक्षिप्त करहीनहींसक्ते अतः यिह कोई थोडीबात नहींहै परंतु पहिले

किसीभीविद्वान्नें इसविषयका कोईभीग्रन्थ नहींबनाया, और पुरातनको ईभीआचार्य्य उनवाक्यनको प्रक्षिप्त नहींलिखगया तो अब तुलसीरामादि नवीनसमाजीभ्राताओंका प्रक्षिप्तकहना असत्यहीहै ॥

१७—यदि आप पूछेंकि—पशुबलिप्रदानके और मांसभक्षणके विधायकवाक्य यदि प्रक्षिप्त नहींहैं तो बहुतवैदिकमतवालोंकी पशुबलिप्रदानमें व विहितमांसके भक्षणमें प्रवृत्ति दूर क्योंहोगई तो

उत्तर—जैनीसाधुओंके व्याख्यानोंकर जैनमतका असर हिन्दुओंमें बेसमझीसें होनेकर उसमेंप्रवृत्ति दूरहोगई ।

जैनीभाई आपभी स्पष्टकहतेहैं देखो भीमज्ञानत्रिंशिकाग्रन्थकी भूमिकाके ७ वें पृष्ठकी ७वींपंक्तिसें प्र० ३०—

ब्राह्मणोंके धर्मको वेदमार्गको तथा यज्ञमें होतीहिंसाको खण्धक्का इसीधर्मने लगायाहै ॥ कुलाहिंदुस्तानमेंसें पशुयज्ञ निकलगयाहै फ़क्क-छेक दक्षिणमें जहां बौध या जैनोंकी छाया पड़नहींसकीहै वहांही कायमहै ॥

जैनीभाईओंके इत्यादिकलेखोंसें निश्चितहोताहै कि—पशुबलिप्रदानके और मांसभक्षणके विधायक वाक्य प्रक्षिप्तनहींहैं किंतु हिंदुओंमें बेसमझीसें जैनमतका असर होनेकर उनकाप्रचार नहींरहा अतः उनवाक्यनको प्रक्षिप्तकहना असत्यहीहै ॥

हेप्रियपाठक—यिह प्रक्षिप्तहै यिह अप्रमाणहै, हारेहुएपुरुषोंकी यिह दोडंगोरीहैं—क्योंकि विचारिये कि—अतीन्द्रियपदार्थविषयक पूर्ण-

योगजज्ञानवाले जो सूत्रस्मृतिग्रन्थोंके कर्तामहर्षिहैं उनके वाक्यनको योगजज्ञानसें शून्यपुरुष अप्रमाण कैसे कहसक्तेहैं और जिनवाक्यनको पुरातनकिसीभाष्यकार टीकाकारने प्रक्षिप्त नहींलिखाहै, फिर स्वामीदयानन्दजीभी जिनवाक्यनको संस्कारविधिग्रन्थमें लिखचुकेहैं उनवाक्यनको अब प्रक्षिप्त कौनकहसक्ताहै ॥

भावयिह—इससमय अपनीसम्मत्तिको अपने रायको धर्म समझतेहैं उक्तमहर्षिओंके वाक्यनकी अपेक्षा नहींरखते अतः जब अर्थके निर्णयमें प्रमाणदिखाएजातेहैं तब उनसें निरुद्धहुए थकितहुए मेरेभ्राता समाजीओं को या अप्रमाणरूप या प्रक्षिप्तरूप डंगोरीका आश्रय लेनापड़ताहै वास्तवसें पशुबलिदानके व मांसभक्षणके विधायक आर्षवाक्य न अप्रमाणहैं, नांहीं प्रक्षिप्तहैं किंतु आस्तिकपुरुषोंसें माननीय प्रबलप्रमाणहैं ॥

अतः श्रुतिस्मृतिओंसें विहितहोनेकर विहितमांसके भक्षणसें कुछदोष नहींहोसक्ता ।

पूर्वपक्षी०—कहीं धर्मशास्त्रनमें मांसभक्षणको निर्दोषभीकहाहै ॥

आस्तिक०—धर्मशास्त्रनमें बहुतजगें कहाहैकि—देवतापितरआदिकोंको पूजकर समर्पणकर्के मांसभक्षणसें कोईदोषनहींहोसक्ता ।

ऐसेमांसभक्षणमें निर्दोषताके प्रतिपादकप्रमाणोंको मैं अब दिखलाताहूं

मनुस्मृति अ०३१—**क्रीत्वास्वयंवाऽप्युत्पाद्य परोपकृतमेववा ॥ देवान्पितॄंश्चार्चयित्वाखादन्मांसंनदुष्यति ॥** अ० ५ ॥ ३२ ॥

इसश्लोकपर मेधातिथिका मनुभाष्य अ० ३२ — **मृगपक्षि**

मांसविषयमिदंशास्त्रम् । रुरुपृषतादीनां शशकपिञ्जलादीनांमांसंदेवानांपितॄणांचार्चनंकृत्वा खादतोनदोषः ॥ अर्थ—मृगपक्षीआदिकोंके मांसको मोललेकर वा आप मारकर वा किसीभ्रातामित्रआदिकने दियाहो, ऐसेतीनप्रकारके मांसको देवतापितरोंको पूजकर खानेवालेपुरुषको दोष नहींहोता ॥

मनुस्मृति प्र० ३३—चराणामन्नमचरा दंष्ट्रिणामप्यदंष्ट्रिणः ॥ अहस्ताश्चसहस्तानां शूराणांचैवभीरवः ॥ अ० ५ ॥ २९ ॥

मनुस्मृति प्र० ३४—नात्तादुष्यत्यदन्नाद्यान् प्राणिनोऽहन्यहन्यपि ॥ धात्रैवसृष्टाह्याद्याश्च प्राणिनोऽत्तारएवच ॥ ५ ॥ ३० ॥

इसश्लोकपर सर्वज्ञनारायणकीटीका प्र० ३५—अहन्यहन्याहारबुद्ध्याऽदन्नपि न दुष्यति न पापं लभते ॥

इसीमनुश्लोकपर कुल्लूकभट्टकीटीका प्र० ॥ ३६ ॥

भक्षयिता भक्षणार्हान्प्राणिनः प्रत्यहमपि भक्षयन्नदोषंप्राप्नोति, यस्माद्विधात्रैव भक्षणार्हा भक्षयितारश्च निर्मिताइति

हरिणगौआदि चरजीवोंका अचर तृणपत्रादिक अन्नहै और व्याघ्रादिक दंष्ट्रावालेजीवोंका दंष्ट्रारहित हरिणादिकजीवअन्नहै, हस्तवालेमनुष्यनका हस्तरहित मत्स्यआदिक अन्नहै, सिंहप्रभृति शूरोंका हस्तीआदिकभीरुजीव अन्नहै ॥२९॥

भक्षणयोग्यजीवोंको हररोज खाताहुआ मनुष्य दोषवाला नहींहोता क्योंकि—विधातानेंही भक्ष्यजीव और उनके भक्षकजीव रचेहैं ॥

याज्ञवल्क्यस्मृति प्र० ३७— **देवान्पितॄन्समभ्यर्च्य खादन्मांसंनदोषभाक् ॥** अ०१॥ १७८ अर्थ देवतोंको पितरोंको पूजकर मांससेंहोमकर मांसखानेवाला मनुष्य दोषभागी नहींहोता

भीष्मपितामहका वाक्य महाभारत प्र० ३८—**विधिनावेददृष्टेन तद्भुक्त्वेहनदुष्यति ॥ यज्ञार्थे पशवःसृष्टा इत्यपिश्रूयतेश्रुतिः ॥** प०१३ ॥ अ० ११६ ॥ १४ ॥ अर्थ—वेदमें देखेविधिसें उसमांसको खाकर मनुष्य दोषवाला नहींहोता, क्योंकि यज्ञोंकेलिये पशुओंको रचाहै, यिहभी वेदवाक्य सुननेमें आताहै

महाभाररत प्र० ३९ **अत्रापिविधिरुक्तश्च मुनिभिर्मांसभक्षणे ॥ देवतानांपितॄणांच भुंक्तेदत्वापियःसदा ॥ यथाविधियथाश्राद्धं नप्रदुष्यतिभक्षणात्** पर्व३ ॥ अ० २०८ ॥ १४ ॥ अर्थ—यहां मांसभक्षणमें मुनिओंने विधिकहाहै कि-विधिसें देवतोंको और श्राद्धमें पितरोंको जोपुरुष सदादेकर्के मांसको खाताहै वोपुरुष मांसभक्षणसें दोषवाला नहींहोता ॥-

मार्कण्डेयपुराण प्र०४० पितृदेवादिशेषंच श्राद्धेब्राह्मणकाम्यया ॥ प्रोक्षितंचौषधार्थंच खादन्मांसंनदुष्यति ॥ अ० ३२ ॥ ४ ॥ अर्थ—पितृकर्मश्राद्धमें अवशिष्टमांसको, और देवता अतिथिआदिकोंको अर्पणकर्के अवशिष्टमांसको और ब्राह्मणोंकी कामनासें सिद्धकरे मांसको, अर प्रोक्षितमांसकोअर्थात् यज्ञलिये वेदमंत्रनसें संस्कृत मांसको, और औषधलिये मांसको खानेवाला पुरुष दोषवाला नहींहोता

भविष्यपुराणप्र०४१—प्राणात्ययेप्रोक्षितंचश्राद्धेचद्विजकाम्यया । पितॄन्देवांश्चार्पयित्वा भुञ्जन्मांसंन दोषभाक् ॥ब्रह्मपर्व१ अ०१८६॥२९॥

अर्थ— प्राणान्तसमय अर्थात् औषधलिये मांसको, और प्रोक्षितमांसको श्राद्धमेंमांसको अर ब्राह्मणोंकी कामनासें सिद्धकरे मांसको, और देवतोंको पितरोंको अर्पणकर्के मांसको खानेवालापुरुष दोषभागी नहींहोता ॥

विदितहो कि—वेदस्मृतिआदिकोंमें मांसविषयकेइत्यादिकनानावाक्यनको देखकर जैनीभाईजी अपनेग्रंथमें । ऐसेनिर्दयानिर्लज्जोंको ऋषिओंमेंबतलायाहै ॥ धिगहैऐसेसतयुगको और धिगहैजिनबतलायाहै ॥ इत्यादिक कुत्सितशब्द परमपूज्य महर्षिओंमें लिखेहैं सो ऐसेशब्दोंका लिखना उसलेखकजैनीभाईकी "अयोग्यताहै" नालायकीहै क्योंकि—निवृत्तिमार्गवाले और प्रवृत्तिमार्गवाले सर्वमनुष्यमात्रप्रति मांसके त्यागका उपदेश एकजैनमतमेंहीहै, होरकिसी

मतमें ऐसा उपदेश नहींहै तो हेभ्रातः—होरसर्वमतोंसें विरुद्धहोनेकर युक्तिहीन एकस्वमतमें दुराग्रहकर अन्यमतोंके आचार्य्योंको निकृष्टशब्दकहने क्या अयोग्यता नहींहै ॥

हेपाठक—आश्चर्य्यहै कि—सर्वमतोंके आचार्य्योंको और 'लायक' योग्य बुद्धिमानोंको जैनीभाई कुछ जानतेहीनहीं॥

हेभ्रातः—मनुष्यमात्रको मांसका त्याग उचितहै अथवा अधिकारभेदसें किसीको मांसका त्याग किसीको मांसका खाना उचितहै,इसअर्थका निर्णय तो अब अवश्यंकराहीचाहिये, जैनीभाईओंसें प्रमाणोंद्वारा वो निर्णय नहीं होसक्ता क्योंकि उनके और हमारे माननीयप्रमाण भिन्न२हैं अतः जैनी भ्राताओंसें विचार तो युक्तिओंद्वारा होसक्ताहै इस्सें वो निर्णय तृतीययुक्ति प्रकाशमें कराजावेगा ॥

पूर्वपक्षी०—यदि मांसखानेसें दोष न होतातो पहिलेदेवतापितर अतिथिआदिकोंको समर्पणकरनेकी क्या आवश्यकताथी अर्थात् देवताऽदि-कोंको समर्पणकरे विनाही मांसको खालेते ॥

आस्तिक०—देवताअतिथिआदिकोंको वोही पदार्थ समर्पणकराजाताहै जो निर्दोषहो शास्त्रविहितहो, नां कि निषिद्धभी । और धर्मशास्त्रोंमें मांस कीन्यांई देवताअतिथिआदिकोंके उद्देशसेंविना अन्नकेभी पकानेसें व खानेसें महापापकहाहै देखिये—

भगवद्गीता—भुञ्जतेतेत्वघंपापा येपचन्त्यात्मकार-णात् ॥अ०३॥१३॥—

मनुस्मृति—अघंसकेवलंभुंक्ते यःपचत्यात्मकार-णात् अ०३॥११८॥

इसमनुवाक्यपर कुल्लूकभट्टकी टीका—यस्त्वात्मार्थमेवान्नं पक्त्वाभुङ्क्ते देवादीभ्योनददाति स पापहेतुत्वात्पापमेवकेवलंभुङ्क्ते नान्नम् । तथाचश्रुतिः—केवलाघोभवतिकेवलादी ॥

अर्थ—जोपुरुष अपनेवास्तेही अन्नपकाकर खाताहै देवताअतिथिआदिकोंको नहींदेता वो पापका हेतुहोनेकर वोपापीपुरुष अन्न नहींखाता किंतु केवलपापकोहीखाताहै अर्थात् वो अन्नखाना पापहीहै,

वैसेही श्रुति कहतीहै कि- केवलआपही खानेवाला केवलपापी होताहै ॥

इत्यादिक प्रबलप्रमाण जैसे देवताऽदिकोंके उद्देशसें बिना अन्नके पकानेसे खानेसे पाप कहतेहैं, वैसेही देवताऽऽदिकोंके उद्देशसे बिना मांसके पकाने खानेसे पाप कहते हैं अतः विहितअन्न व विहितमांस तुल्य ही है ॥

विदित हो कि—वेदोंकी प्रत्यक्षनिन्दाका ही नाम नास्तिकता नहींहै किन्तु वेदपाठका, परिवर्तन, बदल देना वा दुराग्रहसें विपरीत अर्थ करना, वा वेदवाक्यनके सत्यअर्थका दुराग्रहकर नहीं मानना, इत्यादिकभी नास्तिकताके लक्षणहैं क्योंकि यह सबलक्षण वेदोंमें अश्रद्धाकर होते हैं, यदि वेदोंको ईश्वररचित मानें तो श्रद्धाहो फिर यह सबलक्षण नहीं हो सकते ॥

अतः वेदमतसें विपरीतनिश्चयवालेका नाम नास्तिक है, इससें हेभ्रातृजन नास्तिकनाम किसीनिन्दाका बोधक नहींहै अतः नास्तिक नामके श्रवणसें जैनीभाईआदिकोंको क्षोभ करना योग्य नहीं ।

पूर्वपक्षी० - यद्यपि उक्त बहुतप्रमाणोंमें मांसको घृततैलशाकआदिकों-

कीन्यांई शुद्धपवित्र कहाहै, और बिनामांगे कोईदे तो उसमांसके वापसहटानेका निषेधकराहै, उसके ग्रहणकरणेका विधानकराहै, और देवतापितरआदिकोंको अर्पणकर्के मांसखानेसें कोईदोष नहींहोता,, यिहभी स्पष्टबोधनकराहै तथापि अहिंसाप्रदीपके द्वितीयभागमेंलिखाहै कि—वेद स्वतःप्रमाणहै इसलिये हम मांसत्यागके विषयमें प्रमाणराज वेदकेही पहिले प्रमाण दिखाकर पीछे औरसब शास्त्रादिकोंकेभी प्रमाण देंगे ॥—

श्रीवेदभगवान्—**इषेत्वा१॥ऊर्जेत्वा२॥वायवस्थ३॥ देवोवःसविता प्रापयतु श्रेष्ठतमायकर्मण आ प्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागम्प्रजावती रनमीवा अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशꣳसो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यातबह्वीः४॥यजमानस्य पशून्पाहि५॥**यजुरकाण्डिका १ ॥ अर्थ—पूर्वप्रकरणमें अर्थयिह है कि–हेगौओ सबका प्रेरक ज्योतिःस्वरूप परमेश्वर तुमको यज्ञस्वरूप श्रेष्ठकर्मकेलिये बहुतघासवाले बनमें पहुंचावे जिससें तुम अपनी इच्छा के अनुसार घासोंको खाकर हेनमारणेयोग्य गौओ, इन्द्रके वास्तेहविबनानेके लिये उस हविके कारण, दग्धको बढाओ, ॥ जीवितसन्तानवाली, कृमिपीडाआदि क्षुद्ररोगरहित, तुमको चोरपुरुष चुरानेको मत समर्थहो, चण्डाल वा व्याघ्रादिकजीव मारनेको मत समर्थ हो, इस गौओंकेस्वामी यजमानके पास निरन्तर रहने वालीं बहुतसीं हो ॥

आस्तिक०१–हे मित्र, इषेत्वा, इत्यादिक पहिले तीनमंत्रनका अर्थ तुमने क्यों नहीं लिखा । यदि कहो कि–इनमंत्रनका अर्थ मांसके प्रसंग

में उपयोगी नहींथा इसलिये नहीं लिखा तो यहां इनमंत्रोंके लिखने का भी कुछ उपयोग नहीं था ॥

२–यिह चतुर्थमंत्रभी प्रकरणमें उपयोगी नहींहै क्योंकि–तुमारेलिखे अर्थानुसारभी इसचतुर्थमंत्रमें मांसका कोईप्रसंग नहींहै, मांसकाबोधककोई-पदभी नहींहै मांसका त्यागभी नहींकहाहै अतः यिहचतुर्थमंत्रभी प्रकरणमें उपयोगीनहींहै ॥ –

पूर्वपक्षी०–**यजमानस्य पशून्पाहि** ॥ यह यजुर्वेदके प्रथमाध्यायकी १ कण्डिकाका पंचममंत्रहै, भाव–हेदेवते यजमानके पशुओं-की व्याघ्रचोरादिदुष्टजीवोंसें रक्षाकर

आस्तिक०—हेमित्र इसपंचममंत्रका शाखादेवताहै अतः हेपलाशशा-खादेवते, ऐसेलिखना योग्यथा—

यहां प्रसंग यिहहै कि —इषेत्वा इसमंत्रसें जो पलाशशाखा गौओंसें वछडोंको अलगकरनेकेलिये काटीथी वो कार्य्यकर्के उच्चैस्थानपर उसशाखा-को इसपंचममंत्रसें स्थापनकर्तेहैं —

इसपंचममंत्रमेंभी पलाशशाखादेवतासें यजमानके गौवत्सआदिपशुओं-की व्याघ्रचोरादिकोंतें रक्षाकी प्रार्थनाकीहै ॥

हेपाठक—इसपंचममंत्रमेंभी मांसका वाचककोईपद नहींहै, मांसका प्रसंगभी नहींहै, मांसभक्षणका त्यागभी नहींकहाहै, अतः यिह पंचममंत्रभी प्रकरणमें अनुपयोगीहीहै ॥

पूर्वपक्षी–मांसखानेके केवल त्यागसें गोरक्षा और गोवृद्धि होसक्ती है इसलिये मांसका त्याग करा चाहिये ॥

आस्तिक०–रामलक्ष्मणआदिक अवतार और वेदवेताब्राह्मण तथा नल

अम्बरीष युधिष्ठिरप्रभृति महाराजे मांसकोखाते खुलातेरहेहैं, वो गौओंकी रक्षावृद्धिभी कर्तेरहेहैं, अतः मांसके त्यागसें गौओंकी रक्षावृद्धि नहींहोसक्ती किंतु गौओंकी सेवाकर पालन पोषणकर गोरक्षावृद्धि होसक्तीहै ॥

पूर्वपक्षी० नीचेलिखे मंत्रमें परमेश्वरसें प्रार्थना की जातीहै कि–यह गौ यजमानको पूर्णआयु देनेवालीहो यथा–**साविश्वायुः** ॥यजु. क. ४॥१॥ यज्ञमें आचार्य्य गोदोहनेवालेसें कहताहै कि–हेगोदोहक जिसगौको तुमने दुहाहै वह गौ विश्वायुः इसनामसें कहनेयोग्यहै तात्पर्य्य कि–मैं ईश्वरसें प्रार्थना कर्ताहुं कि–वहगौ तुझे पूर्णआयु देनेवालीहो ॥

आस्तिक०–हेमित्र–यदि यज्ञमें ईश्वरसें आचार्य्यनें ऐसी प्रार्थनाकी तो हुआकरा परन्तु अजआदिकोंके मांसभक्षणके प्रसंगमें तो कुछभीसिद्ध नहींहोता, आश्चर्य्य है कि–प्रसंगमें अनुपयोगी ऐसेऐसेप्रमाण लिखतेहुए तुमको लज्जाभी नहींआती ॥

पूर्वपक्षी ० **साविश्वकर्मा** ॥ यजु.क.४॥२॥

हे गौदोहक जिस गौको तुमने दुहा है वहगौ संसारकी स्थितिका कारण है क्योंकि–यज्ञों में हविका साधन होकर सब की कामनाओंको सिद्ध करती है वह हमारे इस यजमानकी कामनाको सिद्ध करे ॥

आस्तिक० – इसमंत्रका तो–हेगौदोहक हविलिये घृतदुग्धका साधनहोनेकर वो गौ संपूर्ण कर्मकाण्डको सम्पादन करने वाली है, यह अर्थहै होर अधिकअर्थ तो तुमारी कल्पना है वोभी स्वीकार कर्ता हूं तथापि मांसके प्रकरणमें यह वाक्यभी उपयोगी नहींहै क्योंकि–इस मंत्रमें मांसका कोई प्रसंगभी नहींहै मांसका बोधक कोई पदभी नहीं है, मांसभक्षणका त्यागभी नहीं कहाहै अतः मांसके प्रसंगमें यह

मंत्रभी अनुपयोगीहीहै, हे भ्रातः क्या विद्वान्पुरुष प्रकरणमें ऐसे अनुपयोगी वाक्यका प्रमाण देते हैं ॥

पूर्वपक्षी—गौ हविका कारण होकर जगतको स्थिर रखतीहै, इसमें और भी, श्रुतिप्रमाणहै जैसे—**अग्ने वैधूमोजायते धूमाद भ्रमभ्राद्वृष्टिः** यज्ञकीअग्निसें धूम पैदाहोकर मेघबनताहै, फिर मेघसें वर्षा होती है, इसीपर श्रीकृष्णभगवान्की व मनुजी की सम्मतिएं हैं ॥

आस्तिक०हेमित्र, यज्ञलिये दुग्धका कारण गौहै परंतु श्रुति गीता मनुजीके इन वाक्यनमेंभी मांसका कोई प्रसंग नहींहै, मांस का वाचक कोई पद भी नहीं है, मांसभक्षणका त्याग भी नहीं लिखा है अतः मांस के भक्ष्याभक्ष्यके प्रकरणमें यह वाक्य भी अकिंचित्करहैं अर्थात् कुछ सिद्ध नहीं कर सकते इससें प्रकरणमें अनुपयोगी ही हैं ॥

पूर्वपक्षी०—यदि कृष्णजीके वचनपर विश्वास रखते हो, संसार को स्थिर रखना चाहते हो, तो मांस छोडकर श्रीकृष्णजीकीन्याई गौओंकी सेवा करो ॥

आस्तिक०—हे भ्रातः—यद्यपि श्रीकृष्णजी जबतक नन्दगोप के गृह में गोपालरूपधारेरहे, तबतक बच्छेओं को गौओं को चराते रहे हैं तथापि श्री कृष्णजीका ऐसा वाक्य तो कोईएकभी तुमने नहीं लिखा कि जिसमें श्री कृष्णजीने कहाहो कि, मांसको मत खावो प्रत्युत ब्रजमें नन्दगोपआदिकोंको स्वयं श्रीकृष्णजीने प्रेरणाकीथी कि तुम मेध्यपशुको मारकर गोवर्द्धनकी पूजा करो, ऐसी कृष्णजीकी प्रेरणासें ब्रजवासी नन्दआदि गोपालजनोनेभी वैसेही कराथा, तब क्या संसार स्थिर नहीं रहाथा, देखो—

विष्णुपुराणप्र०४२—तस्माद्गोवर्द्धनःशैलो भवद्भिर्विविधार्हणैः। अर्च्यतांपूज्यतांमेध्यंपशुंहत्वाविधानतः

अंश ५॥ अ० १० ॥ ३८ ॥

अर्थ—जिसहेतुसें वैश्यजनगोपालोंके गौ और पर्वतही पूज्यहैं उससें तुम नन्दप्रभृतिगोपालोंने विधिसें मेध्यपशुको मारकर नानापुष्पादिकोंसें गोवर्द्धनपर्वतकी सेवापूजाकरणीयोग्यहै ॥

विष्णुपुराणप्र०४३—तथाचकृतवन्तस्ते गिरियज्ञं-व्रजौकसः। दधिपायसमांसाद्यैर्ददुःशैलबलिंततः॥ द्विजांश्चभोजयामासुःशतशोऽथसहस्रशः ॥ अ०५॥अ०१०॥४४॥

अर्थ —फिर ऐसीश्रीकृष्णजीकी प्रेरणासें व्रजवासी नन्दआदिक गोपभी वैसेही गिरियज्ञकोकर्तेभए, दधिदुग्धमांसादिकोंसें गोवर्द्धनपर्वतप्रति बलिकोदेतेभए, और सैंकड़ेहजारोंब्राह्मणोंको भोजनकरवातेभए ॥

हेपाठक-देखो विष्णुपुराणमें साक्षात्कृष्णजीने श्रीमुखसें गौओंकी रक्षालिये वृद्धिलिये पशुबलिप्रदानमें नन्दआदिकगोपजनोंकोप्रेरणाकी, फिर नन्दप्रभृतिगोपजनोंनेभी वैसेहीकृष्णजीके कथनानुसार मांसादिकोंसें बलिप्रदानकिया और ब्राह्मणोंकोखुलाया ॥

हेमित्र-श्रीकृष्णजीके ऐसे पशुबलिप्रदानकेविधायक स्पष्टवाक्यनको छिपाकर विपरीतअर्थके लिखनेसें तुम क्या आस्तिक कहलाय सक्तेहो ॥

हेपाठक-गोपजनोंनेदी उसबलिको पर्वतके देवतारूपहुए कृष्णजी

no: 167
10.3.64

खातेभीभए, यिहभी वहांही कहाहै देखो विष्णुपुराणप्र०४४—

गिरिमूर्द्धनिकृष्णोऽपि शैलोऽहमितिमूर्त्तिमान् । बुभुजेऽन्नंबहुविधं गोपपर्याहृतंद्विज ॥ अं०५॥अ०१०॥४६॥ तेनैवकृष्णोरूपेण गोपैःसहगिरेः शिरः ।अधिरुह्यार्चयामास द्वितीयामात्मनस्तनुम् ॥ ४७ ॥

अर्थ—गोवर्धनपर्वतके शिखरमें "मैंपर्वतहूं" ऐसेसत्यसंकल्पसें पर्वतके देवमूर्त्तिहुए कृष्णजी गोपजनोंने प्राप्तकरे बहुतप्रकारके उसअन्नको खातेभए ॥४६॥

और पहिले उसीकृष्णरूपसें गोपोंकेसाथ गोवर्धनपर्वतके शिखरपर चढ़कर उक्तबलिप्रदानसें पूजा कर्तेभए और दूसरीपर्वतकी देवतामूर्त्तिसें उसको खाते भए ॥

हेमित्र=यदि कृष्णचन्द्रमें तुमारीश्रद्धाहै, व तुम आस्तिकहुएचाहतेहो तो इसकृष्णजीके उपदेशको देखकर श्रुतिस्मृतिओंके अनुसारीवर्तावकरो ॥

पूर्वपक्षी० नीचेलिखे मंत्रोंसेंबढ़कर पवित्र और सत्यभूतोंकी दयाका उपदेश औरक्याहोसक्ताहै देखो—

भेषजमसि भेषजङ्गवेऽश्वायपुरुषायभेषजम् । सुखम्मेषायमेष्यै ॥यजु०अ०३॥५९॥

अर्थ—हेरुद्र आपऔषधकेसमान सबउपद्रवोंके दूरकरणेवालेहो इस कारण हमारे गौ घोड़े पुत्रपौत्रादिकपरिवारके रोगदूरकरनेलिये औषधिदो

'मेष' छतरा मेषीके शान्तिपूर्वकजीवनकेलिए अपनेसुखदायक स्वरूपका प्रकाशकरें ॥

यथासमसद्द्विपदेचतुष्पदे॥यजु०अ०१६॥४८॥

अर्थ हेरुद्र हमारे द्विपदजीवोंका कल्याणहो, हमारे चतुष्पद गौआदि पशुओंको कल्याणहो ॥

आस्तिक०–इनमंत्रोंमें रुद्रपरमात्मासें प्रार्थनाकीहै कि–हेरुद्रपरमात्मन् आप औषधकेसमान रोगोंकेनिवर्तक अपनेसुखस्वरूपका प्रकाशकरो जिससें हमारे द्विपदे पुत्रआदिकोंके चतुष्पद गौआदिपशुओंके सुखरहे ॥

हेमित्र–ऐसीप्रार्थनातो पुत्रआदिपरिवारवाले और पशुओंवाले सर्व मनुष्यनको करणीयोग्यहीहै क्योंकि–द्विपदेपरिवारके, चतुष्पद गौअश्व आदिकोंके और मेषआदिक क्रीड़ामृगोंके, नीरोगता सुख अपेक्षितहीहै परन्तु–इससेंभी अजशशहरिणादिकोंके मांसभक्षणकेप्रसंगमेंतो कुछसिद्ध नहींहोता क्योंकि–अजशशहरिणादिकजो भक्ष्यहैं सोभीबालवृद्धरोगी अज आदिकभक्ष्यनहींहैं किन्तु नीरोग युवा मारेहुएही भक्ष्यहैं, यिह चरकसंहिता-दिकग्रन्थोंमें प्रसिद्धहीहै ॥

देखो–शहरोंमें जो खानेलिये भेडबकराऽदिक मारेजातेहैं उनकी नीरोगताकी परीक्षा प्रथमडाकटरकर्ताहै उस्सेंपीछेवो मारेजातेहैं, परीक्षामें जो भेडबकरा बीमार मालूमहोवेतो उसको डाकटरसाहिब हुकमन मारनेसें रोकदेताहै, इस्सें अजआदिक भक्ष्यजीवोंकीभी नीरोगता रक्षा अवश्यंअपक्षितहीहै उसीसें मुसलमानभाईभी कहाकर्तेहैं कि–

"मालजानकी खैर माल जानकी खैर" ॥

हेभ्रातः–तुमारेलिखे इनमंत्रोंमेंभी न तो कोई मांसका प्रसंगहै, और मांसकाबोधक कोईपदभी नहींहै, मांसकेभक्षणका त्यागभी नहींकहाहै,अतः

मांसकेप्रसंगमें यिह मंत्रभी अनुपयोगीहीहैं। हेमित्र ऐसेऐसे अनुपयोगी वाक्य लिखकर तुम वेदनके सिद्धान्तको वदलतेहो

पूर्वपक्षी ०—**माहिंस्यात्सर्वाभूतानि** ॥ श्रुतिः किसीभी-जीवकी हिंसा नहीं करणीचाहये ॥

आस्तिक०—१-हे मित्र यिह सामान्यविधिवाक्यहै इसीको उत्सर्गविधि कहतेहैं, और **अग्नीषोमीयं पशुमालभेत,,** इत्यादिक विशेषविधिवाक्य हैं, इनहीको अपवादविधि कहतेहैं, यिहशारीरकके अ'३। पाद १॥ सूत्र २५ वेंके भाष्यमें श्रीशंकराचार्य्यस्वामीजीभी स्पष्टलिखेतेहैं देखो शाङ्करभाष्य प्र०४५—**ननु नहिंस्यात्सर्वाभूतानि इतिशास्त्रमेव भूतविषयांहिंसा मधर्मइ त्यवगमयति वाढम् उत्सर्गस्तुस अयंचापवादः अग्नीषोमीयं पशुमालभेतइति ॥ उत्सर्गापवादयोश्च व्यवस्थितविषयत्वम् ॥** अर्थ—शंका यिहहै कि-"सर्वजीवोंकी हिंसा नकरे" यिहशास्त्रही जीवोंकी हिंसाको अधर्मरूप बोधनकर्ताहै, इसका उत्तर भाष्यकार कहतेहैं कि-यद्यपि ऐसेहै तथापि सो उत्सर्गविधिहै और **अग्नीषोमीयं पशुमालभेत** ॥ अर्थ—अग्नि और सोमदेवतानिमित्तक अजपशुको मारे, यिह अपवादविधिहै इनदोनोप्रकारके विधिवाक्यनका भिन्नभिन्न सामान्य और विशेष विषयहोताहै अर्थात् उत्सर्गविधिका सामान्य और अपवादविधिका विशेषविषयहोताहै अतः इनविधिवाक्यनका परस्पर विरोध नहींहै इस्सें इनदोनों विधिवाक्यनका परस्पर बाध्यबाधकभावभी नहींहै ॥

जैसे दृष्टान्त मनुस्मृति—**मत्स्यादःसर्वमांसाद स्तस्मान्मत्स्यान्विवर्जयेत् ॥ अ० ५ ॥१५॥**

अर्थ—मत्स्यके खानेवाला सर्वमांसखानेवाला कहियेहै अतः मत्स्यनको नखाए, यिहउत्सर्गविधिहै, और मनुस्मृति प्र० ४६—**पाठीनरोहितावाद्यौ नियुक्तौहव्यकव्ययोः ॥ राजीवान्सिंहतुण्डांश्च सशल्कांश्चैवसर्वशः ॥ अ० ५ ॥१६॥**

अर्थ—पाठीन रोहित मत्स्य भक्ष्यहैं वो देवकर्म पितृकर्ममेंभी विहितहैं, राजीव सिंहतुण्ड और सर्वप्रकारके सशल्क मत्स्यभी भक्ष्यहैं ॥ यिह अपवादविधिहै ॥

हेपाठक—अपवादविधिके विशेषविषयसें भिन्न शेषसामान्यविषयमें उत्सर्गविधि वर्तेहै, यिह सार्वत्रिकनियमहै ॥

जैसे दृष्टान्तमें मनुस्मृतिका१६वांश्लोकरूप अपवादविधिका विषय जो पाठीन रोहित राजीव सिंहतुण्ड सशल्क,, यिहपांचप्रकारके मत्स्य भक्ष्यहैं उनसेंभिन्न शेषमत्स्यनके त्यागमेंमनुका१५वांअर्द्धश्लोकरूप सामान्यविधि वर्तेहैं ॥

दार्ष्टान्त—**अग्नीषोमीयं पशुमालभेत,**

इत्यादिकअपवादविधिवाक्यनके विशेषविषय अजशशहारिणादिकोंसें भिन्न सर्वसामान्यजीवोंकी हिंसाकेत्यागमें **नहिंस्यात्सर्वाभूतानि,**—

यिहउत्सर्गविधि वर्तेहै

ऐसा उत्सर्गविधिका सामान्यजीवरूप विषय भिन्नहै और—

'अग्निषोमीयं पशुमालभेत' इत्यादिक अपवादविधिओंका अजशशहरिणादिरूप विशेषविषय भिन्नहैं ॥

ऐसे अपवादविधिओंसें विहित अजशशहरिणादिक विशेषजीवोंके बलिप्रदान और मांसभक्षणके प्रसंगमें उत्सर्गविधिका प्रमाणदेना अनुपयोगीहीहै॥

२—हेभ्रातः-ऐसावाक्य सामवेदकी छान्दोग्यउपनिषदमेंहै वोदेखो प्र० ४७—अहिंसन्सर्वाभूतान्य न्यत्रतीर्थेभ्यः ॥

इसकी टीका—तीर्थनाम शास्त्रानुज्ञाविषय स्ततो ऽन्यत्रेत्यर्थः सर्वाश्रमिणां चैतत्समानम् ॥

अर्थ—तीर्थोंसें अन्यत्र सर्वजीवोंकी हिंसा न करे अर्थ यह यहां शास्त्र की आज्ञाके विषयका नाम तीर्थहै ऐसे 'तीर्थोंसें' शास्त्रकीआज्ञाके विषयोंसें अन्यत्र सर्वजीवोंकी हिंसा न करे, यिहउपदेश सर्वआश्रमीओंको समानहै ॥

तात्पर्य यिहहै कि—संन्यासीओंके भिक्षाटनादिकोंसें जो क्षुद्रजीवोंकी हिंसाहोतीहै, और गृहस्थजनोंके जो देवयज्ञआदिकोंमें हिंसाहोतीहै वो शास्त्रोंसें विहितहै अर्थात् वेदशास्त्रोंकी आज्ञाकाविषयहैं वो यहांउपनिषद्में तीर्थपदका अर्थहै उनसें अन्यत्र सर्वजीवोंकी हिंसानकरे, यिह उपनिषद् वाक्यका अर्थहै, यही—माहिंस्यात्सर्वाभूतानि, इसउत्सर्ग विधिवाक्यका अर्थहै ॥

पूर्वपक्षा०—औरदेखोवेदमें गौओंकी कितनी स्तुति और प्रार्थना

कीगईहै जिनकेलिए आपके हृदयमेंकुछभी प्रीतिनहींहै तद्यथा- **यूयंमे गावो मेदयथा कृशंचिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम् । भद्रंगृहंकृणुथा भद्रवाचोबृहद्वोवयउच्यते सभासु** ऋ, ६ ॥ २८ ॥ ६ ॥

हेगौओ तुम दुबलेकोभी हृष्ट पुष्ट बना देती हो, हे भली बानी वालिओ मेरे घर को भद्र, कल्याणयुक्त, बना दो हमारी सभाओं में तुम्हारी बड़ीशक्ति कहीजातीहै ॥

आस्तिक०-गौओंकी स्तुति और प्रार्थनाकीहै तो हछाकियाहै परंतु इसमंत्रमेंभी यह तो नहींकहा है कि-अजशशहरिणआदिकोंका बलिप्रदान मतकरो,अजआदिकोंके मांसको मतखाओ अतः मांसभक्षणके प्रसंगमें यिहमंत्रभी अनुपयोगीहीहै बहुत क्या लिखुं हेअसत्यप्रतिज्ञ तुमने प्रतिज्ञा कीथी कि-हम मांसत्यागके विषयमें प्रमाणराज वेदकेही पहिले प्रमाण दिखाकरपीछे और सबशास्त्रादिकोंकेभी प्रमाणदेंगे, सो वेदका तुम एकभी प्रमाण नहींलिखसके ॥

और जो लिखेहैं वो प्रकरणमें अनुपयोगीहीहैं क्योंकि उनवाक्यनमें मांसका वाचकपदभीनहींहै, मांसकाप्रसंगभी नहींहै, मांसकेभक्षणका निषेधभी नहींकराहै ॥

प्रश्न-यदि पूर्वपक्षीने वेदोंमें ऐसाकोईवाक्य नहींदेखा अतःनहींलिख सका तो प्रमाणराजवेदके प्रमाणदेनेकी प्रतिज्ञा क्योंकरदी ॥

उत्तर-नास्तिकतासें प्रतिज्ञाकरदी अर्थयिह जिनकेचित्तमें यिहविश्वास है कि, वेद ईश्वरसें प्रकटहुएहैं अतःपरमप्रमाणहैं, वेदनसें विहितअर्थ हमारे

लिये परमपथ्यहै, उनकीआस्तिकसंज्ञाहै, वो आस्तिकजन वेदोंके वास्तव अर्थको छिपाकर अन्यथाअर्थ लिखनहींसक्के, और जो विश्वासके अभावसें वेदनकेअर्थको वदलतेहैं वो आस्तिक नहींकहलायसक्के क्योंकि–वो वेदोंसें विरुद्धनिश्चयवालेहैं ॥

पूर्वपक्षी०–आपनेयदि पशुबलिप्रदानमें और मांसभक्षणमें कोईवेद वाक्य देखाहै तो दिखाना चाहिये ॥

आस्तिक०–हेमित्र–ऐसे वेदसूत्रस्मृतिओंके वाक्य बहुतहीहैं उनमें केईकवाक्य दिखलावुंगा परंतु अबी धैर्य्यकरो पाहिले तुमारे वाक्यनका निर्णय तो करलंवु ॥

पूर्वपक्षी०–आहिंसापर भगवान्पतञ्जलिजीकी सम्मति **अहिंसा सत्यास्तेयब्रह्मचर्य्यापरिग्रहायमाः** यो.पा, २॥ ३०॥अर्थ मनसें व बाणीसे व शरीरसे किसीभीजीवको पीडादेनी हिंसा कहातीहै और सबप्रकारसें सबसमयमे किसीभीजीवकेसाथ द्रोहनकरणा अहिंसाहोतीहै ॥

आस्तिक०–इत्यादिक तुमारेलिखे पातंञ्जलसूत्रभी इसप्रकरणमें अनुपयोगीहीहैं क्यों अनुपयोगीहै सुनिये ॥

१, सम्पूर्णपातञ्जलशास्त्र योगाभ्यासरूप निवृत्तिमार्गसें संबन्ध रखता है निवृत्तिमार्गवाले योगाभ्यासीको मांस खाना उचित नहीं है" यिहपूर्व लिखचुकाहुं अतःप्रवृत्तिमार्गके मांसभक्षणप्रसंगमें निवृतिमार्गके सूत्र लिखने अनुपयोगी स्पष्टहीहैं ॥

२–यदि प्रवृत्तिमार्गके प्रकरणमें निवृत्तिमार्गके सूत्रकथनकरोगे तो इसीपातञ्जलसूत्रमें कथनकरा मैथुनका त्यागरूपब्रह्मचर्य्य,और धनादिकों का असंग्रहरूप अपरिग्रहभी प्रवृत्तिमार्गवाले गृहस्थजनोकेलिये कहनाहोगा

वो गृहस्थजनोंलिये अपरिग्रहआदिकोंकाकथन तो अयुक्तहीहै अतःप्रवृत्ति मार्गके प्रसंगमें निवृत्तिमार्गके पातंजलसूत्रलिखने अनुपयोगीहीहैं ॥

३–देखो प्रमाणांक ४९ आदिकोंमें महर्षिओंने वेदविहितहिंसा अहिंसा रूपही मानीहै ॥

पूर्वपक्षी०–श्रीभगवान्कृष्णजीकी सम्मत्ति **ब्रह्मचर्य्यमहिंसाच शारीरंतपउच्यते** ॥ गी०अ० १७।१४॥ आठप्रकारका ब्रह्मचर्य्य और योगशास्त्रमें कहीहुई ८१ प्रकारकी हिंसाकाअभाव अहिंसा, यहसब शरीरका तप कहाताहै ॥

अहिंसासत्यमक्रोध स्त्यागःशान्तिरपैशुनम् ॥
दयाभूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवंह्रीरचापलम् ॥

अ, १६ ॥२॥ हे अर्जुन अहिंसा, सत्यबोलना, क्रोध न करना, कोमलता, लज्जा अचपलता, इत्यादिकसब दैवीसम्पत्के गुणहैं, किसीभी जीवको दुखदेना राक्षस कहलानाहै ॥

आस्तिक०-अज्ञानका महिमा अतिप्रबलहै देखिये तुम आपही गीता श्लोकके अर्थमें आठप्रकारका ब्रह्मचर्य्य, और त्यागआदि लिखतेहो तो तुमारीबुद्धिमें यह विचार उदय नहींहुआ कि, आठ प्रकारके मैथुनका त्यागरूप आठप्रकारका ब्रह्मचर्य्य और त्यागआदि, यिह साधन क्या प्रवृत्तिमार्गवाले गृहस्थजनोंकेलिये श्रीकृष्णजी कथनकररहेहैं अथवा निवृत्ति मार्गवाले योगाभ्यासीओंकेलिये कहरहेहैं ॥

होर जो दैवीसम्पत्में अहिंसा कहीहै वोभी वृथाहिंसाका त्यागरूप अहिंसाजाननी क्योंकि, धर्मपुस्तकोंमें वेदविहितहिंसा अहिंसारूपही मानी है।

वो शारीरकके अ० ३ ॥ पा, १ ॥ २५ वें सूत्रके श्रीभाष्यमें श्रीरामानुजस्वामीजीनेंभी वेदविहितपशुहिंसाको रक्षारूपहीमानाहै देखो श्रीभाष्य प्र० ४८—अतिशयिताभ्यु दयसाधनभूतोव्यापारोऽल्पदुःखदोपि नहिंसा प्रत्युत रक्षणमेव। चिकित्सकंच तादात्त्विकाल्प दुःखकारिणमपि रक्षकमेव वदन्ति पूजयन्ति चतज्ज्ञाः। अर्थ अधिकइष्टसाधनरूप जो व्यापारहै वो अल्पदुःखदायीभी हिंसारूप नहींहोता प्रत्युत रक्षाहीहै जैसे चिकित्साके गुणजाननेवाले पुरुष चिकित्साकालमें अल्पदुःखकारीभी चिकित्सकको रक्षकही कहतेहै और पूजतेहैं ॥

हेमित्र-धर्मग्रन्थोंमें वेदविहितहिंसा अहिंसारूपही मानीहै अब इसअर्थमें होरभी प्रमाणोंको दिखलाताहुं मनुस्मृति प्र० ४९—यावेदविहिताहिंसा नियताऽस्मिंश्चराचरे। अहिंसामेवतांविद्या द्वेदाद्धर्मोहिनिर्बभौ ॥ अ.५ ॥ ४४ ॥

इसपर मेधातिथिका मनुभाष्य प्र० ५० वेदविहितो यःप्राणिवधः सोऽस्मिञ्जगतिचराचरे स्थावरजङ्ग मे नियतोनित्योऽनादिः। अहिंसामेवविद्यात्

इसमनुश्लोकपर कुल्लूकभट्टकी टीका प्र० ५१—

अहिंसामेवतांजानीयात् हिंसाजन्यंधर्मावि रहात् धर्मोवेदादेव निःशेषेणप्रकाशतांगतः

इसीपर राघवानन्दकी टीका प्र० ५२

वेदविहिताहिंसा न हिंसेत्याह । हिंसातोऽधर्मोयथा वेदप्रमाणकस्तथायज्ञेहिंसातोधर्मस्तत्प्रमाणक इति ॥

इसपर नन्दनाचार्य का मानवव्याख्यान प्र० ५३

वेदविहितहिंसाहिंसात्वेनवक्तुंनयुक्तेत्यभिप्रायः ॥

इसपर रामचन्द्रकी टीका प्र० ५४ अस्मिञ्चराचरेया वेदविहिता हिंसा विध्युक्ताहिंसा तां हिंसा महिंसामेव विद्याज्जानीयात् ॥

मनुभाष्य और टीकासहित मनुश्लोकका अर्थ—इसचरअचरजगत्में जो वेदविहितहिंसाहै वो नित्यहै अनादिहै उसको अहिंसाहीजानो, धर्म वेदसेंही प्रकट हुआहै इस्सें वेदविहितहिंसाको हिंसाकहना युक्त नहींहै

यथा हिंसासें पाप वेदप्रमाणसें सिद्धहै तथा यज्ञमें हिंसासें पुण्य वेदप्रमाणसें सिद्धहै ॥

वेदान्तशास्त्रशारीरक प्र ०५५ अशुद्धमितिचेन्नशब्दात् ॥ अ. ३ ॥ पा. १ ॥ २५ ॥

इससूत्रपर रामानुजस्वामीका श्रीभाष्य प्र० ५६—इति चेन्न कुतः शब्दात् अग्नीषोमीयादे स्संज्ञपनस्य स्वर्गलोकप्राप्तिहेतुतया हिंसात्वाभावशब्दात् पशोर्हिंसंज्ञपननिमित्तां स्वर्गलोकप्राप्तिं वदन्तं

शब्दमामनन्ति । हिरण्यशरीर ऊर्ध्वः स्वर्ग लोकमेति इत्यादिकम् । अतिशयिताभ्युदय साधनभूतोव्यापारोऽल्पदुःखदोपि न हिंसा प्रत्युत रक्षणमेव तथाच मन्त्रवर्णः—नवाएत न्म्रियते न रिष्यासि देवान् इदेषि पथिभिः सुगोभिः यत्रयन्ति सुकृतोनापि दुष्कृत स्तत्र त्वा देवस्सविता दधातु इति ॥ चिकित्सकंच तादात्त्विकाल्पदुःख कारणमपि रक्षकमेववदन्ति पूजयन्तिच तज्ज्ञाः ॥

सूत्र व श्रीभाष्यका अर्थ-हिंसायुक्तयज्ञादिककर्म अशुद्धम्, पापमिश्रितहैं ऐसे यदिकहो तो वो समीचीन नहींहै क्योंकि—अग्नीषोमीयआदिपशुका मारणा स्वर्गलोककी प्राप्तिका हेतुहोनेकर वेदमें अग्नीषोमीयआदिपशुके मारणमें हिंसात्वका अभावकहनेसें तुमारा कथन समीचीननहींहै ॥

"प्रकाशमय शरीरवालाहुआ ऊर्ध्वस्वर्गलोक को प्राप्तहोताहै" इत्यादिक पशुमारणनिमित्तसें स्वर्गलोककी प्राप्तिके बोधक वैदिकशब्दोंको वैदिकपुरुष कथनकर्तेहैं ॥—

अधिक इष्टसाधनरूप जो व्यापार वो अल्पदुःखदायीभी हिंसारूप नहीं होता प्रत्युत रक्षाहै, वैसे वेद मंत्र कहताहै "हेपशो यिह तूं मरता नहीं हैं तूं हिंसित नहींहोता किंतु प्रकाशवाले मार्गोंसें तूं देवतोंको प्राप्तहोताहैं पुण्यवान्पुरुष जहांजातेहैं पापीजन जहांनहींजासक्ते तहां तुझको सविता

परमात्मदेव स्थितकरे" इति ॥ चिकित्साकालमें अल्पदुःखकारीभी चिकित्सकको रक्षकही कहतेहैं अर पूजतेहैं ॥

हेपाठक देखो यहां वेदान्तसूत्रके अनुसारी श्रीभाष्यमें—रामानुजस्वामी वेदप्रमाण दिखाकर वेदविहितहिंसाको अहिंसाही मानतेहैं और उससें स्वर्गलोक की प्राप्ति कहतेहैं ॥

इसीवेदान्तसूत्रपर शाङ्करभाष्य प्र० ५७—**शास्त्रहेतुत्वाद्धर्माधर्मविज्ञानस्य अयंधर्मोऽयमधर्म इतिशास्त्रमेव विज्ञानेकारणम् अतीन्द्रियत्वात्तयोः । तेन न शास्त्रादृते धर्माधर्मविषयं विज्ञानं कस्यचिदस्ति शास्त्राच्च हिंसानुग्रहाद्यात्मको ज्योतिष्टोमो धर्म इत्यवधारितम् स कथमशुद्धइतिशक्यतेवक्तुम् ॥**

अर्थ—धर्मअधर्मके निश्चयका हेतु शास्त्रहै क्योंकि—धर्माधर्म अतीन्द्रियपदार्थहैं अतः यिहधर्महै यिहअधर्महै, अर्थात् इसकर्मसें यिहधर्म इसकर्मसें यिहअधर्म पैदा होताहै, ऐसेविज्ञानमें शास्त्रहीकारणहै इस्सें किसी कोभी शास्त्रसेंबिना धर्माधर्मका विज्ञान नहींहोसक्ता, हिंसा व अनुग्रहआदि रूप ज्योतिष्टोमयज्ञ धर्महै" यिह शास्त्रसें निश्चितहै तो वो पापयुक्त कैसे कहसक्तेहैं अर्थात् वेदविहितहिंसा पाप नहींहै अतः अहिंसाहीहै ॥

भगवद्भागवत प्र० ५८—**तथापशोरालभनंनहिंसा ॥**

स्कन्ध ११।अ०५।१३॥

इसपर श्रीधरी टीका प्र० ५९—**देवतोद्देशेन यत्पशुहननं**

तदालभनम् ॥

अर्थ—देवताके उद्देशकर जो पशुका मारणा वो हिंसा नहींहै अर्थात् अहिंसाहीहै ॥१३॥ देवताके उद्देशकर जो पशुका मारणाहै वो आलभन-पदका अर्थहै ॥

हेपाठक—चिन्तन और अभिलाष उद्देशपदका अर्थहै ॥

मनुस्मृति प्र० ६०—यज्ञार्थंपशवःसृष्टाः स्वयमेव-स्वयंभुवा ॥ यज्ञस्यभूत्यैसर्वस्य तस्माद्यज्ञेव-धोऽवधः ॥ अ० ५॥३९॥

इसपर कुल्लूकभट्टकी टीका प्र० ६१—यज्ञसिद्ध्यर्थं प्रजा-पतिनाऽऽत्मनैवादरेण पशवः सृष्टाः। यज्ञश्चाग्नौ प्रास्ताहुतिन्यायात्सर्वस्यास्यजगतो विवृद्ध्यर्थः। तस्माद्यज्ञेवधोऽवधएववधजन्यदोषाभावात् ॥

इसपर नन्दनाचार्यका मानवव्याख्यान प्र० ६२—

यज्ञेवधोवधकार्याभावादवधः ॥

इसपर रामचन्द्रकी टीका प्र० ६३—यज्ञः अस्याद्विजस्य सर्वस्यक्षत्रियादेः भूत्यैऐश्वर्यायभवति तस्माद्य ज्ञेवधोऽवधएव ॥

इनटीकाओंसहित मनुश्लोककाअर्थ–यज्ञकी सिद्धिलिये आपब्रह्माजीने पशु रचेहैं, सबजगत्की वृद्धिका और ब्राह्मणक्षत्रियआदिकोंके ऐश्वर्यका कारण यज्ञहै इस्सेंयज्ञमें जो बधहै वो अवधहीहै, अहिंसाहीहै क्योंकि–वो दोषका कारण नहींहै ॥

वसिष्टस्मृति प्र० ६४—**नाकृत्वाप्राणिनांहिंसांमांसमुत्पद्यतेकचित्। नचप्राणिवधःस्वर्ग्यस्तस्माद्यागेवधोऽवधः ॥ अ०४ ॥ ७॥**

अर्थ–प्राणिओंकी हिंसाकरे बिना मांसकहीं पैदानहींहोता, अर प्राणीओंका वध स्वर्गकाहेतुनहींहै, इस्सें यज्ञमें बधअबधहीहै, अर्थात् यज्ञमें पशुहिंसासें स्वर्गकीप्राप्ति श्रुतिस्मृतिओंमें कहीहै अतः वृथाहिंसा स्वर्गका हेतु नहींहै और यज्ञमोंहिंसा अहिंसाहीहै ॥

शंकरविजयाडिण्डिमटीकाप्र०६५– **यागीयस्याहिहिंसनस्यनिगमे धर्मत्वमुक्तंस्फुटम् ॥ सर्ग १५ ॥**

२८ वेंश्लोककी टीकामें श्रीशंकराचार्य्यजी जैनीको कहतेहैं कि–यज्ञ सम्बन्धीहिंसाको वेदमें धर्मरूप स्पष्टकहाहुआहै ॥

होर जो तुमनेकहा कि–"किसीभीजीवकोदुःखदेना राक्षस कहलानाहै" वो यद्यपि वृथाहिंसाविषयकसत्यहै तथापि विहिताहिंसाविषयक वो कथन नास्तिकतासेंहै अतः अयुक्तहीहै ॥

१ वैद्यडाकटरआदिकोंसें निश्चितहै कि–मलकेरुधिरके दद्रुप्लेगआदि सब रोगोंके कृमि भिन्नभिन्नजातिके होतेहैं गौअश्वगर्दभआदिकोंके व्रणपर मक्षिका मलकरदेतीहै तो अनेककृमि पैदाहोजातेहैं

विरेचनसें मलकृमिओंकी, औषधसेवनसें दद्रुआदिरोगकृमिओंकी, व्रण

शोधकऔषधसें व्रणकृमिओंकी कुलोंका विनाशहोताहै ॥

हेमित्र—औषधोंका सेवन तुमभीकर्तेहीहो करातेहीहो तो तुमभी राक्षस ही कहलातेहो क्योंकि—औषधोंकर व्रणकृमिआदिअसंख्यजीवोंको प्राणान्त दुःखदेतेहो ॥

और वर्षाकालमें गेहुं चना चावलआदिकोंमें असंख्यजीवपैदाहोजातेहैं तब गेहुंचनाऽऽदिकोंको धूपमेंफैलायके उनअसंख्यजीवोंको क्या तुम प्राणान्तदुःखनहींदेतेहो, देतेहीहो तो क्या तुमभी राक्षसही कहलातेहोगे ॥

२—हेमित्र—वेदवेताब्राह्मण और रामआदिकअवतार युधिष्ठिरप्रभृति महाराजे विहितमांसको खाते खुलातेहीरहेहैं तो उनमहानुभावोंको कौन आस्तिकपुरुष राक्षस कहसक्ताहै ॥

हेभ्रातः—यदि श्रीकृष्णजी वेदविहितहिंसाको अहिंसारूप न मानते तो नन्दप्रभृतिगोपोंको पशुबलिप्रदानलिए प्रेरणा कबीनकर्ते, और ३०१ पशुओंके बलिप्रदान जिसमें हुएथे ऐसे युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें कृष्णचन्द्र कबीस्थित नहोते, परन्तु कृष्णचन्द्रने नन्दप्रभृतिगोपोंको प्रेरणाकर्के गिरि यज्ञलिये पशुको मरवायके मांसका बलिप्रदान करवाया वो देखोप्रमाणांक ४२ आदिकोंमें कहाहीहै, प्रमाणांक ११९ युधिष्ठिरके यज्ञमें ३०१ पशुओं का बलिदान कियागया वहां श्रीकृष्णचन्द्रजी विद्यमानहीथे, उसयज्ञलिये युधिष्ठिरको प्रेरणाभी करीथी अतः पशुबलिप्रदानमें व विहितमांसके भक्षण में कृष्णचन्द्रकी सम्मति स्पष्टहीहै ॥

पूर्वपक्षी०—सम्मति मनुजीकी—**योऽहिंसकानिभूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया । सजीवंश्चमृतश्चैव न-कचित्सुखमेधते ॥ अ० ५ ॥ ४५ ॥**

जो अपने सुखकेवास्ते खानेकेलिये दुर्बलजीवोंको मारताहै वह इस लोक परलोकमें कहींभी सुख नहींपाता ॥

मनुस्मृति-योबन्धनबधक्लेशान् प्राणिनांनचिकीर्षति । ससर्वस्यहितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥ ५ ॥४६॥ यद्ध्यायतियत्कुरुतेधृतिंबध्नातियत्रच । तदवाप्नोत्ययत्नेन योहिनस्तिनकिञ्चन ॥ ४७॥ नाकृत्वाप्राणिनांहिंसां मांसमुत्पद्यतेक्वचित् नचप्राणिबधःस्वर्ग्य स्तस्मान्मांसंविवर्जयेत् ॥ ४८॥ समुत्पत्तिंचमांसस्य बधबन्धौचदेहिनाम् । प्रसमीक्ष्यनिवर्तेत सर्वमांसस्यभक्षणात् ॥४९॥ फलमूलाशनैर्मेध्यै र्मुन्यन्नानांचभोजनैः । नतत्फलमवाप्नोति यन्मांसपरिवर्जनात् ॥५४॥

अर्थ-प्राणिओंके बन्धनके और बधके क्लेशोंको जो नहीं कियाचाहता सो सर्वके हितचाहनेवालापुरुष अत्यन्तसुखको पाताहै ॥ ४६ ॥ जो किसी की हिंसा नहीं कर्ता सोमनुष्य जिसपदार्थका चिन्तनकर्ताहै, जिससाधन को कर्ताहै, जिसमे धारणाकर्ताहै, उसको बिनाक्लेशसें प्राप्तहोताहै ॥ ४७ ॥ प्राणीओंकी हिंसाकरेबिना मांस कहींपैदा नहींहोता अर प्राणीओंका बध स्वर्गका हेतु नहींहै उस्सें मांसको त्यागदेना चाहिये ॥ ४८ ॥ शुक्रशोणित सें मांसकी उत्पत्तिको और जीवोंके बधबन्धनोंको देखकर सर्वमांसकेभक्षणसें

निवृत्तहोवे ॥ ४९ ॥ पवित्रफलमूल और नीवारआदिक मुनिओंके अन्नके भोजनसें सोफल नहींमिलता जो मांसके त्यागसें मिलताहै ॥ ५४ ॥

आस्तिक० — यिह सबश्लोक अविहितहिंसाके अविहितमांसभक्षणके त्यागको कहतेहैं अर्थयिह श्रुतिस्मृतिआदिकोंकी 'आज्ञाका' प्रेरणाका नाम विधिहै विधिसें कहेहुएअर्थका नाम विहितहै, जो विहित न हो वो अविहित कहाजाताहै, ऐसीजो विहितहिंसा नहीं, विहितमांसभक्षण नहीं उसअविहितहिंसाके अविहितमांसभक्षणके त्यागका उपदेश यिहश्लोककर्तेहैं वोदेखो इनश्लोकोंकी टीकामें स्पष्टकहाहै —

४८ वेंश्लोकपर कुल्लूकभट्टकी टीका प्र० ६६–**तस्मादविधिना मांसंनभक्षयेत्।** अर्थ–जिस्सें अविहितमांस स्वर्गका हेतु नहीं इस्सें विधिबिना मांसको नहीं खाए।

इसपर राघवानन्दकी टीका प्र० ६७–**मांसमविधिसंपादितं वर्जयेत्नभक्षयेत्।** अर्थ विधिसेंबिना मांसको न खाए ॥

हेपाठक—श्रुतिस्मृतिअदिकोमें देवतापितरअति थिआदिकोंके निमित्तकर भेडबकराऽऽदिकोंकी हिंसाका विधानहै, विधिहै वोदेखो प्रमाणांक १०१ व, १२१ व, ६८ व, १७५ आदिकोंमें स्पष्टहै ॥–

इसीसें देखो प्रमाणांक ६९ आदिकोंमें विहितहिंसाका उत्तमगतिकी प्राप्तिरूप श्रेष्ठफलही वर्णनकराहै और जो देवतापितरअतिथिआदिकोंके निमित्तको नहींरखकर हिंसाकीजावे वो अविहि तहिंसाहै उसीका अनिष्टफल स्मृतिओंके उक्त इत्यादिक श्लोकोंमें कहाहै।

हेभ्रातृजन–श्रुतिस्मृतिआदिकोंमें देवतापितर अतिथिआदिको पूजकर

देकर शेषमांसके भक्षणका विधानहै,, विधिहै हुकमहै वोदेखो प्रमाणांक १६५ व २०६ व २१४ इत्यादिकोंमें प्रकटहीहै ऐसेविहितमांसके खानेसें कोईदोष नहीं होता यिहअर्थदेखो प्रमाणांक ३१ आदिकोंमें स्फुटवर्णन कराहुआहै, और प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके नहींखानेकर नरकआदिकोंकी प्राप्तिरूप अनिष्टफलही वर्णन कराहै, इस्सें यिह सिद्धहुआ कि—अविहितहिंसाका अविहितमांसका त्यागही कराचाहिये । और विहितपशुबलिप्रदान व विहितमांसभक्षण अवश्यं कराचाहिये —

इसीसें अविहितहिंसाके अविहितमांसके त्यागलिये स्मृतिआदिकोंमें रौचकवाक्यनसें त्यागका माहात्म्यभी कहाहै जैसे यहां ४६ वें ४७ वें और ५४ वें श्लोकमें कहाहै औरकेईजगें स्मृतिआदिकोंमें अविहितहिंसाके अविहितमांसभक्षणके त्यागलिये भयानकवाक्यनसें दोषभी सुनायाहै जैसे यहां ४५ वें ४८ वें और ४६ वें श्लोकमें कहाहै ॥

हेमित्र—विहितपशुबलिप्रदानके व विहितमांसभक्षणके त्यागलिये यिहश्लोक प्रवृत्तनहींहैं क्युंकि—स्मृतिआदिकोंमें विहितहिंसाका श्रेष्ठफलही कहाहै, अब इसअर्थमें प्रमाणोंको दिखाता हूं ।

मनुस्मृति प्र० ६८—**मधुपर्केचयज्ञेच पितृदैवतकर्मणि॥ अत्रैवपशवोहिंस्या नान्यत्रेत्यब्रवीन्मनुः ।**
अ. ५ ॥ ४१ ॥

मनुस्मृति प्र० ६९—**एष्वर्थेषुपशून्हिंसन् वेदतत्त्वार्थविद्द्विजः । आत्मानंचपशुंचैव गमयत्युत्तमांगतिम्** ॥ ५ ॥ ४२ ॥

अर्थ—मधुपर्कमें यज्ञमें पितृकर्ममें देवकर्ममें इनहीमें अजआदिपशु मारणे इनसेंअन्यत्रनहीं, एवं मनुजी कहतेभए ॥४१॥ इनमधुपर्कआदिकोंनिमित्त पशुओंको मारताहुआ वेदतत्त्वका वेताद्विजपुरुष अपनेको और पशुको उत्तमगतिमें पहुंचावेहै अर्थात् विधिविहिताहिंसाका उत्तमगतिकी प्राप्तिरूप श्रेष्ठफल होताहै ॥४२॥

मनुस्मृति प्र० ७०—ओषध्यःपशवोवृक्षा स्तिर्यञ्चः-पक्षिणस्तथा । यज्ञार्थंनिधनंप्राप्ताःप्राप्नुवन्त्यु-च्छ्रितीःपुनः ॥५॥ ॥४०॥

इसपर नन्दनाचार्यकी टीका प्र० ७१—यज्ञार्थेवधे न केवलं यजमानस्यैवाभ्युदयः किंतु पश्वादीना-मपीत्याह ओषध्यइति ॥

इसपर कुल्लूकभट्टकी टीका प्र०७२—ओषध्योब्रीहियवाद्याः पशवश्छागाद्याःवृक्षायूपाद्यर्थाः तिर्यञ्चः कूर्मा-दयः । पक्षिणः कपिञ्जलाद्याः यज्ञार्थं विनाशं गताः पुनर्जात्युत्कर्षंप्राप्नुवन्ति ॥

इसपर गोविन्दराजकी टीका प्र०७३—तेततःतमधर्मार्जितं निकर्षंहित्वा पुनरात्मज्ञानाधिकृतशरीरलाभे-नोत्कर्षान्प्राप्नुवन्ति ॥

इनटीकांसहित मनुश्लोककाअर्थ—यज्ञलिये वधकरणेंसें केवलयजमानको

ही शुभलाभ नहींहोता किन्तु पशुआदिकोंकोभी शुभलाभहोताहै यिहअर्थ इसश्लोकमें कहतेहैं ॥

व्रीहियवआदिओषधि, अजआदिपशु, यूपआदिकोंके लिये वृक्ष, तिर्यक् कूर्मआदि, कपिञ्जलआदिपक्षी यिहसबयज्ञकेलिये नाशकोप्राप्तहुए उत्तम जातिकोप्राप्तहोतेहैं। इसमें गोविन्दराज कहतेहैं कि—अधर्मसेंप्राप्तहुई निकृष्टताको त्यागकर वो पशुआदिक आत्मज्ञानके अधिकारीशरीरके लाभसें उत्कृष्टताकों प्राप्तहोतेहैं ॥

हेपाठको—देखो मनुस्मृतिकेपुरातनसंस्कृतटीकाकार कैसा स्पष्टअर्थ लिखतेहैं परन्तु भाषाटीकाकार तुलसीरामजी अपना भिन्नही गीतगातेहैं ॥

श्रीभाष्यमें श्रीरामानुजस्वामीजीनेभी विहिताहिंसाका स्वर्गप्राप्तिरूप श्रेष्ठफलही वर्णनकराहै औरउसमें वेदमन्त्रप्रमाणभी लिखाहै देखो—

श्रीभाष्य—**अग्निषोमीयादे स्संज्ञपनस्यस्वर्गलोक प्राप्तिहेतुतया** ॥ इत्यादिकपाठ और अर्थ प्रमाणांक५६ में लिख चुकाहुं ॥

शंकरविजयडिण्डिम टीका प्र० ७४॥

अग्निष्टोममुखेक्रतौखलुपशोःस्वर्गप्रदंहिंसनं ।
श्रुत्याचाररतैरुपेयमपरे पाखण्डिनोविस्फुटम् ॥

सर्ग १५॥२८ वें श्लोककी टीकामें श्रीशंकराचार्यजी जैनीको कहतेहैं कि—अग्निष्टोमआदियज्ञमें पशुका हिंसन स्वर्गका देनेवालाहै इससें वेदविहित आचारमें प्रीतिवालेपुरुषोंनें वो यज्ञनिमित्त पशुका हिंसनरूपआचार ग्रहणकरणायोग्यहै, होरजो अर्थात् वेदविहितआचारके नहींकरणेवालेहैं वो पाखंडी स्पष्टहैं ॥

बृहत्पाराशरीयधर्मशास्त्र प्र० ७५ ॥

एवंपञ्चमखान्कुर्वन् मधुमांसाज्यपायसैः ।
ससंतर्प्यापितॄन्देवा न्मनुष्यान्स्वर्गमाप्नुयात् ॥

अ० ४॥८०॥

अर्थ–ऐसे पंचयज्ञनको कर्ताहुआ गृहस्थजन पितरोंको देवतोंको अतिथिमनुष्यनको शहतमांसघृतदुग्धसें सम्यक् तृप्तकर्के स्वर्गको प्राप्तहोवे अर्थात् घृतमांसाऽऽदिकोंके होमसें देवतोंकी तृप्ति, ऐसेही श्राद्धसें पितरोंकी तृप्ति, समांसभोजनादिकोंसें अतिथिमनुष्यनकी तृप्तिकरणेसें स्वर्गकी प्राप्ति रूप श्रेष्ठफलको पावे–

हेपाठक–देखो इसवाक्यमें विधिहै ॥

विदितहोकि—कांस्यके पात्रसें ढकाहुआ कांस्यके पात्रमें मधुसेंमिले हुए दधिको मधुपर्क कहतेहैं ऐसामधुपर्क श्रोत्रियके राजाके अतिथिआदिकों के आगमनपर उनको मांससहित भोजनसें अनंतर देना धर्मपुस्तकोंमें कहाहै इसअर्थमें—

आश्वलायन गृह्यसूत्र प्र० ७६—**नामांसोमधुपर्कोभवति-भवति ॥** अ० १॥ कण्डिका २४॥सूत्र २६॥

इससूत्रपर गार्ग्यनारायणीया वृत्ति प्र० ७७—**मधुपर्काङ्गं भोजनममांसं न भवतीत्यर्थः ॥ अध्यायान्त लक्षणार्थं द्विर्वचनं मङ्गलार्थंच ॥**

अर्थ--मधुपर्कसें प्रथमजो मधुपर्कका अंग भोजनहै वो मांसरहित नहींहोता अर्थात् समांसभोजनसें अनन्तर श्रेत्रिय अतिथिराजाऽऽदिक पूजनीयजनोंको मधुपर्क दियाजाताहै ॥ अंगोंसहित वेदवेताका नाम श्रोत्रियहै ॥

पूर्वपक्षी० प्र० ७८ -

यावन्ति पशुरोमाणि तावत्कृत्वोहमारणम् ।
वृथापशुघ्नःप्राप्नोति प्रेत्यजन्मनिजन्मनि ॥

मनु० ५॥३८॥

जो केवल अपने पेट भरनेकेलिये पशुओंको मारताहै वहपुरुष जितने पशुके शरीरमें रोमहोतेहैं उतनेवार जन्मधारकर दूसरोंसें माराजाताहै ॥

आस्तिक०—हेमित्र इसका उत्तर तो तुमने आपही लिखदियाहै परंतु श्लोकलिखतेहुए तुमको लज्जाभी नहींआई ॥ अर्थयिह अविहितहिंसाकोही वृथाहिंसा कहतेहैं, विहितहिंसाका तो श्रेष्ठफलही श्रुतिस्मृतिआदिकोंमें दिखाचुकाहूं । और "अविहितहिंसाका" वृथाहिंसाका स्मृतिआदिकोंमेंभी निषेधकराहीहै इसश्लोकमेंभी वृथापशुहिंसाकाही भयानकवाक्यसें निषेधकराहै तो विहितहिंसाके प्रकरण में यिहश्लोकलिखना धोखादेना नहीं तो होर क्याहै हेपाठक देखो—

इसीमनुश्लोकपर कुल्लूकभट्टकी टीका प्र० ७९

देवताद्युद्देशमन्तरेणात्मार्थंयः पशून्हान्ति सवृथापशुघ्नोमृतः सन्यावत्संख्यानि पशुरोमाणि तावत्संख्याभूतं जन्मनिजन्मनि मारणंप्राप्नोति तस्माद् वृथापशुंनहन्यात् ॥

अर्थ—देवताऽऽदिकोंके उद्देशसेंविना जो अपनेलियेही पशुओंको मारताहै वो वृथापशुघ्नपुरुष मरके जन्मजन्ममें पशुके रोमजितनेवार मारा जाताहै, इस्सें वृथापशुहिंसा नहींकरे अर्थात् देवताऽऽदिकोंके उद्देशकर अजादि पशुका बधकरे ॥

पूर्वपक्षी०—वर्षेवर्षेऽश्वमेधेन योयजेतशतंसमाः
मांसानिचनखादेद्य स्तयोःपुण्यफलंस्मृतम् ॥

म. अ. ५॥ श्लो. ५३—जोपुरुष सौवर्षतक अश्वमेधयज्ञ कर्ताहै और मांसखाताहै, और जोपुरुष मांसनहींखाता चाहे वह एकभीयज्ञ नहींकर्ता, यहदोनों समानहैं, मतलब यहहैकि—मांसाहारपुरुषका सबकर्म-धर्म नष्टहोजाताहै ॥

आस्तिक०—मनुका यिहश्लोक अहिंसादिग्दर्शनग्रन्थमें विजयधर्म-सूरीजी जैनीनेभी लिखाहै परंतु उसजैनीमहात्माने ऐसाछल नहींकरा जैसाकि—इसबालनेकराहै ॥

पूर्वपक्षी०—मैंने क्या छलकराहै

आस्तिक०—सुनिये एकतो तुमने मूलश्लोकमें 'समम्' की जगेमें स्मृतम् लिखदिया अर्थात् पाठको वदलादिया दूसरा तुमने 'तयोःपुण्य-फलंसमम्" इसवाक्यका अर्थ कुछभी नहींलिखा अर्थात् धोखादेनेलिये अर्थको छोड़दिया—

तीसरा—'यहदोनो समानहैं' यिहतुमने अपनीतर्फसें लिखडाला, मूलश्लोकमें प्रथमाविभक्तिका द्विवचनान्तपद कोईभी नहींहै, बहुत क्या स्मृतिपाठको वदलकरभी श्लोकका अर्थ व व्यवस्था तूं नहींलिखसका ॥

हेपाठको—ऐसेछलकर लेखकपुरुष विद्वज्जनोंमें धर्मवेता नहींकहलाय

सक्ते किंतु ऐसेअसत्कर्मसें वो नास्तिकही कहनेयोग्यहैं ॥

इसश्लोकका भावार्थ यिहहैकि–जोपुरुष सौवर्षतक वर्षवर्षमें अश्वमेध-यज्ञकरे अर विहितमांसकोभी खाए, और दूसरा जोकोईपुरुष वृथामांसोंको नहींखाए, तो उनदोनोंपुरुषोंको पुण्यफल बराबर होताहै ॥

इसश्लोकमें रौचकवाक्यसें अविहितमांसकेही त्यागका फल कहाहै ॥

इसमनुश्लोकपर सर्वज्ञनारायणकी टीका प्र० ८०—**अधुना यस्य वर्णस्य यादृशंमांसभक्षणं निषिद्धं तद करणे फलमाह वर्षेवर्षेइति ॥**

अर्थ—जिसवर्णकेलिये जैसे मांसभक्षणका निषेधहै उसानिषिद्धमांसके नहींखानेकाफल अबकहतेहैं वर्षेवर्षे इसश्लोकसें ॥

शंका–एकपुरुष हरसाल अश्वमेधयज्ञकरे वो मांसभी नहींखाता, और दूसरापुरुष मांसही नहींखाता, तो उनदोनोको पुण्यफलबराबर, तुल्यहोता, है ऐसाअर्थ क्योंन कराजावे ॥

समाधान–ऐसे यदि दोनोंपुरुष मांसको नहींखाते तो एककेकरे अश्व-मेधयज्ञनका फल कहाजावेगा इस्सें यिहअर्थ संभवेनहीं किंतु अविहितमांस भक्षणकेही त्यागकी स्तुति इसश्लोकमेंकीहै ॥

विहितमांसकात्याग नहींकहा किन्तु विहितमांसके त्यागसें तो अतिदोष कहेहैं, इसअर्थमें प्रमाणोंको अब दिखलाताहूं ॥

मनुस्मृति प्र०८१–**नियुक्तस्तुयथान्यायं योमांसंना त्तिमानवः । सप्रेत्यपशुतांयाति संभवानेक-विंशतिम् ॥ अ० ५ ॥ ३५ ॥**

अर्थ —श्राद्धमें मधुपर्कआदिकोंमें शास्त्रविधिसें प्रेराहुआ जोपुरुष मांसको नहींखाता वो मरकर २१ जन्म पशुके पाताहै ॥

हेभ्रातः प्रमाणांक २७ और २८ में इसकी टीकाभी दिखाचुकाहूं ॥

व्यासस्मृति प्र०८२—नाश्नीयाद्ब्रह्मणोमांस मनियुक्तःकथञ्चन। क्रतौश्राद्धेनियुक्तोवा अनश्नन् पतितिद्विजः ॥ अ० ३ । ५६ ॥

अर्थ—जिसमें विधिवाक्य प्रेरणा नहींकर्ता वो विधिसें न प्रेराहुआ ब्राह्मण अर्थात् अविहितमांसको ब्राह्मण किसीप्रकारभी नहींखाए, और यज्ञमें व श्राद्धमें विधिसेंप्रेराहुआब्राह्मण मांसको नहींखाएतो पतितहोजाता है ॥

वसिष्ठस्मृति प्र० ८३—नियुक्तस्तुयदाश्राद्धे दैवेवामांस मुत्सृजेत् । यावान्तिपशुरोमाणि तावन्नरकमृच्छति ॥ अ० ११ ॥ ३१ ॥

अर्थ—विधिसेंप्रेराहुआपुरुष श्राद्धमें वा दैवकर्ममें मांसको त्यागदे, नहींखाएतो जितने पशुकेशरीरमेंरोमहों उतनेवर्ष नरककोप्राप्तरहताहै ॥

कूर्मपुराण प्र० ८४ योनाश्नातिद्विजोमांसंनियुक्तः पितृकर्मणि । सप्रेत्यपशुतांयाति संभवानेकविंशतिम्॥अ० २२ ॥ ६८ ॥

अर्थ—पितृकर्मश्राद्धमें विधिसेंप्रेराहुआ जोद्विजपुरुष मांसको नहींखाता, वो मरकर २१ जन्म पशुकेपाताहै ॥

पद्मपुराण प्र० ८५—आमन्त्रितश्चयःश्राद्धे दैवेवा मांसमुत्सृजेत् । यावन्तिपशुरोमाणि तावन्नरक मृच्छति ॥ खण्ड ३ ॥ अ० ५६ ॥ ४२ ॥

अर्थ जोपुरुष श्राद्धमें वा देवकर्ममें आमन्त्रणकराहुआ मांसको नहीं खाता वोपुरुष जितनेपशुके शरीरमें रोमहों उतनेवर्षतक नरककोप्राप्तरहताहै ॥

होरजो तुमने लिखा कि—मतलब यहहै कि—मांसाहारीपुरुषका सब कर्मधर्म नष्टहोजाताहै,, सोयिहभीतुमने नास्तिकतासें मिथ्याहीलिखाहै, तथाहीसुनिये ॥

१—वेदसूत्रस्मृतिग्रन्थनमें बहुतहीवाक्य मांसभक्षणका विधानकर्तेहैं तो उन श्रुतिसूत्रस्मृतिओंसें विहितकर्मकरणेकर सबकर्मधर्मोंका नाश कहना क्या नास्तिकतासें बिना होसक्ताहै अर्थात् वेदसूत्रस्मृतिओंसें विरुद्ध कहने कर नास्तिकता प्रकटहीहै ॥

२—हेमित्र—मांसाहारीपुरुषका सबकर्मधर्म नष्टहोजाताहै,, यिह तुमारा करा आक्षेप रामलक्ष्मणआदिअवतारोंमें तथावेदवेताब्राह्मणोंमें—महर्षिओंमें और नल अम्बरीष रन्तिदेव युधिष्ठिरप्रभृतिधर्मात्मामहाराजोंमेंभी प्राप्तहोगा क्योंकि—यिहसब महानुभावपुरुष मांसको खाते खुलाते रहेहैं तो उनपूज्य जनोंमें आक्षेप नास्तिकताबिना नहींहोसक्ता ॥

३—हेभ्रातः—यद्यपि अविहितमांसखानेका स्मृतिआदिकोंमें निषेधहै उससें दोषभी लिखाहीहै तथापि विहितमांसखानेसें दोष नहींहोता, इस अर्थमें देखो प्रमाणांक ३१ आदिकबहुतप्रमाण दिखाचुकाहूं ॥

और प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके नहींखानेसें अतिदोष कहेहैं

अतः विहितमांसके खानेवालेका कर्मधर्म नष्टनहींहोता किंतु श्रुतिस्मृति आदिकोंसें विरुद्ध मिथ्याकथनवालेका धर्मरूप मूल सूकजाताहै,, नष्टहो जाताहै इसमेंदेखो —

अथर्ववेदकी प्रश्नोपनिषद् — **समूलोवाएषपरिशुष्यति योऽनृतमभिवदति** प्र० ६ ॥ १ ॥

अर्थ – यिहपुरुषरूपवृक्ष स्वभाग्यरूप मूलके सहितसूकजाताहै जोपुरुष असत्यभाषणकर्ताहै ॥

पूर्वपक्षी० - **मांसभक्षयिताऽमुत्र यस्यमांसमिहाद्म्यहम् ॥ एतन्मांसस्यमांसत्वं प्रवदन्तिमनीषिणः** म. अ. ५॥५५॥ जिसके मांसको मैं खाताहुं परलोकमें वह मेरेको खावेगा इसलियेही पंडितलोक मांसको मांसनामसे कहते हैं ॥

आस्तिक०–इसमनुश्लोकपर कुल्लूकभट्टकीटीका प्र०८६ **इतिमांसशब्दस्य निर्वचनमवैधमांसभक्षणपापफलकथनार्थम् ॥** अर्थ-यिह मांसशब्दके अर्थकाकथन अविहितमांसभक्षणके पापफलकेकथनलियेहै ॥ हेमित्र, देखो, टीकामेंभी अविहितमांसका यिह अर्थ कहाहै फिर आप मनुजीनेभी कहाहै ॥

मनुस्मृति प्र०८७– **नाद्यादविधिनामांसं विधिज्ञोऽनापदिद्विजः ॥ जग्ध्वाह्यविधिनामांसंप्रेत्यतैरद्यतेऽवशः** अ,५॥३३॥ अर्थ–विधिको जाननेवाला द्विजपुरुष अनापत्काल

म विधिसेंबिना मांसको नखाए क्योंकि–विधिसेंबिना मांसको खानेवाला पुरुष मरकर परलोकमें उनोंसें खायाजाताहै ॥

इसमनुश्लोकका तात्पर्य्य यिह प्रकटहीहै कि–आपत्कालमें तो अविधि सें मांसकोखाए परंतु अनापत्कालमें विधिसेंबिना मांसकोन खावे अर्थात् अनापत्कालमें विधिसें मांसकोखाए ॥

हेभ्रातः—विधिबिना मांसको खाए तो मरकर उनोंसे खायाजाताहै, यिह इसश्लोकमें मनुजीने आपभी कहाहै अतः विधिसें मांसखानेवाला मर कर उनोंसे नहीं खायाजाता, यिह तुमारेलिखेश्लोकका अर्थ प्रकटहीहै अतः तुमारेलिखे मनुश्लोकमें अविहितमांसका अर्थ दिखायाहै ॥ अब देखिये परमप्रमाण यास्कमहर्षिकेवेदांगनिरुक्तमें मांसका क्या अर्थ कराहै ॥

निरुक्त प्र०८८–[मांसं] माननं वा मानसं वा मनोऽस्मिन् सीदतीति वा ॥अ,४॥२॥३॥

इसनिरुक्तपर दुर्गाचार्य्यकी निरुक्तवृत्ति प्र० ८९–[मांसं] माननंवा, यएवहिमान्योभवति तदर्थमेतत्संक्रियते मानसंवा, सुमनसाहि तदुपादीयते अथवा यएवहि मनस्विनोभवन्ति तैरुपादीयते मनोऽस्मिन्सीदतीतिवा सर्वस्यैवहि मांसे मनःसीदति

निरुक्तका और वृत्तिका अर्थ—मांसका मांस नाम क्यों है ॥

१–जोपुरुष मानके योग्यहो उसके मानालिये यिह बनायाजाताहै अतः मांसका मांसनामहै ॥

२—प्रसन्नमनसेंही वो ग्रहणकराजाताहै अथवा जो श्रेष्ठमनवाले पुरुषहैं उनोंने ग्रहणकारिताहै अतः इसकोमांसनामसें कहतेहैं ॥

३—रसज्ञ सर्वमनुष्यनकामन इसमेंजाताहै इस्सेंभी इसका मांसनामहै ॥

यहां निरुक्तमें उद्देश्य मांसवस्तुहै अतःकिसीसमाजीका किया अन्यथा अर्थ माननीय नहींहोसक्ता ॥

पूर्वपक्षी०—जो कहतेहैं कि—हमतो नहींमारते किंतु मोललेतेहैं अतः हमको पाप नहींलगसक्ता इसपरमनुजी उत्तरदेतेहैं—**अनुमन्ता विशसितानिहन्ताक्रयविक्रयी । संस्कर्ताचोपहर्ताच खादकश्चेतिघातकाः ॥** अ० ५ ॥ ५१ ॥

अर्थ—सम्मतिदेनेवाला १, अंगोंकोअलग२काटनेवाला २, मारनेवाला ३, मांसके पकानेवाला ४, मोललेनेवाला ५, बेचनेवाला ६, परोसनेवाला ७, खानेवाला ८, यहआठोंही मारनेवालेहैं अर्थात् इनसबको एकसा पाप लगताहै इस्सें मारनेवालेकी तरह मोललेनेवालाभी महापापी और नरकगामी होताहै ॥

आस्तिक०—हेमित्र इसश्लोकमें आठोंही मारनेवालेहैं, यिहतो कहाहै परंतु उनको कोईशुभअशुभफलतो नहींकहाहै अतः पशुमारनेवालेको क्या फलहोताहै, ऐसानिर्णयतो मनुस्मृति के किसीहोरश्लोकसेंही होसक्ता है वोदेखो—

मनुस्मृति—**एष्वर्थेषुपशून्हिंसन् वेदतत्त्वार्थविद्द्विजः । आत्मानंचपशुंचैव गमयत्युत्तमांगतिम् ॥ ५ ॥ ४२ ॥** अर्थ प्रमाणांक ६९ में लिखचुकाहुं ॥

इसश्लोकमें मनुजीआपकहतेहैं कि—देवताऽऽदिकोंके निमित्तकर करी हिंसासें श्रेष्ठगतिरूप श्रेष्ठफलही दोनोंकोमिलेहै ॥

और देखो प्रमाणांक ३१ में मनुजीने आपकहाहै कि मोललेकर मांसखानेसें कोईदोषनहींहोता । और प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांस के नहींखानेसें अतिदोष कहाहै तो इत्यादिक मनुस्मृतिके श्लोक हेमित्र क्या तुमने पढ़ेनहीं देखेनहीं, यदि पढ़ेहैं देखेहैं तो इनश्लोकोंको तुमने क्यों नहींलिखा ॥

भावयिह —यदितुम सत्यधर्मसें लेखलिखा चाहतेतो इत्यादिश्लोक भी अवश्यंलिखते फिर दोनोंप्रकारके श्लोकोंकी व्यवस्थाकर्तेतो जाना जाता कि – तुमारी श्रुतिस्मृतिओंमें श्रद्धाहै अतः तुमआस्तिकहो व सत्यमें तुमारी प्रीतिहै, परंतु तुमने एकतर्फे मनुके श्लोकलिखडाले इस्सें निश्चयहोताहै किश्रुतिस्मृतिओंके सिद्धान्तकी उपेक्षाकर्के तुमअपने चित्तचाहा प्रचारकर्तेहो तो श्रुतिस्मृतिओंके सिद्धान्तकी उपेक्षाकरणेसें तुम विद्वज्जनोंमें आस्तिक नहींकहलायसक्के ॥

मनुस्मृति प्र० ९०—**गृहेगुरावरण्येवा निवसन्नात्मवान्द्विजः । नावेदविहितांहिंसा मापद्यपिसमाचरेत् ॥** अ० ५॥४३

अर्थ—अपने गृहमें वा गुरुके समीप वा बनमें वस्ताहुआ शुभमनवाला द्विजपुरुष वेदसें अविहितहिंसाको आपत्कालमेंभी नहींकरे ॥

हेपाठक—देखो प्रमाणांक ६८ को मनुजीने पंचमाध्यायके ४१ वें श्लोकमें यज्ञआदिकोंनिमित्त हिंसाका विधानकराहै, ४२ वें श्लोकमें उस विहितहिंसाका श्रेष्ठफल कहाहै, फिर इस ४३ वें श्लोकमें अविहितहिंसाका त्यागकहाहै, अतः मनुजीका तात्पर्य्य स्पष्टहीहै कि—शुभफलदायीविहित हिंसाको करें और अविहितहिंसाको नहींकरें ॥

मनुस्मृति प्र० ९१–प्रोक्षितंभक्षयेन्मांसं ब्राह्मणानांचकाम्यया ॥ यथाविधियुक्तस्तु प्राणानामेवचात्यये ॥ अ०५॥२७॥

इसपर राघवानन्दकी टीका प्र० ९२–इतिचतुष्टये नियमविधिः॥ अर्थ–वेदमंत्रसें प्रोक्षितमांसको और ब्राह्मणोंकी कामनासें मांसको खाए व देवकर्म पितृकर्मआदिकोंमें जैसाविधिसें प्रेराहुआ द्विजपुरुष मांसको खाए और प्राणांतसमयभी अर्थात् औषधलियेभी मांसको खाए, इनचारजगेमें मांसखानेका नियमविधिहै ॥

मनुस्मृतिप्र० ९३—नतादृशंभवत्येनो मृगहन्तुर्धनार्थिनः ॥ यादृशंभवतिप्रेत्य वृथामांसानिखादतः ॥ अ.५ ॥ ३४ ॥ अर्थ धनकेलिये मृगमारणवालेको वैसापाप नहींहोता जैसापाप वृथामांसखानेवालेको मरकरहोताहै ॥

हेपाठक—प्रमाणांक ९१ में मनुजीनें मांसखानेका विधानकराहै, और इसश्लोकमें वृथामांसके, अविहितमांसके खानेकर पाप कहाहै और प्रमाणांक ३१ में विहितमांसखानेसें निर्दोषता कही, और प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके नहींखानेसें अतिदोषकहाहै, इस्सें श्रुतिस्मृति आदिक आर्षग्रन्थ सत्यअर्थके प्रतिपादकहैं तो विहितमांसके खानेवाला पुरुष पापी नहींहोता अतः वो नरकगामी नहींहोसक्ता किंतु श्रुतिस्मृतिओंके वास्तवअर्थको छिपाकर असत्यकहनेवालापुरुष अवश्यं नरकगामी होताहै

देखो—आत्मपुराण–समूलएवशुष्यत्स लोक

द्वयफलंविना । अनृतंयोवदेत्कापि पुरुषःपरिमोहितः॥अ,१७।११७॥ अर्थ —सोपुरुषरूप वृक्ष अपनेभाग्यरूप मूलके सहित सूकजाताहै जो अतिभ्रान्तहुआपुरुष कहीं असत्यबोलताहै असत्य वक्तापुरुष मर्त्तलोक स्वर्गलोक इनदोनोंलोकोंके सुखरूप फलोंको नहीं प्राप्त होता अर्थात् नरकगामीहोताहै ॥

पूर्वपक्षी०—जबके मनुजीने मनुस्मृतिके अ,३ में घरमें नित्यहोने वाले पांचमहापापों के दूरकरनेकेवास्ते ५ महायज्ञोंका नित्यकरनागृहस्थ केलिये विधानकियाहै औरकहाहै कि इनके न करनेसे मनुष्य स्वर्ग में नहीं जासक्ता तोफिर मांसकेखानेमें अथवा पशुके मारनेमें कितना दोषहोगा थोडा इसबातका विचार मांसाहारीको आपहीकरलेनाचाहिये कण्डनी पेषणीचुल्ली उदकुम्भीचमार्जनी ॥ पञ्चसूना गृहस्थस्य ताभिःस्वर्गंनगच्छति ॥म०अ०३॥श्लोक६८

मनुजी कहतेहैं कि—गृहस्थके घरमें पांच 'सूना' बधके स्थानहैं जैसे उखली, चक्की, चुल्ल, जलका घट, झाडू, अर्थात् इनपांचस्थानोंमें प्रायः नित्यसूक्ष्म जीव मराकर्तेहैं और इसहिंसाका पाप गृहस्थके शिरपर नित्यचढताहै यदि गृहस्थ इनका पांचयज्ञोंद्वारा प्रमादसें प्रायश्चित न करे तो वह स्वर्गमें नहीं जासक्ता किंतु नरकमेंही पड़ताहै ॥

आस्तिक०—मनुस्मृतिके इसश्लोकका पाठभी तुमने बदलदिया, क्या ऐसेपापसें तुम भयनहींकर्ते, इसीसें तुमको बारंवार नरक स्मरणमें आताहै॥

हे पाठक—मनुस्मृतिमें ऐसापाठहै —पञ्चसूनागृहस्थस्य चुल्लीपेषण्युपस्करः ॥ कण्डनीचोदकुम्भश्च

no: 167
10.3.64

बध्यतेयास्तुवाहयन् ॥ अ० ३ ॥६८॥

अर्थ—गृहस्थके घरमें चुल्ली, चक्की, झाड़ू, उखली जलका घट, यिह पांच हिंसाकेस्थानहैं जिनपांचोंको स्वकार्य्यमें लगाताहुआ गृहस्थजन पापसेंयुक्तहोताहै ॥

अब यहां आपभी थोड़ासा विचार करलीजिये कि इन पांचजगेमें जो सूक्ष्मजीवोंकी हिंसाहोतीहैं वो क्या अजआदिकोंकीन्याईं देवताऽऽदिकोंके निमित्तकर कीजातीहैं अथवा देवताऽऽदिकोंके निमित्तसेंविना वो अविहित-हिंसाहोतीहैं ॥

इनमें प्रथमपक्ष तो असंभवहीहै क्योंकि-उन सूक्ष्मजीवोंके बलिप्रदान में कोईविधिवाक्य नहींहै, वो अतिसूक्ष्मजीव किसीके काममेंभी नहींआते, और नांहीं उनको देवताऽऽदिकोंके निमित्तकर माराजाताहै इस्सें वो विहितहिंसा नहींहैं ॥

यदि द्वितीयपक्षकहोतो धर्मशास्त्रनमें अविहितहिंसाका पापकहाहीहै अविहिंताहिंसाके पापोंकी निवृत्तिलिये प्रायश्चित्तकरणायोग्यही है अतः अविहितहिंसाके पापोंकीनिवृत्तिलिये पंचमहायज्ञरूप प्रायश्चित्तोंका मनुजी ने विधानकराहै, तो समीचीनकराहै हछाकराहै ॥

हेभ्रातः—श्रुतिस्मृतिआदिकोंमें देवतापितरअतिथि आदिकोंकेलिये मांसदानकाविधानहै अतः पंजमहायज्ञनमें देवयज्ञमनुष्ययज्ञआदिकोंको यदि तुमकर्तेहोतो उनमें श्रुतिस्मृतिओंके विधिपालनलिये मांसकी अपेक्षाहै, यदि तुम श्रुतिस्मृतिअनुसारी देवयज्ञमनुष्ययज्ञआदिक नहीं कर्तेहो तो प्रमादकर प्रायश्चित्तकी न्यूनतासें तुम स्वर्गमें नहींजासक्ते किंतु तुमने अपनीकलमसेंही नरकमें पड़नालिखाहै ॥

पूर्वपक्षी०—अब महाभारतमें युधिष्ठिर और ब्रह्मचारी भीष्मपितामह जीके मांसविषयमें प्रश्नोत्तरकोदेखिये

युधिष्ठिरउवाच—प्रायशःपुरुषालोके नृशंसाःप्राणिहिंसकाः ॥ मांसेषुश्रद्धादृश्यन्ते रौद्रारक्षोगणाइव

महाभारतान्तर्गत इतिहाससमुच्चय अ० २८ ॥ ५ ॥

भीष्मउवाच—अहोनुखलुशोच्यास्ते नराविषयलोलुपाः सर्वदोषकरेमांसे मूढापश्यन्तियेगुणान्

इति. अ. २८ ॥ ५ ॥ हेपितामहजी प्रायः इससंसारमें क्रूरलोग जीवोंके मारनेवाले और मांसखानेकी प्रीतिवालेही भयंकर राक्षसोंकीतरह देखनेमेंआतेहैं ॥ १ ॥

भीष्मजीबोले—वहपुरुष सर्वथानिन्दाकेयोग्यहैं जो मूर्ख केवलदोषोंकीखान मांसमेंभी कोईगुणमानतेहैं क्योंकि—इसमें विनादोषोंके गुणकानामभी नहींहै ॥

आस्तिक०—महाभारतके १८ पर्वहैं उन १८ पर्वोंमें कहीं इतिहास समुच्चय नहींहै, यदि तुमकहो कि—महाभारतसें श्लोकनिकालकर इतिहास समुच्चय किसीने बनायाहैतो हेमित्र ऐसेबनानेवाला अपनानाम लिखतातो उसकी सरलता जानीजाती ॥

और महाभारत के श्लोकोंका पाठभी बराबर मिलना चाहियेथा वो सबनहींमिलता अतः जिनश्लोकोंका पाठ भारतश्लोकोंके बराबरहै वोश्लोक माननीयहैं अन्यश्लोक माननीयनहीं होसक्ते क्योंकि भारतकेनामसें छलकर किसीने बनाडालेहैं ॥

हेमित्र—महाभारतको क्या तुमने पढ़ानहीं, विचारानहीं, यदि तुमने भारतको विचाराहोता और यिहश्लोकभी भारतमें ऐसेहीहोते तो तुम इतिहाससमुच्चयकानाम क्यों महाभारतकेही उसपर्वकानाम और अध्यायां-

कश्लोकांक लिखदेते वो न लिखनेसें तुमाराभी छलही प्रकटहोताहै महाभारतमें युधिष्ठिर और भीष्मजीकेमांसविषयक प्रश्नउत्तर पर्व १३ वेंकेअध्याय ११६वेंमेंहैं वहांपरश्लोकोंका ऐसापाठहै देखो–

महाभारत प्र० ९४—युधिष्ठिर उवाच–इमेवैमानवालोके नृशंसामांसगृद्धिनः । विसृज्यविविधान् भक्ष्यान् महारक्षोगणाइव ॥प०१३॥अ०११६॥१ अपूपान्विविधाकारान् शाकानिविविधानिच । खाण्डवान्रसयोगान्न तथेच्छन्तियथामिषम् २॥

अर्थ—युधिष्ठिरजीने कहा–हेपितामहजी लोकमें यिहमनुष्य क्रूर महाराक्षसोंकीन्यांई नानाविधभक्ष्यपदार्थोंको त्यागकर मांसकी अभिलाषा वालेहैं ॥ १ ॥ नानाआकारवाले मालपूड़ोंको नानाप्रकारके शाकोंको रसदार पकवानोंको वोमनुष्य वैसे नहींचाहते जैसेमांसको चाहतेहैं ॥

भीष्मउवाच महाभारत प्र० ९५—एवमेतन्महाबाहोयथावदसिभारत । नमांसात्परमंकिञ्चिद् रसतो विद्यतेभुवि ॥ १३ ॥ ११६ ॥ ७ ॥

हेमहाबाहो युधिष्ठिर—जैसेतूंकहताहै यिहऐसेहीहै कि पृथ्वीमें कोई वस्तु मांससें श्रेष्ठरसवाला नहींहै।

महाभारत प्र० ९६—क्षतक्षीणाभितप्तानां ग्राम्यधर्मरतात्मनाम् । अध्वनाकर्षितानांच नमांसाद्विद्यतेपरम् ॥ ८ ॥

अर्थ जखमवालेको, क्षयरोगसेंपीडितजनको, मैथुनमेंरागवालेगृहस्थों को, मार्गसेंकृशहुएजनोंको, मांससेंअन्यवस्तु श्रेष्ठहितकरनहींहै अर्थात् इन चारजनोंको मांस अतिहितकारीहै ॥

महाभारत प्र०९७ सद्योवर्द्धयतिप्राणान् पुष्टिमग्र्यां दधातिच। नभक्ष्योऽभ्यधिकःकश्चिन्मांसादस्ति परंतप ॥ १३ ॥ ११६ ॥ ९ ॥

अर्थ प्राणोंको अर्थात् आयुको शीघ्र बढावेहै, अत्यन्तपुष्टिकोकरेहै हेपरंतपयुधिष्ठिर मांससेंश्रेष्ठ कोईखानेयोग्यवस्तु नहींहै ॥

हेमित्र–देखोंयिह महाभारतके श्लोकहैं जिनका पर्वांकअध्यायांक श्लोकांकदिखादियाहै, इनमेंदेखियेभीष्मजीने मांसकेकैसेगुणकहेहैं ॥

हेभ्रातः—भीष्मजीनेहीनहीं किंतु आर्षग्रन्थचरकसंहितामें महर्षिचरक जीनेभी देखोमांसके कैसेश्रेष्ठगुण कहेहैं ॥

चरकसंहिता प्र० ९८—अतोऽन्यथाहितंमांसं बृंहणं बलवर्द्धनम्। प्रीणनःसर्वभूतानां हृद्योमांसरसः परम् ॥ अ० २७ ॥ ३०५ ॥

चरकसंहिता प्र० ९९—शुष्यतांव्याधियुक्तानांकृशानांक्षीणरेतसाम्। बलवर्णार्थिनांचैव रसंविद्याद्यथामृतम् ॥ ३०६ ॥

चरकसंहिता प्र० १००—सर्वरोगप्रशमनं यथास्वंविहितंरसम्। विद्यात्स्वर्यंबलकरं वयोबुद्धीन्द्रियायुषाम् ॥ ३०७ ॥

अर्थ—वहांपूर्वश्लोकमें जोकहा कि—मृतहुएअजआदिकोंका मांस बाल वा वृद्ध वा विषसें वा सर्पादिकसें मरेकामांस' ऐसेमांसोंको नहीं खाए (अतोऽन्यथा) इनमांसोंसें अन्यप्रकारका जोमांसहै वो हितकारी है वीर्यकावर्धकहै बलका वर्धकहै ॥

अब मांसके रसकेगुण कहतेहैं—मांसका रस सबजीवों को तृप्तकरेहै, अतिरुचिरहै ॥३०५॥ क्षयरोगवालोंको, रोगीजनोंको, कृशजनोंको, क्षीण वीर्यपुरुषोंको, बलकेअभिलाषीजनोंको, रूपकेअभिलाषीजनोंको, मांसका रस अमृतकेतुल्यजानों ॥ ३०६ ॥ यथायोग्यबनायाहुआ मांसका रस सर्वरोगोंकोनाशकरेहै, स्वरको सुन्दरकर्ताहै, अवस्थाको बुद्धिको इन्द्रियोंको आयुको बलदेनेवाला मांसकारसहै ॥ ३०७ ॥

हेमित्र—महर्षिचरकजीने तथा भीष्मपितामहजीनेतो मांसके व मांसके रसके ऐसेश्रेष्ठ गुणवर्णनकरेहैं इनसेंविरुद्ध तुमारालेख वा इतिहाससमुच्चयके कर्ताकालेख असत्यहीहै अतः महर्षिचरकजीसें तथा भीष्मजीसें विरुद्ध लिखनेवालेही निन्दाकेयोग्यहैं ॥

पूर्वपक्षी०—नमांसमायुषोहेतु नारोग्यस्यनचौजसः । दैवंकारणमेतेषां साक्षादेवेहदृश्यते ॥ इति० स० ॥ अ० २९ ॥ ९ ॥ मांसाशिनोपिदृश्यन्ते रोगार्त्ताभृशदुर्बलाः । अमांसभोजिनोऽरोगा बलवन्तःसुखान्विताः ॥ १० ॥

हेयुधिष्ठिर—मांसआयुके बढ़नेकाकारणनहींहै नीरोगताका और बल काभी कारणनहींहै किंतु यहसब प्रारब्धसें प्राप्तहोतेहैं यह साक्षात् देखनेमें आताहै ॥९॥ हम देखतेहैं कि—अनेकजीव मांसखातेहैं परन्तु बहुतसें रोगों

सें मिलेहुएहैं एवं बलसेंभी शून्यहैं, केईजीव सर्वथामांस नहींखाते किंतु नीरोग बलवान्हैं तथा सुखीप्रतीतहोतेहैं ॥१०॥ इससें सिद्धहोताहै कि— बल नीरोगताऽऽदिलियेभी मांसका खाना सर्वथामूर्खताहै ॥

आस्तिक—इनश्लोकोंमें यदि कोईहोर भक्ष्यवस्तु आयुनीरोगतावलका कारणकहतेतो तुमको यिहश्लोकलिखनेयोग्यथे परंतु इनमें आयुनीरोगता बलकाकारण प्रारब्धकहाहै अतः सम्यक् विचारें तो इनदोनोंश्लोकों में आयुका नीरोगताका बलका कारणमांसकहाहै ॥

जैसेकोईकहे कि—**म्रियमाणे नचौषधंफलति,,** मरण समीप अर्थात् प्रारब्धक्षयहुएपुरुषमें औषध फल नहींकर्ता, इसकथनका यिह तात्पर्य्य नहींहोसक्ता कि—औषधका कुछफल नहींहोता किंतु इसकथनका यिह तात्पर्य्यहै कि—औषधका फलतोहै परंतु प्रारब्धक्षीणहुए औषधका फल नहींहोता ॥

ऐसेही इनतुमारेलिखे श्लोकोंका तात्पर्य्य स्पष्टहीहै कि—आयुका नीरोगताका बलका कारणमांसहै परंतु प्रारब्धविना आयु नीरोगता बलका कारण मांसनहीं क्योंकि—प्रारब्ध साधारण कारणहै जो सर्व कार्यकाकारणहोवे वो साधारणकारणकहियेहै अतः प्रारब्धकीसहायतासें ही सर्वफलहोतेहैं प्रारब्धसेंविना तो औषधोंकाभी होरकिसीकाभी कोईफलनहीं होता, प्रारब्धक्षयहुए भ्रातामित्रआदिकभी मुख फेरलेतेहैं, औषधभी गुण नहींकर्ता, लाभकी जगहभी हानीहोजातीहै तो मांसकागुण नहुआतो कोई आश्चर्य्यनहींहै जैसेजगतमें प्रसिद्धहीहै कि—**भाग्यहीनखेतीकरे या बैलमरे या सोकापड़े ॥**

अतः योग्यहै कि—श्रुतिस्मृतिओंसें विहित आचारकर पुण्योंकासम्पादन करे और चरकसंहिताऽऽदिकोंमें जबमांसके आयुर्वर्द्धन सर्वरोगप्रशमन बल

आदिकगुणकहेहैं तो उनआर्षवाक्यनका, दुराग्रहकर न मानना मूर्खताहीहै पूर्वपक्षी **स्वच्छन्दवनजातेन शाकेनापिप्रपूर्य्यते । तस्यैवोदरस्यार्थे कःकुर्यात्पातकंनरः** इ० अ०२८॥ १५ ॥ स्वच्छन्द वनमेंहोनेवाले शाकसेंभी पेटभरा जाताहै तो फिर उसके वास्तेकौनपुरुष पापकरे १५

आस्तिक०--केईवार प्रबलप्रमाणोंसे सिद्धकरचुकाहुं कि-अविहितमांस को नहींखानाचाहिये, और देखो प्रमाणांक ३१ आदिकोंको विहितमांसके खानेसे पाप नहींहोता प्रत्युत देखोप्रमाणांक ८१ आदिकोंको विहितमांस के नहींखानेसें अतिपाप होताहै अतः गृहस्थजनोंने वृथामांसको त्यागकर विहितमांसको अवश्यखानाचाहिये ॥

पूर्वपक्षी०-अब भीष्मजी युधिष्ठिरको बहुतसे ऋषिओंकी सभाहोकर आपसमें मांसकेभक्ष्याभक्ष्यके विषयमें जो निर्णय, फैंसलाहूआथा उसको सुनातेहैं कि किस २ ऋषिने मांसके विषयमें क्या२ कहाथा महाभारतान्तर्गत इतिहाससमुच्चयमे लिखाहै कि **—योऽहिंसकानिभूतानि हिनस्त्यात्मसुखेच्छया ॥ कृष्णद्वैपायनःप्राह स्थावरत्वंसगच्छति ॥** ३, अ, २८॥२७॥ सभामें पहिली व्यासजी की सम्मति-जो निरपराधजीवोंको अपनेसुखकी कामनासें मारताहै वह मर कर वृक्ष बनताहै ॥

आस्तिक०-यदि इत्यादिश्लोक महाभारतकेहोते तो तुम पर्वांक अध्यायांक श्लोकांक लिखते वोतो तुमने लिखेहीनहीं अतः यिह श्लोक प्रमाण रूप नहींहै तथापि स्मृतिओंमें व्यासप्रभृतिमहर्षिओंके सम्मुख अपने २ जो मांसभक्षणमें निर्णय प्रकट करेहैं उनस्मृतिरूप प्रबलप्रमाणोंको मैं दिखलाताहुं ॥

अनेकऋषिओंके समक्ष व्यासजीका निर्णय प्रथम देखो ॥

व्यासस्मृति- **नाश्नीयाद्ब्राह्मणोमांस मनियुक्तः कथंचन ॥ क्रतौश्राद्धेनियुक्तोवा अनश्नन्पतति द्विजः** अ,३॥५५॥ अर्थ प्रमाणांक ८२ में लिखचुकाहूं ॥ इस श्लोक में व्यासजी कहतेहैं कि, विधिसें विना ब्राह्मण मांसको नहींखाए ॥ यज्ञमें और श्राद्धमें द्विजपुरुष मांसको नहींखाए तो पतित होजाताहै अर्थात् वृथामांसके खानेका निषेधकरके विहितमांसके खानेकी आवश्यकता व्यास जीकहतेहैं, यिह व्यासजीका निर्णयहै वो तुमारेलिखेश्लोकमेंभी कहाहैकि **आत्मसुखेच्छया,,** अपने सुखकी इच्छाकर अर्थात् देवताऽऽदिकोंके निमित्तसेंविना जो वृथाहिंसाका कर्ताहै वो मरकर वृक्ष बनताहै, विहितहिंसाके करणेवाला वृक्ष नहीं बनसक्ता क्योंकि देखो प्रमाणांक ६९ में विहितहिंसाका तो दोनोंको उत्तमगतिकी प्राप्तिरूप श्रेष्ठफलही कहाहै ॥

पूर्वपक्षी०—**संतप्यतितपोऽजस्रं यजतेचददातिच । मधुमांसनिवृत्तोयः प्रोवाचेदंबृहस्पतिः** ॥२८॥

यावज्जीवंतुयोमांसं विषवत्परिवर्जयेत् ॥ वसिष्टोभगवानाह स्वर्गलोकंसगच्छति ॥२९॥

योभक्षयित्वामांसानि पश्चादपिनिवर्तते ॥ जमदग्निर्जगादैवं सोपिस्वर्गतिमाप्नुयात् ।३०। सुवर्णदानंगोदानं भूमिदानंतथैवच ॥

नोत्तमंप्राणदानात्स्या दित्युवाचपराशरः ।३१।

बृहस्यतिजी–जो, मधु, शराब मांसका भक्षण नहीं कर्ता वह नित्यके तप और दान करनेवालाहै अर्थात् विनातप और दानके दोनोंका फल पाताहै ॥ २८ ॥

वसिष्टजी–जो आयुभर मांसका विषकीन्यांई त्यागकर्ताहै वह स्वर्गको जाताहै ॥ २९ ॥

महर्षिजमदग्निजी––जोमांसकोखाकरभी पीछे छोड देताहै वहभी स्वर्गको प्राप्त होताहै ॥ ३० ॥

श्रीवेदव्यासजीके पिता पराशरजी–सोनेका दान गौका दान, भूमिका दान, यहतीनों महादान मानेजातेहैं परन्तु एक प्राणोंके दानके बराबर यहतीनों नहींहोसक्के क्योंकि–प्राणोंका दान सबसें उत्तमहै ॥३१॥

आस्तिक०––हेमित्र तुम इतिहाससमुच्चयमेंही रहे पंडितमानीहुएभी महाभारततक नहींपहुंचसके–महाभारतआदिआर्ष वाक्यनकी व्यवस्थाकरी जातीहै, इतिहाससमुच्चयकी व्यवस्थाकी आवश्यकता नहींहै तथापि प्रबल प्रमाणोंसें उत्तरदेताहूं व्यवस्थादिखलाताहुं ॥

बृहस्पतिके विषयमें तो साक्षात्वेद प्रमाणहै–

कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयसंहिता प्र० १०१–

बार्हस्पत्य ँ शितिपृष्ठमालभेत ॥ काण्ड २॥ प्रपाठक १॥ अनुवाक ६॥ १॥ अर्थ––बृहस्पतिदेवतानिमित्तक श्वेतपृष्ठवाले अज आदि पशुको मारे ॥ देवताकेनिमित्त पशुके मारणका नाम आलभनहै ॥

भगवद् व्यासजीके प्रपितामह, महर्षिपराशरजीके पितामह, साक्षात् ब्रह्माके पुत्र महामुनिवसिष्टजीके निर्णयको अब देखो––

वसिष्टस्मृति प्र० १०२— **पितृदेवताऽतिथिपूजायां पशुंहिंस्यात् ॥** अ० ४॥१ ॥ अर्थ—पितरोंकी देवतोंकी अतिथि की सेवालिये पशुको मारे ॥

देखो देवताऽऽदिकोंके निमित्तकर पशुके मारणका वसिष्टजी विधान करतेहैं अतः तुमारेलिखेश्लोकोंमें वृथामांसके त्यागका फल कहाहै ॥ और देखो प्रमाणांक ८३ आदिकोंको विहितमांसके नहीं खानेसें नरकादिकी प्राप्ति वसिष्टआदिमहर्षियोंनें कहीहै अतः धर्मात्मागृहस्थजनों ने वृथामांसका त्यागकर्के विहितमांसको अवश्यखाना चाहिये ॥

व्यासजीकेपिता महर्षिपराशरजीकी सम्मति—

बृहत्पाराशरीय प्र० १०३—**भक्ष्यंप्राणात्ययेमांसं श्राद्धयज्ञोत्सवेष्वपि ॥** अ० ४ ॥ ३१६ ॥

अर्थ—प्राणान्तसमय अर्थात् औषधलिये मांसभक्ष्यहै और श्राद्धमें यज्ञमें उत्सवोंमेंभी मांसभक्ष्यहै ॥

और प्रमाणांक ७५ मेंभी पराशरजीनें नित्यपंचमहायज्ञनमें मांसादिकों सें पितरोंकी देवतोंकी अतिथिमनुष्योंकी तृप्तिकरणेकर स्वर्गप्राप्तिकाविधान कराहै ॥

इत्यादिक प्रबलप्रमाणोंसेंभी और पहिलेभीसिद्ध होचुकाहै कि—विहित पशुहिंसासें और विहितमांसभक्षणसें कोईदोष नहींहोता प्रत्युतश्रेष्ठफलही होताहै अतः तुमारेलिखे श्लोकोंमेंवृथामांसके त्यागकाहीफलकहाहै क्योंकि प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके नहींखानेकर अतिदोषकहाहै ॥

मनुस्मृति प्र० १०४ **यज्ञार्थंब्राह्मणैर्वध्याः प्रशस्ता मृगपक्षिणः । भृत्यानांचैववृत्त्यर्थं मगस्त्यो ह्यचरत्पुरा ॥** अ० ५ ॥ २२ ॥

इसपर मेधातिथिका मनुभाष्य प्र० १०५ यज्ञार्थमित्याद्यर्धश्लोकोऽर्थवादएवतत्राहिबधः प्रत्यक्षश्रुतिविहितत्वादेवासिद्धः ॥

इसपर सर्वज्ञनारायणकी टीका प्र० १०६—यज्ञार्थं पाक यज्ञहविर्यज्ञ सोमयज्ञसिद्ध्यर्थं बध्याः स्वयं ॥

इसपर कुल्लूकभट्टकी टीका प्र० १०७ ब्राह्मणादिभिर्यागार्थं प्रशस्ताः शास्त्रविहिता मृगपक्षिणोबध्याः, भृत्यानांचावश्यभरणीयानां वृद्धमातापित्रादीनां संवर्धनार्थम् यस्मादस्त्योमुनिःपूर्वंतथाकृतवान् परकृतिरूपोऽयमनुवादः ॥

इसपर राघवानन्दकी टीका प्र० १०८—भक्ष्यप्रसंगेनहिंसां कुर्वित्यनुजानाति यागार्थमिति सदाचारं प्रमाणयति अगस्त्यइति ॥

इसपर नन्दनाचार्यका मानवव्याख्यान प्र० १०९—

भक्ष्यत्वेनानुज्ञातानां मृगपक्षिणांयज्ञार्थं भृत्यार्थंच वधोब्राह्मणानामपिनिर्दोषइत्याह यज्ञार्थम् इति ॥

इसपर रामचंद्रकी टीका प्र० ११०—**अगस्त्यः भृत्यानांपित्रादीनांतृप्त्यर्थं पुराआचरत् ॥**

इनटीकाओंसहित मनुश्लोककाअर्थ—भक्ष्यकेप्रसंगसें इसश्लोकमेंविहित हिंसाकी मनुजी सम्मतिदेतेहैं ॥

यज्ञनिमित्त और पालनपोषणयोग्य वृद्धमातापिताऽऽदिकोंकी जीविका निमित्तभी शास्त्रविहितमृगपक्षी ब्राह्मणोंनेआप मारणेचाहिये, इसमेंश्रेष्ठाचार काप्रमाणदेतेहैं कि—अगस्त्यमुनिजीभी पहिलेवैसेही कर्तेभये इसमेंब्राह्मण को कोईदोषनहींहोता ॥

मेधातिथिजी कहतेहैं कि—पूर्वअर्धश्लोक अर्थवादहै, श्रेष्ठगुणकाकथनहै क्योंकि तहांयज्ञमें मृगआदिकोंकी हिंसा साक्षात् श्रुतिविहितहोनेसें सिद्धहीहै हेमित्र—पालनपोषणयोग्य ९ कहेहैं देखो—

शब्दस्तोममहानिधि—**मातापितागुरुःपत्नी त्वपत्यानिसमाश्रिताः। अभ्यागतोऽतिथिश्चाग्निः पोष्यवर्गउदाहृतः ॥**

अर्थ—माता पिता गुरु स्त्री सन्तान स्वाश्रित अभ्यागत अतिथि अग्नि, यिह, पोष्यवर्गहै पोषणयोग्यका समुदायहै ॥

पूर्वपक्षी०—यद्यपि और ऋषिओंकीभी बहुतसी सम्मतियेमांसनिन्दा और हिंसाकी निन्दामेंहैं तथापिग्रन्थबढ़नेके भयसें सर्वनहीं लिखीगई ॥

आस्तिक०—हेमित्र दोनोंप्रकारकेवाक्य लिखकरव्यवस्था कीजावेतो सम्मति प्रकट होसक्तीहै, दुराग्रहसें एकतर्फेवाक्य लिखनेकर सम्मति प्रकट

नहींहोसक्ती हेबाल तुमनेतो केईछलकर लेखलिखाहै अतःऋषिओंकी सम्मति प्रकटकरनेमें तेरा आधिकारही कैसेहोसक्ताहै ॥

ऋषिओंकीसम्मतिएंतो तुमकैसेछोड़सक्तेहो मुसलमानोंके वाक्यतो तुमने लिखडाले, जिनमुसलमानोंकी शराहमें पीरपैगंबर सैयदफ़कीर अमीरगरीब औरतमरद बच्ची बच्चे बूढ़ेजवान वगैहरासबकेलिये मांसखानाजैजहै, यिह सबलोकजानतेहींहैंतो उनकेभीअनुपयोगीवाक्य लिखदेने, यिहक्या उपहास योग्यतानहींहै ॥

पूर्वपक्षी०—अब मांसकेखानेमें थोड़ादोषमाननेवाले इनऋषिओंकी बात पर ध्यानदेंगेतो समझेंगे कि—इसमें कितनादोषहै ॥

आस्तिक०—हेमित्र जिनोंने श्रुतिस्मृतिओंका सम्यक् विचार नहींकरा वोतुमारेलिखे बृथामांसविषयके अविहितमांसविषयके श्लोकोंको देखकर समझेंगे कि—मांसखानेसें दोषहोताहै परंतु मांसभक्षणके विधायक वेदोंके संहिताभाग ब्राह्मणभाग उपनिषद्भाग सायणभाष्यआदिकोंके वाक्यनको और प्रमाणांक ३१ आदिकोंको देखेंगेतो अवश्यंकहेंगे कि विहितमांसखाने सें दोष नहींहोता ॥

मनुस्मृति आदिकोंके तुमारेलिखे वृथामांसविषयके श्लोकोंके उत्तररूप प्रमाणोंको और दोनोंप्रकारके वाक्यनकी व्यवस्थाको देखेंगेतो कहेंगे कि—यद्यपि अविहितमांसके वृथामांसकेखानेसें दोषकहाहै तथापि विधिसेंविहित मांसके खानेकरदोषनहींहोता प्रत्युतप्रमाणांक ८१ आदिकोंको देखकर कहेंगे कि—विहितमांसकेतो नहींखानेसेंअतिदोष शास्त्रोंमें कहाहुआहै, नास्तिकजीने वृथामांसविषयके श्लोकदिखलाकर धोखादियाथा परंतु परमेश्वरानुग्रह हुआ कि—उत्तरप्रमाणको देखकर नास्तिकजीके धोखेसें भलेबचे भले बचे ॥

पूर्वपक्षी०—और यदिकिसीइतिहासमें मांसकी चर्चा निकसभीआवेतो बहूनामनुग्रहोन्यायः जिसमेंबहुतयथार्थवक्ताओंकी सम्मतिहो वहीबातठीक होतीहै क्योंकि वहकर्म धर्मबुद्धिसेंनहींहुआ और नांही धर्मशास्त्रवत् इतिहास प्रभुशास्त्रहीहै इसयुक्तिसेंभी मांसखाना छोड़देनाचाहिये क्योंकि—मांसके निषेधमें बहुतसेंऋषि सहमतहैं ॥

आस्तिक०—हेमित्र—किसीइतिहासमें मतकहो किंतु व्यासबाल्मीकी प्रभृति महर्षिओंके रचितमहाभारतरामायणआदि सर्वइतिहासों में मांसका विधानहै ॥

और 'वहकर्म धर्मबुद्धिसें नहींहुआ' यिहतुमाराकथनभी असत्यहीहै क्यों असत्यहै तथाहि सुनिये—

१—जब चित्रकूटमें श्रीरामजीनें कुटी बनवाई तबशास्त्रविधिसें धर्म बुद्धिकर कृष्णमृगकेमांससें 'वास्तुकर्म' गृहप्रतिष्ठा करीथी देखो—

बाल्मीकीय रामायण प्र० १११—ऐणेयंमांसमाहृत्यशालांयक्षामहेवयम् । कर्तव्यंवास्तुशमनं सौमित्रे चिरजीविभिः ॥ काण्ड २ ॥ सर्ग ५६ ॥ २२॥

अर्थ—हेलक्ष्मण कृष्णमृगके मांसकोलेकर हम कुटिका यजन करेंगे क्योंकि चिरंजीवीपुरुषोंने गृहके दोषकी शान्तिकरणी योग्यहै ॥

बा०रामायण प्र० ११२—मृगंहत्वाऽऽनयक्षिप्रं लक्ष्मणेहशुभेक्षण । कर्तव्यःशास्त्रदृष्टोहि विधिर्धर्ममनुस्मर ॥ २३ ॥

अर्थ मृगकोमारकर यहांशीघ्रल्याओ जिससें शास्त्रमेंदेखा विधि करणे योग्यहै हेशुभदृष्टेलक्ष्मण धर्मको स्मरणकर ॥

वा० रामायण प्र० ११३—चकारचयथोक्तंहि तंरामः पुनरब्रवीत् । ऐणेयंश्रपयस्वैत च्छालांयद्या-महेवयम् ॥२५॥

वा० रामायण प्र० ११४—त्वरसौम्यमुहूर्त्तोऽयंध्रुवश्च दिवसोह्ययम् ॥ सलक्ष्मणःकृष्णमृगं हत्वामेध्यं प्रतापवान् ॥२६॥

वा० रामायण प्र० ११५— अथाचित्तेपसौमित्रिःसमि-द्धेजातवेदसि ॥ तत्तुपक्वंसमाज्ञाय निष्टप्तंछिन्नशो-णितम् ॥२७॥

वा० रामायण प्र० ११६—लक्ष्मणःपुरुषव्याघ्र मथ-राघवमब्रवीत् ॥ अयंसर्वःसमस्ताङ्गः ।शृतः कृष्णमृगोमया ॥२८॥

———

वा० रामायण प्र० ११७—देवतादेवसंकाश यजस्व-कुशलोह्यसि ॥२९॥ वभूवचमनोहादो रामस्या-

मिततेजसः ॥ वैश्वदेवबलिंकृत्वा रौद्रंवैष्णव-
मेवच ॥३१॥

वा० रामायण प्र० ११८—वास्तुसंशमनीयानि मङ्गला-
निप्रवर्तयन् ॥ जपंचन्यायतःकृत्वा स्नात्वानद्यां-
यथाविधि ॥ पापसंशमनंराम श्चकारबलिमुत्त-
मम् ॥३२॥

अर्थ—जैसे रामजीनें कहा वैसेही लक्ष्मणनें किया फिर रामजीनें कहा कि—इसकृष्णमृगके मांसको पकाओ हम गृहका यजन करेंगे ॥२५॥हेसौम्य लक्ष्मण शीघ्रकर यिह मुहूर्त व दिवस ध्रुवसंज्ञावालाहै फिर सो प्रतापी लक्ष्मण पवित्रकालेमृगको मारकर ॥२६॥ फिर रुधिरस्रवणसें रहितहुए उसमृगको लक्ष्मणजी प्रज्वलितअग्निमें फैंकतेभए पुनः अतिगर्म उसमांसको पकाहुआ जानकर ॥२७॥ लक्ष्मणजी पुरुषोंमें श्रेष्ठ रामजीको कहतेभए कि—यिह सब समस्तांग कृष्णमृग मैंने पकायाहै॥२८॥ हेदेवसदृशरामजी देवतों का यजनकरो, जिससें आप यजनमें कुशलहैं॥२९॥तब अपरिमित तेजवाले रामजीके मनमें हाद होताभया रामजी वैश्वदेवबलिको और रुद्रदेवके विष्णुदेवकेनिमित्त बलिकोकर्के ॥३१॥ गृहदोषकी शान्तिलिये मंगलपाठ आदि कर्तेभए विधिसें जपकर्के यथाविधि नदीमें स्नानकर्के रामजी पापोंके शमनका हेतु उत्तमबलिको कर्तेभए ॥३२॥

देखोहेमित्र—श्रीरामजीनें शास्त्रविधिसें धर्मको स्मरणकर्के कृष्णमृगके मांससें गृहप्रतिष्ठा कीथी ॥

२—जब युधिष्ठिरको संबन्धीओंके विनाशजन्यपापोंसें भयहुआ तब उन पापोंके निवारणलिये व्यासजीके उपदेशसें युधिष्ठिरनें अश्वमेधयज्ञ कराथा उसयज्ञमेंदेखो ॥

महाभारत प्र० ११६—यूपेषुनियताचासी त्पशूनां-त्रिशतीतथा ॥ अश्वरत्नोत्तरायज्ञे कौन्तेयस्य-महात्मनः ॥ पर्व १४॥ अ० ८८॥३५॥

महाभारत प्र० १२०—श्रपयित्वापशूनन्यान् विधि वद्द्विजसत्तमाः॥ तंतुरङ्गंयथाशास्त्रमालभन्तद्वि-जातयः ॥ १४॥८६॥१॥

अर्थ—कुन्तीकेपुत्र महात्मायुधिष्ठिरके यज्ञमें ३००पशु और उत्तमअश्व यूपोंमें बांधेगए ॥३५॥ होरपशुओंकों पकाकर द्विजोंमेंश्रेष्ठब्राह्मण यथाशास्त्र विधिसें उस अश्वको मारतेभए ॥

हेमित्र—अब कहिये कि—व्यासजीके उपदेशसें, व्यासादि महर्षिओंके प्रत्यक्ष, श्रीकृष्णजीके विद्यमानहोते, हस्तिनापुर श्रीगंगाजीके तटपर, धर्मा-वतारयुधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमें जो ३०१ पशुओंका बलिदान करागया तो यिहभी तेरीदृष्टिमें क्या धर्मबुद्धिसें कर्म नहींहुआ किंतु नास्तिकतासें छलकर तुमारा लेखही क्या धर्मबुद्धिसें हुआहै ॥

होर जो तुमने कहा कि—जिसमें बहुतयथार्थवक्ताओंकी सम्मतिहो वहीबात ठीकहोतीहै नांही धर्मशास्त्रवत् इतिहास प्रभुशास्त्रहीहै इसयुक्तिसे भी मांसका खाना छोड़देना चाहिए क्योंकि—मांसके निषेधमें बहुतसे ऋषि सहमतहैं ॥

सोयिह तुमारा कथनभी समीचीननहीं क्योंकि यद्यपि इतिहासोंमें कहीं कीटका, कहींपशुका, कहींपक्षीका, कहींअसुरका, कहींव्याधका, कहीं वैश्यका, कहीं राजाका, कहीं ऋषिका, कहींकिसीका, कथन चलपडताहै अतः स्मृतिओंकी न्याईं इतिहास समर्थ नहींहोसक्ता तथापि योगजधर्मयुक्त व्यास पराशर अत्रि याज्ञवल्क्य वसिष्टआदिक महर्षिओंके रचितस्मृतिग्रन्थों के तो तुम प्रमाणही नहीं लिखसके—

और जोतुमने एकमनुस्मृतिकेश्लोकलिखेहैंवो वृथामांसविषयकेहैं और मनुस्मृतिमेंभीजो मांसकीशुद्धिके मांसभक्षणके मांसभक्षणमें निर्दोषताके, और विहितमांसकेनहींखानेकर अतिदोषके प्रतिपादकश्लोकहैं उनमेंसेएक श्लोकभीतुमनेनहींलिखा, और नांहीदोनोंप्रकारके श्लोकोंकी व्यवस्थाकी तो मनुजीकीसम्मतिकैसे प्रकटहोसक्तीहै अतः मनुजीकीसम्मतिभी तुमसेंप्रकट नहीं होसकी ॥

होर व्यासस्मृति वसिष्टस्मृतिआदिकोंका कोई वाक्य तुमने नहींलिखा और श्रौतसूत्र गृह्यसूत्रग्रन्थनमेंसें कोईसूत्रभी तुमने नहींलिखा अतः मांसनिषेधमें बहुतसे ऋषि सहमतहैं,, यिह तुमारा कथन अत्यन्त असत्यहीहै ॥

हेमित्र—विहितमांसभक्षणके विधायक मनुस्मृति याज्ञवल्क्यस्मृति अत्रिस्मृति लिखितस्मृति वसिष्टस्मृति बृहत्पाराशरीय श्रौतसूत्र गृह्यसूत्र आदि कोंके अनेक अनेक वाक्यनसें महर्षिओंकी सम्मतिएं दिखाचुकाहूं और दिखावुंगा इस्सेंविहित मांसके खानेमें सर्वमहर्षि सहमतहैं इसीसें प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहित मांसके नहींखानेसें अतिदोष मनुव्यासवसिष्टादिक महर्षिओं ने कहेहैं अतः आस्तिकगृहस्थजनोंने विहितमांसको अवश्यंखानाचाहिये ॥

पूर्वपक्षी०—जबके इसतरह सबमहात्माओंने मांसखानेकी निन्दाकीहै तो फिरभीजो मांससें नहींहटते और उपकारकरनेवाली गौमाताके प्राण नहींबचाते उनसेंबढ़कर कृतघ्न दूसरा कौनहोसक्ताहै ॥

आस्तिक०—हेमित्र—मनुव्यासवसिष्टादिक महर्षिमहात्माओंने तो विहित मांस के नहींखानेसें नरकादिकोंकी प्राप्तिकहीहै अतः उनमहर्षिमहात्माओंनेंतो विहितमांसके त्यागकी निन्दाकीहै और अविहितमांसके खानेकीनिन्दाकीहै व वेदानुसारी विहितमांसके भक्षणकाविधानकराहै ऐसेमहर्षिओंकेवाक्यनको देखकरभी जो विपरीतअर्थको कर्तेहैं लिखतेहैं उनसेंबढ़कर नास्तिक दूसरा कौन होसक्ताहै ॥

हेभ्रातः—मनुव्यासवसिष्ठ आश्वलायन कात्यायनप्रभृति योगारूढ़ महर्षिजन क्या तेरीदृष्टिमें महात्मानहींथे किंतु एकतुम और एकदो तुमारे श्रद्धेय बस इसजगत्में इतनेही चार महात्माहैं ॥

और गौओंकोयथाशक्ति रखनाचाहिये उनकी सेवा कीचाहिये क्योंकि जब गोपालोंके गृहमें कृष्णजीरहे तबकृष्णजीभी गोओंको चरातेरहेहैं ॥

पूर्वपक्षी०—हां तुमनेआप तो शास्त्रकागन्धतक नहींलिया केवल सुनी सुनाईबातोंपरही विश्वास रखलियाकर्तेहो ॥

आस्तिक०—हां तुमने ठीकशास्त्रपढ़ेहैं जिससेंस्मृतिओंके पाठबदलादिये और केईजगें धर्माधर्मकेनिर्णयमें धोखेदिये ऐसेशास्त्रवेतासें अनपढ़ ही हच्छेहैं ॥

पूर्वपक्षी०—वेदमेंआज्ञानहींहै बल्कि एकप्रकारसें निषेधकराहै ।

आस्तिक०-वेदोंके संहिताभागोंमें ब्राह्मणभागोंमें उपनिषद्भागोंमें मांसभक्षणकी अनेकजगें आज्ञा कीहुईहै परंतु तुम कहतेहो कि—"एकप्रकारसेंनिषेधकियाहै"

वोजो एकप्रकार तुमकहोगे तो उसकाविचार कराजावेगा परंतु तुमारीएक प्रकारकी कल्पनाहीअसत्यहै क्योंअसत्यहै तथाहीकहताहूं सुनिये ॥

मैंआपसें पूछताहूं कि—ईश्वर तो सर्वदासत्यसंकल्पहीहोताहै उससत्य संकल्पईश्वरने वेदमें मांसकानिषेधएकप्रकारसें क्योंकरा अर्थात् "किसीभीमनुष्य ने किसीभीपशुका वा पक्षीआदिकामांस नहींखाना" ऐसामांसखानेका स्पष्ट निषेधही क्योंनहींकरदिया ॥

ऐसेमांसके स्पष्टनिषेधकरणेसें ईश्वरको किसीका भयथा, वा ईश्वर सत्यसंल्प नहींथा, वा आस्तिकजनभी ईश्वरकेवाक्यको नहींमानतेथे, अथवा मांसभक्षणकी प्रवृत्तिकोमनुष्य झटितिनहींरोकसक्तेथे इस्सेंपरमेश्वरने मांसका स्पष्टनिषेध नहींकरा किंतुएकप्रकारसें निषेधकराहै ॥

इनमें प्रथमपक्ष तो समीचीननहीं क्योंकि— सर्वाधिकशक्तिमान्‌होनेसें ईश्वरको किसीका भय नहींहै और द्वितीयपक्षभी असंभवहीहै क्योंकि सर्वजीवोंको सर्वकर्मोंके फलप्रदाताको व सर्वजगत्केउत्पादकको ईश्वरकहतेहैं, सर्वजीवोंको सर्वकर्मोंके विचित्रफलोंको असत्यसंकल्पजीव नहींदेसक्ता, तथाआकाशवायु अग्निजल भूमिनानाविधवन पर्वतसमुद्रसूर्यचन्द्रादिक विचित्रजगत्कोभी असत्यसंकल्प जीव नहींरचसक्ता इससेंजो सत्यसंकल्प नहींहै वोईश्वर नहींकहलायसक्ता ईश्वर तो सदासत्यसंकल्पहीहोताहै ॥

तृतीयपक्षभी असाधुहीहै क्योंकि—ईश्वरवाक्यको जोपुरुष नहींमानते वोपुरुष आस्तिक नहींकहलासक्ते किंतु जोईश्वरवाक्यनको सत्कारसेंमानतेहैं श्रद्धासे विचारतेहैं उनकेअनुकूलवर्ततेहैं वोही आस्तिक कहलायसक्तेहैं ॥

चतुर्थपक्ष कहोतो वोभी असत्यहीहै क्योंकि—यदि परमेश्वरको जगत्में विहितमांसखानेकी प्रवृत्ति वाञ्छित नहोती किंतु मांसकात्याग वाञ्छित होता तो जबपरमेश्वरने प्रथमब्रह्माको रचकर वेदप्रकटकरेथे तबआदिसेंही

मांसखानेका (कोई मनुष्य किसीपशुपक्षीआदिका मांसनहींखाए) ऐसा स्पष्ट निषेधही कराहोतातो तबआदिसेंही मांसखाने की प्रवृत्तिहोहीनसक्ती ॥

दृष्टान्त—जैसे जबसें जैनमतचलाहै तबसेंही जैनीओंकेआदिगुरु जिन देवजीनेमांसखानेका स्पष्टनिषेधहीकराहै तबसें पहिलेसेंही जैनमतमें जैनीओं में मांसखानेकी प्रवृत्ति होहीनहीं क्योंकि जिनदेवजीको मांसखानकीप्रवृत्ति वाञ्छित नहींथी अतः आदिसेंही स्पष्ट निषेधकर दियाथा ॥

ऐवं यदि परमेश्वरनेभी वेदोंमें मांसखानेका स्पष्टनिषेधही केवलकरा होतातो मांसखानेकी आदिसें प्रवृत्तिही नहोती परंतु जिनदेवजीकीन्यांई परमेश्वरनें वेदोंमें स्पष्टनिषेधतो कियानहीं प्रत्युतअनेकवाक्यनसें पशुबलि प्रदानकी और मांसभक्षणकी आज्ञाकीहै इस्सेंनिश्चयहोताहै कि—सर्वशक्तिमान्सर्वज्ञ परमेश्वरको आस्तिकोंमें मांसखानेकी प्रवृत्तिवाञ्छितहै इस्सें एक प्रकारसें निषेधकियाहै,, ऐसीयिह तुमारी कल्पना असत्यहीहै ॥

पूर्वपक्षी०—हम तुमको दृष्टान्तवचनही दिखाकर समझातेहैं '**पञ्चपञ्चनखा भक्ष्याः**,, यहएकवचन शास्त्रमें लिखाहै इसका ऊपरसेंतो यहअर्थप्रतीत होताहै कि—पांच पांचनखोंवाले खाने चाहिये परंतु यहां पर परिसंख्याविधिहै जबअपनीइच्छासें प्रत्येकजीवके मांसकोखानेकेवास्ते मनुष्यप्रवृत्तहोताहै तबयहवचनप्रवृत्तहोताहै इसकाभावलक्षणाद्वारा यहहै कि अपंचनखवालोंको न खानाचाहिये इसकाकेवलइसीअंशमें तात्पर्य्यहै और में नहींहोसक्ता क्योंकि—मांसतो वहस्वयंहीखायाकरताहै तोफिर उसके वास्ते उसकोवेदने शिक्षाही क्यादेनीथी जैसेकोईअपनेआप मट्टीके खानेवाले अपनेपुत्रसेंकहें कि—पुत्रतूंगंगाजीकी मट्टीखायाकरतो इसवाक्यसें पिताका पुत्रको मट्टीखिलानेमें तात्पर्य्यसर्वथा नहींहै किंतु गंगाजीकीमट्टीसें दूसरी

मट्टीकेखानेसें रोकनेकाहीकेवल प्रयोजनहै ऐसेही "पञ्चपञ्चनखाभक्ष्या" इस वाक्यमेंभी जानो यहव्यवस्था पूर्वमीमांसामें कीगईहै ॥

आस्तिक०—तुमनेकहा कि—'यहएकवचन शास्त्रमेंलिखाहै' हेमित्र पशुबलिप्रदान और विहितमांसभक्षणविषयकेतो शास्त्रोंमें हजारोंवचनहैं उनमेंथोड़ेसें मैंनेलिखेभीहैं होरकेईलिखूंभीगा उनसबवचनोंको छिपा कर तुमएकवचन क्यों कहतेहो ॥

और तुमनेकहा कि—जबअपनीइच्छासें प्रत्येकजीवके मांसखानेवास्ते मनुष्य प्रवृत्तहोताहै तबयिहवचनप्रवृत्तहोताहै" यिहतुम्हाराकथनभी असत्य हीहै क्योंकि—कोईभीआस्तिकमनुष्य प्रत्येकजीवके मांसखानेलिये प्रवृत्त नहींहोता किंतु जिनभेडबकरातित्तिरआदिकोंके मांसको परम्परासें मनुष्यखातेआएहैं उनहीकेमांसको खानेलिये मनुष्यप्रवृत्तहोतेहैं ॥

होरजो तुमनेकहा कि—"पञ्चपञ्चनखाभक्ष्याः" यहांपर परिसंख्या विधिहै वोयिहतुम्हाराकथनभी अयुक्तहीहै तथाहि सुनिये—

१—महाभाष्यके प्रथमाह्निकमें भगवत्पतञ्जलिजीनेभी यहां नियम विधि मानाहै देखो—

महाभाष्य प्र० १२१—**भक्ष्यनियमेनाभक्ष्यप्रतिषेधोगम्यते पञ्चपञ्चनखाभक्ष्याइत्युक्ते गम्यते एतदतोन्येऽभक्ष्याइति ॥**

अर्थ—भक्ष्यके नियमविधिसें अभक्ष्यका प्रतिषेध जानाजाताहै जैसे पांचनखवाले पांचभक्ष्यहैं ऐसेकथनकिये यिहजानाजाताहै कि—पांचनख वाले इनपांचोंते अन्यपांचनखवाले अभक्ष्यहैं इति ॥

२—नियमविधि और परिसंख्याविधिके लक्षणोंके विचारसेंभी यहां नियमविधिही संभवेहै तथाहीं कहताहुं सुनिये—

नियमविधिका लक्षण—**पक्षप्राप्तांशपूरको विधिर्नियमविधिः॥** अर्थ—एकपक्षमें प्राप्तअर्थके अप्राप्तअंशको पूरण करणेवाले विधिको नियमविधि कहतेहैं।

दृष्टान्त—**जिज्ञासुर्मोक्षशास्त्रश्रवणंकुर्यादिति नियमविधिः॥** जिज्ञासुपुरुष मोक्षशास्त्रका श्रवणकरे ऐसायहनियम विधिहै क्योंकि—जिज्ञासुको परमात्माके ज्ञानलिये शास्त्रका श्रवणअपेक्षितहै वो एक मोक्षशास्त्रहै और एक अन्यशास्त्रहै अतः एकपक्षमें मोक्षशास्त्रका श्रवण प्राप्तहै एकपक्षमें अन्यशास्त्रका श्रवण प्राप्तहै, जिसपक्षमें अन्यशास्त्र का श्रवणप्राप्तहै उसपक्षमें मोक्षशास्त्रका श्रवण अप्राप्तहै इससें एकपक्षमेंप्राप्त मोक्षशास्त्रके श्रवणके अप्राप्तअंशको पूरणकरणेवाला यिहविधिहै अतः यिह नियमविधिहै॥

ऐसेही—"**पञ्चपञ्चनखाभक्ष्याः॥**" यिहनियमविधिहै क्योंकि—एकपक्षमें 'सेह गोह गैंडा कूर्म शश, इनपांचपंचनखवालों का भक्षणप्राप्तहै, एकपक्षमें विडाल वानरप्रभृति अन्यपंचनखवालोंका भक्षण प्राप्तहै, जिसपक्षमें अन्यपांचनखवालोंका भक्षणप्राप्तहै उसपक्षमें इनपांचपंच नखवालोंका भक्षण अप्राप्तहै, अतः एकपक्षमेंप्राप्त पांचपंचनखवालों के भक्षणके अप्राप्तअंशका पूरणकरणेवाला यिहविधिहै अतः यिह नियमविधिहै

परिसंख्याविधिका लक्षण—**उभयप्राप्तावितरव्यावृत्तिबोधकोविधिः परिसंख्याविधिः॥** दोअर्थोंकी प्राप्ति

हुए उनमें एकइतरअर्थकी व्यावृत्तिका बोधक जो विधि वो परिसंख्याविधि कहाजाताहै ।

दृष्टान्त—**जिज्ञासुर्मोक्षशास्त्रश्रवणाद्व्यतिरिक्त शास्त्रश्रवणं न कुर्य्यादिति परिसंख्या विधिः॥**

अर्थ—जिज्ञासुजन मोक्षशास्त्रके श्रवणसें भिन्नशास्त्रका श्रवण न करे, यिह परिसंख्याविधिहै क्योंकि–यिहविधि जिज्ञासुको इतरशास्त्रके श्रवणकी व्यावृत्तिका बोधकहै अतः परिसंख्याविधिहै ।

तात्पर्य्य यिहहै कि–जोवाक्य एकअर्थका विधान करे और अर्थसें इतरअर्थका निवारण करे वो नियमविधि कहियेहै ।

और जो दोअर्थोंमें एकइतरअर्थका साक्षात् निवारण करे वो परिसंख्या विधि कहाजाताहै "**पञ्च पञ्चनखाभक्ष्याः ॥**"

यिह वाक्य किसीका साक्षात्निवारण नहींकर्ता इस्से यिह परिसंख्या-विधि नहींहै किंतु यिह वाक्य सेह गोह गैंडा कूर्मशश, इन पांच पंचनखवालोंके भक्षणका विधानकरे है अर्थसें इनपांचोंते इतर वानरआदि-पंचनखवालोंके भक्षणका निवारण करेहै अतः यिहनियमविधिहीहै ॥

इसप्रकार विधिओंके लक्षणके विचारसेंभी और महाभाष्यके परमप्रमाणसेंभी यिह नियमविधिहै अतः हेमित्र परिसंख्याविधिका कथन तुम्हारा अयुक्तहीहै ॥

हेपाठको — आश्चर्य्यहै कि — वेदसूत्रस्मृतिआदिक ग्रन्थनमें पशुबलिप्रदानके व मांसभक्षणके विधिवाक्य हजारोंहीहैं उनसबको छोड़कर नवीनपंडितजन „**पञ्चपञ्चनखाभक्ष्याः**„ इस एकविधिवा-

क्यमेंही विवादलिए बद्धकटि होजातेहैं होर हजारोंविधिवाक्यनका निर्णय नहीं कर्ते कि—यिह कौनविधिहै यिह कौनविधिहै ॥

हेपाठक—अपूर्वविधि, नियमविधि, परिसंख्याविधि, ऐसे तीनप्रकारके विधिवाक्यहोतेहैं उनमें नियमविधिका परिसंख्याविधिका लक्षण दिखाचुकाहुं अब देखो—अपूर्वविधिका लक्षण—**प्रमाणान्तरेणाप्राप्तार्थविधायकोऽपूर्वविधिः** ॥ प्रमाणांतरसे अप्राप्तअर्थका विधायक वाक्य अपूर्वविधिकहिएहै जैसे दृष्टान्त कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयसंहिता प्र० १२२—**यः प्रजाकामः पशुकामःस्यात् सएतं प्राजापत्यमजं तूपरमालभेत** ॥ का० २ ॥ प्र० १ ॥ अनु० १ । ५ ॥

अर्थ—जोपुरुष सन्तानकी कामनावालाहो वा गौअश्वप्रभृतिपशुओंकी कामनावालाहो वो पुरुष इस प्रजापतिदेवतानिमित्तक शृंगरहितअजको मारे, इत्यादिक अपूर्वविधिवाक्यहैं क्योंकि सन्तानकी और गौअश्वआदिपशुओंकी प्राप्तिलिए प्रजापतिब्रह्मादेवतानिमित्तक शृंगरहितअजका बलिप्रदान प्रमाणांतरसें अप्राप्तहै ॥

परिसंख्याविधिका दृष्टान्त बृहत्पाराशरीय धर्मशास्त्र प्र० १२३—**नाद्यादविधिनामांसं मृत्युकालेपिधर्मवित्** ॥ अ० ४ ॥ ३१८ ॥ अर्थ—धर्मवेतापुरुष मृत्युसमयमेंभी अविधिसें मांसको नखाए इत्यादिक परिसंख्याविधिहैं ॥ उक्तलक्षणोंद्वारा होर वाक्यनमेंभी यथासंभव विधि जानलेना ॥

और जो तुमने कहा कि—[इसका भाव लक्षणाद्वारा यहहै कि

अपंचनखवालोंको नखानाचहिए इसका केवल इसीअंशमें तात्पर्य्यहै औरमें नहींहोसक्ता] सोयिह तुम्हारा कथनभी असंभवहीहै तथाही कहताहूं सुनिये १—वाक्यार्थानुपपत्ति र्लक्षणाबीजम् ॥ वाक्यार्थका नहींबनना लक्षणाका हेतुहै अर्थयिह जहां वाक्यार्थ नहीं बनसके वहां लक्षणाकी कल्पना की जातीहै यिह नियमहै जैसे—'गङ्गायां घोषः, गंगामेंघोषहै यहां जलोंके विस्तृतप्रवाहरूप गंगामें घोषसंभवनेहीं अतः वाक्यार्थके नहीं बननेसे गंगापदकी गंगातटमें लक्षणा की जाती है, आहीरों के क्षुद्रग्रामका नाम घोषहै ॥

जहां वाक्यार्थका असंभवरूपलक्षणाका बीजही न हो वहां लक्षणाकी कल्पना करणी अयुक्तहीहै हेमित्र—'पञ्चपञ्चनखा भक्ष्याः' यहांभी वाक्यार्थकी अनुपपत्तिरूप लक्षणाका बीज हैहीनहीं तो तुम निर्बीजलक्षणाकी कल्पना कैसे करसक्तेहो ॥

२—महाभाष्यप्रदीपोद्योतमें नागोजीभट्टनेभी इसवाक्यके पदोंमें लक्षणाका प्रबलहेतुओंसें खंडन कराहै वो विस्तारभयसें यहां नहीं लिखा जिसको जिज्ञासाहो वो वहांसे देखले ॥

३—यदि आपकहैंकि—तात्पर्य्यानुपपत्तिर्लक्षणा बीजम् तात्पर्य्यका नहींबननाभी लक्षणाका बीजहै वोतात्पर्य तो अपंचनखवालोंके न खानेमेंहै, सोयिह तुमारा कथनभी असत्यहीहै क्योंकि—मनुस्मृतिआदिक धर्मपुस्तकोंमें यिह नहीं लिखाकि—सर्वजीवोंमें पंचनखवाले पंचभक्ष्यहैं किंतु मनुस्मृति आदिकोंमें पंचनखवालोंमें पांच भक्ष्यकहकर अपंचनखवालेजीवभी भक्ष्यकहेहैं देखिए—मनुस्मृति प्र० १२४—श्वाविधंशल्यकंगोधां खड्गकूर्मशशांस्तथा ॥ भक्ष्यान्पञ्चनखेष्वाहु रनुष्ट्रांश्चैकतोदतः अ० ५ ॥ १८ ॥

इसपर मेधातिथिका मनुभाष्य प्र० १२५—पञ्चनखानांमध्याञ्छावित्कादयोभक्ष्याः ॥

इसपर कुल्लूकभट्टकी टीका--प्र० १२६—पञ्चनखेषुभक्ष्यान्मन्वादयः प्राहुः॥

इसपर राघवानन्दकी टीका--प्र० १२७—पञ्चनखानांमध्ये पञ्चानामेव हव्यकव्यार्थत्वम् ॥

इसपर गोबिन्दराजकी टीका प्र० १२८ पञ्चनखेषुमध्याद्भक्षणार्हान्मन्वादयआहुः ।

इनटीकाओंसहित मनुश्लोकका अर्थ—लंबेकाटोंवाला सेह, गोह गैंडा कूर्म शश, पांचनखवालोंमें इन पांचको मनुआदिक भक्ष्यकहतेहैं और उंट सेंविना एकओरदन्तवाले भेडबकरा हरिणआदिकोंकोभी भक्ष्यकहतेहैं ॥

और देखो प्रमाणांक ४६ में मनुजीनें पांचप्रकारके मत्स्यभी भक्ष्यकहेहैं अतः (अपंचनखवालोंको न खानाचाहिये केवलइसीअंशमें तात्पर्य्यहै औरमें नहींहोसक्ता) ऐसीतुम्हारी कल्पनाअसत्यहीहै, इसका होरकुछभी फलनहीं किंतु तुम्हारी नास्तिकताकी व दुराग्रहकी अभिव्यक्ति और मिथ्याभाषणका दोष, ये तुम्हारीअसत्यकल्पनाके फलहैं क्योंकि वेदसूत्र स्मृतिग्रन्थनमें अपंचनखवाले अजशशहरिणातित्तिर बटेराऽऽदिकभी भक्ष्य कहेहैं

———

होरजो तुमनेकहा कि- (मांसतो स्वयंहीखायाकर्ताहै तो फिर उसके वास्ते उसकोवेदने शिक्षाही क्या देनीथी) सोयिह तुम्हाराकथनभी अयुक्त हीहै तथाहि कहताहुं सुनिये, फिर देखो प्रमाणांक ५७ में भाष्यकारोंके

प्रमाणसें लिखचुकाहुं कि--धर्मअधर्मके विज्ञानका कारण शास्त्रहीहै अतः आस्तिकधर्मात्मापुरुषतो श्रुतिस्मृतिओंसें विहितभोजनको व विहितआचार को कर्तेहैं ॥

हेभ्रातः-भक्ष्यअभक्ष्यके अर्थात् अजशशहरिणादिकोंके भक्ष्यमांसके खानेलिये और ऊंठबानरश्वानआदिकोंके अभक्ष्यमांसके त्यागलिये यदि सृष्टिके आदिकालमें वेदस्मृतिआं शिक्षा नहींकरेंतो तब भक्ष्याभक्ष्यकी शिक्षाका होरकिसको अधिकार होसक्ताथा किंतु तब आदिकालमें युक्त योगीईश्वरको और युञ्जानयोगीमहर्षिओंकोही श्रुतिस्मृतिद्वारा कृपाकर भक्ष्याभक्ष्यकी शिक्षाका अधिकारथा,अतः उनोंने-शिक्षा करणी चाहिये हीथी ॥

होरजो तुमने कहा कि- (जैसे कोई अपनेआप मट्टी खानेवाले पुत्रसें कहे कि—पुत्रतूं गंगाजीकी मट्टीखायाकर तो इसबाक्यसें पिताका पुत्रको मट्टीखिलानेमें सर्वथा तात्पर्य्य नहींहै किंतु गंगाजीकीमट्टीसें दूसरी मट्टीके खानेसें रोकनेकाही केवलप्रयोजनहोताहै ऐसेही पञ्चपञ्चनखाभक्ष्याः, इस वचनमेंभीजानो यहव्यवस्था पूर्वमीमांसामें कीगईहै) सोयिह तुम्हाराकथन भी असत्यहीहै तथाहि कहताहुं सुनिये ॥

१-तुम्हारा यिहदृष्टान्त काल्पनिकहै वास्तवनहीं क्योंकि-प्रायः अतिमूढ़ बालकही मट्टीखायाकर्ताहै ऐसे बालकको कोईभी नहीं कहता कि-पुत्रतूं गंगाजीकी मट्टीखायाकर यदि कोई ऐसे कहेभीतो वो अतिमूढ़बालक क्या जानताहै कि-कहां गंगाहै कहांगंगाकीमट्टीहै और क्या इसवचनका तात्पर्य्यहै यिहभी वो अतिमूढ़बालक नहीं जानसक्ता ॥

व उक्तवचनसें वो मूढ़बालक मट्टीखानेसें रोकभी नहींसकीता इसीसें प्रसिद्धहीहै कि-मट्टीखानेवाले बालकोंको मातापिताऽऽदि ऐसेभयंकरवचन

ही कहतेहैं कि–जे तूं मट्टीखाएगातो तेरा मुंख तोड़ दूंगी तेरा हाथ तोड़ दूंगी तेरे मुखपर थपड़मारूंगा, और यदि कोई थोड़ा बड़ा बालक भी मट्टी खाय तो उसकोभी यिहनहीं कहाजाता कि–हेपुत्र तूं गंगाजीकी मट्टीखायाकर किंतु उसकोभी ऐसेहीकहाजाताहै कि–तूं मट्टी खानेसें बीमारहोजावेगा, यदि तूं मट्टीखाने सें नहीं हटेगातो तेरेउस्तादको कहेंगे, तेरेको मारमारकर सुधाकरदेंगे ॥

२–देखो प्रमाणांक १२४ मनुस्मृतिमें पञ्चनखवालोंमें पांचभक्ष्य कहकर उनोंसेंभिन्न एकओर दन्तवाले भेडबकराऽऽदिकभी भक्ष्यकहेहैं तोफिर तुम्हारे काल्पनिकदृष्टान्तमात्रसें कुछ सिद्धनहीं होसक्ता ॥

औरजो तुमनेकहा कि–यह व्यवस्था पूर्वमीमांसामें कीगईहै, सोयिह तुम्हाराकथनभी समीचीननहीं क्योंकि—सूत्रोंमें ऐसीव्यवस्था नहींकीगई भाष्यमें कीगईहैतो वो वेदसूत्रस्मृतिआदिग्रन्थनसें विरुद्धहै अतः वो माननीयनहीं होसक्ती ।

हेमित्र–वेदसूत्रस्मृतिआदिपुस्तकों में अपञ्चनखवाले भेडबकरादुम्बा हरिणमेढाऽऽदिकभी भक्ष्यकहेहुएहैंतो वेदादिकोंसें विरुद्ध कोईभी भाष्यकार वा टीकाकार लिखडालेतो वो माननीयनहीं होसक्ता ॥

पूर्वपक्षी०–यज्ञकी हिंसाकाभी विनायज्ञकेही नित्यकेमांसभक्षणके छुड़ानेमें ही भावहै क्योंकि जिसकोमांसखानेकी इच्छाहो वा स्वर्गकी इच्छाहो वह लक्षोंका खर्चकर्केही यज्ञकेलिये पशुमारनेमें प्रवृत्तहोसक्ताहै अन्यथानहीं ॥

आस्तिक०–हेमित्र इसतुमारेकथनसेंभी पशुहिंसावालेयज्ञका स्वर्गप्राप्ति फल सिद्धहुआ और यज्ञमें पशुहिंसा विहितसिद्धहुई ॥

यज्ञमेंप्रायः वेदवेताब्राह्मण और महर्षियोगयुक्त व धर्मात्माराजेमहाराजे एकत्रहोतेहैं ऐसेश्रेष्ठकर्मयज्ञमें उक्तमहाश्रेष्ठपुरुषोंके विद्यमानहोते पशुहिंसा व मांसभक्षण सत्कारसें कराजाताहै तो पशुहिंसाको व विहितमांसभक्षणको

अशुभकर्म नास्तिकजन वा मूर्खजन कहसक्तेहैं अर्थात् आस्तिकबुद्धिमान् जनोंमें वो शुभकर्महीसिद्धहुए ॥

होरजो तुमनेकहा कि-"लक्षोंका खर्चकर्केही यज्ञकेलिये पशुमारनेमें प्रवृत्तहोसक्ताहै अन्यथानहीं" सोयिहतुम्हाराकथनभी असत्यहीहै क्योंकि आठआनेके वा दसआनेके खर्चकर नित्यपञ्चमहायज्ञ होसक्तेहैं उनसें क्या स्वर्गनहीं मिलसक्ता ॥

पूर्वपक्षी०—उनसेंस्वर्ग वा चित्तशुद्धिआदिफल तो मिलसक्ताहै परंतु नित्यपञ्चमहायज्ञनमें मांसकाभी क्या विधानहै ॥

आस्तिक०—हेमित्र-यद्यपि वेदादिक सर्वधर्मपुस्तक तो तुमने नहींपढे तथापि केईकधर्मग्रन्थ तो तुमने देखेभीहैं परंतु बहुतकालके वेदविरुद्धजैनमतके संस्कारोंसें दुराग्रहके वशीभूतहुए तुम आर्षमतसें विरुद्ध कहरहेहो, देखो व्यासजीके पिता महर्षिपराशरजीने व्यासादिक महर्षिओंप्रति नित्यपंचमहायज्ञनमें पितरोंकी देवतोंकी अतिथिमनुष्योंकी मांसादिकोंसें तृप्तिकरणी प्रमाणांक ७५ में स्पष्टकहीहै ॥

और प्रमाणांक १०२ में नित्यकरणीय पितरोंकी देवतोंकी अतिथिकी सेवानिमित्त पशुहिंसा का वसिष्टजीने विधानकराहै ॥

हेपाठको—इनमहर्षिवाक्यनके मूलरूप संहिताभागके ब्राह्मणभागके वाक्यभी दिखलावुंगा ॥

—):०:(—

पूर्वपक्षी०—कलियुगमें कृपालुमहर्षिओंनें लोगोंको इन्द्रियोंका दास समझकर हिंसायुक्तअश्वमेधादि यज्ञनका करनारोकदियाहै ॥

आस्तिक०—इसतुम्हारेकथनसेंही यिहसिद्धहुआकि-सत्ययुग त्रेताप्रभृति उत्तमसमयोंमें जितेन्द्रियश्रेष्ठपुरुषोंको हिंसायुक्तअश्वमेधादिकयज्ञ करणे-

योग्यथे व उन श्रेष्ठसमयोंमें सो पशुहिंसायुक्तअश्वमेधादिकयज्ञ होतेरहेहैं, यिहतुमारेलेखसेंही सिद्धहुआ तो—

अबविचारियेकि—ऐसेउत्तमसमयोंमें वसिष्टादिकमहर्षि जिनयज्ञोंके कराणेवालेथे और सत्ययुगआदिकोंके धर्मात्मामहाराजे जिनयज्ञोंके यजमानथे,ऐसेहिंसायुक्त अश्वमेधादिक यज्ञ क्या श्रेष्ठकर्म नहींसमझेजासक्ते ।

अर्थात् तुम्हारेकथनसेंही वो अतिश्रेष्ठकर्मसिद्धहैं और जो कलियुगमें अश्वमेधयज्ञके करणेका केईऋषिओंनें निषेधकियाहै वो कलियुगके पुरुषोंकी असमर्थतासेंकियाहै क्योंकि-अश्वमेधयज्ञ कलियुगके पुरुषोंसें असाध्यहै ॥

होमित्र-अजमेधआदिकोंका तो कलियुगमेंभी किसीऋषिनेंभी निषेध नहींकरा किंतु कलियुगमें अश्वमेध गोमेध इनदोयज्ञोंकाही निषेध करा है तो कलियुगके गरीबोंको अजमेधआदिकोंसे भी क्यों रोकतेहो ।

—:(०):—

पूर्वपक्षी०-स्वर्गादिसाधनरूपयज्ञ तो काम्यकर्महैं इसलिये निरतिशय सुखस्वरूप मुक्तिकी इच्छावाला मुमुक्षु ऐसेकर्मकरणेकी इच्छातक नहीं कर्ता ॥

आस्तिक-हेमित्र तुम्हारेकथन हास्ययोग्यहीहैं तथाही कहताहूं सुनिये-

१-जिनअश्वमेधादिकयज्ञोंका प्रसंग चलाहुआहै वो क्या काम्यकर्महीहैं अर्थात् वोअश्वमेधादिकयज्ञ क्या स्वर्गादिकोंकी कामनासेंविना चित्तशुद्धिलिये करणेयोग्य नहींहैं क्या ऐसा किसी धर्मशास्त्रमें नियमकराहुआहै ऐसानियम किसी शास्त्रमें नहीं करा किन्तु तुम्हारे दुराग्रहका यिह नियमहै

हेभ्रातः-=व्यासादिकमहर्षिओंने पापोंकी निवृत्तिरूप चित्तशुद्धिलिये भी अश्वमेधयज्ञका विधानकराहै ॥

महाभारत १२९—अश्वमेधोहिराजेन्द्र पावनःसर्व

पाप्मनाम् । तेनेष्ट्वात्वंविपाप्मावै भवितानात्र-संशयः ॥ प० १४ ॥ अ० ७१ ॥ १६ ॥

अर्थ–हेराजेन्द्र युधिष्ठिर जिससें सर्वपापोंका निवर्त्तकअश्वमेधहै इस्सें उसअश्वमेधयज्ञकर्के तूं पापोंसेंरहितहोवेंगा इसमें संशय नहींहै ॥

२–जोतुमने कहा कि–"मुक्तिकी इच्छावाला मुमुक्षु ऐसेकर्मकरनेकी इच्छातक नहींकर्ता" सोयिह तुमाराकथनभी असत्यहीहै क्योंकि–अश्वमेध-आदियज्ञों के कर्ता धर्मावतारयुधिष्ठिरआदिक असंख्यमहाराजोंमें क्या कोईभी मुमुक्षु नहींहुआ, ऐसे कौंनआस्तिकपुरुष कहसक्ताहै ॥

३–मर्यादापुरुषोत्तम श्रीरामजीनें अपनेराज्यसमयमें दशअश्वमेधयज्ञ करेथे देखो–

वा० रामायण प्र० १३०–**राज्यंदशसहस्राणिप्राप्य-वर्षाणिराघवः । दशाश्वमेधानाजह्रे सदश्वान् भूरिदक्षिणान् ॥ का० ५ ॥ स० १३ ० ॥ ६५ ॥**

अर्थ––दशहजारवर्षराज्यको प्राप्तहोकर श्रीरामजी बड़ीदक्षिणावाले उत्तमअश्वोंवाले दशअश्वमेधयज्ञोंको कर्तेभए ॥

हेमित्र–अबकहोतो–श्रीरामजीभी क्या स्वर्गकीही इच्छावालेथे वो मुक्तिकी इच्छावाले नहींथे ॥

पूर्वपक्षी०–जबकि–ज्ञानधर्मोपदेशद्वारा जीवोंकीमुक्तिकरणाही परमात्मा का सृष्टिमेंमुख्यउद्देश्य योगमें मानाहुआहै तोफिर अशुद्धि क्षय और अति-शययुक्तसाधनोंके उपदेशमें कृपालुपरमात्माका मुख्यतात्पर्य्य कहां होसक्ता है ॥

आस्तिक०-१-वो योगशास्त्रका सूत्र तुमने क्योंनहीं लिखदिया कि जिसमें ऐसे मानाहुआहै ॥

२-यदि जीवोंकी मुक्तिकरनाही परमेश्वरका मुख्यउद्देश्यहै तो सर्वजीव मुक्त क्यों नहींहोजाते क्योंकि-परमेश्वरतो सत्यसंकल्पहै अतः परमेश्वरका उद्देश तो तत्क्षणही सिद्ध होनाचाहिये ॥

३-वेदमें जो अश्वमेधप्रभृतियज्ञोंका उपदेशहै वो क्या धर्मोपदेश नहींहै यदि वो धर्मोपदेश न होता तो धर्मावतार युधिष्ठिरको पापोंके निवारणलिये अश्वमेधयज्ञके करणेका भगवद्व्यासजी उपदेशही कैसे कर सक्तेथे ॥

हेमित्र-वेदमें अश्वमेधयज्ञका विधान यदि धर्मोपदेश न होतातो मर्यादाऽवतार श्रीरामजी दशअश्वमेधयज्ञन को कैसे कर सक्ते ॥

४-अश्वमेधप्रभृतियज्ञनमें नास्तिकोंसेंविना अशुद्धिदोष कौन कह सक्ताहै क्योंकि—अशुद्धिके दूरकरणेवालेको पावन कहतेहैं, देखो प्रमाणांक १२९ में व्यासजीने अश्वमेधयज्ञको पावन कहाहै ॥

देखो प्रमाणांक ५५ आदिकोंको वेदान्तसूत्र और उसके श्रीभाष्य शंकरभाष्यआदिकोंमेंभी अशुद्धिदोषका सम्यक् खंडनकराहै ॥

जपध्यान वा अश्वमेधादियज्ञ जोजो साधनहैं वोवो यदि स्वर्गादिकों की कामनासें करेजावेंतो क्षयादिफलवालेहैं, सो यदि स्वर्गादिकोंकी कामनासेंविना चित्तकीशुद्धिलिये करेजाएंतो उनसें पापोंकी निवृत्तिरूप चित्तशुद्धिहोकर विचारज्ञानादिकोंकी उत्पत्तिद्वारा निरतिशयसुखरूप मुक्ति के हेतुहैं वो देखो प्रमाणांक ७३ में स्पष्टकहाहै अतः उनके उपदेशमें परमात्माका मुख्यतात्पर्य्य संभवेहै ॥

—)०::०(—

पूर्वपक्षी० -मुक्तिकी इच्छावास्ते राजसयज्ञोंमें प्रवृत्तिछोड़कर सात्विक जपयज्ञ ईश्वरचिन्तनमें प्रवृत्तहोनाचाहिये क्योंकि जपयज्ञही परमात्माको सबसेंप्याराहै । प्रत्युत उसेवह अपनास्वरूपही मानताहै ॥

आस्तिक०—यदि परमात्माको जपयज्ञही सबसेंप्यारा होतातो परमात्माअश्वमेधादियज्ञोंका वेदमें विधानही क्यों कर्ता, जप व ईश्वरचिन्तनतो सबयज्ञोंमें कराहीजाताहै ॥

यदि अश्वमेधादिक छोड़देने चाहियेतो पापोंकी निवृत्तिलिये युधिष्ठिर को श्रीकृष्ण तथा व्यासजी अश्वमेधयज्ञकरणेका उपदेशही क्योंकर्ते श्रीकृष्णको व व्यासादिकोंको क्या तेरेजैसा धर्मज्ञान नहींथा ॥

हेमित्र—कोईभी यज्ञहोजो सांसारिकपदार्थोंकी कामनासें कराजावे वो राजसयज्ञहै औरजो निष्कामतासें कराजाए वो सात्विकयज्ञहै, यिहश्रीमुखसें आपभगवत्ने कहाहै ॥

गीता०—अफलाकांक्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टोयइज्यते । यष्टव्यमेवेतिमनः समाधायससात्त्विकः— ॥अ. १७ ॥ ११ ॥ अभिसन्धायतुफलं दम्भार्थमपिचैवयत् ॥ इज्यतेभरतश्रेष्ठ तंयज्ञंविद्धिराजसम् ॥

॥१२॥ अर्थ—शास्त्रविधिकोदेखकर,, यज्ञकरणाहीयोग्यहै,, ऐसेनिश्चयसें मनको एकाग्रकर्के फलकी कामनासेंरहितपुरुषोंने जो यज्ञ करियेहै वो सात्त्विकयज्ञहै ॥ ११ ॥ फलके अभिलाषकर वा दम्भलिये जो यज्ञ कराजाताहै हेअर्जुन उसको राजसयज्ञ जानो ॥ १२ ॥

भावार्थ—कामनासेंविना तो कोईकर्म होताहीनहीं इस्से जो स्वर्गादिक सांसारिकपदार्थोंकी कामनासें अश्वमेधादिक यज्ञ वा जपयज्ञ करेंजावें वो राजसयज्ञहैं, औरजो सांसारिकपदार्थोंकी कामनासें विना चित्तशुद्धिलियेज्ञान द्वारा मोक्षवास्ते यज्ञकरेजावें वो सात्विकयज्ञहैं, सांसारिकपदार्थोंकी कामना विनाकियेहैं इस्सें इनको निष्कामयज्ञ व निष्कामकर्मकहतेहैं ॥

—:*०*:—

हेमित्र—यद्यपि निर्धनकंगालपुरुषोंका तो खानेकाही अधिकारहै अतःवो खातेपीते जपयज्ञ कर्तेरहें तथापि राजेमहाराजे तथा धनाढ्यभाग्यवानोंका ऐसाअधिकार नहींहै ऐसेयोग्य नहींहै किंतु भाग्यवानोंका राजेमहाराजोंका तो परमात्मस्मरण ध्यान कर्तेकर्तें खानेखुलानेवाले यज्ञनके करणेकाभी अधिकारहै उनोंने वोयज्ञ करनेही योग्यहैं ।

पूर्वपक्षी०—यह जपयज्ञकी महिमा सांख्यशास्त्रका कथन है ।

आस्तिक०—तो वो सांख्यशास्त्रकासूत्र तुमने क्यों नहींलिखदिया, हे मित्र केवलबातोंसेंही गुजारा कराचाहतेहो ।

शास्त्रोंमें—कहीं अश्वमेधादिकयज्ञोंका महिमा, कहीं जपयज्ञका महिमा कहीं एकादशीआदिक व्रतोंका महिमा, कहीं दानका महिमा, कहीं तीर्थोंका महिमा, कहीं ध्यानका महिमा, कहीं औषधिओंका महिमा, कहीं तपका महिमा, कहीं वैराग्यका महिमा, कहीं उत्तमसन्तानका महिमा, कहीं किसीका कहीं किसीका महिमा कहाहै वो राजे महाराजे ब्राह्मणआदिकोंके अधिकारभेदसें सबही श्रेष्ठहैं ॥

पूर्वपक्षी०—सांख्यमें अहिंसा और हिंसाबोधकवाक्यों (माहिंस्यात्सर्वाभूतानि और अग्नीषोमीयं पशुमालभेत) का भिन्नविषयहोनेसें परस्परविरोध नहींहै अतः आपसमें ॥ ध्यबाधक भाव

नहीं मानागिया इसलिए सांख्यशास्त्रानुसार प्रत्येकहिंसा पापजनक मानी गई है और जपयज्ञही श्रेष्ठ समझागयाहै परन्तु पूर्वोत्तर मीमांसा एवं न्याय शास्त्र सर्वांशमें इसकेसाथ सहमत नहींहैं वह शब्दप्रमाणको मुख्यमानकर वाचानिक यज्ञीयवधको हिंसामें परिगणित नहींकरते—जैसेहिंसाको प्रसिद्ध होनेपरभी राजा खूनीका बधकराताहुआ धर्मसे पतित नहींहोता क्योंकि वहउसका शास्त्रकेसमधिगत भुक्तिमुक्तिप्रद निजकर्तव्यहै इसविषयपर उन का विचार ग्रन्थकेबढ़नेके भयसे यहांविशेष न लिखकर हम विशेषरूपसें फिर स्वतंत्रालिखेंगे ॥

आस्तिक० हेमित्र—चिरंजीव यहां कुछक तो तुमनेभी सत्यकहाहै परंतु यहां (शब्दप्रमाणको, वाचनिकयज्ञीयवधको) इत्यादिक पद अस्पष्टअर्थवाले लिखकर साधारणपुरुषोंको धोखाहीदियाहै उनपदोंके अर्थोंको मैं अबीदिखलाताहुं ॥

"अग्नीषोमीयं पशुमालभेत" इसवेदवाक्यका अर्थभी तुमने नहींलिखा—

और जोतुमनेलिखाकि—„अहिंसा और हिंसाविधायक वाक्योंका भिन्नविषयहोनेसें परस्परविरोध नहींहै„ वो उन वाक्यनका जोजो भिन्न विषयहै जिसजिसाविषयके भेदसें उनवाक्यनका विरोधनहींहै उसउसभिन्न २ विषयको अवश्यंदिखलानाचाहियेथा क्योंकि उस २ भिन्न २ विषयके दिखलायेबिना उनवाक्यनकी अविरोधिता भासेनहीं अतःउसउस भिन्न२विषयको अवश्यंदिखलाना चाहियेथा, वोभीतुमनेनहींदिखलाया अतःअव्यवस्थितकथन मात्रसें तुम साधारणपुरुषोंको धोखादेतेहो ॥

यदि मेरेसें पूछोतो देखोप्रमाणांक ४५ को वहां शांकरभाष्यसें

उनवाक्यनका भिन्न२ विषय दिखलायचुकाहुं और वहां "अग्नीषोमीयं पशुमालभेत" इसवाक्यकाअर्थभी लिखचुकाहुं ॥

होरजोतुमनेकहाकि—"अहिंसा और हिंसाबोधकवाक्योंका भिन्नविषयहोनेसें परस्पराविरोध नहींहै अतः आपसमें बाध्यबाधकभाव नहींमानागिया" तो इसतुम्हारेलेखसेंभी जब सांख्यशास्त्रमें हिंसा-विधायक वाक्यनका बाधक नहींमानागया तो उनअबाध्यवाक्यनसें विहितहिंसाको पापजनक कहनाअयुक्तहीहै, होरजो तुमने कहाकि—'जपयज्ञही श्रेष्ठसमझा गयाहै' इसका उत्तर विस्तारसें लिख चुकाहुं ॥

औरजो पूर्वपक्षीनेलिखाकि—(पूर्वोत्तरमीमांसा अर्थात् पूर्वमीमांसा कर्मशास्त्र औरउत्तरमीमांसा वेदान्तशास्त्र एवंन्यायशास्त्र सर्वांशसें 'इसके, सांख्यशास्त्रके साथ, 'सहमत, सदृशमतवालेनहींहैं 'वह' मीमांसादिकशास्त्र शब्दप्रमाणको अर्थात् वेदप्रमाणको मुख्यमानकर 'वाचनिक 'वेदवचनोंसें विहित 'यज्ञीयबधको' यज्ञमेंकरेपशुकेबधको 'हिंसामें परिगणित नहींकरते' हिंसामें नहींगिणते) ॥

हेपाठक—पूर्वपक्षीने साधारणपुरुषोंको धोखादेनेकेलिये जो अस्पष्ट अर्थवाले पद लिखडालेहैं उनपदोंको और उनके स्पष्टअर्थ, यिहमैंने दिखायदियेहैं ।

हेपाठको—देखो इसपूर्वपक्षीकेलेखको कि-पूर्वमीमांसा वेदान्तशास्त्र न्यायशास्त्र इनशास्त्रोंमें वेदप्रमाणको मुख्यमानकर वेदविहित हिंसाको अहिंसारूपहीमानाहै, यिह पूर्वपक्षीके लेखकाही अर्थहै और प्रमाणांक ४९ प्रभृतिमनुस्मृतिआदिकोंमेंभी वेदविहितहिंसा अहिंसाही मानीहै तो पूर्वपक्षी सें पूछाचाहिये कि-तुम ऐसे जानतेहो तथा लिखतेहो तोफिर श्रुतिस्मृतिओं

सें विरुद्धलेखलिखनेपर तुम वेदविरोधी क्योंनहींहो' और सांख्यशास्त्रमें भी हिंसाविधायक वेदवाक्यनका कोईबाधक नहींमानागया तोतुम क्यों दुराग्रहकर वेदमतसें बिरुद्धचलतेहो ॥

यदि भगवत्कपिलरचित सांख्यशास्त्रके सूत्ररखकर जोतुमालिखोगे तो उसपर विशेषनिर्णय कराजावेगा ।

पूर्वपक्षी०—प्रश्न कोईक्रूर पूछे कि—जोलोग आपके शास्त्रों वा वेदोंपर श्रद्धा नहींरखते वहआपके प्रमाणोंको कैसेमानेंगे, उत्तर—हमारे शास्त्रवेदहीकेवल निषेध नहींकरते किन्तु श्रीगुरुनानकजीआदिभी सबमहात्मा इसदुष्टकर्मकी निन्दा करतेहैं श्रीगुरुनानकजी

भांगमछली सुरापान जोजो प्राणीखांहि,
तीर्थ ब्रतानियम किये सभीरसातल जांहि ॥
जेरतलगे कापड़े जामाहोय पलीत, जेरत
पीवेंमानसां तिन क्यों निर्मल चीत ॥

आस्तिक०—प्रश्नमें तुमने लिखा कि—"जोलोग आप के शास्त्रों वा वेदोंपर श्रद्धा नहींरखते वह आपके प्रमाणोंको कैसेमानेंगे" इसप्रश्नके उत्तरमें हेबालबुद्धे श्रीगुरुनानकदेवजीके वाक्यप्रमाण क्या लिखने योग्यथे क्योंकि क्या शास्त्रवेद तेरेहैं श्रीगुरुनानकदेवजीके नहींहैं, और क्या श्रीगुरुनानकदेवजी शास्त्रवेदोंको नहींमानतेथे, ऐसेनहीं उनोंने तो वेदीवंशमें अवतार लियाहै और उनोंने कहा कि—वेदकतेब कहोमत झूठे झूठा जोन विचारे ॥

हछा अब उनवाक्यनमेंभी दृष्टिदीजिये तोप्रथम यिहशब्द गुरुनानकजी का हैभीनहीं तोभी भांगका अशुभफल कहाहै वोभांगके रगडे तो हेमित्र-तुम्हारे श्रद्धेय महात्माजी लगातेहैं अतः यिहवाक्य उनकीहि भेटकराचाहिये॥

और प्रमाणांक४६ मनुस्मृतिमें पांचप्रकारके मत्स्य भक्ष्यकहेहैं उन सें अन्यमत्स्य अभक्ष्यहैं उन अन्यमत्स्यनके तात्पर्य्यसें मत्स्यनके खानेका दोष कहाहै ॥

और सुरापानका दोषकहाहै तो हछाकियाहै 'जेरतलगेकापड़े, इत्यादिकजो वाक्य तुमनेलिखे इनवाक्यनमें तो मांसका नामभी नहींहै, मांसके खानेका निषेधभी नहींकराहै तो प्रसंगमें ऐसे२अनुपयोगीवचनालिख कर तुम क्यों धोखादेते हो

इनवाक्यनका अर्थ तो यिहहै---झूठ दगाऽऽदिकोंसें मनुष्यनका धन-आदिरूप रुधिरकों जोपीतेहैं उनझूठे धोखेबाज मनुष्योंका चित्त क्योंनिर्मल होसक्ताहै ॥

होरजो तुमने कहाकि-सब महात्मा इसदुष्टकर्मकी निन्दा कर्तेहैं,, सोयिह तुम्हाराकथनभी नास्तिकतासेंहै क्योंकि वेदसूत्रस्मृति आदिकोंमें पशुबलिप्रदानके व मांसभक्षणके विधायक हजारोंवाक्यहैं तो उनकेकर्ता परमपूज्य महात्मापुरुष क्या तेरीदृष्टिमें दुष्टकर्मोंके विधायकहुएहैं और देखो प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके त्यागकी महर्षिओंने अतिनिन्दा-की है उनसें तुम्हारा कथन विरुद्धहै अतः उनमें विश्वासके अभाव होने कर तुम नास्तिकतासें कथनकररहेहो ॥

अब श्रीगुरुनानक देवजीके मासपदवाले स्पष्टवाक्यनको मैं दिखलाताहूं

ग्रन्थसाहब प्र० १३१—पहिलां मासहु निंमिआं मासै अंदरवास। जीऊ पाइ मास मुह मिंलिआ हड चमतनमास। मासहु बाहर कढिआ मंमा मासगिरास। मुह मासैका जीभ मासैकी मासै अंदर सास। बडा होआ वीआहिआ घरलै आइआ मास। मासहुही मास ऊपजै मासहु सभोसाक। सतगुर मिलिए हुकम बुजीए ताको आवे रास। आप छुटे नहि छुटीए नानक बचन बिलास ॥ १ ॥ मासमासकर मूरख झगड़े गिआन धिआन नहीजाने। कौन मास कौन साग कहावै किसमहि पाप समाऐ। गैंडा मार होम जगकीए देवतआंकी बाऐ। मास छोड बैस नक पकडहि राती मानस खाऐ। फडकर लोकांनो दिखलावह गिआन धिआन नहीसूजै। नानक अंधेसिउ किआ कहीए कहै न कहिआ बूजै॥ अंधा सोइ जि अंध कमावै तिस रिदेसि लोचन नांही मात पिता की रकत निपंने मछी मास न खांही॥ इसत्री

पुरुषै जानसी मेला उथै मंदर मांही। मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासैके भांडे। गिआन धिआन कुछ सूजै नाही चतर कहावै पांडे। बाहर का मास मंदा सुआमी घर का मास चंगेरा। जिअ जंत सभ मासहु होए जीअ लइआ वसेरा। अभख भखहि भख तज छोडहि अंधगुरु जिनकेरा। मासहु निंमे मासहु जंमे हम मासैके भांडे। गिआन धिआन कुछ सूजै नाही चतर कहावै पांडे॥ मास पुराणी मास कतेबी चहुजुग मास कमांणा जजि काज वीआहि सुहावै उथै मास समांणा। इसत्री पुरुष निपजै मांसहु पातशाह सुलताना। जेउइ दिसहि नरकि जांदे तां उनका दान न लैणा। देंदा नरकि सुरग लैंदे देखहु एहु धिङाणा। आपन बूझै लोक बुझाए पांडे खरा सिआणा। पांडे तूं जानसि नाही किथहु मास उपंना तोइअहु अंन कमाद कपाहां तोइअहु त्रिभवन गंना। तोआ आखै हौं बहुबिध हछा तोए बहुत बिकारा एते रस छोड होवे संनिआसी नानक कहै बिचारा।

हे पाठको—संस्कृतमें मांस नामहै, भाषामें मांसका मास नामहै ॥ श्रीगुरुनानक देवजीके इनवाक्यनको देखो विचारो तो-सबके शरीर मांसमय कहनेसें मांसमें अशुद्धिभ्रमको दूरकराहै और 'कौनमास कौन साग कहावै किसमहि पाप समाणे' इसकथनसें जो शास्त्रविहितहै वो सागहै उसमें पाप नहीं, यिह सूचन करा है ॥

गैंडा मार होम जगकीए देवतआंकी बाणे इत्यादिवचनोंसें देवादियज्ञमें मांसके बलिदानमें शास्त्रविधिको जतलायाहै फिर 'मास पुराणी मास कतेबी चहुजुग मास कमाणा जजि काज विआहि सुहावै उथै मास समाणा' इत्यादिक बचनोंसें सत्ययुग आदिकोंमें और यज्ञ विवाहआदिकोंमें मांसका प्रचारथा, यिह जतलायाहै ॥

एतेरस छोड होवै संनिआसी, इसवचनसें गृहस्थजनोंके लिए मांस के स्वाद अवश्यलेने चाहिए, यिह जतलायाहै क्योंकि श्रीगुरुनानकदेवजी कहतेहैं कि-एतेरस छोडे तो होवे संन्यासी अर्थात् फिर गृहस्थमें नहींरहै ॥

पूर्वपक्षी०-भक्तकबीरजी कहाहै—**सांई मारे राह सुधारे उसको कहें हराम मुआ। जीतेको मुर्दाकर डाले उसको कहें हलाल हुआ ॥ पढे निमाज रखे फिर रोजा पराए पुत्रका काढ हिया। गर बहिश्त मिले योंही तो क्यों न कुटुम्ब हलाल किया ॥**

आस्तिक०—१-हेमित्र इत्यादिक शब्दोंका प्रमाणदेना योग्य नहीं हो सक्ता क्योंकि ऐसेऐसेशब्द निवृत्तिमार्गको लेकर बनाएजातेहैं ॥

२—यद्यपि कबीरजी भक्तहुएहैं तथापि प्रमाणकोटिमें तो वेदसूत्रस्मृतिओं के ही वाक्य प्रमाण कहेसुने जातेहैं वो वेदसूत्रस्मृतिओंके वाक्य दिखलाएभीहैं बहुतसें दिखायेभी जावेंगे ॥ —

हछा अब कबीरजीके वचनोंकाभी विचारकरिये जिस भेडबकराऽऽदि भक्ष्यजीवको सांईमारे अर्थात् जो बीमारीआदिसें मरे उसका मांस धर्म शास्त्रोंमेंभी अभक्ष्यही कहाहै और वैद्यकग्रन्थनमेंभी अभक्ष्यही कहाहै और मुसलमानोंकी शराहमेंभी हरामही कहाहै, देवतापितरआदिकोंके निमित्तकर जो भेडबकराऽऽदिक माराजावे वो धर्मग्रन्थोंमेंभी भक्ष्यहीकहाहै और वैद्यकशास्त्रमेंभी भक्ष्यहीहै, ऐसेही मुसलमानोंकी शराहमेंभी हलालही कहाहै तो वेदादि धर्मग्रन्थोंसें विरुद्धकथन हिन्दुओंमें तथा कुराणादिकोंसें विरुद्धकथन मुसलमानोंमें माननीय नहींहोसक्ता ॥

पूर्वपक्षी०—यदि पशुके मारणेसें पशुको स्वर्गमिले तो अपने कुटुम्ब को क्यों नहींमारते ॥

आस्तिक०—हेमित्र अवश्यं देखो प्रमाणांक ५७ को धर्माधर्मके विज्ञानका कारणशास्त्रहै और देखो प्रमाणांक ६९ आदिकोंमें धर्मशास्त्र स्पष्टकहतेहैं कि–विहितहिंसासें दोनों को उत्तमगतिकीप्राप्ति, स्वर्गप्राप्तिरूप श्रेष्ठफल मिलताहै तो फिर कुटुम्बको क्यों माराजावे अर्थात् विहितपशुहिंसा-करभी विहितमांसके खानेसेभी कुटुम्बको स्वर्ग प्राप्तहोसक्ताहै तोफिर कुटुम्ब का मारणा अयोग्यहीहै मूर्खताहीहै ॥

पूर्वपक्षी०—आलमगीर बादशाहने कहाहै—तूं धीरे धीरे चल बल्कि मत चल क्योंकि तेरे पाऊंके नीचे हजारों जीवहैं ॥

शेखसादीनें कहाहै—तूं किसी चींटीकोभी मतसता

क्योंकि वहभी जानसें प्यार रखतीहै और दोने को खीचतीहै ॥—

आस्तिक० आलगीरने और शेखसादीने बहुतठीक कहाहै क्योंकि-पाऊंके नीचे जो हजारोंजीव मरतेहैं वो उनकी अविहितहिंसाहै और प्रमाद सें जो चींटीआदिकोंका सतानाहै वोभी अविहितहिंसाहै, अविहितहिंसा पापका हेतुहै अतः ऐसीअविहितहिंसाके पापसें बचनाही योग्यहै ॥ यिह कोईभी धर्मवेता नहींकहता कि चींटीआदिक्षुद्रजीवोंको पादतलसें न बचावो परन्तु विहितहिंसाके प्रकरणमें ऐसे २ अविहितहिंसाके वाक्य लिखने अपनी अज्ञानता प्रकट करनीहै ॥

पूर्वपक्षी०—सूक्तावली—शुक्रशोणितसंभूतं येनराभुञ्जतेफलम्॥नरकान्ननिवर्तन्ते यावच्चन्द्रदिवाकरौ ॥ अर्थ शुक्रशोणितसे उत्पन्नहोनेवाले मांसको जोपुरुष खातेहैं वो जबतक चन्द्रमासूर्य्यरहें तबतक नरकसें नहींनिवृत्तहोते ॥

आस्तिक०—यिहश्लोकभी भयंकरवाक्यसें अविहितमांसखानेके दोष को बोधनकर्ताहै क्योंकि—जिस्सेभगवद्व्यासजीने यिहअर्थ स्पष्टकहाहै देखो व्यासस्मृति प्र० १३२—द्विजोजग्ध्वावृथामांसं हत्वाऽप्यविधिनापशून् ॥ निरयेष्वक्षयंवास माप्नोत्याचन्द्रतारकम् ॥ अ० ३॥५७॥ अर्थ—द्विजपुरुष, वृथामांसको, अविहितमांसको खाकर व पशुओंको अविधिसें मारकर जबतक चन्द्रमा तारा

रहें तबतक नरकोंमें अक्षयवासको प्राप्तहोताहै ॥

हेपाठको–देखो जैसे–व्यासजीनें अविहितमांसके खानेसें व वृथापशु-हिंसासें नरकप्राप्ति कहीहै वैसेही सूक्तावलीश्लोकमेंभीजानो ॥ विहितमांसके खानेसें नहीं प्रत्युत विहितमांसके नहींखानेसें मनुष्यासवसिष्टादि महर्षिओंने प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें नरकआदिकोंकी प्राप्ति कहीहै ॥

हेमित्र—इससूक्तावलीश्लोकका विशेष उत्तर तो प्रमाणांक १३१ में श्रीगुरुनानकदेवजीके वचनोंसें देखलीजिये ॥

यदि शुक्रशोणितसें पैदाहोताहै अतः मांस अशुद्धहै ऐसे कहो तो यिह तुमारा कथनभी समीचीननहीं तथाही कहताहुं सुनिए

१-हेमित्र–तो तुमारा शरीरभी शुक्रशोणितसें पैदाहुआहै वो क्या शुक्रशोणितकीन्यांई तुमारा शरीर अशुद्धहै ॥

यदि शुक्रशोणितकीन्यांई अशुद्धहै तो तेरेशरीरका स्पर्श कबीभी किसीनेभी नहीं करनाचाहिये ॥

यदि तुमकहो कि–शुक्रशोणितसें उत्पन्न तो हुआहै मेरा शरीर तदपि स्नानआदिकोंसें शरीर शुद्ध होजाताहै तो हेबाल एवंही मांसभी प्रक्षालनआदिकोंकर शुद्धहै प्रत्युत प्रमाणांक १ आदिकोंमें प्रक्षालनसें विनाभी मांस शुद्धही कहाहै।

२—शुक्रशोणितसें मांस बनताहै, यिह कथनभी चिकित्साशास्त्रके अज्ञानसेंहै क्योंकि–अन्नादिकोंके पाकसें पहिला धातु रसबनताहै उसरसधातुसें रक्त मांस मेद; अस्थि मज्जा शुक्र, यिह षटधातु बनतेहैं शुक्रशोणितके मेलसें तो एक बुदबुदामात्र होजाताहै फिर मातानें खाए हुए अन्नादिकोंके पाकसें और बाहिरआने पर बच्चे ने खाए दुग्ध अन्नादिकोंके पाकसे रसरक्त मांसादि सप्तधातु बनतेहैं शुक्रशोणितसें मांस नहीं बनता।

रसधातुसेंही दुग्ध बनता है और केईक रससें रक्त रक्तसें दुग्ध बनता कहतेहैं जैसे हारीतसंहिता प्र० १३३—क्षीरंस्निग्धंतथारक्तं पित्तेनपाकतांगतम् । रक्तंश्वेतत्वमायाति तथा क्षीरंसितंभवेत् ॥ प्रथमस्थाने अ०८॥८॥

अर्थ-दुग्ध स्निग्धहै तथा रक्तहै, पित्तसें पाकताको प्राप्तहुआ रक्त श्वेतहोजाताहै तथादुग्ध श्वेतहोजाताहै ।

प्रश्न-रस रक्त मांसमेदः अस्थिमज्जा शुक्र, इन सप्तधातुओंका आदि बीज तो शुक्रशोणितहैं ॥

समाधान-इनसप्तधातुओंका आदिबीज शुक्रशोणितहै तो रसधातुसें होनेवाले दुग्धकाभी आदिबीज शुक्रशोणितही मानना होगा अतः मांसको अशुद्धमानोंगे तो दुग्धकोभी अशुद्धही कहनाहोगा ॥-

३ प्रसिद्धहोहै कि--म्युन्सिपलकमेटीसें खरदेकरभी बागोंमें खेतोंमें अश्वगर्दभश्वान मनुष्यआदिकों का मलरूप खात गेराजाताहै तो अन्न-शाकफलआदिक पैदाहोतेहैं पुष्ट-होतेहैं ॥

४ यदितुमकहोकि—अश्वश्वानादिकोंके मलरूपखातसें उत्पन्नहुएभी अन्नशाकादिक शुद्धहीहैं क्योंकि—उनअन्नशाकादिकोंको धर्मशास्त्रोंमें शुद्ध कहाहै भक्ष्यकहेहैं तो हेभ्रातः—देखो प्रमाणांक १ आदिकोंमें घृततेल-शाकआदिकोंकीन्याई मांसकोभी शुद्ध पवित्रहीकहाहै और प्रमाणांक १९५व १२४ आदिकोंमें अवश्यभक्ष्य कहाहै बहुत क्यादेखो प्रमाणांक ११ में श्रीरामजीने सीताको मांस 'मेध्य' पवित्रहीकहाहै तो उनसोविरुद्ध कौनआ-स्तिकपुरुष मांसको अशुद्धकहसक्ताहै ॥

पूर्वपक्षी०—अहिंसादिग्दर्शनमें लिखाहै कि- वराहपुराणमें वराहजी ने वसुन्धरासें अपने बत्तीसअपराधिओंमें मांसाहारीको अठारहवांअपराधी कहाहै जैसे—**यस्तुमात्स्यानिमांसानि भक्षयित्वाप्रपद्यते । अष्टादशापराधंच कल्पयामिवसुन्धरे** अ० ११७ ॥ २१ ॥ **यस्तुवाराहमांसानि प्रापणेनोपपादयेत् । अपराधंत्रयोविंशं कल्पयामिवसुन्धरे** ॥ २६ ॥

अर्थ—हेवसुन्धरे मत्स्यकेमांसोंको खाकर जोपुरुष मेरीसेवामें आताहै वो उसका मैं अठारहवां अपराध गिनताहूं ॥ २१ ॥ हेवसुन्धरे जोपुरुष वराहकेमांसोंको ल्याकर मेरेअर्पणकर्ताहै वो उसका मैं २३ वां अपराध गिनता हूं ॥

आस्तिक०—देखो प्रमाणांक ४६ मनुस्मृतिमें जोपांचप्रकारके मत्स्य भक्ष्यकहेहैं उनसेंभिन्नमत्स्यके मांसका इनश्लोकोंमें निषेधकरा जानना, क्योंकि—नहींतो स्मृतिवाक्यनसें विरोधहोगा और ग्रामके वराहके मांसका निषेधकराजानना, वा वराहभगवान्की सेवा में वराहके मांसका निषेध करा जानना ॥

होमित्र—यहां विहितमृगबकराऽऽदिकोंके मांसका निषेध नहींकराहै क्योंकि-वराहपुराणमेंभी आपवराहभगवान्ने वसुन्धराप्रति विहितमृगपक्षीओंके मांसका विधानहीकराहुआहै देखो ।

वराहपुराण अ०१३४—**मार्गमांसंवरंछागं शाशंसमनुयुज्यते ॥ एतान्हिप्रापणेदद्या न्ममचैतत्प्रिया-**

वहम् ॥ अ० ११६ ॥ ११ ॥ अर्थ--मृगका मांस, बकरेका मांस, शशका मांस, श्रेष्ठहै देवादिकर्ममें लगाया जाताहै, लाभकेलिये इनमांसों कों देवे, मेरेको यिहकर्म प्रियपहुंचानेवालाहै ॥

वराहपुराण अ० १३५--पक्षिणांचप्रवक्ष्यामि येप्रयोज्यावसुन्धरे। येचैवममक्षेत्रेषु उपयुज्यन्ति नित्यशः॥ १४ ॥

अर्थ--हेवसुन्धरे पक्षीओंमें जोपक्षी देवादिकर्ममें लगानेयोग्यहैं,-मेरे क्षेत्रोंमें जोपक्षी नित्यउपयोगीहै उनपक्षीओंकोभी कथनकरताहुं ॥

वराहपुराण अ० १३६--लावकंवार्त्तिकंचैव प्रशस्तंचकपिञ्जलम्। एतेचान्येचबहवः शतशोऽथसहस्रशः। ममकर्मणियोग्याये तेमयापरिकीर्त्तिताः ॥ ११६ ॥ १५ ॥

अर्थ--लवापक्षीओंका समूह, बटेरोंका समूह, कपिञ्जलोंका समूह, श्रेष्ठहै अर्थात् विहितहै ॥ एऔर होरबहुतसैंकडे हजारोंपक्षी मेरेकर्ममें जो योग्यहै वो मैंने कहहुएहैं ॥

हेपाठक--स्पेदातित्तिरका और चातकका नाम कपिञ्जलहै।

वराहपुराण अ० १३७--यस्त्वेतत्तुविजानीयात्कर्मकर्तातथैवच। नापराध्नोतिसनरो ममचोक्तंवचःप्रिये ॥ १६ ॥

अर्थ--इसकोजोपुरुष जानताहै और वैसेहीकर्मकोकर्ताहै वोपुरुष अपराधी नहींहोता, यिहवचन मेराकहाहुआहै हेप्रियेवसुन्धरे ॥

पूर्वपक्षी०—सांख्यलोगभी मांसभोजियोंके प्रति आक्षेपपूर्वक उपदेश करतेहैं—**यूपंछित्वापशून्हत्वा कृत्वारुधिरकर्दमम् ॥ यद्येवंगम्यतेस्वर्गे नरकेकेनगम्यते** ॥ १ ॥ अर्थात् यज्ञस्तम्भको छेदकर, पशुओंको मारकर, रुधिरका कीचड करके, इसतरह यदि स्वर्गमें गमनहो तो नरकमें कौनकर्मसें गमनहोसकेगा, इत्यादि

आस्तिक०—यिह सांख्यसूत्र नहींहै किंतु अहिंसादिग्दर्शनग्रन्थके कर्ता विजयधर्मसूरिजीने वहां नाम तो सांख्य का लिखदिया परंतु यिह श्लोक पाद्मपुराणमें खण्ड १ ॥ अ०१३॥श्लोक ३२३ का है वो बृहस्पति जीने दानवअसुरोंप्रति वंचनालिये कहाहुआहै अतः प्रमाणरूप नहींहै तथापि इसका उत्तर यिहहै कि-जैसे युद्धमें हिंसा विहितहै अतः उसका स्वर्गप्राप्तिफलहै वैसेंही यज्ञमें जानो, वोदेखोप्रमाणांक ५६ में श्री रामानुज स्वामीने वेदप्रमाणसें स्पष्टलिखाहै, हेमित्र धर्माधर्मका निश्चय शास्त्रसें विना अयोगीजनोंको नहीं होसक्ता किंतु शास्त्रसेंही होसक्ताहै वोदेखो प्रमाणांक ५७ में यिहअर्थ सिद्धहीहै अतः निषिद्धहिंसासें नरकप्राप्ति होतीहै विहितहिंसासें नहीं ॥

—):०:(—

हेपाठक-अहिंसादिग्दर्शनमें विजयधर्मसूरिजीने बहुतलेख ऐसेलिखेहैं कि-[व्यासजीने पुराणोंमें इसतरह कहाहै, अर्चिमार्गियोंके उद्गार,वेदान्तियों के वचनसुनो] ऐसेऐसे लिखकर जो चाहे श्लोक लिखदियेहैं परंतु न तो पुराणका नाम लिखा, और नांही अर्चिमार्गियोंके ग्रन्थका नाम लिखा, और नांहीं किसी वेदान्तग्रन्थका नामलिखा,यिह क्या छल नहींहै ॥

अर्थयिह–विजयधर्मसूरिजीने जैसे वराहपुराण मनुस्मृतिआदिकोंके अध्यायांक श्लोकांक और कहीं पृष्ठांक लिखदियेहैं ऐसीकृपाकरीहै, और कहींकोई श्लोक लिखदिया उसकेग्रन्थका नामभी विजयधर्मसूरिजीने नहीं लिखा अर्थात् बहुतजगें तो पृष्ठांकपर्य्यन्त लिखदेना और बहुतजगें ग्रन्थ का नामभी न लिखना, यिह क्या धोखादेना नहींहै तो होर क्याहै ॥

अतः अहिंसादिग्दर्शनमें लिखेहुए जिनश्लोकोंके ग्रन्थका नाम और अध्यायांक श्लोकांक लिखाहै वोश्लोकभी आर्षग्रन्थकेहैं तो उनका उत्तर लिखूंगा उनकी व्यवस्था करूंगा, और जिनश्लोकोंके ग्रन्थका नामभी नहीं लिखा व अध्यायांक श्लोकांकभी नहींलिखा, ऐसेलेख छलरूप स्पष्टजाने जातेहैं अतः उनश्लोकोंका उत्तरलिखना योग्यहीनहींहै ।

पूर्वपक्षी०—**नगोप्रदानंनमहीप्रदानं नान्नप्रदानं-हितथाप्रधानम् ॥ यथावदन्तीहबुधाः प्रधानं सर्वप्रदानेष्वभयप्रदानम्** ॥ २९८ ॥ पञ्चतन्त्र पृ० ७७ ॥

अर्थात् विद्वान्लोक संपूर्णदानोंमें जैसा अभयदानको उत्तम मानतेहैं वैसा गोदान पृथ्वीदान अन्नदानआदि किसीकोभी प्रधान नहींमानतेहैं ॥

कितनेही अज्ञानीजीव विनाविचारेही मच्छर डांस खटमल जूं आवगैरह छोटे २ जीवोंको स्वभावसेही मारडालतेहैं और बहुतसे तो घोड़ेके वालकी मूरछलसें, या हाथसें या घरमें धूंआकर्के या गर्मजलसें खटमल आदिजीवोंको मारतेहैं परंतु यदि कोई उनको समझावे तो वह ऊटपटांग जवाव देकर अपना बचाव करनेका यत्न करतेहैं लेकन वस्तुतः वैसे जीवोंके मारनेसेंभी बहुतपापहोताहै–इसविषयको दृढकराने वाला वराह पुराणकाश्लोक देखिये–**जरायुजाण्डजोद्भिज्ज स्वेदजा-**

निकदाचन ॥ येनहिंसन्तिभूतानि शुद्धात्मानो-दयापराः ॥ ८ ॥ १३२ अ० ॥ ५३२ पृ० ॥

भावार्थ—मनुष्यगौआदिक जरायुज, अण्डज पक्षी, उद्भिज्ज वनस्पति स्वेदज खटमल मच्छर डांस जूंआलीख वगैरह समस्तजीवोंकी जोपुरुष हिंसा नहींकरतेहैं वो शुद्धात्मा दयापरायणहैं ।

आस्तिक०—हेभ्रातःसर्वजीवोंप्रति अभयदान तो निवृत्तिमार्गवाले संन्यासीओंका धर्महै परंतु वोभी संपूर्णरूपसें नहिंकरसक्ते क्योंकि—शौच स्नान भिक्षाऽऽदिकों लिये चलने फिरने खाने पीने आदिकों कर संन्यासीओंसेभी अनेकसूक्ष्मजीवोंकी हिंसा होतीहै और प्रवृत्तिमार्गवाले गृहस्थजनोंका भयदियेबिना निर्वाह होहीनहींसक्ता, तथाही कहताहुं सुनिये ॥

यदि खेतालिये हल नहींचलाते तो गृहस्थोंका निर्वाह नहींहोसक्ता क्योंकि—सर्वजैनीभाई तथा किसी महात्माकाभी अन्नपैदाहुएबिना अभय दानसेही जीवन नहींरहसक्ता ॥

यदि खेतलिये बैलभैंसाको जोतकर हलचलातेहैं तो लाठीमारसें क्लेश दियेबिना भयदिएबिना बैलभैंसे नहींचलते अतः बैलभैंसोंको अवश्यभय देनाहोताहै फिर हलके चलानेसे असंख्यक्षुद्रजीव मरते हैं ऐसेहीकूपके अरटमें, गेहूंआदिकोंके गाहनमें गाडीमें कोलूमें खरासमें इत्यादिकोंमें मार पीटसे भयदियेबिना बैलभैंसेआदिक काम नहींदेते उन अरटआदिकोंके चलाएबिना गृहस्थजनोंका निर्वाह नहींहोसक्ता और अरट गाडीआदिकों के चलानेसे असंख्यक्षुद्रजीवोंका मरणाभी होताहीहै ॥

ऐसेही हस्ती ऊंट घोड़ा खच्चर गधाऽऽदिकभी मारपीटकर भयदिये बिना काम नहींदेते इनसें कामलियेबिना गृहस्थजनोंका निर्वाहभी नहींहो

सक्ता और इनसें कामलेनेमें असंख्यक्षुद्रजीवभी मरतेहैं, अतःगृहस्थजनोंनें योग्यताके विचार पूर्वक अभयदेना योग्यहो सक्ताहै ॥

हेमित्र–मच्छर डांस अतिकोमल जीवहैं यदि उनको वस्त्रादिकोंसें हटातेहैं तो वो मरतेहैं, यदि नहींहटाते तो मनुष्यनको अतिक्लेशहोताहै ॥

यदि धूंआं कर्तेहैं तो मच्छर डांसोंको दुःख होताहै, यदि धूंआं नहींकर्ते तो गौभैंसआदिक मच्छरडांसोंसें दुःख पापाकर तड़फतेहैं मरतेहैं।

खटमल जूंआंवगैरह जीवोको यदि खाटसें शरीरसें निकाल डालतेहैं तो उनको चींटी वगैरह खाजातेहैं वो जीवित नहीं रहसक्के यदि नहींनिकालें तो मनुष्योंको दुःख होताहै, जूंआलीखांसें दुर्दशाभी होतीहै ॥

और केई गौभैंस घोड़ा खच्चर गधाऽऽदिकोंके शरीर के किसीअंगमें जीव पड़जातेहैं तो यदि उसपर फीनैल मुश्ककपूरआदिक औषध लगावें तो सो असंख्य जीव मरतेहैं यदि औषध नहींलगावें तो गौ भैंस घोड़ा आदि मरतेहैं ॥

केई खूओंमें पूरेआदिक जीव पैदा होजातेहैं यदि उसका जल निकालाजावे तो वो असंख्यजीव मरतेहैं, यदि उसखूएमें औषध गेरें तोभी वो लाखोंजीव मरतेहैं ।

यदि जल नहींनिकालें औषधभी नहींगेरें तो उस खराबजलके पीने सें मनुष्य बीमारहोजातेहैं मरतेहैं ॥

वर्षाऋतुमें प्रायः गेहूं चना जोंआदिकोंमें सुसरीआदिजीव पैदाहो जातेहैं फिर यदि उन गेहूं चनाऽऽदिकों को धूपमें नहींफैलायाजावे तो वो सब अन्न जीवोंसे खायाजाताहै इस्से मनुष्योंका निर्बाहही नहींहोसक्ता, इसी सें जैनीभाईभी ऐसेअन्नको धूपमें फैलातेहीहैं जब वोअन्न धूपमें फैलाया जावेतो उसअन्नसें निकसकर असंख्यजीव मरतेहैं ॥

विदितरहे कि--रुधिरमें मैलेमें असंख्यजीव होतेहैं तथा दद्रुप्लेग प्रभृतिरोगोंके कृमि भिन्नाभिन्नजातिके होतेहैं ॥

यदि मनुष्यनको मलविकारहुए जुलाब करायाजावे तो हजारों मलकृमि मरतेहैं, यदि जुलाब नहींकरावें तो मनुष्य बीमारीसें मरतेहैं, ऐसेही रुधिरशोधक औषधसेभी जानो ॥

यदि दद्रु आदिरोगोंका औषधकरें तो सो हजारों रोगकृमि मरतेहैं यदि औषधनहींकरें तो मनुष्य दुःख भोग २ कर मरते हैं ।

होमित्र–इत्यादिक असंख्यजगोंमें सूक्ष्मजीवोंकी हिंसाका निवारण नहींहोसक्ता तो अब इसमें आप कहें कि गौघोड़ामनुष्यादिक श्रेष्ठजीवोंकी हिंसाकीउपेक्षाकर्के क्षुद्रजीवोंकी रक्षामें तत्परहोना अन्यायनहींहै,जैसेकि राजाम्र वा कल्पवृक्षको काटकर बबूरकी, रक्षाकरणी, वाडकरणी अन्याय नहींहै वो प्रसिद्धअन्यायहीहै ॥

क्योंकि–ऐसे कौनबुद्धिमान्पुरुष कहसक्ताहैकि--गौभैंसघोड़ाऽऽदिक तो दुःखपायें मरें परंतु औषधसे उनके व्रणकृमि नहींमरें ।

और ऐसेभी बुद्धिमान् वा मूढ़ कोईभीपुरुष नहींकहसक्ता कि–बीमारीसें तकलीफपाय २ कर मनुष्य तो मरें परंतु औषधोंसें मलकृमि रुधिरकृमि रोगकृमि व्रणकृमि न तो तकलीफ पावें नांहीं मरें ॥

बहुतसे पूज्ययतिआदिक जैनीभाईओंकाभी चिकित्सा करणाही व्यापारहै अतः जैनीभाईभी औषध कर्ते करातेहीहैं सो औषधोंका करणा योग्यहीहै क्योंकि--आयुर्वेदसें विहित औषधोंकर जो कूपकृमि व्रणकृमि आदिक मरतेहैं वो आयुर्वेदविहिताहिंसाहै ॥

हेभ्रातः--देखो प्रमाणांक १३४ आदिकोंको वराहपुराणमें साक्षात्

वराहभगवान्नेभी विहितमृगोंके पक्षीओंके मांसका विधानकराहै अतः तुम्हारे लिखे वराहपुराणके श्लोकमें वृथाहिंसाका त्यागकहाजानना ॥

पूर्वपक्षी०--भगवद्गीतामेंभी दैवीसम्पत् और आसुरीसम्पत् जोदिखाई गईहै उनमें दैवीसम्पत् मोक्षको देने वालीहै और आसुरी सम्पत् केवल दुर्गतिका कारणहै दैवीसम्पत्मेभी केवलअभयदानकोही मुख्य रखाहै यथा **अभयंसत्त्वसंशुद्धि र्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः** अ०१६। १ ॥ इत्यादिक बहुतश्लोकहैं, भावार्थ अभय याने भयका अभाव १, सत्त्वसंशुद्धि चित्तसंशुद्धि अर्थात चित्तप्रसन्नता २, आत्मज्ञान प्राप्तकरनेके उपायोंमें श्रद्धाही ज्ञानयोगव्यवस्थितिहै ३, इत्यादिक ॥

आस्तिक०-यहांभाष्यकारभी अभयपदका अभीरुता अर्थकर्तेहैं औरभाष्यकी आनन्दगिरिटीका **अभीरुता शास्त्रोपदिष्टेऽर्थे संदेहंहित्वाऽनुष्ठाननिष्ठत्वम्** ॥ अभयका अर्थ, अभीरुता, भयरहितहोना अर्थात् अपने २ वर्णआश्रमके योग्य शास्त्रने उपदेशकरे अर्थमें संशयको त्यागकर्के अनुष्ठानमें स्थिरताही अभयपदका अर्थहै और विजयधर्मसूरिजीनेभी भयका अभाव अभयपदका अर्थलिखाहै तो दानपद अपनीतर्फसें लगाकर जो विजयधर्मसूरिजीने पहिलेअभयदान लिखाहै वह यहां अयुक्तहीहै ॥

और अभयदानके विषयमें तो मैं अबीविस्तारसें लिखआयाहुं ।

जैनिओंका उपहास—**हिंसायत्रपरोधर्मः अधर्मस्तत्रकीदृशः। ब्राह्मणोयत्रमांसाशी चाण्डालस्तत्रकीदृशः॥**

अर्थ—जिसमतमें हिंसा परमधर्महै उसमतमें अधर्मकैसाहै, जिसमतमें ब्राह्मण मांसाशीहै उसमतमें चाण्डाल कैसाहै ॥

उत्तर—श्रुत्यादिविहिताहिंसा धर्मोयत्रसखे स्मृतः। अधर्मस्तत्रविज्ञेय स्तदन्यासावृथैवसा ७ ब्राह्मणोयत्रहेमित्र विहितामिषभुक्स्मृतः ॥ चाण्डालस्तत्रविज्ञेयो निषिद्धामिषभोजनः ॥ ८ ॥

टीका—हेसखे जिसमतमें श्रुतिआदिकोंसें विहितहिंसा धर्म स्मृतिओंमें कहाहै, उसमतमें अविहितहिंसा अधर्महै वो आविहितहिंसा वृथाहिंसा कहीजातीहै ॥ ७ ॥

हेप्रियामित्र—जिसमतमें ब्राह्मण विहितमांसखानेवाला स्मृतिओंमें कहाहै, उसमतमें निषिद्धमांसखानेवाला चांडालहै ॥ ८ ॥

पूर्वपक्षी०—मनुस्मृतिके अ० ११ का—अभोज्यानांतुभुक्त्वान्नं स्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेवच॥ जग्ध्वामांसमभक्ष्यंच सप्तरात्रंयवान्पिवेत् ॥ १५२ ॥

भावार्थ—जिसकाअन्न खानेलायक नहींहै उसका अन्न खाकर और स्त्री तथा शूद्रका जूंठा खाकर तथा सर्वदा अभक्ष्यही याने नहींखानेलायक मांसको खाकर शुद्धहोनाचाहे तो सातदिनतक यवका पानी पीना चाहिये ॥

विवेचन—प्रायश्चित्तविधिमें मांसखानेसें प्रायश्चित्तभी दिखलायाहै तो भी हिंसासें लोक क्यों नहींडरतेहैं ॥

आस्तिक०—हेपाठक-विजयधर्मसूरीजी बहुतजगें दुराग्रहकर सत्य-अर्थको छिपाके असत्यअर्थकोही लिखतेहैं। देखोइसमनुश्लोककीआं टीकाभी दिखलाताहूं ॥

मेधातिथिकामनुभाष्य प्र० ॥ १३८—**अभक्ष्यंमांसं प्लवहंसचक्रवाकादीनाम् ॥**

अर्थ—प्लवहंसचक्रवाऽऽदिकोंके अभक्ष्यमांसको खाएतो सातदिन जौं पीवे ॥

सर्वज्ञनारायणकी टीका प्र० १३९—**अभक्ष्यंमांसं जालपादादीनाम् ॥**

अर्थ—जालकीन्यांई जिनके पैरहोवें ऐसे हंस बतकआदिकोंके अभक्ष्यमांसको खाए तो सातदिन जौं पीवें ॥

विवेचन—मनुश्लोकमेंभी अभक्ष्यमांसके खानेका यिह सातदिन जौं पीने प्रायश्चित्तकहाहै उनकी टीकामेंभी प्लवहंसचक्रवाऽऽदिकोंका अभक्ष्यमांस अर्थ लिखाहै तो आश्चर्य्यहै कि सत्यअर्थको छिपाकर धोखादेनेके महापापसें क्यों नहींडरते. विहितमांसके खानेका प्रायश्चित्त नहीं प्रत्युत देखो प्रमाणांक ८१ आदिकोंको विहितमांसके नहींखानेके अतिदोष कहेहैं प्लवनाम बानरका और किसीपक्षीविशेषकाहै ॥

——०——

पूर्वपक्षी०—विधिविहितमांसखानेमें दोष न माननेवालोंको देखनाचाहिये कि-श्रीमद्भागवतीय चतुर्थस्कन्धके २५ वें अध्यायमें प्राचीनवर्हिष राजाने-नारदजीसें पूछाकि-मेरा मन स्थिर क्यों नहींरहताहै तब नारदजीने योगबलसें देखकर कहाकि-आपनेजो प्राणियोंके बधवाले बहुतसें यज्ञ

कियेहैं इसीसें आपका चित्त स्थिर नहींरहताहै, ऐसा कहकर योगबलसें राजाको यज्ञमें मारेहुए पशुओंका दृश्य आकशमें दिखलाया और नारदजी नें कहाकि–हेराजन् दयारहित होकर हजारोंपशुओंको यज्ञमें जो तुमने मारा है वे पशु इससमय क्रुद्धहोकर यह रस्ता देखरहेहैं कि–राजा मरकर कब आवे और हमलोग उसको अस्त्रोंसें काटकर कब अपनावदला चुकावें दोखिये श्रीमद्भागवतके चतुर्थस्कन्धमें—

भोभोःप्रजापतेराजन् पशून्पश्यत्वयाऽध्वरे ॥ संज्ञापितान्जीवसंघान् निर्घृणेनसहस्रशः ॥ ७॥ एतेत्वांसंप्रतीक्षन्ते स्मरन्तोवैशसंतव ॥ संपरेतमयैःकूटै श्छिन्दन्त्युत्थितमन्यवः ॥ ८ ॥

इनदोनों श्लोकोंका भावार्थ ऊपरही स्पष्ट होचुकाहै ॥

आस्तिक०—उन पशुयज्ञोंकरही प्राचीनवर्हिषराजा निवृत्तिमार्गके अधिकारीहुए इस्सें राज्यको गृहस्थाश्रमको गृहस्थकेउनयज्ञोंको छुडवाकर वानप्रस्थकरानेलिये नारदजीने ऐसीरचना करदिखलाई इस्सें देखो भागवत

प्राचीनवर्हीराजर्षिः प्रजासर्गाभिरक्षणे । आदिश्यपुत्रानगमत् तपसेकपिलाश्रमम् ।स्क०९।अ०२९।८३।

अर्थ—जब उपदेशकर्के नारदजी सिद्धलोकको चलेगए तबप्राचीन वर्हिषराजा प्रजासृष्टि पालनेलिये (प्रचेतस् पुत्र आवें तो वो राज्यमें स्थापित करदेने) ऐसे मंत्रीजनोंको कहकर आप तपलिये कपिलमुनिके आश्रम को चलागया ॥

देखो प्रमाणांक १२० को युधिष्ठिरके यज्ञमें ३०१ अजआदिपशु वेदविधिसें मारेगए, फिरदेखो स्वर्गारोहनपर्व १४ वेंको जब युधिष्ठिरजी स्वर्गकोगए तब मार्गमें नांही वोपशु आए और नांही युधिष्ठिरको किसीने अस्त्रोंसें काटा और युधिष्ठिरजीनें तो बनमें हजारोंमृगोंकोभी माराहै तोभी शरीरसहितही स्वर्गमें पहुंचे ॥

औरदेखो महाराजादशरथके यज्ञमेंभी ३०१ पशुओंका बलिप्रदान करागया ॥

बा० रामायण प्र० १४० पशूनांत्रिशतंतत्र यूपेषुनियतंतदा ॥ अश्वरत्नोत्तमंतत्र राज्ञोदशरथस्यह ॥ बा०का०१॥स०१४॥३२ ॥

बा०रामायण प्र० १४१—कौसल्यातंहयंतत्र परिचर्य्यसमंततः ॥ कृपाणैर्विशशासैनं त्रिभिः परमयामुदा ॥ ३३ ॥

राजादशरथके उसयज्ञमें तब तीनसौ पशु श्रेष्ठ यूपोंमें बान्धेगए, तहां अश्वोंमें रत्नरूप उत्तमअश्वथा ॥ ३२ ॥

तहां प्रोक्षणादिकोंसें संस्कारकर्के उस अश्वको कौसल्या महारानी परमहर्षसें तीनकृपाणोंकर काटतीभई ॥ ३३ ॥

हेपाठक—अयोध्यापुरी सरयूतीर्थके तटपर महाराजादशरथने ऐसा यज्ञकरा जिसमें पशुओंका बलिप्रदानहुआ उसयज्ञसें रामलक्ष्मणआदि चार पुत्ररत्नप्राप्तहुए ॥

ऐसेदशअश्वमेधयज्ञ श्रीरामजीनेंभी करेथे सो देखो प्रमाणांक १३० में

———

ऐसा अश्वमेधयज्ञ महाराजा सगरनेंभी कराथा देखो ।

भागवत प्र० १४२–**तंपरिक्रम्यशिरसा प्रसाद्यहयमानयत् ॥ सगरस्तेनपशुना क्रतुशेषंसमापयत्** ॥ स्क० ९॥अ० ८॥३०॥

अर्थ—प्रक्रमाकर्के उसकपिलजीको शिरसें प्रमाणकर प्रसन्नकर्के सगर का पौत्रः अंशुमान् अश्वको ल्याताभया सगरमहाराजा उसपशुसें यज्ञशेषको समाप्त कर्ताभया ॥३०॥

दौष्यन्ति महाराजानेंभी गंगा और यमुनाके तटपर ५५ अश्वमेधयज्ञ करे देखो भागवतप्र०१४३—**पञ्चपञ्चाशतामेध्यै गंगायामनुवाजिभिः ॥ मामतेयंपुरोधाययमुनायामनुप्रभुः** ॥स्क०९॥अ०२०॥२५॥ अर्थ ममताके पुत्र दीर्घतमाको पुरोहित बनाकर यज्ञके योग्य पवित्र ५५ अश्वनसें गंगायमुनाके तटपर अनुलोमविधिसें दौष्यन्तिमहाराजा यज्ञकर्ताभया ॥

ऐसे २ विख्यात महाराजे सबही यज्ञ कर्तेआये हैं सो दशरथसगर रन्तिदेव युधिष्ठिरआदिक स्वर्गमेंही पहुंचे उनके मार्गमें नांहीं कोईपशुआया और नांहीं उनको किसीने काटा ॥

उन हजारों पशुओंने मरकर जन्मान्तरमें देशांतरमें जाकर पूर्वजन्मका स्मरणकर्के वदलाचुकाना, स्पष्टअसंभवभीहै दशरथ रन्तिदेव युधिष्ठिर अर्जुनादिकोंकी स्वर्गमें प्राप्ति इतिहासग्रन्थोंमें कहीहीहै ॥

और प्रमाणांक ६९ आदिकोंसेभी विधिविहितहिंसाका शुभफलही सिद्धहै और प्राचीनबर्हिषराजाभी ऐसे यज्ञोंकरही शुद्धचित्त निवृत्तिमार्गका

अधिकारीहुआ, उसको राज्यगृहस्थाश्रमादि छुडवाकर बानप्रस्थकरानेलिये नारदजीने ऐसीरचना करादिखलाई, जैसे कि-विष्णुनारायणने नारदजीका मुख बानेरका रचदियाथा ॥

पूर्वपक्षी०--यज्ञमें हिंसाकरणेका निषेध महाभारतशान्तिपर्वके मोक्षाधिकारमें अ० २७३ पृष्ठ १५४ में लिखाहै यथा-**तस्यतेनानुभावेन मृगहिंसात्मनस्तदा ॥ तपोमहत्समुच्छिन्नं तस्माद्धिंसानयज्ञिया** ॥ १८ ॥

महाभारत प्र० १४४**अहिंसासकलोधर्मो हिंसाधर्मस्तथाहितः ॥ सत्यंतेऽहंप्रवक्ष्यामि नोधर्मःसत्यवादिनाम्** ॥ २० ॥

भावार्थ--स्वर्गके अनुभावसें एकमुनिनें मृगकी हिंसाकरी तब उस मुनिका जन्मभरका बड़ाभारी तप नष्टहोगया अतएव हिंसासें यज्ञभी हितकर नहींहै वस्तुतः अहिंसाही सकलधर्महै और अहिंसाही सच्चा हितकरहै मैं तुमसे सत्यकहताहुं कि-सत्यवादीपुरुषका हिंसाकरनेका धर्म नहींहै ॥

आस्तिक०-खेदहै कि-महाभारतकी पं० नीलकण्ठकृतटीकामें इस २० वें श्लोकके द्वितीयपादमें हिंसापद छेदकर्के अर्थकराहै, उसको अहिंसापद दुराग्रहसें विजयधर्मसूरीजैनीजी बनातेहैं-और इसके चतुर्थपादमें योधर्मः वा नोधर्मः, ऐसा पाठभेदहै वोभी नीलकण्ठजीनें टीकामें दिखलायाहै ॥ -

हेप्रियपाठक-महाभारतमें एक ब्राह्मणवानप्रस्थके यज्ञके यिहश्लोकहैं अतः इसप्रकरणमें यिह श्लोक उपयोगी नहींहैं क्योंकि-यहां प्रवृत्तिमार्गवाले

गृहस्थजनोकेलिए प्रसंग चलाहुआहै वानप्रस्थोंकेलिये नहीं तथापि वान प्रस्थब्राह्मणकी वोकथाही संक्षेपसें लिखताहुं ॥

सत्यनामा उञ्छवृत्ति एकऋषिथा पुष्करधारिणीनामा उसकी स्त्रीथी वनमें जायके उस ऋषिने श्यामाकअन्न और शाक आदिकोंसें यज्ञ आरम्भ किया, वनमें उसऋषिके समीप धर्मराज आयके किसीनिमित्तसें मृगरूपहोता भया, मृगरूपहुए धर्मराजनें उसमुनिको कहा कि–मंत्रकाअंग जो पशुहै उस पशुसेंविना तूं यज्ञ कर्ताहैं, यिह तूं ठीक नहींकर्ता ।

यदि तुम कहो कि–मैं निर्धनपुरुषहुं पशुको खरीद नहींसक्ता तो हेब्रह्मन् अग्निमें मेरेको फैंक उससें तूं स्वर्गको जा, फिर तदनन्तर सावित्री भगवतीनें प्रत्यक्षहोकर कहा कि—मेरेनिमित्त यिहपशु अग्निमें हवन करा चाहिये तब उसब्राह्मणने कहा कि-मैं सहवासीमृगको नहींमारूंगा, ऐसे कहीहुई सो सावित्री भगवती "यिह दुष्टाचरित क्याहै" ऐसे उसमूढ़जनकी उपेक्षाकर्के निवृतहुई सावित्रीभगवती रसातल देखनेकी इच्छासे यज्ञाग्निमें प्रविष्ट होगई ।

पुनः बद्धांजलिहुआ हरिणमृग उसब्राह्मणसें प्रार्थनाकर्ताभया कि 'मेरेको अग्निमें फैंक' फिर उसब्राह्मणने उसमृगको स्पर्शकर्के कहा कि–चले जाईए तदनन्तर वो हरिण आठ कदम जाकर फिर हटआया, पुनः कहने लगा कि–हेसत्यब्राह्मण मेरेको मार यज्ञलिए हतहुआ मैं सद्गतिको प्राप्त होवुंगा ॥

और मेरेदियेहुएं चक्षुःसें स्वर्गकी अप्सराओंको विचित्रविमानोंको गंधर्वों को देख तदनन्तर "ऐसास्वर्ग मेरेको मिले" ऐसी इच्छाकर लगेहुएचक्षुःसें वो ब्राह्मण चिरतक देखकर्के और मृगको स्वर्गार्थीदेखकर हिंसासें स्वर्गवास

निश्चित कर्ताभया मृगहोकर वोधर्मराज वहुतवर्ष वनमें रहकर जिसनिमित्तसें मृगहुआथा उसका निस्तारा अपना उद्धारकिया ॥

हे पाठक – इतनीकथासें अनन्तर यिहश्लोकहैं

उनदोनोंश्लोकोंका अर्थ – "पशुको मारकर स्वर्गमें प्राप्तहोउंगा" इस भावसें मृगकी हिंसामें मनवाले उस वानप्रस्थब्राह्मणका महत्तप नष्टहुआ उससें वानप्रस्थ ब्राह्मणको हिंसा यज्ञलिये हितकर नहीं ॥१८॥—अहिंसा सकलधर्महै वैसेंही स्वर्गदायीहोनेसें हिंसाधर्म हितकरहै, मैं तुझको सत्य कहताहुं हमारा सत्यवादीओंका धर्महै अथवा मैं तुझको सत्यकहताहुं सत्यवादीओंका जो धर्महै ॥२०॥

अव विचारकरें कि—वो वानप्रस्थब्राह्मण तो शाकआदिकोंसेंही यज्ञ करनेलगाथा, फिर उसने मृगको माराही नहीं तो उसके तपका नाश क्यों हुआ ॥

और उसब्राह्मणनें सावित्रीभगवतीके वाक्यकाभी आदर नहींकरा, तथा मृगरूपधर्मराजके वाक्यनकाभी आदर नहींकरा, अर्थात् सावित्रीभगवती आदिकोंके कहने से भी उसने मृगहिंसा नहींकी तोफिर उसब्राह्मणके तपका क्षय क्योंहुआ ॥

यदि आप कहो कि–उसब्राह्मणको मृगके मारणेसें स्वर्गप्राप्तिका निश्चयहुआ उससें उसकेतपका क्षयहुआ तोहेभ्रातः वोनिश्चयभी धर्मराजके बारंबारकथनसें और गन्धर्वअप्सरांआदिकोंके दिखलानेसें हुआ अतः ऐसे-निश्चयके करानेवाला धर्मराजथा इस्सें धर्मराजके तपका क्षयहोनाचाहियेथा ॥

फिर वो निश्चयभी सत्यहीथा क्योंकि देखो तुम्हारेलिखे इस २० वें श्लोकके द्वितीयपादकी ॥

नीलकण्ठीटीका प्र० १४५—तथातेनस्वर्गप्रदत्वेनरूपेणाहितः

अर्थ—वैसे स्वर्गदायीरूपसें हिंसाधर्म हितकरहै ॥

और प्रमाणांक६९ आदिकोंमेंभी विधिविहितहिंसाका श्रेष्ठफलही दिखलायाहै वो रन्तिदेव दशरथ युधिष्ठिरआदिकोंकोभी श्रेष्ठफलहीहुआहै तो ब्राह्मणके तपका क्षयक्यों हुआ सो अर्थसें जाना जाताहै कि-सावित्रीभगवतीके वाक्यका अनादरकरणेकर उसकेतपका क्षय हुआ ॥

—*०*—

होर जो १८ वें श्लोक में कहाहै कि—यज्ञालिये हिंसा हितकरनहीं,,वो वानप्रस्थ ब्राह्मणालिये कहाहै क्योंकि यदि क्षत्रिया दि गृहस्थोंकेलियेभी यज्ञीयहिंसाहितकर न होतीतो -देखो प्रमाणांक १२९को व्यासभगवान् पापोंकी निवृत्तिलिये हिंसायुक्त अश्वमेधका उपदेश क्योंकरसक्तेथे ॥

फिर ऐसेयज्ञमें आपकृष्णभगवान् और व्यासप्रभृतिमहर्षिजन संमिलित कैसे होसक्तेथे ॥

महाभारत प्र० १४६— राज्ञोमहानसेपूर्वं रन्तिदेवस्य वैद्विज । द्वेसहस्रेतुबध्येते पशूनामन्वहंतदा । समांसंददतोह्यन्नं रन्तिदेवस्यनित्यशः ॥ पर्व ३ ॥ अ० २०८ ॥ ८ ॥ अन्नस्याहिप्रदानेन रन्तिदेवोदिवंगतः ॥ प० १३ ॥ अ० ११२ ॥ १२ ॥

अर्थ हेद्विज-मांससहितअन्न के दानकरणेवालाजो रन्तिदेव उस रन्तिदेवराजाके पाकस्थानमें दो हजार अजआदिपशु प्रतिदिन मारेजातेथे ॥ ८ ॥ वो रन्तिदेवराजा ऐसेअन्नकेप्रदानकर स्वर्गको प्राप्तहुआ ॥१२॥

देखो मांससहितअन्न के प्रदानकरणेकर रन्तिदेवके तपका पुण्यका क्षय नहींहुआ किन्तु रन्तिदेवजी स्वर्गमेंही पहुंचे और सगर युधिष्ठिर आदिकभी असंख्य महाराजे पशुहिंसावाले यज्ञनसें स्वर्गादिउत्तमगतिको प्राप्तहुए अतः विधिविहितहिंसा हितकरही सिद्धहै ॥

यदि आप कहें कि—वो ब्राह्मण बानप्रस्थथा निवृत्तिमार्गवाले बानप्रस्थको पशुहिंसाका संकल्पकरनाभी योग्यनहींहै इस्सें उसके तपका क्षय हुआतो हेमित्र वो मैं प्रथमही लिखचुकाहूं कि—यहांतो प्रवृत्तिमार्गवाले गृहस्थजनोंकेलिये पशुबलिप्रदानका मांसखानेका विचार चला हुआहै, इस विचार में वानप्रस्थसम्बन्धी यिहश्लोक जैनीभाईके लिखे अनुपयोगीहीहैं ॥

—o—

शंका—यदि बानप्रस्थलिये पशुवलिदेना योग्यनहींहैतो श्रीरामजी तथा युधिष्ठिरादिक पांडवभी बनवासमें क्यों मृगोंकोमारकर मांसको खाते और ब्राह्मणोंको खुलाते रहेहैं ॥

समाधान—रामजी तथा पांडवोंने गृहस्थाश्रमका त्यागकर नियत वानप्रस्थकाग्रहण नहींकराथा किन्तु उनका बनवास नैमित्तक हुआहै वो क्षत्रियमहाराजेथे अतः विधिसे विहितमांसको खुलाना व खाना उनका शास्त्र विहित धर्म ही था ॥

शंका—सावित्री भगवतीने उस ब्राह्मणको पशुबलिदानलिये क्यों प्रेरणाकी थी—

समाधान—सावित्री भगवतीका यिह तात्पर्य्यथाकि—यदि तूं बानप्रस्थ बनताहैंतो जपयज्ञ ध्यानयज्ञकरो यदि गृहस्थब्राह्मणहैंतो शास्त्रविधिका उल्लंघन मतकर किंतु विधिसें पशुबलिप्रदानकरो ॥

हे पाठको—ब्राह्मणोंलिये प्रमाणांक १०४ आदिकोंमें विधिको देखो अहिंसादिग्दर्शनग्रन्थमें विजयधर्मसूरिजीने

महाभारतके—अव्यवस्थितमर्यादै र्विमूढैर्नास्तिकैर्नरैः॥ संशयात्मभिरव्यक्तै र्हिंसा समनुवर्णिता॥ ॥ पर्व १२ ॥ अ० २६६ ॥ ४ ॥

सर्वकर्मस्वहिंसांहि धर्मात्मामनुरब्रवीत्॥ कामकाराद्विहिंसन्ति वहिर्वेद्यांपशून्नरः ॥ ५ ॥

तस्मात्प्रमाणतः कार्यो धर्मःसूक्ष्मोविजानता ॥ अहिंसासर्वभूतेभ्यो धर्मेभ्योज्यायसीमता ॥ ६ ॥

इसके अगला एकसातवांश्लोकको विजयधर्मसूरिजीनें नहींलिखा क्योंकि वो एकतर्फेश्लोकलिखकर अन्यायसें अपनाजैनमत सिद्धकराचाहतेहैं वो सातवांश्लोकभी यहां मैं लिखताहुं ॥

उपोष्यसंशितोभूत्वा हित्वावेदकृताःश्रुतीः ॥ आचारइत्यनाचारः कृपणाःफलहेतवः ॥ ७ ॥

यदियज्ञांश्चवृक्षांश्च यूपांश्चोद्दिश्यमानवः ॥ वृथामांसंनखादन्ति नैषधर्मःप्रशस्यते ॥ ८ ॥

सुरांमत्स्यान्मधुमांस मासवंकृसरौदनम् ॥ धूर्त्तैःप्रवर्त्तितंह्येत न्नैतद्वेदेषुकल्पितम् ॥ ९ ॥

इत्यादिक श्लोकलिखे हैं, उनका अर्थ—विचख्नुराजानें गोमेध यज्ञमें

वृषभके बलिप्रदानको व गौओंके विलापको देखकर कहाकि–क्षत्रियोंका यज्ञ हिंसावाला होताहै, उससें भिन्नयज्ञ ब्राह्मणोंकाहोताहै,, यिह मर्यादाहै ऐसी मर्यादाको जिनोंने दूरकरदियाहै ऐसे विमूढ नास्तिकसंशयवाले व यज्ञों कर ख्यातिचाहनेवाले जनोंने हिंसाको वर्णनकराहै ॥ ४ ॥ सर्वकर्मों में अहिंसाको धर्मात्मा मनुजी कहतेभए जिससें अतः स्वर्गादिकोंके रागसे पुरुष वेदिसेंबाहिर पशुओंकोमारतेहैं ॥ ५ ॥ इस्सें प्रमाणोंके बलको और दुर्बलताको जाननेवालेपुरुषोंने प्रबलप्रमाणोंकोदेखकर सूक्ष्मधर्म करणा योग्यहै ॥ ६ ॥ सर्वजीवोंकी अहिंसा गृहस्थजनोंसें होनहींसक्ती, ऐसी शंका हुए उत्तर कहतेहैं कि–'उपोष्य' ग्राम के समीपनिवासकर तीक्ष्णव्रतवाला संन्यासी होकरके वेदोंमें कहेफलवाक्यनको त्यागकर, गृहस्थके आचारसें रहितहोवे स्वर्गादिफलकी अभिलाषावाले पुरुषक्षुद्रहोतेहैं ॥ ७ ॥ यदि यज्ञोंका वृक्षोंका यूपोंका उद्देशकर्के मनुष्य वृथामांसकोनहींखातेतो वोयिह धर्म प्रशंसनीय नहींहै ॥८॥ सुरामत्स्यशहतमांसमद्य कृसरौदन,तिलमिश्रित चावलों का भात, यिह धूर्तोंने प्रवृत्तकरेहैं, यिह वेदमें नहींहैं ॥९॥

अब विचख्नुराजाके इनश्लोकोंमेंभी निर्णय कीजिये । विचख्नुराजा का यिहकथन गोमेधयज्ञाविषयका ब्राह्मणोंप्रतिहै अतः इसके विशेषसमाधान की अपेक्षा नहींहै ॥

यदि आप कहें कि–सर्वयज्ञोंविषयकाहै तो विचख्नुराजाका कथन अयुक्तहीहै, तथाही कहताहुं सुनिये ॥

इसचतुर्थश्लोककी नीलकण्ठीटीका प्र० १४७–**हिंस्रःक्षत्रियय्ज्ञ स्तदन्योब्राह्मणयज्ञइतिमर्यादा विचालितायेषांतैः**

अर्थ–विचख्नुराजा कहतेहैं ।कि–हिंसावाला क्षत्रियोंका यज्ञ, उस्सें भिन्न ब्राह्मणोंका होताहै ऐसीमर्यादासे रहित विमूढ नास्तिक संशयवालेपुरुषोंने

हिंसा वर्णनकीहै, सो यिहकथन अयुक्तहीहै क्योंकि देखो प्रमाणांक १७९ आदिकोंको वेदोंके संहिताभागोंमें ब्राह्मणभागोंमें पशुवालिप्रदानका विधान कराहुआहै तदनुसार मनुस्मृति वसिष्टस्मृति श्रौतसूत्रादिकोंमेंभी पशुहिंसा का विधान करा हुआहै तो उसके विधायक योगयुक्तपरमपूज्यपुरुषोंमें ऐसे कुत्सितशब्द कहने संभवें नहीं किंतु उनपरमपूज्यपुरुषोंमें कुत्सितशब्द-कहनेवालेविचरव्नुराजामें वो कुत्सितशब्द कहनेसंभवेंगे ॥

फिर पंचमश्लोकमें कहाहै, सर्वकर्मोंमें अहिंसाको मनुजीने कहतेभए सो हेमित्र प्रमाणांक ४९ आदिकोंमें मनुआदिमहर्षिओंने वेदविहितहिंसा को अहिंसारूप मानाहीहै, और प्रमाणांक १०४ में जो मनुजीने यज्ञलिये व मातापिताऽऽदिकोंकी जीविकालियेभी ब्राह्मणोंको विहितमृगपक्षीओंके मारणे की आज्ञाकीहै वोभी विहितहोनेसे अहिंसारूपही जाननी ॥

होर जो पंचमश्लोकमेंकहाहै कि स्वर्गादिकोंके रागसें पुरुष पशुओं को मारतेहैं, सोयिहभी नियम नहीहै क्योंकि यद्यपि यज्ञीयहिंसा स्वर्गका हेतु होनेसें स्वर्गआदिकोंके रागसेंभी पुरुषोंने पशुबालिप्रदान कराहै तथापि व्यासादिकोंके उपदेशकर युधिष्ठिरप्रभृतिमहारजोंने पापों कीनिवृत्तिलियेभी अश्वमेधादियज्ञोंमें पशुओंका बलिप्रदान करायाहै ॥

छठेश्लोकमें कहाहै कि—प्रबल प्रमाणोंसे सूक्ष्मधर्म करणायोग्यहै सोठीकहै होर कहाहै कि–धर्मोंसे सर्वभूतोंकी अहिंसा श्रेष्ठहै, परंतु प्रमाणांक ४९ आदिकोंसें वेदविहितहिंसा अहिंसाहीहै।

आठवेंश्लोकमें कहाहै कि—यज्ञादिकोंके उद्देशसें वृथा मांस को नहींखाते सोयिहधर्म प्रशंसनीय नहींहै, सो यिह कथनभी अयुक्तहीहै क्योंकि श्रुतिस्मृतिसूत्रग्रन्थोंमें जिसधर्मका विधानकराहै फिर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामआदिकअवतार और अगस्त्यभरद्वाज वसिष्ट प्रभृतिमहर्षिजन

व इक्ष्वाकु दशरथ युधिष्टिर आदि धर्मात्मा महाराजे जिसधर्ममें प्रवृत्तहुएहैं सोईधर्म आस्तिकपुरुषोंमें प्रशंसनीयहोसक्ताहै इनसबनोंसें विरुद्ध कोईधर्म किसी के भी कहनेकर प्रशंसनीय नहीं हो सक्ता ॥

नवमेंश्लोकमें जो कहाकि—'मत्स्य शहत मांस कृसरौदनआदिक धूर्त्तोंने प्रवृतकरेहैं यिह वेदमें नहींहैं, सोयिह विचख्नुराजाका कथनभी असत्यहीहै अनुचित्तभीहै क्योंकि–वेदोंमें सूत्रोंमे स्मृतिओंमे पशुबलिप्रदान का मांसभक्षणका अनेक २ वाक्यनसें विधानकराहुआहै उनमें केईकवाक्य इसग्रन्थमेंभी दिखलाय दियेहैं और शहतभश्राद्धआदिकर्मोंमें विहित सब लोकजानतेहैं ॥

यजुर्वेदकी बृहदारण्यकउपनिषद–**अथ यइच्छेद्दुहितामे पण्डिताजायेत सर्वमायुरियादिति तिलौदनंपाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयाता मीश्वरौजनयितवै** ब्रा०४ ॥२७॥

अर्थ–फिरजो ऐसे चाहे कि–मेरे पण्डितापुत्री उत्पन्नहो वोपूर्णआयु कोप्राप्तहो वो स्त्रीपुरुष दोनो तिलचावल पकाकर घृतडालकर खाएं तोऐसी पुत्री उत्पन्नहोगी ॥१७॥

देखिये–इत्यादिक वाक्यनमें कृसरौदनका स्पष्टविधानहै यदि आप कहेंकि–विचख्नुराजाने इसप्रसंगके सातवें श्लोकमें कहाहै कि–गृहस्थके आचारसेंरहित तीक्ष्णव्रतवाला संन्यासीहोवे अर्थात् संन्यासीके अधिकारसें यिहसबश्लोक विचख्नुराजाने कहेहैं, तो वो ठीकहै ॥

और पहिलेभी कहागयाहै कि–और श्रौतसूत्र गृह्यसूत्रस्मृतिओंकी न्याईं इतिहासग्रन्थ पुराणग्रन्थ बलवालेप्रमाण नहींहैं क्योंकि-इतिहास पुराणोंमें कहीं ऋषिका, कहींराजाका. कहींवैश्यका, कहीं व्याधका, कहीं

भिल्लका, कहीं पशुका, कहीं कीटका, कथन चलपड़ताहै और सूत्रग्रन्थ स्मृतिग्रन्थ तो एकएक युज्ञानयोगी महर्षिका उपदेशरूपहैं अतः श्रुतिसूत्र स्मृतिओंके अनुसारीवाक्यही इतिहासपुराणोंके प्रमाण मानेंजातेहैं, श्रुति स्मृतिओंसे विरुद्ध यदि विचरन्नुराजाका कथनहो वा होरकिसीका कथनहो वो प्रमाणरूप नहींहोसक्ता ॥

दृष्टान्त-जैसे तुलाधार वैश्यका कथन ॥

महाभारत प्र०१४८–**यस्तथाभावितात्मास्यात्सगा मालब्धुमर्हति ।** पर्व १२ ॥ अ० २६४ ॥ ३२ ॥

इसपर नीलकण्ठीटीका प्र०१४९–**भावितात्मा योगाभ्या सशोधितचित्तःसमधुपर्के गांहिंसितुमर्हति ॥**

अर्थ—योगाभ्यासकर शुद्धचित्तवालेनें मधुपर्कमें गोमेधकरणायोग्यहै ऐसा तुलाधारका वाक्य समीचीन नहींहै, वो क्या माननीय होसक्ताहै अर्थात् वो माननीय नहींहै ॥

—:०:—

और अहिंसादिग्दर्शनमें इन्द्रादिकदेवता और ऋषिओंके संवादके महाभारतके श्लोकलिखेहैं सो विस्तारभयसें श्लोक न लिखकर उनका तात्पर्य्य लिखताहूं ॥

इन्द्रादिकदेवता यज्ञकररहेथे तब पशुओंके बलिप्रदानसमयमें केई-ऋषिओंने कहाकि--हेइन्द्र यिह यज्ञविधि शुभ नहींहै किन्तु तीनवर्षके पुराणेवीजोंसें यज्ञ कराचाहिये--तब इन्द्रादिक देवतोंने कहाकि-अजसें यज्ञकरा चाहिये, अजका 'छाग' बकराअर्थ जानना होरकोईपशु अजकाअर्थ नहीं, यिह मर्यादाहै ॥

फिरऋषिबोले कि--बीजोंसें यज्ञ कराचाहिये यिहवेदकी श्रुतिहै

अजनाम बीजोंकाहै अतः छागका मारणा योग्य नहींहै, हेदेवतो यिह श्रेष्ठजनोंका धर्मनहीं जहां पशुमाराजावे, यिह श्रेष्ठसत्ययुगहै इसमें कैसे पशुमारा जावेहै ॥

ऐसेदेवता और ऋषिओंका संवाद होरहाथा तब अन्तरिक्षके मार्गसें सेना व वाहनोंके सहित राजावसु प्राप्तहुआ अन्तरिक्षमें आतेहुए वसुको देखकर देवतोंको ऋषिओंने कहाकि--यिहधर्मात्मावसु संशयको काटेगा--

फिर वो देवता व ऋषि मिलकर समीपजाकर उनोंने वसुसें पूछाकि-हेराजन् अजसें यज्ञ कराचाहिये अथवा बीजोंसें--तब वसुराजाने पूछाकि-हेब्राह्मण सत्यकहोकि--किसका कौनमतहै -

तबऋषिओंने कहा कि--धान्यसें यज्ञ कराचाहिये यिह हमारा पक्ष है और देवतोंका पशु पक्षहै ।

तब देवताके पक्षके आश्रयसें वसुराजाने कहा कि अजसें, छागसें यज्ञ कराचाहिये तब वो मुनि कुपितहोकर विमानस्थ वसुको कहतेभए कि-देवतोंके पक्षको तुमने ग्रहण कराहै इस्सें तूं अन्तरिक्षसें गिरकर पृथिवीमें प्रवेशकर ऋषिओंके ऐसे शापसें वो वसुराजा आकाशसें गिरकर पृथिवीके अन्तरप्रवेश करगया ॥

अब इससंवादमेंभी निर्णय कराचाहिये

१-यदि वेदोंमें पशुबलिप्रदानका विधान न होता तो इन्द्रादिक देवता उसमें प्रवृत्त कैसे होसक्तेथे, और असत्यभाषण कैसे करसक्तेथे, असत्यवादी तो स्वर्गमें पहुंचही नहींसक्ता तो देवराज कैसे होसक्ताहै और ऋषिओंनेभी जिसको धर्मात्मा कहाथा वो धर्मात्मा वसुराजाभी असत्यभाषण क्यों करसक्ताथा ॥

शंका-क्या ऋषिजनही असत्यवादीहोतेहैं ॥

समाधान--वहांमहाभारतमें उनऋषिओंके नामही नहीं लिखे कि वो कौन ऋषिथे, कैसेथे, अर्थसें जानाजाताहै कि-इससंवादसें पहिले जो वसुराजाने अश्वमेधयज्ञ करा था उसमें वेदविधिविहित पशुबलिप्रदान नहींकिया अर्थात् वेदविधिका पालन नहींकरा इसी अभिप्रायसें ऋषिओंने वसुको शाप दियाहै ॥

२—उनऋषिओंने कहाथा कि- यिह श्रेष्ठसत्ययुगहै इसमें कैसे पशु माराजावेहै सो यिहकथनभी श्रुतिस्मृतिओंसें विरुद्धहै क्योंकि—श्रुतिस्मृति ग्रन्थनमें सैंकड़ेवाक्य पशुबलिप्रदानका विधानकर्तेहैं उनमें कोईवाक्यभी सत्य-युगत्रेताऽऽदिकोंमें पशुबलिप्रदानका निषेध नहीं करेहै प्रत्युत किसी २ स्मृति में अश्वमेध,गोमेध, पितरोंनिमित्तमांस, देवरसें पुत्रउत्पत्ति, संन्यास,बानप्रस्थ, मधुपर्कलिये पशुकाबध, इन सातधर्मोंका कालियुगमेंनिषेधकराहै इसीसें सत्ययुगत्रेताऽऽदिकोंमें इन्द्रादिक देवता और इक्ष्वाकु मरुत्त सगर रन्तिदेव दशरथ श्रीराम युधिष्ठिरप्रभृतिमहाराजोंके हजारोंयज्ञनमें अनेक २ पशु-ओंका 'बलिप्रदान' बध कराहीगयाहै ॥

३—देखो प्रमाणांक १२२ को १२७ को २०० को जबवेदोंमेस्मृतिओं में पशुबलिप्रदानविषये कहीं अजपद, कहीं छागपद, कहीं पशुपद, कहीं खड्गपद, कहीं शशपद, इत्यादिक लिखेहैं तो फिर अजपदका वीज अर्थ कैसेहोसक्ताहै ॥

४—यदि पशुबलिप्रदानका विधान न होतातो देखो प्रमाणांक १११ आदिकोंको श्रीरामजी चित्रकूटपर कृष्णमृगको मरवायके कुटिकी प्रतिष्ठा लिये हरिणकेमांसका बलिदान कैसेकरसक्तेथे—और देखो प्रमाणांक ४२ और ४३ को श्रीकृष्णचन्द्रजी गिरियज्ञलिये मेध्यपशुको मरवायके मांससें बलिदान कैसेकरवाय सक्तेथे ॥

५–दशरथके यज्ञमें भगवद्वसिष्ट व शृङ्गीऋषि जिसमें ऋत्वाज्थे उसमें ३०० पशुओंका बलिदान हुआ और कौसल्यामहारानीनें तीन कृपाणोंसें अश्वका सिर कटाथा तो यिह कौन कहसक्ताहै कि, वसिष्टजी ब्रह्माकेपुत्र और शृङ्गीऋषिजीने वेदनहीं पढेथे वो अजपदका अर्थ नहीं समझतेथे ॥

६–युधिष्ठिरके अश्वमेधयज्ञमेंभी साक्षात्कृष्णभगवान् व व्यासजी तथा होर अनेकमहर्षि विद्यमानथे तब वहां वेदवेता ऋत्विज् ब्राह्मणोंने अजअश्वप्रभृति ३०१ पशुओंका बलिदानकराथातो वहां व्यासादिकमहर्षि जन क्या अजपदका अर्थ नहीं जानतेथे, फिर वहां किसीभी ऋषिने युधिष्ठिर को पृथिवीकेअनन्तर गिरातो नहीं दियाथा ॥

हेपाठक, यिह पशुयज्ञ, हस्तिनापुर गंगाकेतट और अयोध्यापुरी सरयूके तट, व ब्रजभूमि गोवर्द्धनपर्वत और चित्रकूट मन्दाकिनी गंगाके तट, पर हुएहैं। चिरसें जैनमतका असरहोनेकर आज पशुयज्ञके नाम कहनेसेंभी बहुतपुरुष प्रकुपितहोजातेहैं ॥

७—देखो प्रमाणांक १४६ को रन्तिदेवमहाराजाके नित्यमहायज्ञमें अनेकपशुओंका बलिदानहोता रहा तो वो रन्तिदेवमहाराजाभी स्वर्ग में ही पहुंचे उसका पृथिवीमेंतो प्रवेश नहींहुआ ॥

बहुत क्या लिखुं, ब्रह्माइन्द्रप्रभृति देवतोंसेंलेकर असंख्यमहाराजोंनें पशुयज्ञ करेहैं वो महर्षिजनोंनें करवाएहैं उनसें वो महाराजे उत्तमलोकोंको ही प्राप्तहुएहैं ॥

८–अप्रसिद्धनामवाले उनऋषिओंनें पशुबलिकरणवाले इन्द्रादिकदेवतों को शापदेकर नहीं गिराया और श्रुतिस्मृतिअनुसार तथा रामकृष्ण आदिकोंके आचरणके अनुसारकथनकरणेवाले वसुराजाको क्यों शाप

देकर गिराया सोअर्थसें जानाजाताहै कि इस्सें पहिले महाभारतशान्तिपर्व अध्याय ३३६ में जो वसुराजानें अश्वमेधयज्ञ कराथा उसमें विधिविहित पशुबलि नहींकरा अर्थात् वेदविधिका पालन नहींकरा उसीअभिप्रायसें ऋषिओंनें शापदेकर वसुराजाको अन्तरिक्षसें गिरादिया देखोप्रमाणांक २७ व २८ को वो संभवेहीहै ॥

पूर्वपक्षी०—**यक्षाणांचपिशाचानां मद्यमांसभुजांतथा । दिवौकसांतुभजनं सुरापानसमंस्मृतम् ।** पद्मपुराण अ० २८ ॥ ९५ ॥

अर्थ—यक्ष पिशाच और मद्यमांसखानेवाले देवतोंका भजन सुरापानके समानहै ॥

आस्तिक०—अमरकोश—**विद्याधरोप्सरोयक्ष रक्षोगन्धर्वकिन्नराः ॥ पिशाचोगुह्यकःसिद्धो, भूतोऽमी देवयोनयः** ॥ स्वर्गवर्ग १ ॥ ११ ॥

अर्थ—विद्याधर अप्सरः यक्ष राक्षस गन्धर्व किन्नर पिशाच गुह्यक सिद्ध भूत, यिह देवयोनिहैं । इस्सें तमोगुणी भूतपिशाचादिदेवतोंका भजन सुरापानके समानहै ॥ होर सत्त्वगुणीदेवतोंका भजन सुरापानके समान नहीं है॥

शंका—जो सत्त्वगुणी देवता वा मनुष्य होतेहैं वह तो मांसको नहीं खाते ॥

समाधान—यिह नियमनहींहै क्योंकि—सीतारामलक्ष्मणआदिअवतार और वेदवेताब्राह्मण अगस्त्यप्रभृतिमुनि, व युधिष्ठिरआदि सत्त्वगुणी-

पुरुष मांसको खाते खुलातेही रहेहैं, और विष्णुनारायणके प्रिय सदस्य गरुडजीका तो आहार मांसहीहै ॥

हेभ्रातः—ब्रह्मा विष्णुआदिदेवता तो वासनाग्राहीहैं तथापि—उनों लियेभी देखो प्रमाणांक १२२ व १७९ आदिकोंमें पशुबलिदानका विधान है, और देखो प्रमाणांक २७५ व १११ सें११८को उनोंलियेभी बलिदान करतेही रहेहैं ॥

पूर्वपक्षी०—नदद्यादामिषंश्राद्धे नचाद्याद्धर्मतत्व-वित् । मुन्यन्नैःस्यात्पराप्रीति र्यथानपशुहिंसया ॥

भागवतस्कं० ७ ॥ अ० १५ ॥ ७ ॥

अर्थ—धर्मतत्त्वका वेतापुरुष श्राद्धमेंमांसको न देवे और न खाए नीवारआदिक 'मुनिओंके' वानप्रस्थोंके अन्नोंसें पितरोंकी परमप्रीतिहोगी जैसी पशुहिंसासें न होगी ॥

इत्यादिक दोश्लोक भागवतके और दोश्लोक बृहत्पराशरसंहिताके अहिंसादिग्दर्शनमें श्राद्धविषयके लिखेहैं ॥

आस्तिक०—देखो प्रमाणांक १४ भगवद्भागवतमें इक्ष्वाकुआदि धर्मात्मा मांससें श्राद्धकरतेरहेहैं ॥

और देखो प्रमाणांक १०३ बृहत्पराशरसंहितामेंभी श्राद्धमें यज्ञमें उत्सवोंमेंभी मांसखानेकी आज्ञा दीहै

और तुमारेलिखे भागवतश्लोकमेंभी अर्थसें मुनिअन्नोंसें अधिकप्रीति और मांससें थोड़ीप्रीति कहीहै ॥

परन्तु यहां विचारकरा चाहिये कि---वनके निवारआदिक मुनिओं

के अन्नोंसें श्राद्धकरनेका राजेमहाराजे श्रीमानोंआदि सबका अधिकारहै वा वानप्रस्थमुनिओंका अधिकारहै ।

यदि सबका अधिकारहै तो श्राद्धमें मांसके विधायक असंख्यवाक्य व्यर्थहोंगे अर्थात् धर्मग्रन्थनमें असंख्यवाक्योंसें श्राद्धमें मांसका विधानही क्योंकराहै ॥

यदि मुनिओंके अन्नोंसें वानप्रस्थमुनिओंका अधिकारहै तो उनका अधिकार ठीकहै ॥

याज्ञवल्क्यस्मृतिकी मिताक्षराटीकामें महर्षिपुलस्त्यकी कीहुई मुनिअन्न और मांस व शहतकी जो व्यवस्था दिखलाईहै वोभी देखिये, अ० १ श्लोक २६० की मिताक्षरा टीका

प्र० १५०—यद्यपि मुन्यन्नमांस मध्वादीनि सर्ववर्णानां सामान्येन श्राद्धे योग्यानि दर्शितानि तथापि पुलस्त्योक्ता व्यवस्थाऽऽदरणीया [मुन्यन्नंब्राह्मणस्योक्तं मांसंक्षत्रियवैश्ययोः ॥ मधुप्रदानंशूद्रस्य सर्वेषांचाविरोधियत्] सर्वेषांचाविरोधि कालशाकादि सर्वेषामेवयोग्यम् ॥ अर्थ—नीवारआदिक बनकेअन्न और मांस शहतआदिकवस्तु श्राद्धमें सर्ववर्णोंके लिये योग्य दिखाईहैं तथापि पुलस्त्यजीकी कहीहुईव्यवस्था आदरकरनेयोग्यहै वो व्यस्था यिहहै कि ब्राह्मणको श्राद्धमें नीवारआदिअन्न बनाना कहाहै, क्षत्रिय और वैश्यको मांस कहाहै, शूद्रको शहत देनाकहाहै, और काल शाकआदि सर्ववर्णोको योग्यहैं ॥

हेमित्र–पुलस्त्यऋषिकी इसव्यस्थाके तात्पर्य्यसें तुमारेलिखे भागवत श्लोकोंमें तथा बृहत्पराशरसंहितामें यदि श्राद्धकर्ता वानप्रस्थब्राह्मणहोवे तो उसकेलिये पशुहिंसाका निषेधकर्के मुनिअन्नसें श्राद्धकरनेकी प्रशंसा की जाननी, चारोंवर्णोंकेलिये नहीं–

श्राद्धमें मांसकेप्रसंगसें अब मैं भी थोड़ेसे श्लोक दिखलाता हुं ॥

मनुस्मृति प्र० १५१—पितॄणांमासिकंश्राद्ध मन्वाहार्य्यंविदुर्बुधाः ॥ तच्चामिषेणकर्त्तव्यं प्रशस्तेनप्रयत्नतः अ० ३॥१२३॥

इसपर मनुभाष्य प्र० १५२—तदेतदामिषेण मांसेनकर्त्तव्यम् अयंचमुख्यः कल्पः तदभावे दधिघृतपयोऽपूपादि विधायिष्यते मांसंचव्यञ्जनं भक्ष्यादिभोज्यस्य ॥

इसपर सर्वज्ञनारायणकी टीका प्र० १५३—एवंच श्राद्धान्तरेषु नामिषनियमः ॥

इसपर नन्दनाचार्य्यका व्याख्यान प्र० १५४—आमिषेणमांसेन प्रशस्तेन भक्ष्यतयाविहितेन ॥

टीकासहित मनुश्लोकका अर्थ–पितरोंका जो मासिकश्राद्धहै उसका नाम अन्वाहार्य पण्डित जानतेहीहैं वोश्राद्ध यत्नकर विहितमांससें करणा ॥

मनुभाष्य में कहाहै कि–यिह मांससें विधि मुख्यहै, मांसके अभावहुए दधिघृत दुग्धादिक विधानकरेंगे, मांस तो भातआदिका व्यञ्जनहै, सर्वज्ञनारायण कहतेहैं कि–इसमासिकश्राद्धमें मांसका नियमहै ऐसा होरश्राद्धोंमें मांसका नियम नहीं अर्थात् यिह श्राद्ध मांससेंही करणा ॥

मनुस्मृति प्र०–१५५ हृद्यानिचैवमांसानि, पानानि सुरभीणिच ॥ अ०३ २२७ ॥

इसपरराघवानन्दकी टीका प्र० १५६— हृद्यानिमनोज्ञानि दृष्ट्या, सुरभीणिसुगन्धीनि ॥

अर्थ —श्राद्धमें मनोहर मांसोंको और सुगन्धित जलोंको बनावै ॥

मनुस्मृति प्र० १५७—द्वौमासौमत्स्यमांसेन त्रीन्मासान्हारिणेनतु ॥ औरभ्रेणाथचतुरः शाकुनेनाथपञ्चवै ॥ अ०३॥२६८॥

इसपर मनुभाष्य प्र० १५८—उरभ्रा मेषाः शकुनय आरण्याः कुक्कुटाद्याः । मत्स्याः पाठीनाद्याः ॥

मनुस्मृति प्र०–१५९षण्मासांच्छागमांसेन पार्षतेनचसप्तवै॥ अष्टावेणस्यमांसेन रौरवेणनवैवतु ॥३॥२६९

—०—

मनुस्मृति प्र० १६०—दशमासांस्तुतृप्यन्ति वराह-

माहिषामिषैः ॥ शशकूर्मयोस्तुमांसेन मासानेकादशैवतु ॥ २७० ॥

मनुस्मृति प्र० १६१—संवत्सरंतुगव्येन पयसापायसेनच ॥ वार्ध्रीणसस्यमांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी ॥ २७१ ॥

मनुस्मृति प्र० १६२—कालशाकंमहाशल्काः खड्गलोहामिषंमधु ॥ आनन्त्यायैवकल्प्यन्ते मुन्यन्नानिचसर्वशः ॥अ०३॥२७२॥

याज्ञवल्क्यस्मृति प्र० १६३— मात्स्यहारिणकौरभ्रशाकुनच्छागपार्षतैः अ०१॥२५७। ऐणरौरववाराहशाशैर्मांसैर्यथाक्रमम् ॥ मासवृद्ध्याभितृप्यन्तिदत्तैरिहपितामहाः ॥१॥२५८॥

याज्ञवल्क्यस्मृति प्र० १६४—खड्गामिषंमहाशल्कंमधुमुन्यन्नमेवच । लोहामिषंमहाशाकं मांसंवार्ध्रीणसस्यचं ॥ २५९ ॥ यद्ददातिगयास्थश्चसर्वमानन्त्यमश्नुते ॥ २६० ॥

शंखस्मृति प्र० १६५—कालशाकंमहाशल्का मांसं-वार्ध्रीणसस्यच ॥ खड्गमांसंतथानन्तं यमःप्रोवाचधर्मवित् ॥ अ० १४ ॥ २६ ॥

लिखितस्मृति प्र० १६६—वार्ध्रीणसेनमांसेन कालशाकलोहखड्गमांसै र्मधुमिश्रितैश्चानन्त्यम् ॥ ॥ अ० १५ ॥ १ ॥

श्राद्धविषयमें इनस्मृतिओंका यिह समानहीअर्थहै कि श्राद्धमें मत्स्य के मांससें दोमास, पितरोंकी 'तृप्ति' प्रसन्नता रहतीहै, हरिणके मांससें तीन मास, मेढेकेमांससें चारमास, बनकुक्कुटप्रभृतिपक्षीओंके मांससें पांचमास, बकरेके मांससें छीमास, चित्रितहरिणके मांससें सातमास, कृष्णहरिणके मांससें आठमास, रुरुमृगके मांससें नौमास, जंगलीसूरके मांससें और महिषके मांससें दशमास, शशके और कूर्मके मांससें ग्यारहमास, गोदुग्धसें तस्मैसें एकवर्ष पितरोंको प्रसन्नता रहतीहै, ॥ वार्ध्रीणसके मांससें द्वादश वर्ष अर्थात् अनन्तप्रसन्नता रहतीहै ॥

जलपीनेलगे जिसके दोनोंकान जलसें स्पर्शकरें ऐसे स्पेद बकरेका नाम और पक्षीविशेषका नाम वार्ध्रीणसहै॥ कालशाक, बडा सशल्कमत्स्य गैंडेका मांस, लालबकरेका मांस, नीवारआदि मुनिओंकेअन्न, शहत, वार्ध्रीणसका मांस इनसेंपितरोंकी अनन्तप्रसन्नता रहतीहै—देखियेहेमित्र—जैसी अनन्ततृप्ति मुनिओंके नीवारआदिअन्नसें स्मृतिओंमें कहीहै लालबकरेके गैंडेके वार्ध्रीणसके मांससें वैसीअनन्ततृप्तिकहीहै परन्तु यहां आधिकारभेदहै मुनिओंकेअन्नसें वानप्रस्थब्राह्मणोंका अधिकारहै, और मांससें क्षत्रिय वैश्य

श्रीमानोंका अधिकारहै ॥

तथा गयामें जोकुछ दियाजावे उस्सें अनन्ततृप्ति रहती है

बृहत्पराशरसंहिता प्र० १६७-येखड्गमांसमधुपायससर्पिरन्नैर्देशेचकालसहितैश्च सुपात्रदत्तैः ॥ प्रीणान्तिदेवमनुजान्पितृवंशजाता स्तेषांनृणांचपितरोवरदाभवान्ति ॥ अ० ५ ॥ ३९२ ॥

अर्थ—जो पितृवंशमें उत्पन्नहुएपुरुष शुभदेशकालमें सुपात्रपुरुषों प्रति दियेहुए गैंडेके मांससें शहत तस्मै घृत अन्नसें देवतोंको मनुष्योंको प्रसन्नकर्तेहैं उनपुरुषोंपर पितर वरदाता होतेहैं ॥

पद्मपुराण प्र० १६८-द्वौमासौमत्स्यमांसेन त्रीन्मासान्हारिणेनतु ॥ औरभ्रेणाथचतुरः शाकुनेनाथपञ्चवै खण्ड १ ॥ अ० ९॥ १५३ ॥

अर्थ--दोमास मत्स्यके मांससें, तीनमास हरिणके, चारमास मेढेके मांससे, विहितपक्षीओंकेमांससें पांचमास पितरोंकी प्रसन्नता रहतीहै ॥

जीवन्मुक्त मदालसाने अलर्कपुत्रको श्राद्धमें मांसदानका फलकहा हैदेखो--मार्कण्डेय पुराण प्र०१६९-वार्ध्रीणसामिषंलौहं कालशाकंतथामधु दौहित्रामिषमन्यच्च दत्तमात्मकुलोद्भवैः। अनन्तांवैप्रयच्छन्तितृप्तिम्॥अ० २९॥७॥

अर्थ--वार्ध्रीणसका मांस, लालबकरेका मांस, कालशाक शहत, दौहित्रने दिया श्राद्धमें मांस, और अपने कुलमें उत्पन्नहुए पुरुषोंने दिया श्राद्धमें मांस, यिहसब पितरोंको अनन्ततृप्ति देतेहैं ॥

——:०:——

महाभारत प्र० १७०--**वार्ध्रीणसस्यमांसेन तृप्तिर्द्वादशवार्षिकी** ॥ पर्व १३ । अ० ८८ ॥ ९ ॥

अर्थ—वार्ध्रीसके मांससें द्वादशवर्ष पितरोंकी प्रसन्नता रहतीहै ॥

——:०:——

महाभारत प्र० १७१-**आनन्त्यायभवेद्दत्तं खड्गमांसं पितृक्षये ॥ कालशाकंचलौहंचा प्यानन्त्यंछागउच्यते** ॥ १३ ॥ ८८ ॥ १० ॥

अर्थ--मृततिथिमें पितरोंको दियाहुआ गैंडेका मांस और कालशाक और कचनारके फूलोंकाशाक और लालबकरे, का मांस यिह पितरोंकी अनन्तप्रसन्नतालिये होतेहैं ॥

——:०:——

महाभारत प्र० १७२-**औरभ्रमुत्तरायोगे यस्तुमांसं प्रयच्छति ॥ सपितॄन्प्रीणयतिवै प्रेत्यचानन्त्यमश्नुते** ॥ प्र० १३ ॥ ६४ ॥ ३२ ॥

अर्थ—उत्तरानक्षत्रके योगमें जो पुरुष मेंढेके मांसको देता है वो

पितरोंको प्रसन्नकर्ताहै फिर मरके अनन्तफल पाताहै ॥

इत्यादिक श्राद्धमें मांसके विधायक बहुत प्रमाणहैं ॥

——:०:——

पूर्वपक्षी०—अहिंसादिग्दर्शनमें पराशरस्मृति और बृहन्नारदीय-पुराणका श्लोकालिखाहै उनदोनोंश्लोकोंका अर्थयिह कि—अश्वमेध, गोमेध, संन्यास, वानप्रस्थाश्रम, श्राद्धमें मांसदान, देवरसे पुत्र उत्पत्ति, मधुपर्क लिये पशुबध, यिह सातधर्म कलियुगमें त्यागकरणेयोग्यहैं ॥

आस्तिक०—बहुतलोकजानेतहांहैं कि—बहुतकाल से तिथिपत्रोंमेंलिखते रहेथे कि—गंगाका दशवर्ष शेष आयुः है, अब गंगा का ९ वर्ष शेष आयुहै, अब आठवर्ष गंगाका शेषआयुःहै, ऐसेलिखते २ फिर विद्वानोंने मिलकर निर्णयकरा कि—कल्प के अन्तिम कलियुगके पांचहजार वर्ष व्यतीतहुए गंगा पृथिवीको त्याग कर देगी ॥

ऐसेही यहांभी विचार कराचाहिये कि—अश्वमेध प्रभृति सातधर्मभी क्या कल्पके अन्तिमकलियुगमें त्यागकरणेयोग्यहैं अथवा इसकलियुगमें त्याग करणेयोग्यहैं ॥

यदि प्रथमपक्ष कहोतो—इसवर्तमानकलियुगमें तो यिह सातधर्म करणेयोग्यही सिद्धहुए ॥

यदि द्वितीयपक्ष कहो तो—इसका उत्तर श्रीस्वामीदयानन्दजीने कहा हुआहै देखो प्रमाणांक २२ को अर्थात् अश्वमेध आदिकोंका त्यागकहाहै अजमेध अविमेधआदिकोंका तो त्याग नहींकहाहै ॥

भावयिह—सत्ययुगत्रेताद्वापरके महानुभावपुरुषोंकाही उक्तसातधर्म

करणेका अधिकाररहो परन्तु कलियुगके गरीबोंको भेडबकराऽऽदिकोंकेभी बलिप्रदानसे रोकनेका क्यों दुराग्रह कर्तेहो ॥

होर अहिंसादिग्दर्शनमें विजयधर्मसूरिजीने महाभारतके पर्व १३ अध्याय ११६ व ११५ व ११४ के जो बहुत श्लोक लिखेहैं वो विस्तार भयसे श्लोक न लिखकर उनका तात्पर्य्य लिखता हूं कि-युधिष्ठिर को भीष्मपितामहजीने पहिलां मांसके अतिपौष्टिकताऽऽदिकगुणोंका वर्णनकर्के फिर मांसखानेकी निन्दाकीहै जैसेकि महाभारत **स्वमांसंपरमांसेन योवर्धयितुमिच्छति। नास्तिक्षुद्रतरस्तस्मा त्सनृशंसतरोनरः** ॥प०१३॥ अ०११६॥११॥

अर्थ--जो पुरुष अपने मांसको दूसरेके मांससे बढायाचाहताहै उससें बढकर होरकोई क्रूर नहींहै किंतु वो अतिक्रूरहै ॥

इत्यादिक वो महाभारतके श्लोक वृथामांसविषयकेहैं अर्थात् वृथा मांसके, विधिविनामांसके खानेकी निन्दाकरतेहैं और भयंकरवचनोंसेवृथा मांसखानेके दोष कहतेहैं, व रौचकवाक्यनसें वृथामांसकेही त्यागकी प्रशंसा कर्तेहैं अतः वो श्लोक वृथामांसविषयकेहैं विहितमांसके खानेकी निन्दा नहींकर्ते ॥

और जोश्लोक महाभारतके मैंने पहिलेलिखेहैं और लिखूंगा वो विहित मांसभक्षणविषयकेहैं ॥

विजयधर्मसूरिजी तो एकतर्फेश्लोक लिखतेहैं, फिर लिखते २ भी कोई श्लोक तात्पर्य्यका बोधक आवे तो उसको छोड़जातेहैं जैसेकि--पर्व १३ अ०११६ वेंके श्लोक अहिंसादिग्दर्शनमें लिखेहैं पहिलां १३ श्लोक लिखे फिर तात्पर्य्यका दर्शक १४वां

श्लोक आया तो उसको नहींलिखा, ऐसेही हो भी कई श्लोक छोड़दिये—हे पाठको-महाभारतमें भीष्मजी के मांसनिषेधक सबश्लोकोके तात्पर्य्यका बोधक वो १४ वां श्लोकहै उसको देखो ॥

महाभारत-विधिनावेददृष्टेन तद्भुक्त्वेहनदुष्यति यज्ञार्थेपशवःसृष्टा इत्यपिश्रूयतेश्रुतिः १३॥११६॥१४॥

अर्थ—जिस मांसका निषेध बहुत श्लोकोंकर कराहै वेदमेंदेखेविधिसें उस मांसको खाकर मनुष्य दोषवाला नहींहोता क्योंकि-यज्ञों के लिये पशुओं को रचाहै, यिहभी वेदवाक्य सुननेमें आताहै। हे पाठको-इसश्लोक के तत्पदसें अपेक्षित यत्पदका 'जिसमांसका निषेध, इत्यादिअर्थ प्रमाणांक ३८ के अर्थमें नहींलिखा, सोयिह यत्पदका अर्थ वहांभी जानलेना ॥

महाभारतप्र०१७३-अतोऽन्यथाप्रवृत्तानां राक्षसो विधिरुच्यते ॥ क्षत्रियाणांतुयोदृष्टो विधिस्तमपि मेशृणु ॥१५॥

अर्थ-इसवेदविधिसे अन्यथामांसखानेमें प्रवृत्ति राक्षसविधिकहियेहै अर्थात् विधिसे मांसखाना देवविधिहै ॥

हेपाठको-इस डेढ श्लोकसें भीष्मपितामहजीनें अपने सबश्लोकोंका तात्पर्य्य दिखलाय दियाहै ॥

अब भीष्मजी कहतेहैं कि-क्षत्रियजनोंलिये जोविधि देखाहै उसकोभी मेरेसें सुन ॥१५॥

महाभारत प्र० १७४- वीर्येणोपार्जितंमांसं यथाभुञ्जन्नदुष्यति ॥ आरण्याःसर्वदैवत्याः सर्वशःप्रोक्षिता मृगाः॥१६॥अगस्त्येनपुराराजन् मृगयायेनपूज्यते ॥ १३ ॥ ११६ ॥ १७ ॥

इसपर नीलकंठीटीका प्र० १७५- यजमानेनोत्सृष्टानामप्यारण्यानां रज्ञामृगयायां वधो न्याय एव

अर्थ-अपने बलसें मारे हुए जंगली मृगोंके मांसको खाताहुआ जिस सें दोषवाला नहींहोता वो हेतु यिहहै कि-जिस अगस्त्यजीनें शिकारका सेवन कराहै उसमहर्षिअगस्त्यजीने सर्वदेवतोंनिमित्त बनके मृग,प्रोक्षित करादियेहुएहैं, वेदमंत्रोंसे संस्कृतकरादियेहुएहैं ॥ यजमाननें प्रोक्षितकर छोड दिये बनके मृगोंका राजाने बधकरणा न्यायहीहै क्योंकि छोडे हुए मृगपशु के जीवित रहनेसें उस २ देवताकी तृप्ति नहीं होसक्ती ॥ १७ ॥

———:(०):———

अहिंसादिग्दर्शनमें जो वराहपुराणके श्लोक लिखेहैं उनका उत्तर तो वराहपुराणके ही प्रमाणांक १३४ आदिकोंमें देख लीजिये ॥

जो कूर्मपुराणका एकश्लोकलिखा उसमेंभी वृथाहिंसाका निषेध करा जानना क्योंकि, देखो प्रमाणांक ८४ कूर्मपुराणमेंभी विहितमांसके नां खाने सें अतिदोष कहाहै और जो एकश्लोकभागवतका लिखाहै उसका उत्तरभी प्रमाणांक ५८व ३११ आदि भागवतवाक्यसेंही देखलीजिये अर्थात् देवतोंके उद्देशकर करीजो पशुहिंसा वो पशुसें द्रोह नहींहै जैसे प्रमाणांक ५६ में श्रीरामानुजस्वामीजीने वेदप्रमाणसें स्पष्टलिखाहै ॥

हौर जो अहिंसादिग्दर्शनमें जैनीभाईओंके बनेहुए बहुतसे उपहास श्लोक लिखेहैं उनका तो वैसे उत्तरलिखना योग्य नहींहै क्योंकि उपहास-करणा मशकरेजनोंका कामहै धर्मवेतापुरुष उपहास नहींकर्ते ॥

—००—

और जो अहिंसादिग्दर्शनमें सुश्रुतका एक श्लोक लिखाहै वो सबमत्स्यों के नहीं किन्तु एकपाठीनमत्स्यके गुणदोषको दिखलाताहै—देखो रोहितमत्स्य के कैसे गुण कहेहैं ॥

चरकसंहिता प्र०१७६—**शैवलाहारभोजित्वात् स्वप्नस्यचाविवर्जनात् ॥ रोहितोदीपनीयश्च लघुपाकोमहाबलः ॥अ०२७॥७५॥**

अर्थ—रोहितमत्स्य शैवलआहारके खानेवालाहै और स्वप्नदोषसें रहितहै अतः अग्निको दीपनकर्ताहै, पाकमें लघुहै महाबलकारीहै ॥

निघण्टुरत्नाकर प्र०१७७—**घृतपक्वंतुयन्मांसं रुच्यंहृद्यंबलप्रदम् ॥ अपित्तलमनुष्णंच लघुदृष्टिप्रसादनम् ॥ अग्निदीप्तिकरंप्रोक्तं मांसज्ञैश्चचिकित्सकैः**

मांसवर्ग पृष्ठ ३२२ ॥ अर्थ घृतसें पकायाहुआ जोमांसहै वो रुचिकरहै हृदयको बलदेनेवालाहै शरीरको बलदायीहै पित्तको नहींकर्ता, मांसकेगुण जाननेवाले चिकित्सकोंनें अग्निको दीप्तिकरनेवाला कहाहै ॥

—:०:—

निघण्टुरत्नाकर प्र०१७८—**निर्धूमाग्नौशूलविद्धंभर्जितं**

वेसवारयुक् ॥ सर्वोत्तमंपथ्यकरं लघुस्निग्धंचरोचनम् । स्थिरंतर्पणकृद्धातु वर्द्धकमृषिभिर्मतम् । तदेव भर्जितंचाति दीपनंबलकारकम् । मृदुपक्वंचतज्ज्ञेयं लघुदीपनकारकम् ॥ मां० पृ०३२२ ॥

अर्थ–मसालेसें मिलाके लोहेकी शलाकापर चड़ाया हुआ, निर्धूम अग्निपर भूना हुआ जोमांसहै वो सर्वोतमहै हितकरहै, लघुहै, हलका है स्निग्धहै रुचिकरहै स्थिरतृप्तिकरनेवालाकहाहै धातुका वर्धक ऋषिओं ने मानाहुआहै ॥

वोअतिभूनाहुआ अतिदीपनहै बलकारकहै, थोड़ाभूनाहुआ थोड़ा दीपनकारीजानना; अर्थात् अधिकभूनाहुआ अग्निको अधिकदीपनकरेहै वो थोड़ाभूनाहुआ अग्निको थोड़ादीपनकरेहै ॥

पूर्वपक्षी०-तुमनेभी प्रतिज्ञाकीथी कि, पशुबलिप्रदान के और मांस भक्षणके विधायक वेदस्मृतिआदिकोंके वाक्य बहुतहीहैं वो यदि हैं तो दिखलानेचाहिये ॥

आस्तिक०–हेमित्र अब तुम्हारे वाक्यनके विचारसें अवसर मिलाहै अब केईकवाक्यनको दिखलाताहुं ॥

—:०:—

कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयसंहिता–यःप्रजाकामः पशुकामः स्यात्सएतं प्राजापत्यमजं तूपरमालभेत ॥

अर्थ प्रमाणांक १२२ में लिखचुकाहुं ॥

कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीसंहिता प्र० १७९-वैष्णवंवामन माल-भेत स्पर्धमानोविष्णुरेवभूत्वेमान्लोकानभिजयति कां०२ ॥ प्र०१ ॥ अनु०३॥१॥

इसमंत्रपर सायणभाष्य प्र०१८०-स्पर्धमानोगृहक्षेत्रादिविषये विवादवान् विष्णुप्रियहविर्दानादस्योपचारितविष्णुत्वम् ॥

अर्थ गृहक्षेत्र भूमिआदिकोंके विवादवालापुरुष विष्णुदेवतानिमित्तक ह्रस्वपशुको, छोटेशशआदिपशुकोमारे वो पुरुष विष्णुका प्रियहोकर इन लोकोंकोजीतलेताहै ॥ विष्णुको प्रियहविके देनेकर हविके देनेवालायजमान गौणविष्णु अर्थात् विष्णुका प्रियहोता है ॥

कृ० तैत्तिरीयसंहिता प्र०१८१-वायव्यꣳश्वेत मालभेत-भूति कामः ॥कां०२॥प्र०१॥अनु०१॥१॥

इसमंत्रपर सायणभाष्य प्र० १८२-वायुर्देवता यस्यपशोः सोऽयंवायव्यः सचश्वेतवर्णः तमालभेत ॥

अर्थ, विभूतिकी कामनावालापुरुष वायुदेवतानिमित्तक श्वेतपशुबकरे को मारे ॥

हे पाठको इससंहिताके दूसरेकांडमें पशुबलिप्रदानके विधायक इत्या

दिक बहुतहीवाक्यहैं उनमें थोड़ेसेही यहांलिखेहैं ॥

अबदेखिये अतिश्रेष्ठपुत्रकी उत्पत्तिलिये मातापितादोनोंको मांसखाने का विधान ।

यजुर्वेदकी बृहदारण्यक वेदान्तउपनिषद्में प्र० १८३

अथयइच्छेत्पुत्रोमे पण्डितोविगीतः समितिंगमः शुश्रूषितांवाचं भाषिता जायेतसर्वान्वेदाननुब्रुवीत सर्वमायुरियादिति मांसौदनंपाचयित्वा सर्पिष्मन्तमश्नीयाता मीश्वरौजनयितवा औक्षणेन वाऽऽर्षभेणवा ॥ अ० ६ ॥

ब्राह्मण४ ॥ १८ ॥ अर्थ--औरजो गृहस्थपुरुष इच्छाकरे कि--मेरा पुत्र ऐसाहोवेजो--पण्डित, देशोंमें प्रख्यात, विद्वानोंकी सभामें जानेवाला, मधुरबाणी बोलनेवाला, चारोंवेदोंका अनुवाद करनेवाला, पूर्णआयुःवाला, ऐसेउत्तमगुणोंवाला मेरापुत्र उत्पन्नहो तो वो गृहकेस्वामी स्त्रीपुरुषदोनों जब स्त्री स्त्रीधर्मसें शुद्धहो तब हरिणादिमृग वा बकराके मांससहित भात घृत डालकर पकाकर खाएं तो वह ऐसापुत्र उत्पन्न करसकेंगे ॥

इसउपनिषद्मंत्रपर श्रीशंकराचार्य्यजीभी ऐसाहीअर्थ लिखतेहैं देखो शाङ्करभाष्य प्र० १८४-**मांसमिश्रमोदनंमांसौदनम् ॥**

अर्थ- मांससें मिलेहुए भातको खाएं ॥

नित्यानन्दाश्रमजीने कुछविशेषअर्थ लिखाहै इसउपनिषद्मंत्रकी मिताक्षराटीकामें प्र० १८५-

मांसमिश्रमोदनं मांसौदनम् । अत्रमृगादिमांसं क्रीत्वाग्राह्यम् ॥

अर्थ-मांससें मिलेहुए भातको खाएं । यहां मृगादिकोंका मांसखरीद कर ग्रहण करणा

श्रीस्वामीदयानन्दसरस्वतीजीनेभी अपने संवत् १९३३ में छपवाए संस्कार विधिग्रन्थमेंभी इस मंत्रका ऐसाही अर्थ लिखाहै देखो—

संस्कारविधिप्र० १८६-- **जोचाहोकि-मेरापुत्र पंडित सदसद्विवेकी शिक्षितवाणीका बोलनेवाला सब वेदवेदांग विद्याका पढने और पढानेवाला तथा सर्वायुका भोगनेवाला पुत्रहोय वह मांसयुक्तभात को पकाके पूर्वोक्त घृतयुक्त खाये तो वैसे पुत्रहोने का संभवहै** ॥पृष्ठ११॥

शंका, यहबात एकदेशीहै सर्वदेशीनहीं क्योंकि मांससें पौष्टिक गुणवाला द्रव्य दुग्ध और औषधादिकोंमें अधिकहीहै ॥

समाधान-यिहअव्यवस्थित अटपटः कथन असत्यहीहै तथाहीकहता हुं सुनिये ॥

१-यहबात एकदेशीहै सर्वदेशी नहीं, यिह तो तुमने कहादिया परन्तु तुमने यिह नहींकहा कि—यिहबात पंचनददेशकीहै, वा पांचाल्यदेशकीहै वा व्रजदेशकीहै, वा मरुस्थलदेशकीहै, वा गुर्जरदेशकीहै, वा महाराष्ट्रदेशकी है, वा होर किसदेशकीहै, ऐसा नां कहकर (यह बात ऐकदेशीहै सर्वदेशी नहीं) इतनामात्र जोकथनहै वो अटपटः कथन स्पष्टहीहै ॥

यदि आप कहोंकि यहां एकदेशीसें कोईएकमत विवक्षित है, तो यिह कथनभी अयुक्तहीहै क्योंकि यहां मतों का प्रसंग नहीं चला हुआ है किंतु अतियोग्य, अतिलायक पुत्रकी उत्पत्तिलिये जोकुछखानेयोग्यवस्तु उपनिषद् में विधानकराहै उसका अर्थ स्वामीजीने लिखाहै ।

२-यहबात एकदेशीहै सर्वदेशी नहीं, यिह उपनिषद्मंत्रके किसी वाक्यका अर्थहै अथवा उपनिषद्वाक्यका अर्थ तो नहीं तुम अपनी तर्फसें कहतेहो ॥

इनमें प्रथमपक्ष तो असत्यहीहै क्योंकि उक्तउपनिषद्मंत्रमें ऐसाकोई भीवाक्य नहींहै कि--जिसका यिहअर्थ होसके कि यहबात एकदेशीहै सर्वदेशीनही ॥

यदिउपनिषद्वाक्यका यिहअर्थ नहींहै किंतु तुम अपनी तर्फसेंकहते हो तो तुम जोचाहो ऐसा अटपटः कथन करतेरहो वोमाननीय नहींहोसक्ता क्योंकि यिह तुम्हारा कथन उपनिषद मंत्रसें विरुद्धहै ॥

३-यदि तुम कहो कि--मांससें पौष्टिकगुण दुग्धमें अधिकहीहै, तो यिहतुम्हाराकथनभी असत्यहीहै क्योंकि देखोप्रमाणांक ९७ आदिकोंमें भीष्मपितामहजीने और चरकसंहितामें मांसके कैसे पौष्टिकताऽऽदिकगुण वर्णन करेहैं ॥

———

४-यजुर्वेदकी बृहदारण्यकउपनिषद्-सयइच्छेत्पुत्रोमेगौ रोजायेत वेदमनुब्रवीत सर्वमायुरियादिति क्षी-रौदनं पाचयित्वा सर्पिष्मन्त मश्नीयातामीश्वरौ जनयितवै ॥अ०६ ॥ ब्रा०४ ॥१४॥

अर्थ-वोजोगृहस्थपुरुष चाहे कि मेरापुत्र गौरवर्णवाला एकवेदका अनुवादकरनेवाला पूर्णआयुभोगनेवाला उत्पन्नहो वो गृहके स्वामी स्त्री पुरुषदोनों दुग्धभात घृत डालकर पकाकर खाएंतो ऐसापुत्र उत्पन्नकरसकें

इसमंत्रका स्वामीदयानन्दजीनेंभी ऐसाहीअर्थ संस्कार विधिग्रन्थकी ११वीं पृष्ठपर लिखाहै ॥

हेभ्रातः-वहांही स्वामीदयानन्दजी दुग्धभातखानेसें तो एकवेदका वक्तापुत्र लिखतेहैं और मांसभातके खानेसें, चारवेदोंका वक्तापुत्र लिखतेहैं व मांसभातके खानेसें,सदसद्विवेकी शिक्षितवाणीबोलनेवाला, इत्यादिकहोर भी बहुतगुण अधिकालिखेहैं तो ऐसे स्वामीदयानन्दजीके लेखसेंभी (मांस सें पौष्टिकगुण दुग्धमें अधिकहै) यिहकथनमात्रहै अतः असत्यहीहै ॥

शंका, यदिमांसभातके खानेकर वेदोंका वक्तापुत्र उत्पन्नहोसके तो मांसा हारीपुरुषोंके वेदवक्तापुत्रहोनेचाहिये ॥

समाधान—यदि दुग्धभात वा घृतभातखानेकर वेदवक्ता पुत्र होसके तो दुग्धभातआदिके खानेवाले सर्वमनुष्योंके वेदवक्तापुत्रही होनेचाहियें—

हेमित्र, दुग्धघृतआदिखानेवालोंमेंभी बलबुद्धि विद्या सम्पादाआदिक देखनेमें आतेहीहैं और मांसभोजीओंमें तो बलबुद्धि विद्या कलाकौशल्य राज्यादिसम्पदा अत्यधिकहीहै इससें जानाजाताहैं कि मांसदुग्धघृतादिकोंमें

जैसे २ गुणहैं वैसे २ गुण चिकित्साशास्त्रमें स्पष्ट वर्णनकरेहैं ॥

उनगुणोंके अभिप्रायसें उपनिषद्मंत्रोंमें वैसी २ संतानके उत्पन्न करणेलिये दुग्धमांसादिकोंके खानेका विधान कराहै

विदित रहे कि—दुग्ध घृत मांसादिक अपनी२ योग्यताके अनुसार बल बुद्धि पुष्टिआदिकोंको तो कर्तेहैं परन्तु उन बल बुद्धि पुष्टिआदिकोंको यदि मनुष्य धैर्य्य विचारादि लिये खर्चकरें तो धैर्य्य विचारआदिकोंमें वृद्धि पासक्तेहैं और यदि मनुष्य धनसम्पदाऽऽदिकोंलिये उनको खर्चकरें तो धनसम्पदाऽऽदिकोंको सिद्ध करसक्तेहैं ॥

यदि मनुष्य विषयविकारोंमेंही बलबुद्धिआदिकोंको खर्चकरें तो धैर्य्य विचारादिक उत्तमकार्य्य सिद्धनहींहोसक्ते किन्तु विषयोंके स्वल्पकाल किंचित्सुखको देखकर परतन्त्रतासें जन्मजराव्याधिमृत्युआदिकोंके पुनः पुनः दुःसहदुःखोंकोही देखना पड़ताहै ॥

५—यदि आपकहैं कि—मांससें पौष्टिकगुण औषधोंमें अधिकहै तो हेभ्रातः यिहतुम्हाराकथनभी असंगतहीहै क्योंकि औषधोंमें कैसाभी अधिकगुणहो परन्तु केवलऔषधोंसेंही पेटपूर्त्ति नहींकरसकीती किन्तु पथ्यभोजन भी अवश्यंही अपेक्षित होताहै, गर्भाधानलिये योग्यभोजनके विधायक बृहदारण्यक उपनिषद्के पांचमंत्र स्वामीदयानन्दजीने लिखेहैं उनमंत्रोंमें जैसे २ योग्यपुत्रकी वा पुत्रीकी कामना हो वैसे २ योग्यभोजन खानेका विधान कराहुआहीहै ॥

हेपाठको इनमंत्रोंमें दुग्धभातादिक सबभोजनोंसें ऐसेश्रेष्ठगुणोंवाले पुत्रकी उत्पत्ति नहींकही जैसेकि- मांसभातके भोजनसें अतिश्रेष्ठगुणवाले पुत्रकी उत्पत्ति कहीहै ॥

फिर उनमंत्रोंके व्याख्यानमें स्वामीदयानन्दजीनेभी ऐसाहीअर्थ स्पष्ट

लिखाहै तो श्रेष्ठपुत्रकी उत्पत्तिलिये गर्भाधाननिमित्त योग्यभोजनके प्रसंगमें औषधका कथन असंगतहीहै ॥

बृहदारण्यक उपनिषद्की भाषाटीकामें डी. ए. वी. कालिजके संस्कृत प्रोफैसर पण्डितराजारामजीनेंभी इसमंत्रका ऐसाहीअर्थ लिखाहै, वो मैं प्रमाणांक २६ में दिखलाय चुकाहुं ॥

ऋग्वेदसंहिता प्र० १८७—एषच्छागः पुरोअश्वेनवाजिना पूष्णोभागो नीयते विश्वदेव्यः अभिप्रियं यत्पुरोलाशमर्वता त्वष्टेदेनं सौश्रवसाय जिन्वति ॥ अष्टक २ ॥ मण्डल १ ॥ सूक्त १६२ ॥ ३ ॥

इसमंत्रपर सायणभाष्य प्र० १८८—एषछागः शृङ्गरहितोऽजः अश्वेनवाजिना शीघ्रव्यापकेनाश्वेनसह पूष्णः पोषकस्याग्नेर्भागो भजनीयः विश्वदेव्यः सर्वदेवार्हः अग्नेः सर्वदेवात्मकत्वात् तदर्हत्वेन सर्वदेवप्रियत्वम् । एवंविधोऽजः पुरःपुरस्तान्नीयते प्राप्यते यत् यस्मादेवंक्रियते तस्मात्प्रियं प्रीणयितारं पुरोडाशं पुरस्ताद् दातव्यमेनमजं त्वष्टा सर्वस्योत्पादकोदेवः अर्वताअरणवताऽश्वे-

नसह सौश्रवसाय देवानांशोभनान्नाय तन्निमित्तम् अभिजिन्वति प्रीतिहेतुंकरोति ॥

अर्थ —सर्वदेवतोंके योग्य यिहअग्निदेवता का भाग शृंगरहित अज अश्वमेधयज्ञमें वेगवाले अश्वकेसाथ आगे लेजाया जाताहै जिस्सें ऐसे कियाजाताहै इस्सें प्रसन्न करणेवाले पहिलेदेनेयोग्य इसअजको सर्वकाउत्पादकदेव देवतोंके शोभनअन्ननिमित्त प्रीतिका हेतुकर्ताहै ॥

———

ऋग्वेदसंहिता प्र० १८९—यद्वध्यमुदरस्यापवाति यत्रामस्यक्रविषो गन्धोअस्ति सुकृतातच्छमितारः कृण्वन्तूतमेधं शृतपाकं पचन्तु ॥ अ० ३ ॥ मं.१ ॥ सूक्त १६२ ॥ मं०१० ॥

इसमंत्रपर सायणभाष्य प्र० १९०—उदरस्य संबन्धियद्वध्यम् ईषज्जीर्णंतृणं पुरीषमपवाति अपगच्छति यश्चामस्यापक्वस्य क्रविषोमांसस्य गन्धोऽस्ति लेशोऽस्ति पाकस्यसमये यत्किंचिद्वध्यम् अपक्वस्यचलेशोस्ति आमगन्धोस्तितत्सर्वं शमितारः विशसनकर्तारः सुकृताकृण्वन्तु सुकृतम् उक्तदोषराहितं कुर्वन्तु उतअपिचमेधंमेध्यंयज्ञार्हं

पश्ववयवं श्रृतपाकं देवयोग्यपाकोपेतं यथा-भवतितथापचन्तु पितृमनुष्यादियोग्य मतिपक्वमीषत्पक्वं च माकुर्वन्वित्यर्थः ॥

अर्थ--उदरमेंजो थोडापकाहुआ तृण पुरीष अधोवायुसें नीचेजाताहै, और जो कच्चा मांसका लेशहै, काटनेवाले पुरुष उससबको उक्तदोषसें रहितकरें पकानेंवालेपुरुष पवित्र यज्ञके योग्य पशुके अवयवको पूरा पाकवाला पकावें, पितरमनुष्यादिकोंके योग्य अतिपाक वा थोड़ापाक मतकरें ॥

अथर्ववेद संहिताके नवमकाण्डमें "अतिथिसें पूर्वभोजन करनेकर बहुतपुण्यांका और यशश्रीआदिकोंका नाशहोताहै,, ऐसे कहकर अतिथिका लक्षण यिह कहाहै ॥

एषवाअतिथिर्यच्छ्रोत्रियस्तस्मात्पूर्वोनाश्नीयात्

का ९ ॥ अनु ३ ॥ सूक्त॥४॥७॥

अर्थ, एहीअतिथिहै जो श्रोत्रियहै उससें पहिले भोजन नहींकरे ॥ षडंगोंसहित वेदोंके जाननेवालेका नाम श्रोत्रियहै ॥

अथर्ववेदसंहिता प्र० १९१—एतद्वाउस्वादीयोयदधिगवं क्षीरं वा मांसंवा तदेवनाश्नीयात् ॥ का०९॥ अनु०३ ॥ सू ४ ॥ ९॥

अर्थ यिह जो अतिस्वादु गौका दुग्ध वा बकरेआदिका मांसहै उसको भी अतिथिसें पहिले नहींखाए अर्थात् अतिथिको खुलाकरखाए ॥

इसपर कोईसमाजीभ्राता लिखताहै कि इससें पहिले आठवेंमंत्रमें अतिथिका प्रसंग समाप्तहोचुकाहै अतः यिह मंत्र अतिथिविषयका नहींहै, वोलेखभी असत्यहीहै क्योंकि तृतीयअनुवाकमें चतुर्थसूक्तकी समाप्तिका यिह नवममंत्रहै इसके आगे पंचमसूक्तमें अतिथिको विचित्रभोजन के देनेसें विचित्रफलोंकी सिद्धिका प्रतिपादनकराहै अतः चतुर्थसूक्तमें अतिथिका प्रकरण समाप्त नहींहुआ किंतु पहिले आठवेंमंत्रमें यिहकहाहै कि अतिथि भोजनको करचुके तो पीछे भोजनकरे वो व्रतहै इस्से अनन्तर नवममंत्रमें उसीव्रतकी पूर्णतालिये विशेष कथनकराहै कि जो अतिस्वादु गौका दुग्धहो वा बकरेआदिका मांसहो उसकोभी अतिथिसें पहिले नहींखाए ऐसे चतुर्थ सूक्तमें कहकर फिर पंचमसूक्तमें दशमंत्रोंसे अतिथिको विचित्रभोजनदेनेके विचित्रफलकहेहैं उनमें देखो ॥

अथर्ववेदसंहिता प्र० १९२–**सयएवंविद्वान् मांसमुपासिच्योपहरति** का० ९॥अनु३ ॥सूक्त ५॥७॥

यावद्द्वादशाहेनेष्ट्वा सुसमृद्धेनावरुन्द्धे तावदेनेनावरुन्द्धे ॥८॥

अर्थ–सोजो पुरुष ऐसे जानता हुआ मांसको उपसेचनकर्के उपहार कर्ताहै,, अतिथिप्रति अन्नप्रदानकर्ताहै, आधिकश्रेष्ठसामग्रीरूप सम्पत्तिवाले द्वादशाहयज्ञकर्के जितने पुण्यफलको पुरुष सिद्धकरसक्ताहै उतनेपुण्यफलको 'अनेन, अतिथिको मांसउपसेचनकर्के अन्नभेट करणेकर गृहीपुरुष सिद्ध करसक्ताहै ॥७॥८॥

यहां उसीसमाजीभ्राताने मांसपदका उडदअर्थ बदलाहै वोभी असत्य हीहै तथाही कहताहूं सुनिये ॥

१–इसएकहीप्रकरणके पहिले नवममंत्रमें मांसपदका आपनेभी मांस हीअर्थलिखाहै, उसीप्रकरणके इसमांसपदका अर्थ उडदलिखना, यिह दुराग्रह नहींहै तो होरक्या है ॥

२ कोशग्रन्थनमें तथा होर कहींभी मांसपदकी वाच्यता उडदों में नहींकहीहै तो सबसे विरुद्धअर्थलिखना असत्यहीहै ॥

३-देखो शतपथब्राह्मणप्र० १९३–राज्ञे वा ब्राह्मणाय वा महोक्षं वा महाजं वा पचेत्तादिहमानुषꣳ ॥ का०३ अ०४ ॥ ब्रा० १ ॥ १ ॥

अर्थ—अतिथिराजालिये वा ब्राह्मणअतिथिलिये बडेबकरेको पकावे वो मनुष्यअतिथिका आतिथ्यहै ॥

४–इसीअर्थको स्पष्टकराहै वसिष्टस्मृतिमें प्र० १९४– अथापि ब्राह्मणाय वा राजन्याय वाऽभ्यागताय वा महोक्षं वा महाजं वा पचेदेवमस्यातिथ्यंकुर्वन्तीति ॥ अ०४ ॥८॥

अर्थ ब्राह्मण वा राजा के आगमन सें अनन्तर ब्राह्मणके लिये वा राजाके लिये वा अतिथिं के लिये बडे बकरेको पकावे, इस प्रकार द्विज

——:(०):——

पुरुष इसब्राह्मणादिका आतिथ्य कर्तेहैं ॥

हेपाठको— देखो प्रमाणांक ७५ को बृहत्पराशरसंहितामेंभी नित्य पंचयज्ञनमें आतिथ्यालिये मांसका विधानहै तो प्रथम प्रकरणसें विरुद्ध और कोशादिग्रन्थोंसे विरुद्ध और शतपथब्राह्मण वसिष्टस्मृतिआदिकोंसे विरुद्ध किसीसमाजीभ्राताने असंभवअर्थ लिखडाला तो कोईआश्चर्य्य नहींहै क्योंकि समाजीभाईजी तो पाठको तोडफोडदेनेमें बदलदेनेमें भी संकोच नहींकर्ते तो असंभवअर्थ लिखडालना क्या बड़ीबातहै ॥

ऐतरेयब्राह्मण प्र०१६५—सएनयोरेषोऽच्युतोवरवृतो ह्येनयोस्तस्मात्तस्याशितव्यंचैवलीप्सितव्यंच ॥ अध्याय ६ ॥खण्ड ३ ॥

इसपर सायणभाष्य प्र०१६६- सएषपशुरेनयोरग्नीषोमयो रच्युतो अवश्यंकर्त्तव्यः वरेणवृतत्वात् तस्मा देवंप्रशस्तत्वात्तस्यपशोर्मांसमाशितव्यंचैवसर्वदाभक्षितव्यमेव । नकेवलंभक्षणं किंतु लीप्सितव्यंच भक्षणात्पूर्वमादरेणमहतालब्धुमेष्टव्यमपि

हेपाठको—ऐतरेयब्राह्मणके इसस्थलमें अग्नि व सोमदेवतानिमित्तक हविःसें शेष जो अग्नीषोमीयअजपशुका मांसहै वो अवश्य भक्षणयोग्यहै, इसअर्थका पूर्वपक्ष उत्तरपक्षकर विस्तारसें प्रतिपादन कराहै वो विस्तारभय सें पूर्वपक्षउत्तरपक्षके वाक्यनको छोड़कर उस उत्तरपक्षके यिह सिद्धान्त वाक्य लिखेहैं —

इनका अर्थ–वोयिह अग्नीषोमीयपशु अज इनअग्निसोमदेवता लिये अवश्यं बनाना चाहिये क्योंकि यिह अग्निसोम देवताने इन्द्रसें वर लियाहुआ है उससें श्रेष्ठ होनेकर उसअजपशुका मांस नित्यभक्षण कराचाहिये ॥

केवलभक्षणही नहीं किंतु भक्षणसें पहिले प्राप्तहोनेलिये बडेआदरसें चाहनाभीचाहिये ॥

ऐतरेयब्राह्मणमें यज्ञीयपशुके विभागकथनकी प्रतिज्ञा करके उसका विभागभी ऐसेकहाहै देखो ॥

ऐतरेयब्राह्मण प्र० १६७–अथातःपशोर्विभक्तिं स्तस्य विभागंवक्ष्यामः ॥ हनूसजिह्वे प्रस्तोतुः,श्येनंवक्ष उद्गातुः,कण्ठः काकुद्रः प्रतिहर्तु, र्दक्षिणाश्रोणि होतुः सव्या ब्रह्मणो

होमित्र–पशुविभागका इत्यादिबहुतपाठहै विस्तारभयसें यहां थोडाही लिखाहै और इसपर देखिये ॥

सायणभाष्य प्र०१६८–जिह्वयासहितं हनूद्वयं प्रस्तोतुर्भागः श्येनाकारं वक्षउद्गातुर्विभागः,यःकण्ठो यश्चकाकुद्रःकाकुदं तदुभयं प्रतिहर्तुर्विभागः। श्रोणिरूरुमूलं तदुभयं दक्षिणसव्यरूपंक्रमेणहोतु र्ब्रह्मणो विभागः

अर्थ–शस्त्रके निर्णयसें अनन्तर इसयज्ञीयपशुकी विभक्तिकहिये उस पशुके विभागको अबकथनकर्तेहैं। जिह्वाकेसहितदोनोंहनू प्रस्तोताका भागहै ॥

कपोलद्वयसेंउपरि मुखके भागका नामहनूहै ॥

श्येनाकार पशुका उर उद्गाताका विभागहै। सामवेदके गायनकरने वालेका नाम उद्गाताहै। बाजपक्षीकानाम श्येनहै, कंठ व तालु प्रतिहर्ताका विभागहै ॥

यज्ञीयपशुका दक्षिणश्रोणि होताका विभागहै और सव्य श्रोणि ब्रह्मा का विभागहै ॥

श्रोणिनाम कटिकाहै, ऋग्वेदके जाननेवालेका नाम होताहै, ऐसेही प्रस्तोता प्रतिहर्ता ब्रह्मा. यिहभी वेद वक्ता परोहितों के नाम हैं ॥

अश्वमेधयज्ञमें २१ यूप गाडेजातेहैं उनमें केईसैंकड़ों पशु व पक्षी देवतोंके बलिप्रदानालिये प्रथमबांधेजातेहैं, वो कौन २ पशु किस २ देवता लिये होताहै, यिह भी यजुर्वेदसंहिताके २४वें अध्यायमें स्पष्टकहाहै सोइस विषयका पाठ बहुतहै अतिविस्तारभयसें यहां स्वल्प मात्रही पाठ दिखलायाहै ॥

यजुर्वेदसंहिता प्र० १६६-**अश्वस्तूपरोगोमृगस्ते प्राजापत्याः कृष्णग्रीव आग्नेयोरराटेपुरस्तात्॥** ॥अध्याय २४

अश्व, शृंगरहितअज गवय, सोयिह तीनपशु प्रजापतिब्रह्मादेवतानिमित्तकहैं, और कालीग्रीवावाला अज अग्निदेवतानिमित्तक अश्वके आगे ललाटस्थानके सन्मुख बांधा होताहै ॥

प्रमाणांक २१में जो स्वामीदयानन्दजीने मांसादिकोंसें सायंप्रातः होमकरना कहाहै वोस्वामीजीका उपदेश निर्मूल नहींहै, देखो उसका मूल-

शतपथब्राह्मण प्र० २००-**अहरहः पशुमालभेत ॥**

काण्ड ४ ॥ अ० ६ ॥ ब्रा० ५ ॥ कण्डिका २ ॥

अर्थ—भाग्यवान् गृहस्थ प्रतिदिन देवताऽऽदिकोंके निमित्तकर पशु का बलिप्रदानकरे ॥

शतपथब्राह्मण प्र २०१—एतदुहवै परममन्नाद्यं यन्मांसं ॥ का० ११ ॥ अ० ७ ॥ ब्रा० १ ॥ ३ ॥

अर्थ—निश्चितहै स्पष्टहै यिह 'परम' श्रेष्ठअन्नखानेयोग्यहै जो मांसहै ॥

कात्यायन श्रौतसूत्र प्र० २०२—विशास्ति पशुमन्यः ॥ अ० ६ ॥ १४७ ॥

—०—

कात्यायन श्रौतसूत्र प्र० २०३—ऋत्विजांवैकोप्रक्लृप्तत्वाच्छामित्रे ॥ ६ ॥ १४८ ॥

—(०)—

इनदोनोंसूत्रोंपर कर्कभाष्य प्र० २०४—शशुर्हिंसायाम् अन्यः पशुंहिनास्ति मारयतीत्यर्थः ॥१४७॥

—**—

कर्कभाष्य प्र० २०५—ऋत्विजांवैकः करोतिसंज्ञपनं नान्यः कुतएतत् । अप्रक्लृप्तत्वाच्छामित्रेशमन कर्माणि संज्ञपने नैवकश्चित्प्रकल्पितो वेदे । ननु शमितैनं कण्ठे बध्वा नयतीत्यस्ति प्रकल्पनम् । उच्यते ऋत्विजामेवैकः शमनक्रियायोगाच्छ

मितेति तस्माद्दाक्षिजामेवैकःकरोति ॥ १४८ ॥

दोनों सूत्र व भाष्यनका अर्थ-पशुको अन्य पुरुषमारेहै ॥ १४७ ॥ ऋत्विजोंमेंही एकऋत्विज् पशुका हिंसनकर्ताहै ऋत्विजोंसें अन्यकोई नहीं हिंसनकर्ता क्योंकि-पशुके बन्धनस्थान में पशुके मारणेलिये वेदमें होर कोई पुरुष कल्पन नहीं करा ॥

शंका-कंठमें बांधकर 'शमितापुरुष' मारणेवालापुरुष इसपशुको न्यावे है, ऐसे वेदमें कल्पन कराहै ॥

समाधान—ऋत्विजोंमेंही एकऋत्विज् मारणक्रियाके योगसें शमिता कहाजाताहै इसहेतुसें ऋत्विजोंमेंही एकऋत्विज् हिंसनकर्ताहै ॥

कात्यायन श्रौतसूत्र प्र० २०६—शूलेहृदयं प्रतृद्य शामित्रे श्रपयति ॥ अ० ६ ॥ १६२ ॥

कात्यायन श्रौतसूत्र प्र० २०७—पशुंचोखायाम् ॥ १६३ ॥

का० श्रौतसूत्र प्र० २०८— पशुदेवतायै पुरोडाश एकादशकपालः ॥ ६ ॥ १६४ ॥

अर्थ—पशुके बन्धनस्थानके समीप उसपशुके हृदयको शूलमें चढा कर पकावे ॥ १६२ ॥ और पशुके मांसको हांडीमें पकावे ॥ १६३ ॥ पशुके देवतालिये एकादशकपालवाला पुरोडाशकरे ॥ १६४ ॥

—०—

का० श्रौतसूत्र प्र० २०९— हुतोच्छिष्टभक्तः ॥ अ० १९ ॥ १३ ॥

अर्थ-अग्निहोत्रमें हवनकरे मांसादिकोंसें शेषरहेके खानेवाला यजमान है ॥

का०श्रौतसूत्र प्र० २१०ऐन्द्रःपशुः ॥ अ०१९ ॥ १६ ॥

इसपर-कर्कभाष्य प्र० २११—कर्तव्यइतिशेषः ॥

अर्थ—इन्द्रदेवतानिमित्तक पशुबनावे ॥

—०—

अलर्कप्रति मदालसानेंभी कहाहै देखो मार्कण्डेयपुराण प्र० २१२

शशकः कच्छपोगोधा श्वावित्खड्गोऽथपुत्रक ।
भक्ष्याह्येतेतथावर्ज्यौ ग्रामशूकरकुक्कुटौ ॥

अ० ३२ ॥ २ ॥ अर्थ—हेपुत्रअलर्क शश कच्छु गोह सेह गैंडा, यिहभक्ष्य हैं, ग्रामका सूर व कुक्कुट वर्जितहैं अर्थात् बनका सूर व मुर्गा भक्ष्यहै ॥

महाभाष्य प्र० २१३—अभक्ष्यप्रतिषेधेन वा भक्ष्य नियमः तद्यथा अभक्ष्यो ग्राम्यकुक्कुटःअभक्ष्यो ग्राम्यसूकरः इत्युक्ते गम्यत एतदारण्योभक्ष्यइति

अर्थ—अभक्ष्यके प्रतिषेधकरनेकर भक्ष्यका नियम जानाजाताहै वोजैसे ग्रामका कुक्कुट अभक्ष्यहै, ग्रामका सूर अभक्ष्यहै, ऐसेकहहुए यिह जाना जाताहै कि बनका सूर व मुरगा भक्ष्यहै ॥

मार्कण्डेयपुराण प्र० २१४—मांसमन्नंतथाशाकंगृहेयच्चो पसाधितम् ॥ नचतत्स्वयमश्नीयाद्विधिवद्यन्ननिर्वपेत् अ० २६ ॥ ४८ ॥

अर्थ—गृहमें जो मांसअन्न तथाशाक पकायाजावे ताको आप नहीं खाए जे विधिसे देवताऽऽदिकोंको न देवे तो अर्थात् देवादिकोंको समर्पण

कर्केखाए ॥

शंखस्मृति प्र०२१५=राजीवान्सिंहतुण्डांश्च शकुलांश्चतथैवच ॥ पाठीनरोहितौभक्ष्यौ, मत्स्येषुपरिकीर्तितौ अ०१७ ॥२५ ॥

अर्थ--राजीव सिंहतुण्ड शकुल पाठीन रोहित, यिह पांचप्रकारके मत्स्य मत्स्यनमें भक्ष्यकहेहैं ॥

शंखस्मृति प्र० २१६--तित्तिरंचमयूरंच लावकंचकपिञ्जलम् ॥ वार्ध्रीणसंवर्तकंच भक्ष्यानाहयमस्तथा अ० १७॥ २७ ॥

अर्थ--तित्तिर मोर लवा कपिंजल वार्ध्रीणस बटेरा, इनको धर्मराजजी भक्ष्य कहतेभए ॥

मनुस्मति प्र०२१७-- स्वमांसंपरमांसेन योवर्धयितुमिच्छति। अनभ्यर्च्यपितॄन्देवान् ततोऽन्यो नास्त्यपुण्यकृत् ॥ अ० ५ ॥ ५२ ॥ अर्थ—पितरोंको देवतोंको न पूजकर जो परके मांससें अपने मांसको बढाया चाहताहै उससें भिन्नकोई अपुण्यकारी नहींहै अर्थात् उनको पूजकर मांसखानेसें पाप नहींहोता ॥

इस मनुश्लोकपर कुल्लूकभट्टकी टीका प्र० २१८-अविधिमांस-

भक्षणनिन्दानुवादः ॥

इसीपर गोविन्दराजकी टीका प्र० २१९—इत्यविधिमांस-भक्षणनिन्दार्थवादएव ॥ यिह अविधिसें मांसखानेकी निन्दा का अनुवादहै ॥

मनुस्मृति प्र० २२०—असंस्कृतान्पशून्मन्त्रै, र्नाद्या-द्विप्रःकदाचन ॥ मन्त्रैस्तुसंस्कृतानद्या, च्छाश्वतं-विधिमास्थितः ॥ अ०५॥३६॥

इसपर मनुभाष्य प्र० २२१—शाश्वतंशाश्वतोनित्योवै-दिकइत्यर्थः ॥ आस्थितआश्रितः ॥

इसपर कुल्लूकभट्टकी टीका प्र० २२२— शाश्वतंप्रवाहाना दितयानित्यं ॥

इसीपर रामचन्द्रकी टीका प्र० २२३— शाश्वतमित्यनेन मुनिकृतत्वमुक्तम् । तेनान्यैः कृतमिति तेनतु सर्वथादोषाभावः ॥

अर्थ—वेदमंत्रोंसें जिनका प्रोक्षणादिसंस्कार नहींहुआ ऐसे पशुओंको ब्राह्मण कभी नहींखाए नित्यसनातन विधिमें स्थितहुआ ब्राह्मण मंत्रोंसें संस्कृतपशुओंको खाए। रामचन्द्रकहतेहैं कि—नित्यसनातनविधिकहने

कर पाहिले मुनि मांसभक्षण कर्तेरहेहैं यिह कहाहै, इस्सें सर्वथादोषका अभाव मनुजीने सूचनकराहै ॥

मनुस्मृति प्र० २२४— **नमांसभक्षणेदोषो नमद्येन चमैथुने । प्रवृत्तिरेषाभूतानां निवृत्तिस्तुमहाफला ॥** अ० ५ ॥ ५६ ॥

इसपरमनुभाष्य प्र० २२५ — **महाफला फलविशेषा श्रुतेः स्वर्गः फलमिति मीमांसकाः एवंमद्ये क्षत्रियादीनां मैथुनेतु सर्ववर्णानाम् ॥**

हेपाठको—यद्यपि इसमनुश्लोकके अर्थ पंडितजनोंने अपनी २ रुचिसें केईप्रकारके करेहैं तथापि जो प्रमाणोंसें तथा युक्तियोंसें विरुद्धअर्थ नहींहो वोई अर्थ साधुजानना होसक्ताहै ॥

—०—

अर्थ—विहितमांस भक्षणमें दोष नहीं, और अनिषिद्धमद्यके पानमें दोष नहीं, व चारोंवर्णोंको स्वस्त्रीगमनमें दोषनहीं, इनमें मनुष्यनकी प्रवृत्ति चलीआई है परंतु अविहितमांसके खानेसें निषिद्धमद्यके पीनेसें परस्त्रीगमनसें निवृत्ति तो महाफला, स्वर्गफलवालीहै ॥

विहितमांसखानेसे निवृत्ति महाफला नहीं इनतीनोंमें जैसे व्यासस्मृति—

भ्रूणहत्यामवाप्नोति ऋतौभार्यापराङ्मुखः अ० २ ॥४५

अर्थ—ऋतुसमय जो स्वस्त्रीसें विमुख हो वो गर्भहत्याकेपापको प्राप्त होताहै, ऐसेही देखो प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें मनुव्यासादि महर्षिओंने विहितमांसखानेकी निवृत्तिसें महादोष कहेहैं ॥

और प्रमाणांक २७ व २८में शास्त्रीयनियमविधिके उल्लंघनके ही यिह महादुष्टफल कहेहैं ॥

मनु व्यास वसिष्ट स्मृतिआदिकोंसें विरुद्ध विहितमांसखानेकी निवृत्तिं को महाफला कहना अयुक्तहीहै ॥

यदि विहितमांसखानेकी निवृत्ति महाफलाहोती तो रामलक्ष्मणादि अवतार, सीतादमयन्तीआदि सतीस्त्रीएं और वेदवेताब्राह्मण, नलअम्बरीष इक्ष्वाकु भीम अर्जुन युधिष्ठिरप्रभृतिमहाराजे, मांसभक्षणमें प्रवृत्तही कैसे हो सक्तेथे ॥

हेभ्रातः देखो प्रमाणांक १८३– और २४२ आदिकोंको चारों वेदोंका अनुवादकरनेवाले ब्रह्मतेजवाले पुत्रके होनेलिये श्रुति और सूत्र मांसके खाने खुलानेका विधानकर्तेहैं तो ऐसा वेदोंका वक्ता ब्रह्मतेजस्वी दीर्घआयुवाला पुत्रहोना क्या महाफल नहींहै ॥

हेमित्र, स्वर्गकीदृष्टिसें ऐसापुत्रहोनाही महाफलहै अतःविहितमांस खानेकी निवृत्ति नहीं किंतु अविहित मांसखानेकी निवृति और विहितमांस खानेकी प्रवृत्ति महाफलाहै ॥

इसअर्थमें संकोचकरना पंडितोका समीचीन नहीं क्योंकि इसअर्थके अनुकूल देखो व्यासजीकेपिता पराशरजीकी बृहत्पराशरसंहिता प्र०२२६

अन्नादेरपिभक्ष्यस्य स्नेहमद्यामिषस्यच ॥ महाफलानिवृत्तिःस्यात्प्रवृत्तिःस्वर्गसाधना अ० ४। ३२३॥

अर्थ भक्षणयोग्य अन्नादिककीभी और घततैलआदिक स्नेहकी व मद्यकी मांसकी इनचारोंकी निवृत्ति महाफलाहै इनकी प्रवृत्ति स्वर्गका साधन है ॥

यहां विचार करा चाहिये कि—भक्ष्यअन्नादिकोंकी सर्वथानिवृत्ति तो संभवेही नहीं किन्तु देवतापितर अतिथिआदिकोंके उद्देशसें विना अन्न

आदिकोंका पकाना, व देवताऽऽदिकोंको न अर्पण कर्के खाना, धर्मशास्त्रों में निषिद्धहै उसीको वृथापाक वृथाभोजन कहतेहैं और देवताऽऽदिकोंको अर्पणकर्के खाना विहितभोजनहै, वृथाअन्नादिकोंके खानेकर पापहोताहै वो प्रबलप्रमाणोंसें पहिले लिखचुकाहूं ॥

अतः वृथाअन्नके वृथाघृतमांसादिकोंके खानेकी निवृत्तिमहाफलाहै और विहितअन्नघृतमांसादिकोंकी प्रवृत्ति स्वर्गका साधनहै क्योंकि - उस में देवताऽऽदिकोंको अन्नघृतमांसादिकोंके समर्पणकरणेकर स्वर्गका हेतुपुण्य उदयहोताहीहै, यिहअर्थ प्रमाणांक ७५ बृहत्पराशर संहितामेंभी स्पष्टहीहै

यहां जो अन्नादिकोंके साथ मद्यकाभी ग्रहणकराहै उसानिषिद्धमद्यकी निवृत्ति महाफलाहै, और सौत्रामणीयज्ञमें मद्यका विधानहै अतः सौत्रामणी यज्ञ में मद्यकी प्रवृत्ति स्वर्गका साधन जाननी ॥

मनुस्मृति प्र० २२७—**यज्ञायजग्धिर्मांसस्ये,त्येषदैवो विधिःस्मृतः । अतोऽन्यथा प्रवृत्तिस्तु राक्षसो विधिरुच्यते ॥ अ० ५ ॥ ३१ ॥**

अर्थ—देवमनुष्यादियज्ञालिये यज्ञका अंगरूपजो मांसखानाहै यिह दैवविधि कहीहै, इस्सें अन्यथा मांसखाना राक्षसविधि कहीजातीहै अर्थात् देवतापितरअतिथि आदिकोंको समर्पणकर्केमांसखाना दैवविधिहै, उनकों समर्पणकरेविना मांसखाना राक्षसविधिहै यिहमनुका सिद्धान्तहै ॥

—०—

भविष्यपुराण प्र० २२८—**वसुभ्यो मांसमोदनम् ॥**

पर्व १ ॥ अ० ५७ ॥ ४ ॥ अर्थ— वसुदेवतोंकेलिये मांसभातको देवे ॥

—०—

भविष्यपुराण प्र० २२९—**गरुडेमत्स्यमोदनम् ॥**

॥ १ ॥ ५७ ॥ १३ ॥ अर्थ—गरुडदेवतानिमित्त मत्स्य और भातको देवे ॥

———

भविष्यपुराण प्र० २३०—**अन्नंचापितथापक्वं, मांसं च कुरुनन्दन। दातव्यंप्रथमंतस्मै, श्रावकैर्नृप सत्तम ॥** पर्व १ ॥ अ० २१६ ॥ १५१ ॥

अर्थ—हेकुरुनन्दनयुधिष्ठिर ! उसपुराणवाचनेवालेको अन्न और मांस पकाहुआ पहिले देना चाहिये ॥

———◎———

पूर्वपक्षी०—महाभारत—**सप्तर्षयोबालखिल्या, स्तथैवचमरीचिपाः ॥ अमांसभक्षणंराजन् प्रशंसन्ति मनीषिणाः ॥** १३ ॥ ११५ ॥ ११ ॥

अर्थ—हेयुधिष्ठिर मरीचि अत्रिआदिक सप्तऋषि और बालखिल्यमुनि मरीचिपा, यिहसब बुद्धिमान् अमांसभक्षणकी प्रशंसा कर्तेहैं इत्यादि श्लोक भी तो भीष्मपितामहजीने कहेहैं ॥

आस्तिक०—अमांसभक्षीका लक्षणभी तो भीष्मपितामहजीने कहाहै वो क्या तुमने देखानहीं तो अब देखिये महाभारत प्र०२३१—

अभक्षयन्वृथामांस,ममांसाशीभवत्युत ॥ दानंददत्पवित्रीस्या, दस्वप्नश्चादिवाऽस्वपन् १३॥९३॥१२॥

अर्थ—वृथामांसके न खानेवालापुरुष अमांसभक्षीहै और दानका दातापुरुष पवित्रहै दिनमें न सोनेवाला अनिद्रहै ॥

महाभारत प्र० २३२—नभक्षयेद्वृथामांस, ममांसाशीभवत्यपि ॥प०१३॥२२१॥१२॥

अर्थ—वृथामांसको जो नहींखाता वो अमांसाशी निश्चितहै ॥

अर्थात् वृथामांसका न खाना अमांसभक्षणहै ऐसे वृथामांसकेत्याग रूप अमांसभक्षणकी सप्तऋषिआदिक प्रशंसाकर्तेहैं, विहितमांसके त्याग की नहीं प्रत्युत विहितमांसके त्यागसें तो देखो प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें व्यास वसिष्टादिमहर्षिओंने नरकआदिकोंकी प्राप्तिकहीहै, व्यासजीने बहुत महर्षिओंको मांसखानेका ऐसेविधानकराहै देखो पद्मपुराण प्र० २३३—

गोधाकूर्मःशशःखड्गः शल्लकश्चेतिसत्तमाः ॥ भक्ष्यान्पञ्चनखान्नित्यं मनुराहप्रजापतिः खण्ड ३॥ अ० ५६॥ ३६ ॥

अर्थ हेश्रेष्ठमहर्षिओ गोह कूर्म शश गैंडा सेह इनपांचनखवालोंको प्रजापतिमनुजी नित्यभक्ष्यकहतेरहे ।

पद्मपुराण प्र०२३४—मत्स्यान्सशल्कान्भुञ्जीत, मांसं रौरवमेवच ॥ निवेद्यदेवताभ्यस्तु ब्राह्मणेभ्यश्चनान्यथा ॥३॥५६॥३७ ॥

अर्थ—सशल्कमत्स्यनको रुरुमृगके मांसको, देवता और ब्राह्मणोंप्रति अर्पणकर्के खाए, अन्यथा नहीं ॥

पद्मपुराण प्र० २३५—मयूरंतित्तिरंचैव कपोतंचकपि-

अलम् ॥ वार्ध्रीणसंबकंभक्ष्यं, मीनं प्राहप्रजापतिः ३८ ॥

अर्थ—मोर तित्तिर कबूतर चातक वार्ध्रीणस वगला मीन, इनसबको प्रजापतिमनुजी भक्ष्यकहते रहे ॥

पद्मपुराण प्र०२३९—शफरीसिंहतुण्डंच, तथापाठी नरोहितौ ॥ मत्स्याश्चैतेसमुद्दिष्टा, भक्षणीयाद्विजोत्तमाः ॥३९॥

व्यासजी कहतेरहे हेद्विजोंमेंउत्तम महर्षिओ—शफरी सिंहतुण्ड तथा पाटीन रोहित, यिह भक्षणीय मत्स्यकहेहैं ॥

पद्मपुराण प्र० २३७प्रोक्षितंभक्षयेदेषां, मांसंचाद्विजकाम्यया । यथाविधि प्रयुक्तंच प्राणानामपिचात्यये ॥ ४० ॥

अर्थ—वेदमंत्रसें संस्कृतमांसकोखाए और ब्राह्मणोंकी कामनासें सिद्ध करे मांसको खाए, और देवकर्म पितृकर्मादिकोंमें यथाविधिविहितमांसको खाए, और प्राणान्तसमय अर्थात् औषधालियेभी मांसको खाए ॥

पद्मपुराण प्र० २३८—भक्षयेन्नैवमांसानि, शेषभोजीनलिप्यते । औषधार्थमशक्तोवा, नियोगाद्यज्ञकारणात् ॥ ४१ ॥

अर्थात् वृथा मांसोंको नहीं खाए, देवताऽऽदिकोंको अर्पणकर्के शेष मांसके खानेवाला दोषसें लिपायमान नहीं होता, वा औषधलिये अशक्त पुरुष विधिसेंविनाभी मांसखानेकर दोषवाला नहींहोता। और देवतादिकोंके यज्ञलिये श्रुतिस्मृतिओंकी प्रेरणासें मांसखानेकर दोषवाला नहींहोता

—०—

होरकेई पुरुष कहतेहैं कि-वेदसूत्रस्मृतिओंका तात्पर्य्यमांसखानेकी निवृत्तिमेंहै प्रवृत्ति में नहीं, मांसभक्षणमें प्रवृत्तितो मनुष्यनकी रागसें हुईहै होरहीहै। विधिवाक्यनसें नहीं सो यिहकथनभी असत्यहीहै तथाहि कहताहुं सुनिये—

१—यदि मांसकीनिवृत्तिमें तात्पर्य्यहोतातो उसका वेदसूत्रस्मृति ग्रन्थनके किसी स्थलमेंभी विधान न करसक्के किन्तु निषेध २ ही कर देते परन्तु उनग्रन्थनमें पशुबलिप्रदानका मांसभक्षणका हजारोंवाक्यनसें विधान कराहुआहै ॥

यदि आप कहैं कि-रागसें प्रवृत्तिहुईहै उसके निरोधलिये विधान करेगएहैं, तो यिहकथनभी अयुक्तहीहै क्योंकि-जैसे जिनदेवजीने विधान नहीं किन्तु निषेध २ ही कराहै तो जैनमतमें आदिसेंअबतक मांसकी प्रवृत्ति होईहीनहीं, वैसेही वेदसूत्रस्मृति पुस्तकोंमेंभी विधान नहीं किन्तु निषेध २ ही करदेते तो मांसकी प्रवृत्तिका होनाही असंभवथा तो उसके निरोधलिये विधोंनाकी कुछ अपेक्षाही नहींथी ॥

और मांसभक्षणके विधान करनेकर मांसकी प्रवृत्तिका निरोध होभी नहीं सक्ता अतः हजारोंवाक्यनसें मांसभक्षणका पशुबलिप्रदानका विधान-करनेकर वेदादिकोंका तात्पर्य विहितमांसखानेकी प्रवृत्तिमेंसिद्धहोताहै ॥

२—यदि आप कहैं कि—अविहितमांसकी निवृत्तिमें सबनिषेध

वाक्यनका और विहितमांसकी प्रवृतिमें सब विधानवाक्यनका तात्पर्यहै तो यिह ठीकहै ॥

३—यदि मांसकी निवृत्तिमेंही तात्पर्य्यहोता तो यज्ञोंमें पशुबलिदान का मांसभक्षणका विधान कभी न करसक्ते क्योंकि—यज्ञनमें तो धर्मात्मा-महाराजे वेदवक्ताब्राह्मण महर्षिजन एकत्रहोतेहैं और रामकृष्णादिअवतार भी संमिलितहुएहैं वहां वेदमंत्रोंसें होमजपप्रभृत्ति श्रेष्ठकर्म तथा पशुबलिदान होमकर्के शेषमांसको भक्षणभी कराजाताहै तो ऐसेपरमपूज्यपुरुषोत्तमजनोंके संमुख मानों पशुबलिदानको मांसभक्षणको सम्मान दिया जाता है

यदि मांसकी निवृत्तिमें तात्पर्य्यहोता तो यज्ञनमें परमपूज्यजनोंके समीप नहीं किन्तु मांसभक्षणका किसीऐकान्त नीचस्थानमें विधान करते परन्तु एकान्तनीचस्थानमें नहीं प्रत्युत अतिश्रेष्ठयज्ञस्थलआदिकोंमें पशु-बलिदानका मांसभक्षणका विधानकराहै इस्सें विहितमांसकी प्रवृत्तिमें वेदा-दिकोंका तात्पर्य्य सिद्ध होसक्ताहै ॥

—०—

४—वेदवेताब्राह्मणोंकी धर्मात्मामहाराजोंकी रामलक्ष्मणादि अव-तारोंकी पशुबलिदानमें मांसभक्षणमें प्रवृत्ति श्रुतिस्मृतिओंकी 'विधिसें' प्रेणासें हुईहै,रागसेंही नहीं क्योंकि विचारशील परमधर्मात्माजनोंकी प्रवृत्ति तो विधिविहित अर्थोंमेंही होतीहै देखो जैसे प्रमाणांक ११२ में रामजीने लक्ष्मणको पशुबलिदानालिये कहाहै फिर विधिसें मांसका बलिदानकराहै ॥

—८—

५—हेपाठक-यदि-रागसेंही पशुहिंसामें मांसभक्षणमें प्रवृत्ति होती तो मरुत्त दशरथ युधिष्ठिरप्रभृत्ति महाराजोंको यज्ञनमें महर्षिओंको ऋत्विज् बनानेकी क्या आवश्यकताथी ।

६–हेभ्रातः-देखो प्रमाणांक १९५ और १९६ में बलात्कारसें मांस भक्षणालिये प्रेरणाकीहै ॥

और देखो प्रमाणांक १८३ को यजुर्वेदकी बृहदारण्यक वेदान्त उपनिषद्मेंभी वेदवक्तापुत्रकी कामनासें गर्भाधाननिमित्त स्त्रीपुरुषदोनोंको मांस सहितभातखानेकी प्रेरणाकीहै तो इत्यादिकविधिवाक्यनसें निश्चयहोसक्ताहै कि–पहिले मांसकी प्रवृत्ति विधानवाक्यनसें हुईहै अतः वेदादिकोंका मांस की निवृत्तिमें तात्पर्य्य कहना असत्यहीहै ॥

शंका–क्या स्त्रीओंलियेभी मांसखानेका विधानहै ॥

समाधान–स्त्रीओंलिये विधान न होता तो सीता दमयन्तीआदि सतीस्त्रीआं मांसको कैसे खायसक्तीथीं ॥

और प्रमाणांक १८३ आदिकोंमें स्त्रीपुरुषदोनोंको मांससहित भातखानेका विधान है ॥

—:०:—

वसिष्टस्मृति प्र० २३९— **त्रिरात्रंरजस्वलाऽशुचिर्भवति सान मांसमश्नीया न्नग्रहान्निरीक्षेत् ॥** अ० ५ ॥ ७ ॥ अर्थ—रजस्वलास्त्री तीनरात्रि अशुद्ध होतीहै वह मांसको न खाए और चन्द्रमाऽऽदिक ग्रहोंको न देखे अर्थात् शुद्धहोनेपर मांसकोखाए और ग्रहोंकोदेखे ॥

आश्वलायन गृह्यसूत्र—**षष्ठेमास्यन्नप्राशनम् ॥**

अ० १ ॥ कण्डिका १६ ॥ १ ॥

अर्थ—अपनी सन्तानको जन्मसें षष्ठेमासमें विधिसें अन्न खुलाए षष्ठे मासमें कैसे अन्नखुलाए इसका उत्तर—

आश्वलायन गृह्यसूत्र प्र० २४०— आजमन्नाद्यकामः ॥ ॥ १ ॥ १६ ॥ २ ॥ —इससूत्रपर गार्ग्यनारायणीयावृत्ति प्र० २४१ अजस्येदमाजम् तैत्तिरसाहचर्य्या न्मांसस्यात्र-ग्रहणम् न क्षीरदधिघृतानाम् ॥

अर्थ मेरा पुत्र अन्नादिबहुतखुराक पचायसके,, ऐसी कामनावाला पुरुष सन्तानकोजन्मसें षष्ठेमासमें बकरेका मांसखुलाए, इसीद्वितीयसूत्रकी वृत्तिमेंलिखतेहैं कि—साथही तृतीयसूत्रमें तैत्तिरपदकहनेसें यहां अजके मांसका ग्रहणहै, यहां अजाके दुग्धदधिघृतका ग्रहण नहींहै ॥

आश्वलायन गृह्यसूत्र प्र० २४२—तैत्तिरंब्रह्मवर्चसकामः ॥ १ ॥ १६ ॥ ३ ॥

इसपर गार्ग्यनारायणीया वृत्ति प्र० २४३— तित्तिरेरिदंतैत्तिरम् । आजतैत्तिरयो र्व्यञ्जनत्वेनोपदेशो नान्नत्वेन तथालोके प्रसिद्धत्वा त्तेनान्नमपि सिद्धम् ॥

अर्थ—ब्रह्मतेजकी कामनावाला पुरुष संतानको तित्तिरका मांस खुलाए ॥

वेदोंके पठनेसें अनुष्ठानसें जन्य जोतेज वो ब्रह्मतेजपदका अर्थ जानना

वृत्तिकार लिखतेहैं कि—अजके और तित्तिरके मांसका व्यंजनतासें उपदेशहै अन्नरूपतासें नहीं क्योंकि वैसेही लोकमें प्रसिद्धहोनेसें, अतः व्यंनजके उपदेशकरणेकर अन्नभी खुलाना सिद्धहै ॥

—:०:—

संस्कारविधि प्र० २४४—अजके मांसका भोजन अन्नादिकी इच्छाकरनेवाला तथा विद्याकामना के लिये तित्तिरका मांसभोजनकरावे ॥

विदितहो कि-वहां चतुर्थसूत्रमें जो तेजकीकामनावालेको घृतयुक्त भातका भोजनकरवानालिखाहै वो वहां अन्नका उपदेशहै और पहिला दूसरे तीसरेसूत्रमेंअजके तित्तिरके मांसका व्यंजनरूपका उपदेशहै ॥

फिर पंचमसूत्रमेंजो दधिमधुघृतसें युक्तअन्नका भोजनकरवानाकहाहै वो मांससेंभातके भोजनसेंअनन्तर शहतदधिसेंयुक्त मिष्ट अन्न खुलाना कहाहै ॥

—०—

अबषष्ठेमासमें अन्नप्राशनसंस्कारके पारस्करगृह्यसूत्रोंकोभी देखो ॥

पारस्करगृह्यसूत्र प्र० २४५—भारद्वाज्यामांसेन वाक् प्रसारकामस्य ॥ काण्ड १ ॥ कण्डिका १६ ॥ ७ ॥

इससूत्रपर हरिहरभाष्य प्र० २४६—भारद्वाज्याः पक्षिण्याः मांसेनकुमारस्य प्राशनंकारयितव्यंभवति कस्य. पितुः कथंभूतस्य वाक्प्रसारकामस्य वाचः प्रसारोबहुत्वं तत्कुमारस्यकामयतेइतिवाक्प्रसार कामः तस्य ॥

सूत्र व भाष्यका अर्थ-जन्मसें षष्ठेमासमेंबच्चेको भारद्वाजीपक्षिणी के मांससाथभोजनखुलावे यदि उसकापिताचाहताहै कि-मेरा पुत्रविनारुके बहुभाषणकरनेवालाहो ॥

इससूत्रपर पं० राजारामजीका हिन्दीभाष्य प्र० २४७—

भारद्वाजीके मांसकेसाथ 'अन्नखिलाए' यदि वह चाहताहै कि इसकापुत्र विनारुके सुन्दर बोलनेवालाहो ॥ ७ ॥

—०—

पारस्करगृह्यसूत्र प्र०२४८—कपिञ्जलमांसेनान्नाद्यकामस्य ॥ १ ॥ १६ ॥ ८ ॥

इसपर हरिहरभाष्य प्र० २४९—एवमन्नाद्य कामस्य कपिञ्जलमांसेन ॥

अर्थ—ऐसेकपिञ्जल के मांससाथअन्नखुलावे यदि वह चाहताहै कि-मेरापुत्र अन्नादिबहुतपचाने वालाहो ॥

इससूत्रपर पं० राजारामजीका हिन्दीभाष्य २५०—

कपिञ्जलके मांसकेसाथ यदि वहचाहताहै कि उसका पुत्र खुराक का पचानेवालाहो ॥ ८ ॥

—०—

पारस्करगृह्यसूत्र प्र० २५१—मत्स्यैर्जवनकामस्य ॥ ॥ १ ॥ १६ ॥ ९ ॥

इसपर हरिहरभाष्य प्र० २५२—यदि कुमारोऽयं जवनः शीघ्रगामीस्यात्तदा यथासंभवं मत्स्यान्प्राशयेत् ॥

सभाष्यसूत्रका अर्थ-यदि पिताचाहताहै कि, यिह बाल शीघ्रगामी हो तो बालकको यथासंभव मत्स्यनके मांससाथ भोजनखुलाए ॥

इससूत्रपर पं० राजारामजीका हिन्दीभाष्य प्र० २५३—

मछलियोंके मांसके साथ यदि वह चाहताहै कि-वेगवाला हरएक काममेंहो ॥ ९ ॥

—०—

पारस्करगृह्यसूत्र प्र० २५४—कृकषाया आयुष्कामस्य ॥ १ ॥ १९ ॥ १० ॥

इसपर हरिहरभाष्य प्र० २५५—सयदिकुमारो दीर्घायुः स्यादिति कामये त्तदाकृकषायामांसं प्राशयेत्

सभाष्यसूत्रका अर्थ-सोपिता यदि ऐसे चाहताहै कि-यिह बाल दीर्घायुवालाहो तो कृकषाके मांससाथ भोजनखुलाए ॥

इससूत्रपर पं० राजारामजीका हिन्दीभाष्य प्र० २५६—

कृकषाके मांसके साथ यदि वह चाहताहै कि दीर्घायुवालाहो ॥ १० ॥

पारस्करगृह्यसूत्र प्र० २५७—आट्यात्रह्मवर्चसकामस्य ॥ १ ॥ १९ ॥ ११ ॥

इसपरहरिहरभाष्य प्र० २५८—यदि कुमारो ब्रह्मवर्च-

स्वीस्यादिति कामये त्तदा आट्या मांसं प्राशयेत्

सभाष्यसूत्रका ॥

अर्थ यदि उसका पिता ऐसे चाहताहै कि-यिह बाल ब्रह्मतेजवालाहो तो शरालपक्षीके मांससाथ भोजन खुलाए ॥

इससूत्रपर पं० राजारामजीका हिन्दीभाष्य प्र० २५९-आटिके मांसकेसाथ यदि वह चाहताहै कि—ब्रह्मवर्चसवालाहो ॥ ११ ॥

पारस्कर गृह्यसूत्र प्र०२६०-सर्वैःसर्वकामस्य ॥ ॥ १ ॥ १९ ॥ १२ ॥

इसपर हरिहरभाष्य प्र०-२६१—यदि वाक्प्रसारादीनि ब्रह्मवर्चसान्तानिसर्वाणि कुमारस्यभवन्त्वितिकामये त्तदा भारद्वाज्यादीना माट्यन्तानां सर्वाणिमांसानि क्रमेण प्राशयेत् अन्नपर्याय वा अन्नपरिपाट्या वा अन्नवदेकीकृत्यप्राशयेदित्यर्थः अन्नपर्यायेति अविभक्तिक मार्षपदम् ॥

सभाष्यसूत्रका अर्थ-यदि उसका पिताचाहताहै कि-मेरे इसपुत्रके (विनारुके बहुभाषण, बहुतअन्नादिपचाना, शीघ्रगमन, दीर्घआयु, ब्रह्मतेज) यिह सबगुणहों तो भारद्वाजी कपिञ्जल मत्स्य कृकषा शराल, इनसबके मांसोंसाथ क्रमसें अथवा इनसबके थोडे २ मांसोंका एकठाकर्के उनमांसोंके साथ उसबालको भोजन खुलाए ॥ १२ ॥

अब निर्णय करिये कि– छी महीनेके बच्चेका मांसखानेमें राग है हीनहीं किन्तु श्रुतिस्मृतिसूत्रादिकोंके वाक्यही बलात्कारसें मांसखानेमें प्रवृति करवातेहैं अतः वेदसूत्रस्मृतिओंका तात्पर्य्य मांसकी निवृतिमें कहना असत्य हीहै ॥

—०—

यद्यपि अविहितमांसकी प्रवृतिमें तात्पर्य्य संभवेनहीं तथापि देखो प्रमाणांक १ आदिकोंमें मांसको घृततैलकीन्याई शुद्ध पवित्र कहाहै, फिर प्रमाणांक १६ आदिकोंमें कहाहै कि–विनामांगे मांसको कोई दे तो उस मांस को वापस नहींहठाए किंतु ग्रहण करले ॥

पुनः प्रमाणांक ३१ आदिकोंमें कहाहै कि– देवताऽऽदिकोंको अर्पण कर्के मांसखानेसें कोईदोष नहींहोता फिर प्रमाणांक ४८ आदिकोंमें वेद-विहित हिंसाको अहिंसारूपही स्वीकारकराहै ॥

पुनः प्रमाणांक ६९ आदिकोंमें वेदविहितहिंसाका श्रेष्ठफल वर्णन कराहै

फिर प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके नहींखानेकर अतिदोष कहाहै, इत्यादिक वाक्यनसें मांसकी निवृत्तिमें नहीं किन्तु विहितमांसखाने की प्रवृतिमें तात्पर्य्य सिद्धहीहै ॥

——:०:——

कथनकरे प्रमाणोंका संक्षेपसें अनुवाद पूर्वपक्षीद्वारा कर्तेहुए सिद्धा-न्तीद्वारा अबकहतेहैंकि–वेदादिकोंकर विहितआचरणका त्यागही वेदादिकों सेंभ्रष्टताहै ॥

मन्वाद्यैर्हिनिरूपितंशुचिपलं, वेदादिवैधंयतः

प्रत्याख्येयमितंनयाचनमृते, स्वीकार्य्यमेवेत्यपि
नोखादामिपलंतथापिसुरसं, बुद्धिप्रदम्पौष्टिकं,
वेदेभ्योपिसखेस्मृतिप्रभृतितो भ्रष्टस्यकान्यागतिः

॥ ९ ॥

भुङ्क्तेयश्चवृथापलंसतुनरो, दोषान्वितोजायते,
दत्त्वादेवमुखांश्चखादतिपलं, नैवास्यदोषोभवेत् ॥
मन्वाद्यैःसुमताऽथवेदविहिता, हिंसाह्यहिंसैवसा,
तस्याश्चाप्युभयोःफलंहिकथितं, श्रेष्ठागतिश्चेत्य-
पि ॥ ॥ १० ॥

योनाश्नातिपलंद्विजोहिविहितं, श्राद्धेचदैवेतथा,
प्रोक्तंतस्यमहर्षिभिस्तुनरक, प्राप्त्याद्यनिष्टंफलम्
नोखादामिपलंतथापिसुरसं, बुद्धिप्रदम्पौष्टिकं,
वेदेभ्योपिसखेस्मृतिप्रभृतितो, भ्रष्टस्यकाऽन्यागतिः

॥ ११ ॥

वेदेषूपनिषत्सुसौम्याविहितं, स्मृत्यादिशास्त्रेष्वपि,
व्याख्यातंखलुभाष्यकृद्भिरपित, च्छ्रीसायणाद्यै-
स्तथा। नोखादामिपलंतथापिसुरसं,बुद्धिप्रदम्पौ-

ष्टिकं, वेदेभ्योपिसखेस्मृतिप्रभृतितो, भ्रष्टस्यका-ऽन्यागतिः ॥ ॥ १२ ॥

टीका--पूर्वपक्षी०--यद्यपि मनु पराशर वशिष्ट आदि महर्षिओंनें तथा श्रीरामजीनेभी मांसको प्रमाणांक १ आदिकोंमें शुद्ध पवित्र निरूपणकराहै क्योंकि जिस्सें वेदादिकोंकर विहितहै, और याचनासेंविना किसीसें प्राप्तहुए मांसको वापस नहींहटाए किन्तु ग्रहणकरले, यिहभी मनुआदिकोंने प्रमाणांक १६ आदिकोंमें विधान कराहै, तथापि अत्यन्तपुष्टिकारी बुद्धिदेनेवाले सुष्टु रसीलेमांसको मैं नहींखाता ॥

उत्तरसिद्धान्ती०--हेमित्र--वेदोंसें स्मृतिआदिकोंसें भ्रष्टहुएपुरुषकी होर क्या दशाहोतीहै अर्थात् वेदादिकोंकर विहितआचरणका त्यागही वेदादिकों सें भ्रष्टता है ॥९॥

पूर्वपक्षी०--वृथामांसकोजो खाताहै वो दोषवालाहोताहै, और जोपुरुष देवताऽऽदिकोंको अर्पणकर्के मांसको खाता है उसपुरुषको दोष नहींहोता, यिह प्रमाणांक ३१ आदिकोंमें मनुआदिकोंने निरूपणकराहै ॥ और वेद-विहितहिंसा प्रमाणांक ४९ आदिकोंमें अहिंसारूपही मानीहै,फिर प्रमाणांक ६९ आदिकोंमें विहिताहिंसाका श्रेष्ठफलही वर्णनकराहै ॥ १० ॥

और श्राद्धमें तथा देवकर्ममें विहितमांसको जो द्विजपुरुष नहींखाता उसको नरकप्राप्तिआदिक अनिष्टफल प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें महर्षिओंनें

स्पष्टकहाहै, तथापि अतिपुष्टिकारी बुद्धिदेनेवाले सुष्टुरसीलेमांसको मैं नहींखाता ॥

उत्तरसिद्धान्ती०-हेमित्र- वेदोंसें स्मृतिआदिकोंसें भ्रष्टहुएपुरुषकी होर क्या दशाहोतीहै ॥ ११ ॥

पूर्वपक्षी०—हेसौम्य— देखो प्रमाणांक १७९ आदिकों को वेदोंमें उपनिषद्में स्मृतिआदिकोंमें मांसखानेका विधान कराहुआहै, और भाष्यकार श्रीसायणाचार्य्यआदिकोंनेभी वैसेही वेदानुसारीही मांसखानेकी व्याख्याकरीहैं यद्यपि तथापि अतिपुष्टिकारी बुद्धिदेनेवाले सुष्टुरसीले मांस को मैं नहींखाता ॥

उत्तरसिद्धान्ती०--हेमित्र वेदोंसें स्मृतिआदिकोंसें भ्रष्टहुएपुरुषकी होर क्या दशाहोतीहै अर्थात् वेदादिकोंकर विहितआचरणका त्यागही वेद आदिकोंसें भ्रष्टताहै ॥ १२ ॥

—०—

अन्तर्यामीके अनुग्रहसें प्रथमप्रकाशकी समाप्तिको सूचनकर्तेहुए अब परमेश्वरके स्मरणरूप मंगलाचरणको कर्तेहैं ॥

आरब्धोयान्नियुक्तेन मयाऽसौतदनुग्रहात् ।
प्रकाशःप्रथमोऽस्यायं निर्मलोह्युदितीकृतः १३

टीका, जिस सर्वशक्तिमान् परमेश्वरकर प्रेरेहुए मुझने यिह भक्ष्यनिर्णय भास्कर ग्रन्थ आरम्भ कराथा उस अन्तर्यामी परमेश्वरके अनुग्रहसें इसग्रन्थ का यिह प्रथमप्रमाणप्रकाश निर्मलउदयकरदियाहै इति ॥

चौपाई, शुरूकियो पुस्तकमैंजासें, प्रेरितहो उसकीहिकृपासें ।
उसका प्रथमप्रमाणप्रकाशा, निर्मल उदयकियोतमनाशा ॥

—०—

इति श्रीहरिद्वारे पातञ्जलाश्रमनिवासिना
स्वामि तेजोनाथेनोदिती कृते
भक्ष्यनिर्णयभास्करे
प्रथमःप्रमाण
प्रकाशः
॥१॥

—:*:—

श्रीगणनाथायनमोनमः श्रीसरस्वत्यैनमोनमः ॥

चौपाई—ध्याकरबन्दोताईशानं, हमरिधियोंकाप्रेरणवानं ॥
हमरिधियोंकोप्रेरेईशा, सद्दृष्टान्तविषयजगदीशा ॥

—:०:—

प्रथम प्रमाणप्रकाशमें पशुवलिप्रदानके व मांसभक्षणके विधायक वेदादिकोंके प्रमाणोंको दिखलाकर अब उसीविषयमें शिष्टाचाररूप दृष्टान्तों के दिखलाने लिये द्वितीयदृष्टान्तप्रकाशका आरम्भ कर्तेहुए निर्विघ्नसमाप्ति लिये पहिले मङ्गलश्लोकको उच्चारणकर्तेहैं ॥

ध्यात्वावन्देतमीशान, मस्मद्धीप्रेरकोहियः ।
धियोनःप्रेरयत्वीशः, सद्दृष्टान्तनिरूपणे ॥१॥

टीका—उसपरमेश्वरको ध्यानकर्के मैं बन्दना कर्ताहुं जो हमारी बुद्धिओंको प्रेरे है, वोअन्तर्यामी ईश्वर हमारीबुद्धिओंको सत्यदृष्टान्तोंके निरूपणमें प्रेरे ॥ १ ॥

श्रुत्यादीनिहिदर्शितानिशतशो, दुर्लङ्घ्यमानानिवै, स्पष्टान्येवपलाशनेपशुबला, वादिप्रकाशेमया ॥ दृष्टान्तान्खलुदर्शितुंचविषये, तास्मिन्नसंख्यान्वरान्, आरब्धोऽनतिविस्तरोऽयमधुना, नूनंप्रकाशोऽपरः ॥ २ ॥

टीका०—पहिलेप्रकाशमें पशुवलिप्रदान और मांसभक्षणविषयमें श्रुतिसूत्रस्मृतिआदिक आस्तिकजनोंसे दुर्लंघ्यबहुतप्रमाण दिखलायादियेहैं

उसहीविषयमें असंख्यश्रेष्ठदृष्टान्तोंके दिखलानोलिये अब अनतिविस्तृत द्वितीय दृष्टान्तप्रकाश आरम्भ कराहै ॥

पूर्वपक्षी० — आपकेकथनकरे बहुतहीप्रबल श्रुतिसूत्रस्मृति आदिक प्रमाण तो सुनालिये, परन्तु तुमारेलिखे इनकेअर्थोंमें विश्वास तब होसक्ताहै जब उनके अनुकूलप्रामाणिक दृष्टान्तभी मिलें। अर्थात् प्रामाणिक सद्दृष्टान्तों सेंही प्रमाणोंके अर्थका तात्पर्य्यका निर्णयहोसक्ताहै—

भावायिहहै कि—यदि वेदसूत्रस्मृतिओंका तात्पर्य्य पशुबलिप्रदान की व मांसकी निवृत्तिमेंहो तो पशुबलिप्रदानमें व मांसभक्षणमें अवतार वा महर्षि वा धर्मात्माराजे प्रवृत्त नहीं होसक्ते ॥

यदि वेदादिकोंका पशुबलिप्रदानकी मांसखानेकी प्रवृत्तिमें तात्पर्य्यहो तो वह प्रवृत्त होसक्तेहैं अतः कहनाचाहिये कि—पशुबलिप्रदानमें व मांसभक्षणमें कोई उत्तमपुरुषभी प्रवृत्तहुआहै ॥

आस्तिक०—हेमित्र—उक्तप्रमाणसिद्धअर्थमें शिष्टाचाररूपदृष्टान्त असंख्यहीहैं वो दिखलावुंहीगा परन्तु पाहिले तुमारे दृष्टान्तोंका निर्णय तो करलवुं इसालिये प्रथम आप अपने दृष्टान्तोंको सुनाइये ॥

पूर्वपक्षी०—अहिंसाप्रदीपके तृतीयभागमें लिखाहै कि—सुनो हिंसा दोषपर भीष्मजीका दृष्टान्तसुनाजाताहै कि— प्रश्नहुआ कि— इसजन्ममें तो आपने कोईपाप कर्म नहींकिया फिर ऐसाक्लेश क्यों पारहेहैं ऐसासुनकर भीष्मजी ध्यानलगाकर बोले कि—मैंने बाल्यावस्थामें किसीएकजीव को सींखसें पीडादीथी उसीका यहफलहै कि—अन्तमें बाणोंसें पीडा पारहाहूं, शिक्षा —किसीभी जीवको पीडा देनी न चाहिये ॥

आस्तिक०यिह आपका दृष्टान्त प्रामाणिकभी नहीं, और प्रसंगमें उपयोगीभी नहीं, क्योंकि यदि किसी आर्षग्रन्थमें यिह प्रश्न उत्तर लिखाहोता

तो तुम उसग्रन्थका नामभी अध्यायांकभी लिखते तो तुमारा दृष्टान्त प्रमाणसिद्ध कहाजाता वो तो तुमने लिखाही नहीं अतः यिह तुमारा दृष्टान्त प्रमाणासिद्ध नहींहै ॥

और यदि भीष्मजीने बाल्यावस्थामें किसीएकजीवको सींखसें पीडा दीथी तो वह विहितहिंसा नहीं किन्तु वह निषिद्धहिंसाथी, ऐसी निषिद्धहिंसाका अनिष्टफलहुआ परन्तु विहितहिंसाके प्रसंगमें निषिद्धाहिंसाका दृष्टान्त देना प्रकरणमें उपयोगी नहीं किंतु अपनी अज्ञता प्रकट करणीहै।

होरजो तुमने कहा कि—किसीभीजीवको पीडादेनी न चाहिये, इसमें निषिद्धहिंसाका तो त्यागही कराचाहिये और विहितहिंसाका त्याग तो श्रुतिसूत्रस्मृतिओंमें विश्वासके अभावरूप नास्तिकतासेंही कहरहेहो क्योंकि यदि विहितहिंसाका त्याग अपेक्षितहोता तो उसहिंसाका वेदसूत्रस्मृतिओं में विधानही क्यों करा जाता, फिर उसमें रामलक्ष्मणादिअवतार और वेद वेताऋत्विज्आदि ब्राह्मण और धर्मात्मामहाराजे प्रवृत्तही कैसे होसक्तेथे क्या उनको तुमारेजैसा धर्माधर्मका ज्ञान नहीं था ॥

और प्रमाणांक ५६ और ६९ आदिकोंमें विहितहिंसाका श्रेष्ठफल दिखलायाहै अतः विहितहिंसाका त्याग कहना समीचीन नहीं ॥

—:०:—

पूर्वपक्षी०—हिंसाके बदलेपर सदनेका दृष्टान्त एकदिन रातके समय मांसके लिये राजाने सदने कसाईके पास अपने नौकरको भेजा, सदनेके घरमें एकजीताहुआ बकरा बंधाथा सदनेने मनमें सोचा कि–यदि इसी समय मैं बकरेको मारूंगा तब सवेरेतक बाकीका मांस बिगड जाएगा इस कारण इसवक्त बकरेके पतालू काटकर राजाको भेजदूं सवेरे इसकी गरदन

काटूंगा, यिह सोच जिससमय सदना छुरीलेकर बकरेके पतालूओंको कटने लगा तब बकरा हंसा, सदनेने पूछा तूं क्यों हँसताहै बकरेनें कहा आगे केईबार तूने मेराशिरकाटा और मैंने तेराशिर काटा सिरके काटनेका तो तेरामेरा हिसाब बहुतदिनसें चलाआताहै पर आज तूं नयाहिसाब चलाताहै, मैं इसनएहिसाबको देखकरके हंसाहूं, रातभर मैं तड़फता रहूंगा सवेरे जब कि तूं शिर काटेगा तब मैं मरूंगा, यहीहाल दूसरे जन्ममें तेराभीहोगा, बकरेकी इसबातको सुनकर सदनेको वैराग्य पैदाहुआ और बकरेको उसने न मारा ॥

आस्तिक०—हेमित्र—शास्त्रीविद्वान्पुरुष वेदोंके शास्त्रोंके प्रामाणिक दृष्टान्तदेतेहैं कि—ऐसी २ काल्पनिक अप्रामाणिक कहानीएं सुनाते हैं ॥

इसमेंभी विचारें कि—रातभर रहनेसें मांस नहीं बिगड़जाता किंतु पतालू कटनेसें दुःखीबकरेका मांस दोषकर होजाताहै ।

बहुतचिर नहींहुआ मुसलमानोकेवक्त सदनाकसाई हुआहै तब क्या बकरे हंसते और मनुष्योंसें बातां करतेथे और बकरे मनुष्योंको उपदेश कर्तेथे, यिहबातें क्या मुसलमानोंके वक्तहोतीथीं, तब सदनाऽऽदिमनुष्योंको पहिलेजन्मोंका ज्ञान न हुआ तो बकरे को कैसे होसकताथा ॥

सदनाकसाई मुसलमानथा वो बकरेको हलालकरे बिना अपनीशराहसें विरुद्ध पतालूको पहिलेही कैसे कटसक्ताथा, भावयिह—ऐसेअयुक्त अप्रामाणिक दृष्टान्तसें तुम कुछसिद्ध नहीं करसक्तेहो ॥

देखो प्रमाणांक १२० और १४१ व १४६ आदिकोंमें दृष्टान्त दिखाचुकाहुं, युधिष्ठिर दशरथ रन्तिदेवआदिकोंके यज्ञनमें सैंकड़ेपशुओंका बलिदानहुआ इस्सें वह दशरथ युधिष्ठिरादिक स्वर्गमेंही पहुंचे ॥

पूर्वपक्षी०—शिक्षा जितने जीवोंको अपने जिह्वाके स्वादकेलिये जो मनुष्य मारतेहैं उनकोभी दूसरेजन्ममें फिरवह बकरेआदि मनुष्य बनकर मारतेहैं अर्थात् जो मनुष्य पशुओंको काट २ कर रुधिरकी नदी वहातेहैं वहभी उनसें कट २ कर सद्गतिको नहींपाते बल्कि नरकोंमें पड़तेहैं ॥

आस्तिक०—हेमित्र-प्रमाणांक ५६ और ६९ आदिकोंमें तो विहित-पशुहिंसाकर दोनोंको उत्तमगतिकी प्राप्तिरूप श्रेष्ठफलही वर्णन करा है उन प्रबलप्रमाणोंसे विरुद्ध तुम कथन कर्त्तेहो इसीसें तुमको नरक स्मरणमें आताहै ॥

पूर्वपक्षी०—एकभीलराजाकी शवरीकन्याथी जब वह जवान हूई तो उसके विवाहकी तयारीमें भोजनालिये हजारों बकराऽऽदिक मगवाये गए भील मांस तो खातेहीहैं इसमें तो संदेह नहीं इन बकराऽऽदिकोंकी हिंसा के विचारकर वो शवरी खेदको प्राप्तहोई सो रातमेंही नगर छोड़कर बन में चलीगई और भगवान्के दर्शनकी इच्छा रखकर ऋषिसेवापूर्वक भजन करतीरही जिसका फल यहहुआ कि--योगीओंके हृदयमेंभी कठिन आने वाले परमात्माका अपने आश्रमपरही दर्शन पाकर कृतार्थहूई ।

शिक्षा-अहिंसाधर्मसें भीलजातिभी श्रेष्ठ होसक्तीहै अहिंसाधर्मके पालन सेंही हृदयमें भक्ति उत्पन्नहोकर ईश्वरका दर्शन होसक्ताहै ॥

आस्तिक०—विद्वान्पुरुष तो आर्षग्रन्थनका प्रमाण व दृष्टांत देकर अर्थ सिद्धकरतेहैं तुमतो किसीग्रन्थका नामभी न लिखकर अर्थ सिद्ध करा चाहतेहो, हछा अब विचारें कि—

भील मांस खातेहीहैं तो उस भिल्लराजाके गृहमें मांस तो पकायाही जाताथा वो शवरीभी मांसको खातीहुई जवानहुईथी, क्योंकि भिल्लजाति स्त्रीभी पुरुषभी मांसखातेहैं तो फिर इतनी ग्लानी कैसेहोसकतीहै ॥

हेमित्र—तुमारेसें तो शवरीकोभी धर्मज्ञान अधिकथा क्योंकि धर्म शास्त्रनमें विहितपशुहिंसा अहिंसारूपहीमानीहै ॥ सोविहितहिंसा व विहितमांसका खाना प्रवृत्तिमार्गवाले गृहस्थजनोंका धर्महै, गृहस्थाश्रममें रहनेसें वो धर्म करणा ही होगा वो वानप्रस्थोंका धर्म नहीं, यिह धर्मशास्त्रोंका सिद्धार्थ जानतीथी अतः वो शवरी वानप्रस्थ होकर भजनकरनेलगी इस्सें श्रीरामजीका दर्शन पाकर स्वर्गमें प्राप्तहुई ॥

परंतु तब शवरीको यिह विचारनहींहुआ कि, रामजीके दर्शन तो क्या विहितमांसके खानेवाले गुह सुग्रीवविभीषण लक्ष्मणआदिक श्रीरामजीके परममित्रहुएहैं भ्राताहुएहैं देखो—

बा० रामायण दृष्टान्त प्र० २६२—**इत्युक्त्वोपायनंगृह्य मत्स्यमांसमधूनिच । अभिचक्रामभरतं निषादाधिपतिर्गुहः** ॥ का २ ॥ सर्ग ८४ ॥ १० ॥

अर्थ—मैं परीक्षालिये जाताहुं यदि रामजीके अनुकूल हुआतो भरत जी को गंगापार करदेंगे, यदि ऐसा न हुआ तो भरतसें युद्धकरेंगे भरतको गंगापर नहींजानेदेंगे,, ऐसे निषादोंको कहकर निषादोंका राजागुह मत्स्यमांसशहत, यिह भेटलेकर भरतजीके सम्मुख जाताभया ॥

—०—

तुलसीरामायण दृष्टान्त प्र० २६३—**लखवसनेहसुभाय सुभाये, वैरप्रीति नहि दुरतदुराये । असकहिभेंट सजोवनलागे, कन्दमूलफलखगमृगमांगे ॥**

मीनपीनपाठीनपुराने भरिभरिभारकहारनआने
का० २ ॥ १८६ ॥

—०—

वा० रामायणदृष्टान्त प्र० २६४—तेपिवन्तःसुगन्धीनि मधूनिमधुपिंगलाः । मांसानिचसुमृष्टानि मूलानिचफलानिच ॥ उत्तरकाण्डसर्ग ३९ ॥ २६ ॥

रामोपिरेमेतैःसार्धं वानरैःकामरूपिभिः ।
राक्षसैश्चमहावीर्य्यैर्ऋक्षैश्चैवमहाबलैः ॥ २८ ॥

अर्थ—अयोध्यामें वो सुग्रीवप्रभृति वानर और विभीषणादिक सुगन्ध वाले मधुओंको पीतेहुए मांसोंको और मीठे मूलोंकोफलोंको खातेरहे ॥ २६ ॥ रामचन्द्रभी उनकामरूपी वानरोंके महावीर्य्यवान्राक्षसोंके महाबली भालूओंकेसाथ अयोध्यामें रमण कर्ते रहे ॥ २८ ॥

हेमित्र—दशरथजीने पशुयज्ञकरा जिसमें रामजीकीमाताकौसल्या ने आप अश्वकोकाटा वो दिखाचुकाहुं प्रमाणांक १४१ में तदनन्तर देखो

वा० रामायणदृष्टान्त प्र० २६५—धूमगन्धंवपायास्तु, जिघ्रतिस्मनराधिपः । यथाकालं यथान्यायं निर्णुदन्पापमात्मनः ॥ १ ॥१४ ॥ ३७ ॥

—०—

अर्थ, जिससमयमें जैसा शास्त्रका विधिहै वैसे उस अश्वकी चरबीके धूमगन्धको दशरथजी अपने पापनको दूरकर्तेहूए सूंघतेभए ॥ हेभ्रातः ऐसे यज्ञकरणेकर दशरथके घरमें रामलक्ष्मणाऽऽदिक चारपुत्ररत्न प्राप्त हुए ॥

बा०रामायणदृष्टांत प्र० २६६–तौतत्रहत्वाचतुरो महा मृगान् वराहमृष्यंपृषतंमहारुरुम् । आदायमेध्यं त्वरितंबुभुक्षितौ वासायकाले ययतुर्वनस्पतिम् २ ॥ ५२ ॥ १०२ ॥

अर्थ, गंगासें पारजाकर वहां क्षुधायुक्तहुए रामलक्ष्मण एकवराह और ऋष्य पृषत रुरु, इन तीनजातिके पवित्र हरिण ऐसेचार बड़े मृगोंको मारके लेकर्के शीघ्र सायंकालमें निवासलिये वृक्षको जातेभए ॥

पूर्वपक्षी० बा रामायणदृष्टान्त प्र० २६७–

चतुर्दशाहिवर्षाणि वत्स्यामिविजनेवने । कन्दमूलफलैर्जीवन् हित्वा मुनिवदामिषम् ॥२॥२०॥२९ ॥

अर्थ रामजीने कहा कि कंदमूल फलोंसे जीविता हुआ मुनि की न्याईं मांसको त्यागकर्के मैं चौदांवर्ष निर्जन वन में निवासकरूंगा । देखिये चौदांवर्षलिये वनवास समय रामजीने मांसके त्यागकी प्रतिज्ञा की है ॥

आस्तिक, हे मित्र जिस वस्तु का ग्रहणही नहींकर्ते तो उसके त्याग की प्रतिज्ञा संभवे नहीं किंतु जिसका पहिले ग्रहण कर्ते होवें उसकेही त्यागकी प्रतिज्ञा संभवेहै अतः इस तुमारेलिखे श्लोकसेंही निश्चयहोताहै कि श्रीरामजी पहिले मांसको खातेहीथे फिर वनको जानेलगे मांसके त्यागकी प्रतिज्ञा

कीहै परंतु वो प्रतिज्ञाभी पाचकपुरुषोंद्वारा घृतमिरच मसालादिकोंसे विशेष संस्कारकर संस्कृतमांसके त्यागकी प्रतिज्ञा कीहै ॥

हेपाठको । अग्निसें केवलभूनेमांसके त्यागकी प्रतिज्ञा नहींकी देखो इस श्लोक की ॥

रामायणतिलक टीका प्र० २६८—मुनिवदामिषंसूदै र्विशिष्टसंस्कारसंस्कृतम् तेनेदंमेध्यमिदं स्वादुनिष्टप्तमिदमग्निनेति वक्ष्यमाणेन नविरोधः तस्यशुद्धमांसपरत्वात् मुनिवदित्युक्त्याश्राद्धीयादिमांसपरत्वाच्च ॥

अर्थयिहहैकि आगे इस दूसरे कांडमें सर्ग ९६ के पहिले और दूसरे श्लोकमें कहेंगे कि तब चित्रकूटमें श्रीरामजी जानकीको मंदाकिनीनदी दिखलायके स्थित हुए सीताजीको मांस विशेषसें खुशकर्तेहुएकहा कि यह मांस पवित्रहै यिह स्वादु है यिह मांस अग्नि से भूना गर्महै, इत्यादिक बहुत श्लोकोंमें मांसखानेका प्रसंग आवेगा अतः उनश्लोकोंसें विरोध होगा यदि यहां मांसमात्रका त्याग करामानोंगे तो इससे जैसे बनवासी मुनिजन घृतमसालाऽऽदिकोंसें बिना केवल भूना हुआ मांस खातेहैं वैसेही पाचकसें विशेषसंस्कारकर संस्कृत मांसका रामजीने बनवाससमय त्याग करा जानना ॥

फिर देखो प्रमाणांक १३में भी वा० रामायण का दृष्टान्त

और वा० रामायण प्रमाणांक १० में भी स्पष्ट दृष्टान्त को देखो, गंगा यमुनासरस्वतीके प्रवाह जहां चलरहे हैं ऐसी प्रयागराज त्रिवेणीके तटपर अपने आश्रममें महामुनि भरद्वाजजीनें भरतके आतिथ्यमें नाना प्रकारके पवित्रमांस बनवाए खुलाएथे—

अब मांसके प्रसंगचलानेसेंभी मेरेभ्राता क्षोभकर्तेहैं ॥ इसमें कारण जैनमतके बहुतकालसें संस्कारहीहैं ॥

——:०:——

वा० रामायणदृष्टान्त प्र० २६९ — भ्रातरंसंस्कृतंकृत्वा, ततस्तंमेषरूपिणम् ॥ तान्द्विजान्भोजयामास, श्राद्धदृष्टेनकर्मणा ॥३॥११॥५७॥ अर्थ - मेढारूपधारे बातापी भ्राताको मारके पकाकर इल्वल उनब्राह्मणोंकों श्राद्धकर्ममें खुलाता रहा ॥

—०—

वा०रामायणदृष्टान्त प्र० २७०— रामोपिसहसौमित्रि, र्वनंगत्वासवीर्य्यवान् ॥ स्थूलान्हत्वामहारोही ननुतस्तारतंद्विजम् ॥३॥६८॥३२॥

अर्थ—वो पराक्रमी श्रीरामजी लक्ष्मणके साथ बनमें जाकर स्थूल रोहीमृगोंको मारके जटायुकेलिये पिंडदेनेवास्ते हरिघासको फैलातेभए ॥

—:०:—

वा० रामायणदृष्टान्त प्र० २७१—रोहिमांसानिचोद्धृत्य पेशीकृत्वामहायशाः ॥ शकुनायददौरामो रम्य-हरितशाद्वले ॥३३॥

अर्थ—रमणीयहरिघासवाले स्थलमें महायशस्वीश्रीरामजी रोहीमृगों के मांसोंको निकासकर पिंडबनाकर जटायुपक्षीप्रति देतेभए ॥

—०—

बा० रामायणदृष्टान्तप्र० २७२—आगमिष्यतिमेभर्ता, वन्यमादायपुष्कलम् ॥ रुरून्गोधान्वराहांश्च, हत्वाऽऽदायामिषंबहु ॥३॥४७॥२३॥

अर्थ—सीताके हरणेलिये संन्यासीरूप धारकर आये रावणको सीता जीनें कहाकि मेराभर्त्ता रुरूहरिणोंको गोहोंको सूरोंको मारकर बनके मृगों का बहुतमांसलेकर आवेंगे ॥

—०—

बा रामायण दृष्टान्त प्र० २७३—निहत्यपृषतंचान्यं, मां समादायराघवः । त्वरमानोजनस्थानं, ससाराभिमुखंतदा ॥ ३ ॥ ४६ ॥ २७ ॥

अर्थ - मरीचकोमारकर उससें अन्य पृषतहरिणको मारकर उसके मांसको लेकर श्रीरामजी वेगसें तब अपनेआश्रमको जातेभए ॥

—:*:—

बा० रामायणदृष्टान्त प्र० २७४—मांसानिचसुमृष्टानि, फलानिविविधानिच । रामस्याभ्यवहारार्थं, किंकरास्तूर्णमाहरन् ॥ उत्तरकाण्ड ६ ॥ ४२ ॥ १६ ॥

अर्थ, राजतिलक होनेसे पीछे सीता सहितरामजी बहुतकाल अशोक वनिकामें रहेहैं वहांका प्रसंग है कि रामजीके भोजनालिये सेवकजन मांसों को और बहुततरोंके मीठेफलोंको ल्याते रहे ॥

और जो आपने अहिंसाके श्रेष्ठफल लिये शिक्षाकी सो ठीकहै परंतु देखो प्रमाणांक ४९ आदिकोंमें विहित हिंसा अहिंसारूपही मानीहै ॥

—:०:—

पूर्वपक्षी० अहिंसा धर्मही सबसें श्रेष्ठहै इसपर व्यतिरेकद्वारा एकमुनि का दृष्टांत निम्नकथा महाभारतमें इसतरहहै कि पूर्वसमयमें एकमुनि तप करताथा उसके तपसें भयपाकर सबदेवताओंने इन्द्रसें प्रार्थनाकी कि कोई ऐसाकामहो जिससें यह तपसें गिरजाए, इन्द्र इनकी प्रार्थनाके वश होकर एकनंगीतलवार रखकर आप स्वर्गमें चलाआया, उसबाद कभी कुशा और काष्ठ के वास्ते बनमें फिरतेहुए मुनिने उसतलवारको देखा और सोचा कि—इससें लकड़ीआदि अछीतरह कटसकेगी इसलिये यह लेलेनी चाहिये, तब उसको लेकर बार २ आनन्दसें घुमाने लगा उससें लता एवं वृक्षोंको काटताहुआ वह अपनीउत्तम तपस्यासें भ्रष्टहुआ ॥

शिक्षा— जब कि–लता वृक्षआदिकी हिंसाभी पापको पैदाकरके धर्म सें पतितकरदेतीहै तो फिर पशुआदिकी हिंसाका फल पापोत्पत्तिद्वारादुःख रूप क्यों नहींहोगा ॥

आस्तिक०—यदि ऐसीकथा महाभारतमेंहै तो उसके जिसपर्वमें जिस अध्यायमेंहै उसपर्वका अध्याय का अंक तुम क्यों नहीं लिखसके, अतः जानाजाताहै कि—आप महाभारततक नहींपहुंचे सुनीसुनाई कहानीए लिखतेहो ।

यदि लतावृक्षादिकोंकीहिंसा पतित करदेतीहै तो वोमुनि पहिलेनित्य ही कुशालकड़ी फलशाकआदिकोंके कटनेकर पतित क्यों न हुआ ॥

पूर्वपक्षी०—मांसभक्षणपर चौबेजीका दृष्टान्त–एक चौबेजी—अच्छे धनवान् मुसलमानके मिलनेके लिये गए आपने चौबेजीसें प्रश्नकियाकि–चौबेजी आप देवता क्यों और मुझे म्लेछ क्यों कहतेहो–

यहसुनकर चौबेजी बोले कि—जनाब तुम मट्टीखातेहो इसलिये म्लेच्छ कहलातेहो, तबतो मुसलमानने पूछा कि जनाव मट्टी किसको कहतेहो, चौबेजीने कहाकि जनाब मट्टी गोश्तको कहतेहैं, इसपर मुसलमान साहबनेउलटकर जवाब दिया कि, चौबेजी इसकोतो तुमभी खातेहो क्योंकि, शाकभाजीअन्नवगैरहमें तुमभी जीव मानतेहो इसपर चौबेजीने कहा कि, हमतो जो अन्नादिखातेहैं वहशुद्धजलसें पैदा होताहै, और तुम जो मांस खातेहो, वह मूतसें पैदा होताहै, बस हमारा आपसे इतनाही भेदहै जितना मूत और जलमें, इसलिये हम देवता आप म्लेच्छहैं ॥

आस्तिक०—इसपर फिर जो मुसलमानने कहाथा उसको तुम क्यों छिपातेहो उसको तुम क्यों नहीं कहतेहो—

पूर्वपक्षी०—फिर मुसलमानने क्या कहाथा,

आस्तिक०—फिर मुसलमानने कहाकि, ऐभाईओ तुमभी तो माता पिताके मूतसें पैदा होएहुएहो तो तुमारीजबानसें ही तुमारे में और मूत में कुछफरक साबत न हुआ ॥

होरजो तुमने कहाकि, शुद्धजलसें अन्नशाकादिक पैदाहोतेहैं, यिहभी तुम बेसमझी सें कहतेहो क्योंकि, जलसें ही नहीं किंतु बीजसें भी अन्नादिक वहां पैदा होतेहैं जिसजमीनमें घोड़ाकुत्तागधा भेड मनुष्यादिकों का 'मैला, खात पड़ा होताहै, और शहरके बदररौंका मैलापानी पड़ताहै ऐदोस्तो होशकरो देखो—बड़ेबड़े नगरोंमें जो म्युन्सिपल कमेटीसें हजारों रुपैयोंका मैलाफ़रोखत कराजाताहै वो मैला किसकाममें लगाया जाताहै ॥

पूर्वपक्षी०—शिक्षा मांसका खाना मलमूत्रखानेके बराबरहै इसलिये आपको इसका त्यागकर उत्तमफल दुग्धादिकाही आहार करनाचाहिये ॥

आस्तिक०—अज्ञानका महिमा अतिप्रबलहै कि जिससें तुम सारखे पढ़ेलिखे मनुष्यनकोभी यिहविचार उदय नहींहुआ कि—ऐसेकथनकी अति

व्याप्ति कहांतक पहंचेगी अर्थयिह पहिले तुमारे परमपूज्य पुरुषभी मांसको खाते खुलातेहीरहेहैं अतः ऐसे अनुचितकथनसें तुमारेमें नास्तिकता क्यों नहींहै ॥

पूर्वपक्षी०-मांसही सारेदोषोंका कारणहै-दृष्टान्त एकबाबूसाहब शहर सें एकमीलपर दूररहतेथे उनोंने नौकरको कहा कि-आज मांस लाओ वही पकेगा नौकर बोला बहुतअच्छा-नौकर शहरमें पहुंचकर कसाईकी दुकानसें मांसखरीदा और जब चलनेलगा तब उसे मालिकका हुकम याद आया कि -एककामके साथ औरभी अपनीबुद्धिसें कोईकाम सोचकर करते-आयाकरो आज मांसलियाहै पर बिनाशराबके बाबूजीको उसका आनन्द कुछभी नहींआएगा क्योंकि उसका छोटाभाई शराबभीहै, यदि मैं बिना इसकेलिये जाऊंगा तो फिरमुझे वापस आना पडेगा, यह सोच एकबोतल शराबकीभी खरीदली, फिर सोचा कि-शराब पीकर जब बाबूजीकी अकल को ताला लगजाएगा तो फिर बिना वेश्याके बुलाए भला कब रह सकेंगे तो फिरभी मुझेही आनाहोगा, यहसोच वेश्याभी साथलेली थोडीदूर चलकर सोचनेलगा कि-यह बाजारकीस्त्रियें अनेकरोगोंसें मिलीहुईहोतीहैं तो इसकेसंगसें बाबूजी जरूरही बीमारहोजाएंगे तो फिर डाक्टरकी जरूरत होगी इसलिए डाक्टरको भी साथलेचलें तो अच्छाहै, ऐसासोचकर उसेभी साथकरलिया फिर थोड़ीदूर आगेचलकर उसनें सोचाकि--वेश्याके संगसें पैदाहोनेवाले दुष्टरोगगर्मीसें बचनातो बाबूजीका सर्वथाअसंभव होगा इसलिएबाबूजीके वास्ते तखता लकड़ी आचार्य्यआदि सभी सामग्री भी लेचलताहूं, फिर बार २ शहरमें कौनआवे, यह सोचकर सब समान साथलेकर बाबूजीके सामने हुआ आजतो बहुतदेरके होजानेसें औरभी बाबूजीका मुख मारेक्रोधके लालसा होरहाथा देखतेही उसपर टूट और

झाडनेलगे और यहविचारा कांपताहुआ हाथ बन्धकर बोला कि—हजूर आपकेही हुकमके पालनकरनेमें देरहुईहै, यह कहकर मांसके साथ शराब वेश्यावगैरः बाबूजीके सामनेकिया और साराहाल उसके लानेका सुनादिया तब बाबूसाहबकी होश खुली और फिर मांसखानेसें कसमकरी ॥

शिक्षा—एकमांसके खानेसें औरअनेक बुराइये साथ पैदाहोतीहैं यहांतककि—हमारे प्राणोंकाभी नाशहोकर हमें नरकप्राप्तहोताहै ॥

आस्तिक०—वाह लालबुझकड़जी क्या यिह दृष्टान्तहै, दृष्टान्त नहीं यिहतो किसीबाशेमनुष्यका बनायाहुआ मखौलहै ॥ शोकहै कि—तुम पाण्डित्यकी ध्वजातो बड़ीऊंची दिखलातेहो और बीचसार इतनाभी नहीं कि—शास्त्रीयप्रामाणिकदृष्टान्त एकभी अनुकूल लिखसकें क्या लिखे पढेमनुष्य ऐसे असद्दृष्टान्त बनाकर लिखतेहैं, नहीं मशकरेमनुष्य ऐसे मखौल बनाकर सुनातेहैं, ऐसे २ व्याख्यानोंको सुनकर अशास्त्रीयमनुष्य खुशहोतेहैं, अफ़सोसहै उनकी बुद्धिसें ॥

हेपाठको—लालबुझकड़जीसें पूछाचाहियेकि मांसखानेआदिसें तुरतही प्राणों का नाश होहीनहींसक्ता तो मिथ्याभाषणजन्यपापके भयसे लालबुझकडजीने अपनेलिये यिह डाकटर तखता लकडीआदिक सभीसामग्री मगवाई होगी ॥

हेमित्र—पहिलेसमयोंके सत्पुरुष और इसकालकेभी कश्मीर नयपाल मैथिलादिदेशोंके ब्राह्मणक्षत्रियादि श्रेष्ठपुरुष मांसको खाते खुलातेहीरहेहैं अतः विहितमांसखानेसें बुराइयें नहींहोसक्तीं किंतु शास्त्रसें विरुद्धआचारक-रनेकर बुराइयेंहोतीहैं और धर्माधर्मके निर्णयमें शास्त्रसें विरुद्ध असत्यभाष-णही नरकका द्वारहै ॥

पूर्वपक्षी—भर्तृहरिजीने कहाहै—भिक्षोमांसनिषेवणंप्रकुरुषे, किंतेनमद्यंविना, मद्यंचापितवप्रियंप्रियमहो, वाराङ्गनाभिःसह ॥ तासामर्थरुचिःकुतस्तवधनं, द्यूतेनचौर्य्येणवा, द्यूतचौर्य्यपरिग्रहोऽपिभवतो, भ्रष्टस्यकाऽन्यागतिः ॥

हेभिक्षु—तुम क्या मांस खायाकर्तेहो उ० हां शराबके साथ खाताहुं। प्र० शराबभी पीतेहो उ० हां वेश्याओंके साथ पियाकरताहुं प्र० वेश्या तो धन चाहतीहैं तुम्हारे पास धन कहांसेंआताहै उ० जूये या चोरीसें ॥ यदि यह भी तुम करतेहो तोफिर ऐसेभ्रष्टपुरुषकी औरनीचदशा क्या होसक्तीहै ॥

आस्तिक०—भर्तृहरिके तीनोंशतकोंमें यिहश्लोक नहींहै अतः तुम मिथ्यालेखके पापसें भय नहीं करतेहो, यिह श्लोक निवृत्तिमार्ग वाले संन्यासी विषयकहै क्योंकि—संन्यासी का नाम भिक्षुहै भिक्षुलिये मांस खानेकाविधान नहीं है फिर साथ वेश्या जूआ चोरीसें भिक्षुकी भ्रष्टता कहीहै तो वो ठीककहीहै, क्योंकि—मांससेंबिना वेश्याजूआचोरी, आदिकोंसेंतो गृहस्थभी भ्रष्ट होजाताहै तो संन्यासीका क्या कहनाहै ॥

पूर्वपक्षी०—मांसदोषपर पठानका दृष्टान्त—एक पठान ने एक मनुष्यका गलाकाटदिया जबकि—राजकर्मचारीसें पकड़ाहुआ हाकिमके सामने आयातो हाकिमनें उसे पूछाकि—तूने इसका गला क्यों काटा वह बोला मैं देखताथाकि, यह तलवार कैसी चलतीहै, इसको सुनकर सब आश्चर्य्यहुए—शिक्षा—मांसहारीजीवोंमें दयाका नामतक नहीं रहता, वह

बिनाही किसी अपराधके दूसरेके प्राणोंतककानाश करदेतेहैं, इसलिये ऐसे दुष्ट पदार्थ सें घृणाही करनी चाहिये ॥

आस्तिक०—हेमित्र-सद्विद्याके अभावसें सत्संगके अभावसें धर्म अधर्मके अज्ञानका यिह दोषहै मांसाहारका दोष नहींहै, क्योंकि देखो—

यूरपीन मांसाहारीओंनें कैसे २ शफाखाने दयासें बनाएहैं—उन में लाखों रुपैयोंके औषध दयासें दियेजातेहैं, अपने हाथोंसें आखोंका अपरेशन कर्के मांनों नवीननेत्रबनाकर मांनों गएहुए जहानको फिर दिखलाय देतेहैं।

जो पागल अपने पराएबहुतोंको दुःखदेतेहैं उनसबके कष्ट दूरकरनेलिये मांसाहारीयूरपीनोंने दयाकर कैसे २ पागलखानेके इन्तजाम करेहुएहैं ॥

बहुतलोक जानतेहीहैं—भारतखंडमें उत्तमकुलकेभी पुरुष कन्याओंको मारडालतेथे और काशीमें मनुष्योंको कलवत्तरसें काटडालतेथे, फिर प्रसिद्धहीहै कि मांसाहारी यूरपीनोंनेही दयाकर्के लटकीओंका मारणाऽऽदि हुकमन रोकदिया, महाहत्याके महापापोंसे बचा-लिया, इस्सें" मांसाहारीओंमें दयानहीं रहती,, यिहकथन असत्यहीहै ॥

भारतखंडकेभी-मांसाहारी अनेकमहाराजोंने रामेश्वर गोदावरी काशी बृन्दावन आदिकोंमें लाखोंरुपैओंके खर्चेवाले अन्नक्षेत्र शफाखाने पाठशालाऽऽदिक दयाकर प्रचलित करेहुएहैं अतः" मांसाहारीओंमें दयाका नामतक नहींरहता,, यिहकथन बालपनसेंहै ॥

हेमित्र-सद्विद्याके नहींपढनेकर धर्माधर्मके अज्ञानसें निर्दयताहोतीहै ॥

होरजो तुमने कहाकि"-"ऐसे दुष्टपदार्थसें घृणाही करनीचाहिये,,

सोयिह कथनभी अयुक्तहीहै क्योंकि देखो प्रमाणांक १ आदिकोंमें जब मांसको शुद्धपवित्र कहाहै फिर विहितमांसखानेमें परमपूज्यपुरुष प्रवृत्तहुएहैं तोउसको दुष्टपदार्थ कहना क्या नास्तिकता सें विनाहोसक्ताहै ॥

पूर्वपक्षी०—गौओंकी महिमापर याज्ञवल्क्यजीका और महर्षिच्यवनका दृष्टान्त—राजाजनककी सभामें जिनके सींगोंमें स्वर्ण लगायाहुआथा ऐसीगौओं याज्ञवल्क्यजीने लेलैआं ॥ महर्षिच्यवनजीने अपनामोल एकगौ मन्जूर करा ॥

शिक्षा—पूर्वसमयमें सबसे उत्तमपदार्थ गौएंही समझीजातीथीं महर्षि-लोग सिवागौके अपनेबराबर राज्यादिककोभी नहींसमझतेथे इस्तें सबकोही गौओंकी सेवा करणीचाहिये ॥

आस्तिक०--अबतो सींगोंमे स्वर्णके विनाभी गौएं लेनेको तियारहैं, गौओंको घरघरमें रखनाचाहिये सेवा करनीचाहिये ॥

पूर्वपक्षी ०--नचिकेताके दृष्टान्तमें प्रसिद्धहै शिक्षा गौका दान बहुत-उत्तमहै परंतु वह गौ बूढी बिना दूधआदिके दीहुई उत्तमफलके बजाय दाताको नरकगामी बनादेती है ॥

आस्तिक०-- हेमित्र इसतुमारे कथनसें जानाजाताहै कि—इतनालंबा गौओंकी सेवाका उपदेश तो तुम होरनोंके लिये कर्तेहो परंतु आप गौओं-की सेवा नहीं दुग्धकी सेवाकरनीचाहतेहो ॥

पूर्वपक्षी०—गौकी सेवाके फलपर राजादिलीपका दृष्टान्तहै, शरणमें आएकी रक्षामें राजाशिविका दृष्टान्तहै और भजनोंमेंभी कहाहै कि—गोरक्षाका ध्यानकरो

आस्तिक०—ठीकहै परंतु अजशशहरिणादिक के बलिप्रदानके व मांसभक्षणके प्रकरणमें यिहसबदृष्टान्त अनुपयोगीहीहैं, बहुत क्या हेमित्र पशुबलिदानके और विहितमांसखानेके त्यागमें प्रामाणिक, श्रुतिस्मृतिओंसेंसिद्धदृष्टान्त एकभी तुम नहींदिखलायसके और जो दृष्टान्त दिखलायेहैं वो प्रसंगमें अनुपयोगीहैं अप्रामाणिकहैं ॥

पूर्वपक्षी०—यदि ऐसादृष्टान्त एकभी मैं नहींदिखलाय सका तो तुमनेभी प्रतिज्ञाकरीथी कि-ऐसेयोग्यदृष्टान्त बहुतहीहैं वो अब आपही दिखलाइये ॥

आस्तिक०—अजशशप्रभृतिपशुओंके बलिप्रदानमें व विहितमांसभक्षणमें शिष्टाचाररूप प्रामाणिकदृष्टान्तोंको दिखलायभी आयाहुं औरभी अब दिखलाताहूं

कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयसंहिता दृष्टान्त प्र०२७५—प्रजापति र्वा इदमेकआसीत् सोऽकामयत प्रजाःपशून्त्सृजेयेति सआत्मनो वपा मुदाक्षिद त्तामग्नौ प्रागृह्णात् ततोऽजस्तूपरः समभवत्त ँ स्वायै देवतायाऽआलभत ततोवैस प्रजाः पशूनसृजत ॥

काण्ड २ ॥ प्रपाठक १॥ अनुवाक १॥४॥

इसमन्त्रपर सायणभाष्य दृष्टान्त प्र० २७६—यदिदंप्रजापशुरूपं जगदिदानींदृश्यते तादिदंसृष्टेःपूर्वं प्रजापतिरेक आसीत् प्रजापति रेव स्थितो नान्य-

त्किञ्चिदित्यर्थः ॥ सचप्रजापशुसृष्टिकाम स्तत्साधानत्वेन स्वशरीरादुदर मध्यवर्त्तिनीं पटसदृशीं वपामुदाचिद दुत्खिद्योद्धृतवान् ताञ्चवपा मग्नौ प्रक्षिप्तवान् ततोदग्धाया वपाया अजस्तूपरः शृङ्गरहितः समुत्पन्नः तञ्चाजं स्वात्मरूपां देवतामुद्दिश्यालभत तत्कर्मसामर्थ्यात् प्रजापशूनसृजत ॥

अर्थ—जो यिह प्रजापशुरूपजगत् अब दिखरहाहै वो यिह सृष्टिसें पहिले एक प्रजापतिथा अर्थात् तब प्रजापतिही स्थितथा होरकुछनहींथा वो प्रजापशुरचनेकी कामनावाला प्रजापति अपने उदरसें पटसदृश वपाको निकासता भया उस वपाको अग्निमें डालता भया, दग्धहुई उसवपासें शृंगरहितअजउत्पन्न हुआ उस अजको स्वात्मरूप देवताकेउद्देशकर प्रजापतिनें हनन किया उस कर्मके सामर्थ्यसें प्रजापतिब्रह्माजी प्रजापशुओंको रचता भया ॥

कृष्णयजुर्वेद तैत्तिरीयसंहिता दृष्टान्त प्र० २७७—देवासुरा एषु लोकेष्वस्पर्धन्त सएतंविष्णुर्वामनमपश्यत् तꣳ स्वायैदेवताया आलभत ततोवैसइमान् लोकानभ्यजयत् ॥ का० ३ ॥ प्र० अनु० ॥३ ॥ ११ ॥

इसमन्त्रपर सायणभाष्यदृष्टान्त प्र० २७८—**वामनंह्रस्वंपशुं स्वायैविष्णुरूपायै देवतायै ॥**

अर्थ—इन स्वर्गादिलोकोंके निमित्त देवता और असुर स्पर्धा कर्तेभए विष्णुने इसछोटेपशुको देखा, वो विष्णुजी इस छोटेपशुको स्वात्मरूप विष्णुदेवतालिये हनन कर्ताभया उस कर्मसें वो विष्णुजी इन लोकोंको जीततेभए ॥

—०—

ऋग्वेदसंहिता दृष्टान्त प्र० २७९—**पीवानंमेषमपचन्त वीराः** ॥ अष्टक ७ ॥ मण्ड० १० ॥ अनु० २ ॥ सू० २७ ॥ १७ ॥

इसमंत्रपर सायणभाष्य दृष्टान्त प्र० २८० —**वीराःप्रजापतेः पुत्रा अङ्गिरसः पीवानं स्थूलं मेदोमांसादियुक्त मित्यर्थः । मेषमजमपचन्त प्रजापतिरूपस्येन्द्र स्यार्थाय पक्तवन्तोऽभवन् पशुयागं कुर्वन्तइत्यर्थः**

अर्थ—प्रजापतिके पुत्र आङ्गिरस मेदःमांसादियुक्त स्थूलअजको प्रजापतिरूप इंन्द्रकेलिये पकातेभए अर्थात् पशुयज्ञको करतेभए ॥

—०—

और प्रमाणांक १०४ आदिकोंमें अगस्त्यमुनिजीकाभी दृष्टान्त दिखा चुकाहूं फिर वहां देखलीजिये ॥

मनुस्मृति—असंख्यदृष्टान्त प्र० २८१—**बभूवुर्हिपुरोडाशा भक्ष्याणांमृगपक्षिणाम् । पुराणेष्वृषियज्ञेषु, ब्रह्म**

क्षत्रसवेषुच अ० ५ ॥ २३ ॥

इसपर सर्वज्ञनारायणकी टीका प्र० २८२—पुराणेषुअतिपूर्व कालेषुमृगपक्षिमांसेन पुरोडाशा बभूवुः ॥

इसपर कुल्लूकभट्टकी टीका द० प्र० २८३—यस्मात्पुरातनेष्वपि ऋषिकर्तृकयज्ञेषु भक्ष्याणांमृगपक्षिणां मांसेन पुरोडाशा अभवंस्तस्माद्यज्ञार्थमधुनातनैरपि मृगपक्षिणोवध्याः ॥

इसपर रामचन्द्रकी टीका द० प्र० २८४—भक्ष्याणां मृगपक्षिणामगस्त्येन प्रोक्षितानां मांसैःपुरोडाशाः

अर्थ—जिस्सें ऋषिओंके पुरातन यज्ञोंमें और मिलेहुए ब्राह्मणक्षत्रियों के यज्ञोंमेंभी भक्ष्यमृगपक्षिओंके मांसके पुरोडाश होतेरहेहैं इस्सें अबके ब्राह्मणादिकोंनेभी यज्ञलिये विहितमृगपक्षी मारणे चाहिये ॥

यज्ञमें देवताऽऽदिकोंको जो पहिले भाग दिये जातेहैं उनका नाम पुरोडाशहै ॥

हेपाठको—पहिलेसमयोंसें देवतोंके ब्राह्मणोंके क्षत्रियोंके असंख्ययज्ञ हुएहैं उनमें मृगपक्षीओंके मांसके पुरोडाश होतेरहेहैं अतः वो असंख्य दृष्टान्तहैं ॥

वासिष्ट दृष्टान्त प्र० २८५—इत्युक्त्वाऽस्मान्पितातत्र, चुचुम्बाभ्यालिलिङ्गच । ददौदेव्यायदानीत, मस्मभ्यंचतदामिषम् ॥ नि. पू० प्र० ६ ॥ सर्ग २० ॥ ४२ ॥

अर्थ—जीवन्मुक्त चिरंजीवी भुशुंडजीने कहा कि-वहां हमको पिता ऐसेकहकर चुंबिताभया, आलिंगन कर्ताभया और देवीसें जो मांस ल्याया था वो मांस हमको देताभया ॥

ऽ—:०:—ऽ

विष्णुनारायणके परमप्रियसदस्य कश्यपमहर्षिके पुत्र गरुडभगवान्का दृष्टान्त महाभारत प्र० २८६

मात्राचात्रसमादिष्टो, निषादान्भक्षयेतिह ।
नचमेतृप्तिरभवद्, भक्षयित्वासहस्रशः॥१॥२६॥११

अर्थ—गरुडजी पितामहर्षिकश्यपके पास पहुंचे तब कश्यपजीने पूछा कि—हेपुत्र तुमको भोजन तो बहुत मिलता है तब गरुडजीने कहा कि निषादोंको खाले,, ऐसे माताने आज्ञाकीथी फिर बहुत निषादोंकोखाकरभी मुझे तृप्ति नहींहुई ॥

—०—

महाभारतदृष्टान्त प्र० २८७—**ततस्तस्यगिरेःशृङ्ग,मास्थायसखगोत्तमः । भक्षयामासगरुड, स्तावुभौगजकच्छपौ ॥१॥३०॥३०॥**

अर्थ—तदनन्तर उसपर्वतके शृंगमें स्थित होकर वोपक्षिराज गरुड जी उसहस्तीको और कच्छपको खातेभए ॥

—०—

देखो प्रमाणांक १११ आदिकोंकों जैसे चित्रकूटपर कुटिकी प्रतिष्ठा श्रीरामजीने कृष्णमृगके मांससें की थी वैसेही इन्द्रप्रस्थमें सभास्थानकी प्रतिष्ठाभी महाराजायुधिष्ठिरने मांसादिकोंसें कीथी—

महाभारतदृष्टान्त प्र० २८८—ततः प्रवेशनंतस्यां चक्रे-राजायुधिष्ठिरः ॥ अयुतंभोजयित्वातु, ब्राह्मणानां-नराधिपः पर्व२॥ अ०४॥१॥ साज्येनपायसेनैव, मधुनामिश्रितेनच ॥ भक्ष्यैर्मूलैःफलैश्चैव, मांसै र्वाराहहारिणैः ॥२॥ मांसप्रकारैर्विविधैः खाद्यैश्चा-पितथान्नृप ॥३॥

अर्थ—जब मयदानवनें सभास्थान बनाकर तियार करदिया तदनन्तर घृत मधुसहित क्षीरसें भक्ष्यमूलफलोंसें और वराह हरिणादिकोंके मांसोंसें और नानाप्रकारके मांसोंसें तथा खाद्य चोष्य पेय वस्तुओंसें दशहजार ब्राह्मणोंको भोजनखुलायकर उस सभास्थानमें महाराजा युधिष्ठिरजी प्रवेशकरतेभये ॥

——:०:——

महाभारतदृष्टान्त प्र० २८९—गृह्णीष्वपिठरंताम्रं मया-दत्तंनराधिप ॥ यावद्वर्त्स्यतिपांचाली पात्रेणाने-नसुव्रत ॥प० ३॥३॥७२॥ फलमूलामिषं शाकं, संस्कृतंयन्महानसे ॥ चतुर्विधंतदन्नाद्य मक्षय्यं-तेभविष्यति ॥७३॥

अर्थ—प्रसन्नहुए सूर्य्यभगवान् वरदेते हैं कि—हेसुव्रत राजन् युधिष्ठिर मेरेदिये तांबेके देचकेको ग्रहणकर पाकस्थानमें जोकुछ फल फूल मांस

शाक पकाया जावेगा इसपत्रसें जबतक द्रौपदी वर्तेगी तबतक वो चारप्रकार का अन्न अक्षय होगा ॥

महाभारत दृष्टान्त प्र० २६०-**ब्राह्मणांस्तर्पमाणेषु, येचान्नार्थमुपागताः। आरण्यानांमृगाणांच मांसैर्नानाविधैरपि** ॥ ३ ॥ २६२ ॥ २ ॥

अर्थ—जनमेजय पूछताहै कि—बनके मृगोंके नानाविध मांसोंसें ब्राह्मणोंको तथा होर जो अन्नकेलिये आये उनको भी तृप्तकर्तेहुए पांडवोंमें दुर्योधनादिक कैसा वर्ताव कर्तेभए ॥

महाभारत दृष्टान्त प्र०२६१-**चरन्तोमृगयांनित्यं' शुद्धैर्बाणैर्मृगार्थिनः॥ पितृदैवतविप्रेभ्यो' निर्वपन्तोयथाविधि** ॥ ३ ॥ ३६ ॥ ४५ ॥

अर्थ--वो मृगाभिलाषी पांडव विषरहितबाणोंसें नित्यशिकार खेलते पितरदेवता ब्राह्मणोंको यथा शास्त्रविधिसें अर्पणकर्तेहुए बनमें वस्तेरहे ॥

अब राजानल दमयंतीके दृष्टान्त देखिये-

जब आपत्कालमें राजानल अयोध्यामें राजाऋतुपर्णके सारथिहुए तब उसका नाम बाहुक हुआ, वो ऋतुपर्णराजा बाहुकसारथि केसाथ विदर्भदेश 'कुंडिननगरमें' नागपुरमें आए तब वहां दमयन्तीके पिता राजाभीमने ऋतुपर्णको सत्कारसें निवासस्थान दिया तब--

महाभारतदृष्टान्त प्र०२६२-**ऋतुपर्णस्यचार्थाय, भोजनीयमनेकशः। प्रेषितंतत्रराज्ञातु, मांसंबहुचपाशवम्** ॥ ३ ॥ ७५ ॥ ११ ॥

अर्थ-वहां ऋतुपर्णकेलिये खानेयोग्य अनेकवस्तु राजाभीमने भेजे और बकराऽऽदिपशुका बहुतमांसभी भेजा-

—०—

तब यिहजो बाहुकहै वो राजानलहै वा कोई होर है, ऐसी परीक्षालिये दमयन्तीने केशिनीदासीको कहा महाभारत दृष्टान्त प्र० २९३—**पुनर्गच्छप्रमत्तस्य, बाहुकस्योपसंस्कृतम् । महानसाच्छृतंमांस, मानयस्वेहभाविनि** ॥ ३ ॥ ७५ ॥२० ॥

अर्थ-फिर तूं जा हे केशिनि, प्रमादीबाहुकका पकायाहुआ महानससें मांसको यहां लेआ । भाव यिह, जैसेअश्वविद्यामें राजानल अतिकुशलथे वैसेमांसपकानेमेंभी अति चतुरथे इस्सें राजानलके पकाएमांसका स्वाददेख कर मैं निश्चयकरलवुंगी कि, यिह मांस राजानलका पकायाहै ॥

महाभारतदृष्टान्त प्र० २९४-**सागत्वाबाहुस्याग्रे,तन्मांसमपकृष्यच । अत्युष्णमेवत्वरिता, तत्क्षणात्प्रियकारिणी । दमयन्त्यैततः प्रादा,त्केशिनी कुरुनन्दन** ॥ ३ ॥ ७५ ॥ २१ ॥

अर्थ-हे युधिष्ठिर वो प्रियकारिणी केशिनी बाहुककेआगेजायके उस अतिगर्महीं मांसको झटिति खैंचकर तदनन्तर तत्क्षणही दमयन्ती को देतीभई ॥

—०—

महाभारतदृष्टान्त प्र० २९५—सोचितानलसिद्धस्य-मांसस्यबहुशः पुरा। प्राश्यमत्त्वानलंसूतं, प्राक्रोशद्भृशदुःखिता ॥ ३ ॥ ७५ ॥ २२ ॥

अर्थ—जितनीअग्निसें पकानायोग्यहै उतनीयोग्यअग्निसें राजानलके पकाएहुए मांसको पहिलेबहुतवार खानेकर वो दमयन्ती उसमांसको खाकर उसबाहुकसारथिको राजानल जानकर अति दुःखीहुई रोती रही ॥

—०—

महाभारतदृष्टान्त प्र० २९६-ब्राह्मणार्थेपराक्रान्ताः,शुद्धैर्बाणैर्महारथाः। निघ्नन्तोभरतश्रेष्ठ, मेध्यान्बहुविधान्मृगान् ॥ ३ ॥ ८० ॥ ८ ॥

नित्यंहिपुरुषव्याघ्रा, वन्याहारमरिन्दमाः।
उपाकृत्यसमाहृत्य, ब्राह्मणेभ्योन्यवेदयन् ॥९॥

इसपर नीलकण्ठीटीका प्र० २९७—उपाकृत्यहिंसित्वा, उपहृत्ययज्ञार्थंसमाहृत्य ॥

अर्थ—हेजनमेजय—पुरुषोंमेंश्रेष्ठ पराक्रमवालेशत्रुओंको दबानेवाले महारथी पांडव विषरहितबाणोंसें ब्राह्मणोंकेलिये यज्ञकेयोग्य बहुततरोंके मृगोंको मारतेहुए ॥ ८ ॥ नित्यही मारकर यज्ञालिये वनकेमृगमांसोंका आहार एकठाकर्के ब्राह्मणोंको निवेदन कर्तेरहे ॥ १ ॥

—०—

तुलसीरामायणदृष्टान्त प्र० २९८—बन्धुसखासबलेहि बुलाई बनमृगयानितखेलहिजाई । पावनमृग मारहिजियजानी, दिनप्रतिनृपहिदिखावहिआनी जेमृगरामबाणकेमारे, तेतनुतजिसुरलोकसिधारे बालकाण्ड १ ॥

देखो—नित्यमृगोंको मारकर श्रीरामजी पितादशरथको हररोज दिखलाते रहे ॥

—०—

महाभारतदृष्टान्त प्र० २९९—अगस्त्यएवकृत्स्नंतु,वातापिंबुभुजेततः ॥ भुक्तवत्यसुरोऽह्वान-मकरोत्तस्य चेल्वलः ॥ ३ ॥ ९९ ॥ ६ ॥ वातापेनिष्क्रमस्वेति, पुनः पुनरुवाचह । तंप्रहस्याब्रवीद्राजन् अगस्त्योमुनिसत्तमः ॥ ८ ॥ कुतोनिष्क्रमितुंशक्तो, मयाजीर्णस्तु सोऽसुरः ॥ ९ ॥

अर्थ—महर्षिअगस्त्यजीनेंही मेढारूपहुए पकाएहुए सारे वातापिकोखाए लिया फिर हेवातापे निकसआ ऐसे फिर २ वातापिका इल्वलअसुर आह्वान कर्ताभया, पुनः उसको हसकर्के मुनिवर अगस्त्यजी बोले कि; मैने हजम करालियाहै वो वातापि निकसनेको कैसे समर्थ होसक्ताहै ॥

—०—

महाभारतदृष्टान्त प्र० ३०० समृगान्महिषांश्चैव विनिघ्न नृराजसत्तमः। गंगामनुचचारैकः सिद्धचारणसेविताम् ॥ १ ॥ ९७ ॥ २५ ॥

अर्थ-शान्तनुमहाराजाएकाकी मृगोंको महिषोंको मारताहुआ सिद्ध चारणोंसे सेवितगंगाके तट विचरताभया ॥

महाभारत दृष्टान्त प्र० ३०१—अगस्त्यः सत्रमासीन श्चकारमृगायामृषिः । आरण्यान्सर्वदैवत्यान्, मृगान्प्रोक्ष्यमहावने ॥ १ ॥ ११८ ॥ १४ ॥

अर्थ-यज्ञकर्तेहुए महर्षिअगस्त्यजी सर्वदेवतोंको देने योग्य बनके मृगों को प्रोक्षणकर्के महाबनमें शिकार करतेरहे ॥

महाभारत दृष्टान्त प्र० ३०२—भुञ्जानामुनिभोज्यानि रसवन्तिफलानिच। शुद्धबाणहतानांच मृगाणां-पिशितान्यपि ॥ ३ ॥ १६० ॥ ८ ॥

अर्थ मुनिओंके भोजनयोग्य रसवालेफल और शुद्धबाणोंसे मारेहुए मृगोंके मांसोंकोखातेहुए पांडव गंधमादनपर्वतपर निवासकरतेरहे ॥

महाभारत दृष्टान्त प्र० ३०३—ददर्शाथद्विजःकश्चि द्राजा नंप्रस्थितंवनम्। अयाचतक्षुधापन्नः, समांसंभो-जनंतदा ॥ १ ॥ १७८ ॥ ४ ॥

अर्थ—बनको गैहुएराजाको देखकर तब कोईक क्षुधातुरहुआ ब्राह्मण मांससहितभोजनको मांगताभया ॥

महाभारतदृष्टान्त प्र० ३०४—ततस्ते यौगपद्येन, ययुःसर्वेचतुर्दिशम्। मृगयांपुरुषव्याघ्रा ब्राह्मणार्थेपरंतपाः ॥ ३ ॥ २६४ ॥ ४ ॥

अर्थ—फिर वो पुरुषोंमेंश्रेष्ठ शत्रुको तपानेवाले पांडव एककालमें चारोंदिशोंको ब्राह्मणोंलिये शिकारको जातेरहे ॥

—०—

महाभारत दृष्टान्त प्र० ३०५—पाद्यंप्रतिगृहाणेद, मासनंचनृपात्मज ॥ मृगान्पंचाशतंचैव, प्रातराशंददानिते ॥३॥२६७॥१३॥

उसीका दृष्टान्त प्र० ३०६—वराहान्महिषांश्चैव याश्चान्यामृगजातयः ॥ प्रदास्यतिस्वयंतुभ्यं, कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः ॥१५॥

अर्थ—राजाजयद्रथको द्रौपदी कहतीहै कि—हेराजपुत्र पादप्रक्षालनलिये इसजलको और आसनको लीजिये, और सवेरेके भोजनको पचासमृग तुमारेलिये देतीहूं ॥ १३ ॥ वराहोंको और महिषोंको होर जो मृगजातिहैं उनको युधिष्ठिरजी आप तुम्हारेलिये देंगे ॥१५॥

—०—

प्रहादजीको जीवन्मुक्तब्राह्मणका कथन मोक्षधर्ममें महाभारत दृष्टान्त

प्र० ३०७—कणंकदाचित्खादामि, पिण्याकमपिच-ग्रसे ॥ भक्षयेशालिमांसानि, भक्ष्यांश्चोच्चावचा-न्पुनः ॥प्र०१२॥ अ०१७६ ॥२१॥ अर्थ—कबी कणको कबी तिलों के खल को, कबी चावल मांसको खाताहुं अर्थात् कबी बढिआ कबी घटिआ भक्ष्यस्तुओंकों खाताहुं ॥

महाभारतदृष्टान्त प्र० ३०८—सगृहीत्वासुमनसो,मन्त्र पूताजनाधिप। मोदकैःपायसेनाथ मांसैश्चोपाहरद् बलिम् ॥ प० १४ ॥ ६५ ॥ ४ ॥

अर्थ—हेराजन्मंत्रोंसें पवित्रपुष्पोंको ग्रहणकर्के वह युधिष्ठिर महाराजा लड्डू क्षीर और मांसोंसें बलि देताभया ॥

—ऽ०ऽ—

अध्यात्मरामायणदृष्टान्त प्र० ३०९—तत्रमेध्यंमृगंहत्वा पक्त्वाहुत्वाचतेत्रयः। भुक्त्वावृक्षदलेसुप्त्वा, सुख मासततांनिशाम् ॥ क० २ ॥ स० ६ । २७॥

अर्थ—वहांवनमें मेध्यमृगको मारकर पकाकर फिर होमकर्के वह तीनों अर्थात् सीतारामलक्ष्मण वृक्षके पत्रपर भोजनकर्के शयनकर वो रात्रि सुखसें स्थितहुए ॥

—०—

भगवद्भागवतदृष्टान्त प्र० ३१०—तत्राविध्यच्छरैर्व्याघ्रा, न्सूकरान्महिषानृरून्। शरभान्गवयान्खड्गान्,

हरिणान्शशशल्लकान् ॥ स्कन्ध १० ॥ अ० ५८ ॥ १५ ॥

भगवद्भागवत दृष्टान्त प्र० ३११—**तान्निन्युःकिंकराराज्ञे, मेध्यान्पर्वण्युपागते** ॥ १० ॥ ५८ ॥ १६ ॥

अर्थ—एकसमय श्रीकृष्णजीके साथ अर्जुननें गहनवनमें प्रवेशकिया वहांवनमें बाणोंसें व्याघ्रोंको सूरोंको महिषोंको रुरुमृगोंको, शरभमृगोंको, गवयोंको, गैंडेओंको, हरिणोंको, खरगोशोंको, शल्लकपक्षिओंको, मारा ॥ ॥ १५ ॥ उनमेध्यमृगोंको पर्वकेआनेपर राजायुधिष्ठिरकेलिये किंकरजन पहुंचातेभए ॥ १६ ॥

—०—

विदितरहे कि, उत्सवका और चतुर्दशी अष्टमी अमावास्या पूर्णिमा रविसंक्रान्ति, इनतिथिओंका नाम पर्वहै ॥

हेपाठको—देखो हस्तिनापुर श्रीगंगाजीकेतटपर युधिष्ठिरादिक धर्मात्मा जन पर्वसमयमेंभी देवादिकर्मों निमित्त मेध्यपशुओंके मांसोंको वर्ततेरहेहैं।

फिर देखो प्रमाणांक ३० को बहुतकालसें जैनमतका असरहोनेकर आज प्रकरणानुसार मांसके नामकहनेसेंभी मेरे भ्राता अतिक्षोभकर्तेहैं ॥

—०—

कथनकरे दृष्टान्तोंका संक्षेपसेंअनुवाद पूर्वपक्षीद्वारा करतेहुए कहतेहैं कि, उक्तदृष्टान्तरूप शिष्टाचारोंका त्यागही वेदादिकोंसें भ्रष्टताहै ॥

रामाद्याअवतारमुख्यगणिता, देव्योपिसीता दयो ब्रह्मर्षिप्रवराश्चवैदिकरताः, श्रीकुम्भयोन्यादयः ॥ राजानश्चनलादयोपिदमय, न्त्याद्याःस्वधर्माचला,

धर्मासक्तयुधिष्ठिरप्रभृतयो, धर्मादिजाताहिये ॥ ३ ॥ देवाभ्यागतभूसुरादिनृवरे, भ्योमांस-दानेपुन, र्मांसाहारउदारधर्मयशसः, सर्वेप्रवृत्ताहिते ॥ नोखादामिपलं तथापिसुरसं, बुद्धिप्रदम्पौष्टिकं, वेदेभ्योपिसखेरमृतिप्रभृतितो; भ्रष्टस्यकाऽन्यागतिः ॥

टीका–पूर्वपक्षी० अवतारोंमें मुख्यागिणेहुए रामलक्ष्मणादिक और सीताऽऽदिदेवीएं तथा वैदिककर्मोंमें अनुरागी ब्रह्मऋषिओंमें अति श्रेष्ठ अगस्त्यादिमहर्षि और इक्ष्वाकुनल विकुक्षि अम्बरीषप्रभृति महाराजे तथा स्वधर्मोंमें स्थिर दमयन्तीआदिक महारानीएं, धर्मराजइन्द्रादिकोंसें उत्पन्न हुए स्वधर्मोंमें आसक्त युधिष्ठिर अर्जुनभीमसेनआदिक, यिहसब धर्मयशवाले श्रेष्ठपुरुष देवताअतिथिब्राह्मण आदिकोंप्रति मांसदानमें पुनः मांसखानेमें प्रवृत्तहुएहैं यद्यपि–तथापि अतिपुष्टिकारक बुद्धिदेनेवाले सुष्टुरसीले मांसको मैं नहींखाता ॥

उत्तरसिद्धान्ती०—हेमित्र–वेदोंसें और स्मृतिआदिकोंसें भ्रष्टहुए पुरुषकी होर क्या दशा होतीहै अर्थात्—श्रुतिस्मृतिओंसें विहित जो शिष्टपुरुषोंके आचारहैं उनाशिष्टाचारोंका त्यागही वेदादिकोंसें भ्रष्टताहै ३॥४॥

—:*:—

अन्तर्यामीके अनुग्रहसें द्वितीयप्रकाशकी समाप्तिको सूचनकर्तेहुए परमेश्वरके स्मरणरूप मंगलाचरणको अवकरेहैं—

आरब्धोयान्नियुक्तेन, मयाऽसौतदनुग्रहात् द्वितीयोऽयंप्रकाशोऽस्य निर्मलोऽप्युदितीकृतः ॥ ५ ॥

टीका—जिसअन्तर्यामीपरमेश्वरकर प्रेरेहुए मैंने यिहभक्ष्यनिर्णय भास्करग्रन्थ आरम्भकराथा उसपरमेश्वरके अनुग्रहसें इसग्रन्थका यिह दूसरादृष्टान्तप्रकाशभी निर्मल उदय करदियाहै ॥ ५ ॥

चौपाई—शुरूकियोपुस्तकमैं जिससें, ❁ प्रेरितहोउसकीहिकृपासें ॥
दूजोयिह दृष्टान्तप्रकाशा, ❁ निर्मलउदयकियोतमनाशा ॥

इतिश्रीहरिद्वारे पातञ्जलाश्रमनिवासिना
स्वामितेजोनाथेनोदितीकृते
भक्ष्यनिर्णयभास्करे
द्वितयोदृष्टान्त
प्रकाशः
॥ २ ॥

भक्ष्यनिर्णयभास्कर ।

* श्रीगणनाथायनमोनमः श्रीसरस्वत्यैनमोनमः *

चौपाई—ध्याकरबन्दोताईशानं, हमारि धियोंकाप्रेरणवानं ॥
हमरिधियोकोप्रेरेईशा, सत्ययुक्तिकथनेजगदीशा ॥

प्रथमप्रकाशमें अजशशहरिणादिक पशुओंके बलिप्रदान और मांस भक्षणविषयके विधायक श्रुतिस्मृतिआदिकोंके वाक्यरूप प्रमाणोंको दिखलायकर द्वितीयप्रकाशमें उसी अर्थविषयके शिष्टाचाररूप असंख्य दृष्टान्त दिखलाए अब उसीअर्थमें सत्ययुक्तिओंके दिखलानेलिये तृतीययुक्तिप्रकाश का आरम्भकर्तेहुए निर्विघ्नसमाप्तिकेलिये पहिले मङ्गल श्लोकका उच्चारण करतहैं ॥

ध्यात्वावंदेतमीशान, मस्मद्धीप्रेरकोहियः ।
धियोनःप्रेरयत्वीशः, ससद्युक्तिनिरूपणे ॥ १ ॥

टीका—ध्यानकर्के मैं उस परमेश्वरको बन्दनाकर्ताहुं जो हमारी बुद्धिओंका प्रेरकहै वो अन्तर्यामीईश्वर हमारी बुद्धिओंको सत्ययुक्तिओंके निरूपण में प्रेरे ॥ १ ॥

आदौमानशतानिसन्तिसततं, संदर्शयित्वासखे, यस्मिन्नेवपलाशनेपशुबलौ, मध्येप्रकाशेमया। दृष्टान्ताहिपुरातनाः सुबलिनः, प्रामाणिकादर्शिता, युक्तीर्दर्शयितुंतृतीयइहचा, रब्धःप्रकाशःसतीः ॥ २ ॥

टीका—जिसही पशुबलिदानविषयमें और मांस भक्षण विषयमें बहुत श्रेष्ठप्रमाणोंको आदिप्रकाशमें दिखलायके द्वितीयप्रकाशमें प्रमाणसिद्ध पुरातन सुष्टुबलवाले दृष्टान्त दिखलाएदिएहैं, हेसखे उसीविषयमें सत्य-युक्तिओंके दिखलानेलिये तृतीययुक्तिप्रकाश आरम्भकराहै॥

—:०:—

शंका—जब सैंकड़ेप्रबलप्रमाण और शिष्टाचाररूप असंख्यदृष्टान्त दिखलायेदियेहैं तोफिर उसमें युक्तिओंके दिखलानेकी क्या आवश्यकता है इसका उत्तर कहते हैं॥

दृष्ट्वापिमानानिबहूनिसन्ति, श्रुत्वापिदृष्टान्त-शतम्प्रशस्तम् युक्तीर्विनानैवसयातितोषं, यो-ऽश्रद्दधानोऽस्तिकुतर्कबुद्धिः॥ ३॥

टीका—श्रुतिस्मृतिआदि श्रेष्ठ बहुतप्रमाणोंको देखकरभी तथा बहुत प्रामाणिक दृष्टान्तोंको सुनकरभी युक्तिओं विना वो पुरुष संतोषको नहीं प्राप्तहोसक्ता जो श्रुतिस्मृतिआदिकोंमें श्रद्धासेंरहित कुतर्क बुद्धिवालाहै अतः उसलिये श्रेष्ठ युक्तिओंके दिखलानेकी आवश्यकताथी इसलिये तीसरे प्रकाशका आरम्भकरा है॥

—०—

पूर्वपक्षी०—मांसके त्यागमेंभीतो युक्तिएं हैं॥

आस्तिक०—हेमित्र—वो युक्तिएं आप पहिले कहो॥

—०—

पूर्वपक्षी०—सुनिये अहिंसाप्रदीपमें कहा है कि—यदि आपकहोंकि [ईश्वरने सब पशुआदिजीव मनुष्योंकेलिये बनाएहैं इसलिये मनुष्य का अधिकारहै हकहै कि—वह जैसा चाहे उनसें वैसाही कामले क्योंकि—मनुष्य

ही सबसें अच्छाहै चाहे वह उनके दूधआदिकों अपने काममें लावे अथवा मांसको सर्वथा ऐसाकरनेपर मनुष्यको दोषवाला नहीं समझना चाहिये] तो इसका उत्तर सभापति सभाके और पिता पुत्रके दृष्टान्तसें कहागयाहै कि–खानेकेलिये नहीं बनाएहैं ॥

आस्तिक०प्रश्न उत्तर आपका अज्ञानसें भराहुआहै क्योंकि–"ईश्वर ने सबपशुआदिजीव मनुष्योंके खानेलिये बनाएहैं" ऐसेतो कोईभी नहीं कहता इसीसें गर्दभ श्वान बानर काक किरली चींटीआदि सब जीवोंको कोईभीमनुष्य नहींखाता, और सबजीवोंको खाना किसीके धर्मपुस्तकमें कहाभी नहींहै किंतु धर्मपुस्कोंमें जिसाजिस बकरा भेड दुम्बा हरिण शश तित्तिर बटेराऽऽदिकोंके मांसखानेका विधान कराहुआहै उसउसकेही मांसको आस्तिकमनुष्य खातेहैं ॥

यदि परमेश्वरने भेडबकराऽऽदिक मनुष्योंकेखानेलिये न बनाएहोतेतो उनको मनुष्य कबी न खासक्के क्योंकि, सर्वशक्तिमान्ईश्वरतो सदा सत्यसंकल्प हीहै, सत्यहोवे व्यर्थ नहीं होवे अर्थात् तत्कालसफलहोवे संकल्प जिसका उसको सत्यसंकल्पनामसें पंडितजनकहतेहैं, ऐसे सत्यसंकल्पईश्वरका संकल्प कदापि व्यर्थ नहीं होसक्ता ॥

जैसे गौभैंस बैलहस्तिआदिकोंके खानेलिये ईश्वरने बकराभेडदुम्बाऽऽदिक नहीं बनाए, इस्सें वो उनके मांसको नहीं खासक्के ॥

और जैसे सत्यसंकल्पपरमेश्वरने सिंहादिकोंका कच्चामांसही आहार बनायाहै अतः वो घासआदिको नहीं खायसक्के होर जैसे सत्यसंकल्पईश्वर नें काकश्वानमार्जारआदिक जीवोंकेलिये मांस और अन्नादिकदोनोंआहार रचेहैं इससें वो मांसकोभी अन्नादिककोभी खासक्तेहैं ॥

अर्थात् सत्यसंकल्पपरमेश्वरने जिस २ जीवका जोजो आहार नियत कराहै वोवो जीव उसी २ आहारको खासक्ताहै होर को नहीं खायसक्ता ॥

एवं सत्यसंकल्पईश्वरने मनुष्योंकेखानेलिये भेडबकरादिकोंका मांस और अन्नादिकबनाएहैं तबही परमधर्मनिष्ठश्रीरामलक्ष्मणादिक तथा वेद वेताब्राह्मणभी अन्नादिको और मांसकोखातेरहेहैं, अबभी ब्राह्मण व क्षत्रिय राजेमहाराजेआदि मांसको खातेहीहैं ॥

यदि परमेश्वरने बकराभेडदुम्बाऽऽदिक मनुष्योंके खानेलिये न बनाए होतेतो वेदसूत्रस्मृतिओंमें पशुबलिप्रदानका मांसभक्षणका विधान कहींभी न करसक्ते परंतु वहां अनेक २ वाक्यनसें विधान कराहुआहै इस्सें जाना जाताहै कि, मनुष्योंके खानेलिये ईश्वरने बनाएहैं तबहीतो योगयुक्त पुरुषोंनें उसका विधान कराहै ॥

हेमित्र—असंख्यपदार्थहैं वो असंख्यप्रयोजनोंकेलिये बनाएहोतेहैं—

जैसे गुरुजन ज्ञानदानसें अज्ञानके नाशलिये होतेहैं परंतु यदि मूर्ख अज्ञानीको गुरु बनाया जावेतो वो अज्ञानकी दृढताका कारणहोजाताहै ॥

मातापिता सन्तानके पालणपोषणआदिकोंलिये होतेहैं वो यदि दुरदृष्ट उदयहोवेतो मातापिताभी सन्तानके प्राणान्तदुःखलियेही होजातेहैं । जैसे पहिलेसमयमें केईअज्ञानी पापीमनुष्य अपनी कन्यांको मारडालतेथे फिर योग्यबुद्धिमान् न्यायकारी गवर्मिन्टनें उस महापापको हुकमन बन्दकरादिया इस्सें मैं अंगरेजगवर्मिंटको धन्यवादकर्ताहूं जिनोंनें ऐसे महापापोंसें बचा लियाहै ॥

और जैसे पुत्र मातापिताकी सेवाऽऽदिकोंलिये होताहै परंतु दुरदृष्ट दुर्वासनाके प्रभावसे वो पुत्रभी अतिकष्टदायक होजाताहै ॥

बकरा भेडआदिक मनुष्योंके खानेवास्ते होतेहैं परंतु कहीं कोई २ वो सिंहव्याघ्रादिकोंके खानेमेंभी आयजातेहैं ॥

तात्पर्य्य यिह—जीवोंके कर्मानुसारही जगत्की विचित्र रचना परमेश्वर कर्ताहै अतः जिसजिस भोक्ताके जैसेजैसे उत्तम वा मध्यम वा निकृष्ट कर्महोतेहैं उसउसभोक्ताके लिये वैसेवैसेही भोग्यपदार्थोंको परमात्मा रचदेताहै ॥

इसीअभीप्रायसे कहाहै महाभारतके उद्योगपर्वमें—

विदुरनीति प्र०३१२—**आढ्यानांमांसपरमं मध्यानां-गोरसोत्तरम् ॥ तैलोत्तरंदरिद्राणां भोजनंभरतर्षभ ॥** अ० २॥४९ अर्थ— हेराजन् धृतराष्ट्र—धनराज्यादि संपदावाले पुरुषोंका मांस प्रधान भोजनहै, मध्यमपुरुषोंका गोरसवाला, और निर्धनदीनमनुष्योंका तैलयुक्त भोजन होताहै ॥

हेपाठको—प्रसिद्ध सुननेमें देखनेमेंभी आताहै कि राजे महाराजे पातशाहआदिक भाग्यवानोंका मांसही प्रधानभोजन होताहै, हुआहै ॥

पूर्वपक्षी०—जब न्यायकारी परमात्माने जीवोंके पूर्वकर्मकेअनुसारही अनेकप्रकारके जीवोंके शरीर रचेहैं तो सृष्टिको अनादिमाननेवाले यह कैसे कहसक्तेहैं कि—बकरीआदिजीव हमारेही पेटमें जानेके वास्ते ईश्वरने रचेहैं, ऐसा माननेकर ईश्वरके दयालु और न्यायकारी नामपर धब्बा लगाना नहीं तो होर क्याहै ॥

आस्तिक०—हेपाठको—देखो कैसी असत्ययुक्ति कहीहै, अब इसीअर्थको मैं स्पष्टकर दिखलाताहुं, सृष्टि और कर्म प्रवाहरूपसें अनादिहैं, परमेश्वर निरतिशयन्यायकारीहै अतः पुण्यपापसें विना सुखदुःखको व उनके साधनोंको नहींदेसक्ता किंतु जैसा २ पुण्य पाप होताहै वैसा २ सुखदुःख और

उनके साधनोंको ईश्वर देताहै इसनियमसें निश्चय होसक्ताहै कि जब जिस-जिस बकरा भेड दुम्बाऽऽदिकजीवके जीवनकालमें दुःखसुखदेनेवाले प्रारब्धकर्म फलदेकर निवृत्त होजातेहैं और मृत्युका देनेवालाकर्म फलदेनेके लिये उद्यत होताहै तबही बलिप्रदानसें वा अन्यकिसीनिमित्तसें उसउसपशुका पक्षीका मरणहोताहै ॥

और जिसजिसभोक्ताके अतिस्वादुरस बलआदिदेनेवाला शुभप्रारब्ध फलदेनेकेवास्ते उद्यतहोताहै उसउसभोक्ताकी विहितमांसखानेमें वा अविहितमांसखानेंमे प्रवृत्ति होसक्तीहै,

यद्यपि–अविहितमांसके खानेकर दोषहोताहै और विधिविहितमांसके खानेकर कोईदोष नहींहोसक्ता तथापि जीवोंके कर्मोंसें विना तो ईश्वर किसी जीवको मृत्यु नहींदेता और बलबुद्धिअतिस्वादुरसआदिकोंके सुखकोभी नहींदेता तो हेमित्र–परमेश्वरके न्यायकारीनामपर धब्बाकैसे लगसक्ताहै अर्थात् कर्मानुसारफलके देनेकर ईश्वरके न्यायकारीनामपर धब्बा नहींलग सक्ता किंतु असत्ययुक्तिके कथनसें तुम्हारे पंडितनामपर स्पष्टधब्बा लगाहै ॥

दयालुनामके प्रसंगमें पहिले दयाकालक्षणसुनिये शब्दस्तोममहानिधि

यत्नादपिपरक्लेशं, हर्तुंयाहृदिजायते । इच्छा भूमिसुरश्रेष्ठ, सादयापरिकीर्तिता ॥

अर्थ–हेश्रेष्ठब्राह्मण दूसरेके क्लेशको यत्नसेंभी नाश करणेकेलिये जो हृदयमें इच्छाउदयहोतीहै वो दयानामसें कथनकीजातीहै ।,

अब विचारिये कि, यिह दया ईश्वरमें क्यासिद्ध होसक्तीहै क्योंकि, ईश्वरतो सत्यसंकल्पहै यदि जीवोंके क्लेशोंके नाशकरनेकी इच्छारूपदया सत्यसंकल्प

ईश्वरमेंहोतो किसीभीप्राणीके कोईभी क्लेश नहीं रहनाचाहिये परन्तु जीवोंमें अनन्तक्लेश देखनेमें आतेहैं इस्सें ईश्वरमें दयाकी सम्भावना होसकेनहीं ॥

बहुत क्या-असंख्यजीवोंको जो अनेक २ प्रकारके भयंकर २ क्लेश होतेहैं उनमेंकोई एकभी क्लेश किसीभीजीवको ईश्वरकी इच्छासेंबिना नहीं होसक्ता क्योंकि, सर्वजीवोंको कर्मफलप्रदाता ईश्वरहीहै अतः स्वल्प वा बृहत् सबही क्लेश जीवोंके कर्मानुसार ईश्वरकी इच्छासेंही होतेहैंतो जीवोंके क्लेशोंके नाशकरणेकीइच्छारूपदया ईश्वरमें कैसे सिद्धहोसक्तीहै ॥

अर्थात् न्यायसें जो दण्डदेनेवालाहै उसमें दया संभवेनहीं, यदि दयाहोतो न्याय नहींहोसक्ता, सो ईश्वर निरतिशयन्यायकारीहै अतः ईश्वरमें दया सिद्ध नहीं होसक्ती ॥

यदि आपकहोंकि, "अपराधीजीव फिर ऐसाअपराध नहींकरें" ऐसा संकल्पकर न्यायसेंजो दण्डदेनाहै वो ईश्वरकी दयाहीहै" तोहेमित्र, यिह कथनभी अयुक्तहीहै ।,

क्योंकि—ईश्वरतो सत्यसंकल्पहीहोताहै सत्यसंकल्पईश्वरमें यदि 'अपराधीजीव फिर ऐसा अपराध नहीं करें" ऐसा संकल्पहोवेतो वोभी सत्यही होनाचाहिये उस्सें यिह व्यवस्था नहीं रहनाचाहिये जोकि, अनादिकालसें सर्वअज्ञानीजीव पुनः २ अपराधकर्तेरहेहैं और ईश्वरद्वारा अपराधोंके फल क्लेश पातेरहेहैं व पारहेहैं इस्सें जानाजाताहैकि, सत्यसंकल्पईश्वरमें ऐसाउक्त संकल्परूपदया नहुआहै नांहीहै ॥

प्रश्न—सर्वविद्याओंसें पहिलेजो बन्धमोक्षधर्माधर्मके ज्ञानालिये और उनके कारणोंकेज्ञानालिये ईश्वरनेवेदप्रकटकरेहैं वो तो मनुष्यों पर दयासेंही प्रकट करेहैं ॥

उत्तर-जीवोंकेजो अदृष्टहैंवो "साधारणकारणहैं" सर्वकार्य्योंकेकारणहैं

अर्थात् जीवोंकेअदृष्टोंसेंविना कोईभी कार्य्यनहीं होसक्ता, यिह शास्त्रकार महर्षिओंका नियमहै तो वेदोंका प्रकटहोनाभी जीवोंके अदृष्टोंविना कैसे होसक्ताहै किन्तु जीवोंके अदृष्टरूपनिमित्तोंसेंही ईश्वर वेदोंको प्रकटकर्त्ताहै ॥

—०—

प्रश्न—यदि ईश्वरमें दया संभवेनहीं तो बहुतग्रन्थोंमेंईश्वरको दयासिंधु करुणानिधि कृपासागरआदिनामोंसें क्यों कहतेहैं ॥

उत्तर—जीवोंके कर्मानुसार जगत्का उत्पादनपालन पुनः संहारकरना असंख्यजीवोंके विलक्षण २ असंख्यकर्मोंके यथायोग्यफलोंका देना, इत्यादिक जीवोंसें असाध्यअसंख्यकार्य्योंको निरतिशय न्यायसें जो ईश्वर कर्ताहै वो क्या किसी अपने प्रयोजनके लिये कर्ताहै ऐसे नहीं क्योंकि, ईश्वर आप्तकामहै पूर्णकामहै नित्यतृप्तहै सुखसमुद्रहै अतः अपनेप्रयोजनसें विना असंख्यकार्य्योंको कर्ताहै इस्सें ईश्वरदयासिन्धुकृपासागरनामसें कहनेयोग्यहै परन्तु निरतिशयन्यायकारितासें भिन्न कोईदया ईश्वरमें संभवेनहीं—

ईश्वर निरतिशयन्यायकारीहै अतः पुण्यपापसेंविना सुखदुःखको और उनके साधनोंको नहींदेसक्ता इस्सें जीवोंकेकर्मानुसारही जीवोंको मृत्युकेवश करेहै और कर्मानुसारही बलबुद्धि, पुष्टि अतिस्वादुरसआदिकोंके सुखको ईश्वरदेताहै अतः ईश्वरनिर्दोष निरतिशयन्यायकारीहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—यदि आपकहोंकि, हमहीउत्तमहैंतो हमपूछतेहैंकि, आपकी उत्तमता यहीहैकि, आप बेजबानदुर्बलजीवोंके गले काट२ कर अपनेघरोंको श्मशानभूमि पेटको कबरस्तान घरोंकी हवाको बिगाड़तेहुए रोगमय जीवन व्यतीतकरके नरकगामी बने, नहीं २ ऐसे उत्तम नहीं होसक्ते ॥

आस्तिक०—उत्तम वोही होसक्ताहै जोकि, श्रुतिस्मृतिआदिकोंके अनु-

कूल 'आचार' वर्तावकर्ताहै उनके अनुसारही कलम चलाताहै हेमित्रतुमतो श्रुतिस्मृतिओंसें विरुद्ध मखौलकी बातेबनाकर उत्तम कहलाया चाहतेहो ॥

विचारियेकि, घरोंमें चुल्ली, जलघट बुहारी दीपकआदिक हिंसाकीजगें सब मानतेहीहैं तो क्या तुम्हारेघर श्मशान कहजातेहैं ॥

दिखाचुकाहुं—महाराजा दशरथयुधिष्ठिरादिकोंके यज्ञोंमें सैंकड़ेपशु मारेगयेथेतो क्या वो श्मशानभूमिएं कहीजातीरहीं वा यज्ञभूमियें कहलाती रहीं—

और उनयज्ञनमें सैंकड़ेपशुओंके गले,काटे जानेपरभी हवाका बिगड़ना तो नहींहुआ ॥

पहिले दिखाचुकाहुं कि, श्रीरामलक्ष्मण और वेदवेताब्राह्मण व नल अम्बरीष युधिष्ठिरप्रभृतिमहाराजे मांसको खातेखुलातेरहेहैं ॥

और इससमयमेंभी—यूरप काबुल मैथिल नयपालआदिदेशोंके जो कोटिन पुरुषस्त्रियें ब्राह्मणक्षत्रियआदिक मांसकोखानेवालेहैं उनका जीवन क्या रोगमय व्यतीत होताहै ।

हेनादान—उन परमपूज्य पुरुषों के पेटको कबरस्तान कहताहैं ॥

यिह भेडबकरा दुंबा आदि जीव 'गले काट २ कर' अर्थात् बलि प्रदान करके खानेकेलियेही विधाताने रचेहैं अतः सबदेशोंमें यिहसब इसी काममें आतेहैं और आस्तिकतासें देखो प्रमाणांक ६०, व ७०, व १०४, व ९१ आदिकों इसविषयमें बहुतही प्रमाण और असंख्यदृष्टान्त भी दिखाचुकाहुं धर्माधर्म अतीन्द्रियपदार्थहैं अतः धर्माधर्मका विज्ञान शास्त्रसेंहीहोसक्ताहै यिह प्रमाणांक ५७ शंकरभाष्यमेंभी दिखलाय चुकाहुं भक्ष्याभक्ष्यका निर्णयभी प्रबलप्रमाणोंसे तथा असंख्य दृष्टान्तों सें लिखचुकाहुं उनसें विरुद्ध कहनेकर तुमको बारंबार नरकही भास्ताहै ॥

पूर्वपक्षी०—मनुष्यकी श्रेष्ठता इसीमेंहै कि, वह निजरूपको समझे प्रभुकी भक्तिकरे जीवोंपर दयाउपकार और क्षमाकरें ॥

आस्तिक०—निजरूपका समझना प्रभुकी भक्ति अवश्यंकरनी चाहिये और योग्यमनुष्योंपर दयाउपकार और क्षमाभी करीही चाहिये और इतर जीवोंपरभी दया उपकार क्षमाको योग्यताके विचारसें समझकरहीकरी चाहिये ॥

जैसे जहां सूरहरिणादिकोंसें खेतआदिका नाशहोतादीखे तो वहां उनपर दयाउपकारक्षमाका करना योग्य नहींहोसक्ता ॥

यदिआप कहेंकि—उनसूरहरिणादिकोंको भयदेकर वहांसें भगा-देनाचाहिये परंतु उनको मारना नहींचाहिये तो यिहकथनभी अयुक्तहीहै क्योंकि—यदि उनको कबीभी कोईभी न मारें तो वृद्धिको पाकर वह बहुत पृथिवीमें फैलसक्तेहैं फिर उनसें खेतादिका बचानाभी होहीनहींसक्ता खेतादिकोंसें विना मनुष्योंका जीवन कैसेरहसक्ताहै ॥

=०=

जैसे—वर्षाऋतुमें गेहुंचावलचनाऽऽदिकोंमें सुसरीआदिक हजारों लाखोंजीव पैदाहोजातेहैं तो उनपर दयाउपकार क्षमा कौनपुरुष कैसे करसक्ताहै ॥

शंका—उनकी उपेक्षाकरछोडे अर्थात् वोजीव अन्नकों खातेरहें उनकी तरफ ख्यालहीनकरे तो ऐसे उनपर दयाउपकार क्षमा होसक्तीहै ॥

समाधान—वाह तुमने अच्छा विचारकरा उधर चार छीमहीनेमें सुसरीआदिजीवभी सब अन्नको खाकर फिर अन्नके अभावसें प्रलयको प्राप्तहोजावेंगे, इधर अन्नके अभावसें मनुष्यनका जीवनभी कैसेरहसक्ताहै जैसे गौ भैंस मनुष्यादिकोंके व्रणमें वा कूपजलमें कृमि पैदाहोजातेहैं लाखों मकरी पैदाहोजातींहैं अनेकरोगोंकेकृमि पैदाहोजातेहैं, तो इत्यादिकजीवोंपर

दया उपकार क्षमाकाकरना अतिअयुक्तहीहै क्योंकि-इत्यादिकजीवोंके जीवतेहुए गौ भैंस मनुष्यआदिकोंको प्राणांतकष्ट प्राप्तहोतेहैं अतः जीवोंकी योग्यता का सम्यक्विचारककेंही दयाउपकार क्षमाका करना योग्यहोसक्ताहै

==+०+==

पूर्वपक्षी०--यदि आप कहोंकि-परमात्मानें यहसवपशु हमारेलिये हीबनाएहैं तो ऐसाही क्यों न मानलेंकि-तुम्हारे शरीर सिंहआदिहिंस्र जीवोंके लियेहीबनाएगएहैं।

आस्तिक०-यह सब पशु हमारेलिये बनाएहैं ऐसे तोकोईभीबुद्धिमान्-पुरुष नहींकहसक्ता क्योंकि-निरतिशयन्यायकारी सत्यसंकल्प परमेश्वरने जोजो भेडबकराऽऽदि जिसजिसमनुष्यादिकोंके लिये बनाएहोतेहैं वोवो उसउसकेही काममें आतेहैं और जो कोईमनुष्यशरीर सिंहादिकोंके लिये परमात्माने बनायाहै वो उस केही खानेमें आताहै क्योंकि परमेश्वरका संकल्प सत्यहीहोताहै ॥

==÷०÷==

पूर्वपक्षी०—कभीकिसीपुरुषके कोमलपुत्रको शेर उठाकर उसके सामनेही उसके सुन्दर २ अंगोंको काट २ कर खानेलगे तोफिर उससमय ज्ञानहो कि-इसीप्रकार बकरीआदिके बच्चोंको खानेमें बकरीआदिकोभी वैसाही, दुःखहोताहोगा ॥

आस्तिक०-ज्ञानमें स्नेहआदिकोंमें मनुष्योंका और पशुओंका बहुत भेदहै होमित्र-देखो व पूछो कि कसाईलोक भेडोंके बकराऽऽदिके इज्जड रखतेहैं पालतेहैं तो उनको यिहज्ञान नहींहोसक्ता कि-यिह कसाईही हमारे इज्जड मेंसें दोचार हमारेभाईभेडबकरांको नित्यमारताहै मरवाताहै अतः यिहहमारा घातकहै, प्रत्युत वो भेडबकराऽऽदिक उसकसाईमेंही पालकजानकर स्नेह

रखतेहैं और जबतक बच्चा दूध पीताहै तबतकही बकरीआदिपशुका बच्चेको तर्फ ख्याल व स्नेहहोताहै फिर जब दूधपीनेसें हटजाए तबसें बकरीआदि पशुओंका स्नेह और ख्याल नहींरहता, चाहे बच्चेको वहींलेजाओ चाहे बच्चा कहीं चलाजावे उस्सें बकरीआदिपशुको किंचिद्भीदुःखनहींहोता ॥

बाल वा वृद्ध वा रोगी बकराऽऽदिकोंका खाना तो चिकित्साशास्त्रमें भी मनाकराहुआहै और नीरोग युवा बकराआदिकोंके कहीं लेजानेकर वा बीमार होनेकर वा मारदेनेकर उसकी माताबकरीआदिको कुछभी दुःख नहींहोता ॥

यद्यपि-एकपशुके सामनेही दूसरेपशुको लाठीसें पीटें वा मारें तो उसदूसरेको भय व दुःखहोताहै परंतु परोक्षमें बलिप्रदानसें होरबकराऽऽदिकोंको कुछभी दुःखनहींहोता ॥

—=÷०÷=—

पूर्वपक्षी०— कभी कसाईके हाथसें छुरी छूटकर यदि अपनीही अंगुलीपर पड़े और रुधिरकी धारा बहनेलगे तब उसपीड़ाकी गवाई लेकर भी फिर वह गलेकाटनेसें यदि न हटें तो यह पापकी महिमा नहींतो और क्याहै जोकि-अंधाकरदेतीहै ॥

आस्तिक०—ठीकहै खड्गप्रहारसें दोमिएटतक बकराऽऽदिक पशुको पीड़ाहोतीहै परंतु रोगादिकोंसें मरणेकर भेडबकराआदिकोंको कितनेदिन पीड़ाहोगी, ऐसेविचारकर यदि तुम श्रुतिस्मृतिओंके सदाचारोंसें विमुखता रूप नास्तिकतासें नहीं हटोतो यिह अज्ञानका महिमा नहीं तो और क्या है जोकि—अधोअधःपतितकरदेताहै ॥

पूर्वपक्षी०—शूकर भैंसा गैंडा हाथी आदि शतशःपशु ऐसेहैं जो मांसका आहारनहीं करते और कैसे बलवानहैं यदि सिंह किसी मनुष्य

समुदायमें आजाए तो चार वा पांचको मारेगा किन्तु बनका भैंसा वा हाथी आदि अनेकको मारकर सिंहकी न्यांई शीघ्र नहीं मरेगा ॥

आस्तिक०—बनके हाथी आदिक तो सिंहका भोजन प्रसिद्धहीहैं ॥

सिंह चार वा पांचको मारेगा हाथीआदि अनेकको मारेंगे, यिह किसी ने नियम नहीं कररखा, यदि तुम ऐसानियमकर्तेहो तो मांसाहारीसिंहमें जाल्मता नहीं किंतु अपने आहारका सम्पादनहै और मांसके नहींखानेवाले भैंसाहाथीआदिकोंमें जाल्मता तुमारे नियमसें सिद्ध होसक्तीहै, मृगराजसिंहही बीसफिटसेंभी ऊंचीछाललगाकर मारकर्ताहै और भैंसाऽऽदिको मारके उठा लेजाताहै मृगपति मृगेन्द्र मृगराज, इत्यादिकनाम सिंहकेहीहैं सूर भैंसागैंडा हाथीआदिकोंके नहीं ॥

हेमित्र—मृगराजसिंहकीही गर्जनाको सुनकर हाथी आदि सबजंगल के पशु लीद कर्ते २ भागते ही दीखतेहैं, होर किसीकीभी गर्जनासुनकर सिंहतो कभी नहीं भागजाता—

बहुत क्या कहूं—कविजन राजेमहाराजे पातशाहोंको बहादरीमें उपमा मृगराजसिंहकीही देतेहैं ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—इससमयमें तो इंगलैण्डमें बड़े २ वैज्ञानिक डाकटरोंनें सिद्ध करादियाहै कि, मांसकी अपेक्षा फलदुग्धादिमें विशेषबलहै ॥

आस्तिक०—बातोंकरही अर्थासिद्धि नहीं होसक्ती किंतु अर्थासिद्धिलिये आस्तिकजनोंको आर्षग्रन्थनकेप्रमाण दिखलाएजातेहैं देखो प्रमाणांक१८६ के व्याख्यानमें शंका-समाधानकर वेदान्तउपनिषत्प्रमाण दिखलायके सिद्ध करचुकाहुं कि-दुग्धादिकोंसें मांसमें पौष्टिकता बुद्धिबलवर्धनआदिगुण अधिकहीहैं।

हेमित्र--घृतदुग्धआदिभी बलकारीहैं परन्तु मांसमें पौष्टिकताऽऽदिक गुणविशेषहैं वो प्रमाणांक ९७ आदिकोंमें देखलीजिये ॥

और देखो प्रमाणांक १७८ को मांसमें अग्निदीपनगुणभी विशेषहै ॥

बडे २ वैज्ञानिक डाकटरभी दुर्बलबीमारों को मांसके रस काही प्रायः सेवन करवातेहैं ॥

मेडीकलकताबोंसें विरुद्ध यदि किसीतात्पर्य्यसें कोई कहे तो वोकथन माननीय नहीं होसकता ।

पूर्वपक्षी०--जो आपने मांसका असर मुखकी लालीसें दिखलायाहै वह आपका भ्रमहै, बानरने कभी मांस नहीं खाया परन्तु उसका मुख कैसा लालहोता है ॥

आस्तिक०—बानरभी जूंओंको और वर्षाऋतुमें उडनेवाले मकौडों-कोभी खातेहीहैं परन्तु बानरजातिमें लाली तो जातिसें स्वाभाविकहै और मनुष्यनके मुखमें लाली तो रुधिरकी वीर्य्यकी आधिकतासें होतीहै ॥

पूर्वपक्षी०—यदि आप ऐसे कहें कि-यदि कोई मांस न खाए तो पशुपक्षी बहुत बढकर पृथिवी भरजाए इसलिए इनको मारकर इनका मांस काममें लानाचाहिए तो वाह अच्छाविचारकरा, मालूमहोताहै कि-परमात्मा नें संसारकी मर्यादा ठीकरखनेके लिए आपको काम दियाहै नहीं तो ऐसा-विचार न करते, अब हम आपसेंही पूछतेहैं कि-मनुष्योंको जब कि कोई नहींखाता तोभी मनुष्योंसें पृथिवी क्यों नहींभरजाती, ऐसे तोफिर सर्प मक्षी चींटीआदिकोंकोभी आप मार २ कर खानेमें क्यों भय मानोंगे क्योंकि आपने तो वृद्धिकोही रोकनाहै ॥

आस्तिक०—ठीकहै—कि जगत्की मर्यादा ठीक रखनेलिये योग्यपुरुषोंके चित्तोंको परमात्मा प्रेरेहीहै इसीसें गायत्रीमंत्रमें कहाहै कि—**धियोयोनः प्रचोदयात,,** जो परमात्मा हमारी बुद्धिओंको प्रेरेहै ॥

सुनिये—मनुष्योंसें पृथिवी इस्सें नहीं भरजाती कि जब मनुष्योंकीभी अतिबहुलता होतीहै तब प्लेग कालड़ाऽऽदि महामारी शुरू होजातीहैं उसमें लाखोंमनुष्य मरजातेहैं जैसे भारतखंडमें बहुतवर्षोंसें मररहेहैं । और राजे महाराजे पातशाहोंके संग्राममेंभी लाखों वा कोटिनमनुष्य स्वाहा होजाते हैं ॥

श्रुतिस्मृतिओंसे विहितकर्मकरनेमें आस्तिकजनोंको कुछभय नहींहोता और चींटीमक्षीआदिका खाना विहित नहीं है अतः उनके मारणेकर खानेकर भय आवश्यकहै, सर्पिणीसें बहुतही अण्डे निकलतेहैं फिर जब उनसें बच्चे पैदाहोतेहैं तो आपही वो सर्पिणी उनबच्चोंको खाने लगजातीहै उससर्पिणीसें जो कोई २ बच्चा दूर निकलगयाहो तो वह जहांकहीं छिपकर बड़ा होताहै ऐसे मातासें बचेहुए सर्पोंमेंभी जब २ जहां २ कोईसर्प निकला दीखे तो उसउसको मुसलमान और बहुतसे हिन्दुभी मारडालतेहैं और मारखोरा नकुलआदिकभी सर्पोंको मारतेहैं, इत्यादिक बहुतकारणोंसें सर्पोंकी बहुलता होहीनहींसक्ती ॥

जब चैत्रवैशाखमें माक्षिओं की बहुलता होतीहै तो फिर ज्यैष्ठमासमें अत्युष्णवायुसें उनकी बहुलता नहीं रहती फिर भाद्रमासमें मक्षीबहुतहोतीहैं तो शीतकालमें अतिशीत होनेकर उनका प्रलय होजाता है ॥

चींटीआदिकजीव तो झाड़ू फेरनेकर जलघटादिकोंसें और हाथी घोड़ा बैल गाडी बग्गी मनुष्यादिकोंके चलनेकर, सीरा शहतआदिकोंमें

चढ़नेकर होरअनेकनिमित्तोंसे असंख्यही मरते रहतेहैं अतः उनसेंभी पृथिवी नहींभरजाती ॥

और भेड़ बकराऽऽदिकोंकीभी वृद्धि बहुतही होतीहै उनको मनुष्य मारकर खाते रहतेहैं ॥ इत्यादिकानिमित्तोंमें परमात्माही संसारकी मर्यादाको ठीक रखताहै ॥

हेमित्र–हम जीवोंकी वृद्धिको रोकना नहीं चाहते किंतु वेदसूत्रस्मृतिओंके विधिवाक्यनका सम्मान करना और अधिकारीजनोंमें उनके अर्थोंका प्रकट करना हमारा धर्महै क्योंकि हम आस्तिकहैं ॥

——:०:——

पूर्वपक्षी०—यदि तुम कहो कि–जबतक पशु कामके योग्यरहे तबतक दूसरा कामलें पर इनके वृद्धहोनेपर मारकर खानेमें क्या हानिहै तो शोकहै ऐसीबुद्धिपर और ऐसी चिन्तापर इत्यादि ॥

आस्तिक०–असत्यही पूर्वपक्षहै अतः उत्तरपक्षभी अयुक्तहीहै क्योंकि वृद्ध और रोगी बकराऽऽदिकोंके मांसखानेका तो चिकित्साशास्त्रमेंभी निषेधहीहै ॥

——०——

पूर्वपक्षी०—यदि तुम कहोकि—ब्राह्मणवैश्यादि न खावें परंतु हमारे विचारमें क्षत्रियोंको तो अवश्यखानाचाहिये और क्षत्रियोंकेलिए शास्त्रमें कहीं दोषभी नहींआया, तो वाह ठीक कहा--गीता मनुस्मृतिआदि जो वर्णोंके धर्मोंके बतानेवालेग्रन्थहैं उनमें क्षत्रियकेवास्ते मांसखाने की आज्ञा वा उसकेलिए मांसखानेमें दोषका अभाव हमने कहींभी नहींपाया ॥

और इतिहासमें यदि कहीं मांसका वर्णन पायाजावे तो इतिहासकी

सब बात धर्म नहींहोती, नहीं तो युधिष्ठिरजीका जूआ, द्रौपदीके ५ पति, और यादवोंका मद्यपान इत्यादिभी धर्महोनाचाहिये ॥

इसलियेही "चोदनालक्षणोऽर्थोधर्मः" पूर्वमीमांसा अ० १ सू० २ ॥ जिसकी वेदशास्त्रमें कर्तव्यताहो और अनर्थको उत्पन्न न करे उसको धर्म कहतेहैं जैमिनिजीने धर्मका लक्षण ऐसा कियाहै इसलिये मांस को खाना पाप जनकहोनेसें क्षत्रियोंके वास्तेभी अच्छा नहीं होगा ॥

आस्तिक०—हेमित्र-ऐसे २ असत्यपूर्वपक्ष और असत्यही उत्तरपक्ष बनाकर क्यों धोखादेतेहो ॥

यद्यपि भगवद्गीतामें मांसके खाने वा न खानेका कोई प्रसंगही नहींहै तथापि—देखो प्रमाणांक ३१ आदिक मनुस्मृति याज्ञवल्क्यस्मृतिआदिकों में विहितमांसखानेमें निर्दोषता स्पष्टकहीहै ब्राह्मणक्षत्रियादि सबवर्णोंके लिये मांसखानेमेंभी बहुतप्रमाण दिखाचुकाहुं और देखो प्रमाणांक ८१ आदिक मनुस्मृति व्यासस्मृति वसिष्टस्मृतिआदिकोंमेंभी विहितमांसके नहीं खानेसें अनर्थकी प्राप्ति कहीहै इस्सें सबवर्णोंके लिये विहितमांसका खाना अवश्य अपेक्षितहै ॥

इतिहासग्रन्थकी यदि सबबात माननीय नहीं होसक्ती तोभी उनमें जो रामकृष्णादिअवतारोंके और व्यासादिमहर्षिओंके वाक्य और आचार आवें तो वो आस्तिकपुरुषोंसें अमाननीयभी नहींहोसक्ते ॥

और तुम आप भी "अग्नीषोमीयं पशुमालभेत, यिह वेदप्रमाण लिखचुके हो तोफिर नास्तिकताको क्यों नहींछोड़ते ॥

जैमिनिजीनें धर्मका लक्षण ठीककराहै कि-चोदनालक्षणोऽऽ

चोदनाधर्मः ॥ अर्थ— क्रियाके प्रवर्त्तक वचनका नाम चोदनाहै उसीको प्रेरणा और विधिवचन कहतेहैं उससें जो लखनेमें आवे अर्थ वो धर्महै अर्थात् श्रुतिस्मृतियोंके विधिवचनकर विहितक्रियासें उत्पन्नहोनेवाला धर्महै ॥

अजशशहरिणआदिकोंके बलिदानमें और विहितमांसके खानेमें श्रुतिस्मृतिआदिकोंके बहुतही विधिवचन दिखलायचुकाहुं और उसही अर्थमें शिष्टाचाररूप दृष्टान्तभी लिखचुकाहुं अतः जैमिनि- कृत जो धर्मका लक्षणहै उसके अनुकूलही विहितमांसका भक्षणहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—जिसने मच्छीको खाया उसने सबकुछ खाया मच्छी नदीमें पड़े कुत्ते बिल्ले मनुष्य गौभैंस गधा सूकरआदिअनेकजीवोंके मांसको खातीहै फिर उसको तुम खाओगे तो बताओ कि-तुमने क्या नहीखाया और उसके खानेमें अनेकरोगोंका होनाभी सम्भवहै क्योंकि मच्छीने कोहडे और सडेके शरीरको खाया तुम उसको खागए फिर फल क्याहोगा ॥

आस्तिक—जितने कुत्ते बिल्लेआदिकोंको मच्छी खालेतीहै उनसे बहुत गुणाअधिक सबको पृथिवी हजमकरलेतीहै अर्थात् कुत्ते बिल्ले गौ भैंस गधा सूकर चूहे किरली वानरआदि सबजीवोंके करंग अस्थि टूटाफूटा जूताऽऽदिक कोहडे सडेशरीर जो कुछ पृथिवीमें पड़ताहै उन सबको पृथिवी हजम करलेतीहै—

बहुत क्या—उनके और कुत्ते बिल्ले गौ भैंस मनुष्य गधा खच्चर घोड़ा भेडबकराऽऽदिकोंके ,मल, खात पृथिवीमें पडतेहैं उनके जोरसेंही अन्नशाक फलआदि पैदा होतेहैं जिनको आपभी खाते हैं तो बताओ कि-अन्नशाकाऽऽदिक शुद्धहै भक्ष्यहैं वा नहीं ।

हेभ्रातः—शुद्धाशुद्धके भक्ष्याभक्ष्यके विज्ञानमें शास्त्रही कारणहै अतः जब श्रुतिस्मृतिओंमें मांसको शुद्ध और पांचप्रकारके मत्स्य भक्ष्यकहेहैं तो वो भक्ष्यहीहैं ॥

जिसजातिकी मच्छीसें रोगहो उसको मतखाएं जिसमें हछेगुणहों उसको खाएं जैसे रोहितमत्स्य ।

भावप्रकाश प्र० ३१३—रोहितः सर्वमत्स्यानां वरोवृष्योऽर्दितार्त्तिजित् ॥ कषायानुरसःस्वादु वातघ्नोनातिपित्तकृत्॥ऊर्द्धजत्रुगतान्रोगान् हन्याद्रोहितमुण्डकम् ॥ मांसवर्ग १०० ॥

अर्थ—सब मत्स्यनमें रोहितमत्स्य श्रेष्ठहै, वीर्य्यवर्धकहै पीडितजनोंकी पीडाको दूरकरेहै इसका रस स्वादुहै वातनाशकहै अधिकपित्त को नहीं कर्ता, रोहितमत्स्यका शिर ग्रीवाके ऊर्ध्वहोनेवाले रोगोंको नाशकरेहै ॥

—०—

अथर्ववेदसंहिताके तृतीयकाण्डमें तृतीयअनुवाकका सायणभाष्य प्र०३१४

मुञ्चामित्वा इतिप्रथमसूक्तेन बालग्रहरोगे निरन्तरस्त्रीसंगतिजनित यक्ष्मणिच पूतिगन्धमत्स्यसहितम् ओदन मभिमन्त्र्य भोजनकाले व्याधितम् आशयेत ॥

अर्थ—बालग्रहरोगमें और निरन्तर स्त्रीसंगतिसें उत्पन्नहुए, यक्ष्मतपदिकमें पवित्र गन्धवाले मत्स्यसहित भातको 'मुञ्चामित्वा' इस प्रथम सूक्तसें आभिमंत्रितकर्के भोजनकालमें रोगी को खुलाए ॥

पूर्वपक्षी०—चिड़ी कबूतर बटेरा तोताऽऽदिपक्षी भी हमारी जैसी जान रखतेहैं हमारे प्राणोंमें और उनके प्राणोंमें कुछभी भेद नहींहै, सबही मरणेसें भय मानतेहैं विष्टाके कीटसेंलेकर इन्द्रतक सबको जीनेकी आशा और मरणे का भय समानहै ॥

आस्तिक०—ठीकहै परन्तु वर्षाऋतुमें गेहुंचनाऽऽदिकोंमें सुसरी घुण-आदिजीव पैदाहोनेसें धूपमें फैला यके उनहजारोंजीवोंको प्राणान्तकष्ट क्यों दियाजाताहै और औषधोंकर कूपकृमि मलकृमि व्रणकृमि दद्रुआदिरोगकृमि इत्यादिक लाखोंजीवोंका क्षय क्यों कराजाताहै ॥

पूर्वपक्षी० —सुसरीघुणआदिजीव नहींनिकालें तो गेहुंआदिअन्नोंके नष्टहोनेकर मनुष्यनका हरजाहोताहै औषधोंकर कूपकृमि मलकृमि रुधिरकृमि रोगकृमिओंका नाश नहींकरें तो बीमारीसें मनुष्य अतिदुःखपातेहैं फिर मरतेहैं।

फीनैलादि औषधोंकर व्रणकृमिओंका विनाश नहींकरें तो गौ भैंस घोडामनुष्यादिकोंका नाशहोताहै, इस्सें उनक्षुद्रजीवोंका क्षयकरना अवश्यंअपेक्षितहै ।

आस्तिक०—हेमित्र गौ भैंस मनुष्य एकएकजीवकेलिये हजारोंजीवोंका क्षयकरना क्यों आवश्यकहोसक्ताहै ॥

पूर्वपक्षी०—इसका येही उत्तर संभवेहै कि, श्रेष्ठजीवोंकी रक्षालिये निकृष्टजीवोंका विनाश अवश्यंअपेक्षित होसक्ताहै, जैसे आम्रआदिक श्रेष्ठ वृक्षोंकी रक्षालिये अर्थात् वाड़करनेकेवास्ते झाड़िओंका काटना अवश्यं अपेक्षितहै, ऐसेही गौ भैंस मनुष्यादिश्रेष्ठजीवोंमें एकएककीभी रक्षालिये औषधोंकर हजारों व्रणकृमिओंका कूपकृमि मलकृमि रुधिरकृमि रोगकृमिओं का विनाश अवश्यंअपेक्षितहै, वो धर्मनिष्ठ योग्यबुद्धिमान्पुरुषभी कर्तेहीहैं

—०—

आस्तिक०—तुम्हारे कथनमेंभी जैसे सर्वजीवसमान नहींहैं वैसे सर्व जीवोंका जीवन मरणभी समान नहींहै क्योंकि, अपनी बुद्धिकी वृद्धिसें और शुद्धिसें मनुष्य तो परमात्मापर्य्यन्त अतीन्द्रियपदार्थोंका प्रत्यक्षकर्के मुक्तिपर्य्यन्त अतिमहाकार्य्योंकोभी सिद्धकरसक्ताहै, जिसमोक्षमार्ग में चक्रवर्तीराज्य दिव्यभोग और अणिमामहिमाऽऽदिक सिद्धिआंभी शास्त्रकारोंनें विघ्नरूपकहीहैं, ऐसा परमलाभदायक मनुष्यका जीवन होसक्ताहै ॥

और भेडबकरातित्तिरआदिक पशुपक्षिओंका जीवन ऐसा लाभदायक नहीं होसक्ता, किन्तु उन पशुपक्षिओंका जीवन अतिनिकृष्टखानपानआदि मात्रका हेतुहै ॥

सर्वजीवोंका मरणभी समान नहींहै, क्योंकि, प्रथमतो जहां मनुष्योंमें कालडाऽऽदि बीमारी पडती है, वहां मनुष्योंके हृदय बीमारीसें भयकर कंपित रहतेहैं, और जहां पशुओंमें बीमारीपड़तीहै वहां पशुओंको उसबीमारीसें भयनहींहोता, क्योंकि तमोगुणकी अधिकता सें पशुओंको विशेष ज्ञान नहीं होसक्ता ॥

जब कोई मनुष्य मरताहै, तो उसके स्त्री पुत्र कन्या माता पिता माता मह पितामह सासु ससुर प्रिय भृत्य मित्र भ्राताऽऽदिक अनेक सम्बन्धीओं को दुःख होताहै, और केईसम्बन्धी बीमार होजातेहैं परन्तु पशुओं में ऐसे नहीं होता ॥

इसप्रकार जैसे सर्वजीव समाननहींहैं वैसेही सर्वजीवोंके जीवन मरण भी समान नहीं होसक्ते ॥

पूर्वपक्षी०—मरणदुःख तो सबजीवोंको बराबरही होताहै अतः पशु पक्षिओंको ऐसा कष्टदेना कैसे युक्त होसकेहै ॥

आस्तिक०—असिप्रहारसें दोमिएट दुःख होताहीहै, परन्तु बीमारीसें

मरणेकर केईदिनदुःख,देखनेपड़ेहैं इस्सें थोड़े मरणदुःखको देखकर विधि विहितकर्मसें संकोच करना युक्तनहींहोसक्ता क्योंकि, विधानकरनेवाले सर्वज्ञ पुरुषों के दीर्घविचारको तुम झटिति नहीं समझ सक्ते ॥

पूर्वपक्षी०—कहाहै कि, यदि मरते हुएजीवको कोई एक करोड़ अशर्फी दे, दूसरा जीवन दे तो वह अशर्फीआको न लेकर जीनामांगेगा।

आस्तिक०—भेडबकराऽऽदिकोंके बलिदानमें यिह तुम्हारा अशर्फीओं का कथन अयुक्तहीहै क्योंकि, भेडबकरादिकोंके आगे एकतर्फलाखों अशर्फी धरे दूसरीतर्फ झाड़ीकेकांटेवालेपत्र धरें तो वो अशर्फीको नहीं देखेंगे किन्तु पत्र तृणोंकोही ग्रहण करेंगे ॥

यद्यपि सबजीव मरणेसें भय और जीवनकी इच्छा रखतेहैं तथापि उनके भयको इच्छाको न देखकर, योग्यपुरुषोंको, यथायोग्यकार्य्य, करनेही योग्यहोतेहैं जैसे हलगाडीआदिकोंसें जोतेहुए बैलआदिकोंकी, खुलेरहने की इच्छाको, और दण्डप्रहारके भयको न देखकर बलात्कारसें जुतवाए वा जोतेहुए बैलआदिकोंको दण्डप्रहार कर चलवातेहैं चलातेहैं ॥

जैसे गेहुंचनाऽऽदिकोंके सुसरीआदिजीवोंकी, वहां गेहुंचनाऽऽदिकोंमेंही रहने की इच्छाको, मरणभयको न देखकर जैनीभाईजीभी तथा होरयोग्य पुरुषभी, गेहुंचनाऽऽदिकोंको धूपमें फैलायके उनजीवोंको निकाल देतेहैं, उस्सें उन हजारोंजीवोंका क्षय कर देतेहैं, ॥

जैसे—व्रणकृमि कूपकृमि मलकृमि रुधिरकृमि रोगकृमि इत्यादिक जीवोंकेभी, मरणभयको जीवनेकी इच्छाको न देखकर, योग्यधर्मात्मा पुरुषभी फीनैलआदि नानाऔषधोंकर उनजीवोंका क्षय कर्तेहीहैं ॥

—०—

यदि जैनीसाधुकहेंकि,-नांतो हम बैलआदिकोंको जोततेहैं नांहीजोतनेकी आज्ञादेतेहैं, और नां हम अन्नको पीसतेपकातेहैं, व नांही पीसनेपकानेकी आज्ञादेतेहैं, इस्सें हम दोषभागीनहींहोसक्ते, किन्तु हलचलानेवाले, पीसने पकानेवालोंको, पाप लगताहै तो—

हेमित्र—उनसाधुओंका, ऐसा कथन, हासगोचरहीहै, ऐसे कहनेवाले साधुओंको, लज्जा क्योंनहींआती क्योंकि, अतियत्नसें अन्नको पैदा कर्के, फिर पीसपकायकर देनेवाले, तो पापभागी, और पक्केपकाएको निर्यत्न मुफत सें खानेवाले हम दोषभागी नहीं होसक्के, ऐसा कथन स्पष्टलज्जाका हेतुहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी०-भला आस्तिकजी,-कभी पक्षिओं वा पशुओंने आपके पास ऐसी प्रार्थनाकीहै कि, आपलोग हमको मारकर हमारे शरीरका आहार करो क्योंकि, हम इसशरीरमें बहुतदुःखीहैं प्रत्युत यदिकोई उनको पकड़े तो यथाशक्ति अपने प्राणोंकी रक्षाकेलिए यत्न कियाकरतेहैं इसलिये जहांतकहो तनमनधनसें अनाथदीनजीवोंकी रक्षाकियाकरो ॥

आस्तिक०—भला नास्तिकजी-कटरी बछीआदिकोंनेंभी कबी आपसें कहाहै कि-हमको बलात्कारसें खैचकर बांधके तुम दुग्धको दोहलेवो और व्रणकृमि कूपकृमि रोगकृमि गेंहुचनाऽऽदिकोंके कृमि, इत्यादिकजीवोंनेंभी कबी आपकेपास प्रार्थनाकीहै कि,-आप हमको निकालदें मारदें ॥

बहुत क्या, कबी कहीं पशुपक्षीओंनेंभी मनुष्योंसें बातचीत वा प्रार्थनाकीहै, जो तुम ऐसे २ प्रश्न उठातेहो ॥

तोभीदेखो महाभारत प्र० ३१५——उपातिष्ठन्तपशवः, स्वयंतंसंशितव्रतम् ॥ ग्राम्यारण्यामहात्मानं, रन्तिदेवंयशस्विनम् ॥ १२ ॥ २६ ॥ १२२ ॥

इसपर नीलकंठी टीका प्र० ३१६—पितृकार्य्येमांनियोजय २ इति ॥

महाभारत प्र० ३१७—महानदीचर्मराशे, रुत्क्लेदात्समृजेयतः ॥ ततश्चर्मण्वतीत्येवं, विख्यातासामहानदी ॥ १२३ ॥

इसकी टीका प्र० ३१८—तेषांमारितानांपशूनां चर्मराशेः उत्क्लेदात्सारद्रवात् ॥

अर्थ—सम्यक्व्रतवाले उसयशस्वी रन्तिदेवमहाराजाके समीप, आपही ग्राम्य और जंगलीपशु "पितरोंके कार्य्यमें मुझे लगावो २,, इसअभिप्रायसें उपस्थितहोतेरहे ॥ १२२ ॥ मारेहुए उनपशुओंके चर्मनके पुंजसें, जो सार द्रवाथा उससें महानदीहुई, इस्सें वो महानदी 'चर्मण्वती, ऐसेनामसें विख्यातहुई ॥ १२३ ॥

यद्यपि—तनमनधनसें खानपानऔषधादिकोंको देकर, एकजीवकी रक्षाकरें, तो अनेकहजारों क्षुद्रजीवोंकी, हिंसाहोतीहैं तथापि क्षुद्रजीवोंकी उपेक्षाकर्केभी श्रेष्ठजीवोंकी रक्षाकरनीयोग्यहै धर्मात्मायोग्यपुरुष कर्तेहीहैं ॥

पूर्वपक्षी०—भूख प्यासलगाना प्राणवृत्तिहै इनप्राणोंकी आवश्यकता चने बनकेशाकफलआदिसेंभी पूरीहोसक्तीहै, पर चने नहींचाहिये इसके स्थानमें लड्डहो पेडाहो मांसहो, ऐसी २ इच्छाका होना मनका कामहै, और इसका रोकनाही हमारा कामहै, श्रीशंकराचार्य्यजी कहतेहैं कि यह

मनही, मुक्ति और बन्धका कारणहै इसलिये जहांतक होसके हमें मनका दास नहींहोनाचाहिये ॥

आस्तिक०—तुम क्या चने बनके शाकादिकोंसें निर्वाहकर्तेहो, वा नौकरीआदिकर्केभी क्षीरआदिभोजन उडातेहो, हेमित्र चने बनके शाकादिकोंसें निर्वाह करना क्या गरीबोंका वानप्रस्थोंका संन्यासीओंका धर्महै, अथवा भाग्यवान् गृहस्थनका धर्महै, देखो प्रमाणांक ६५ और १८४ आदिकोंमें श्रीशंकराचार्य्योंने पशुयागका मांसखानेका गृहस्थोंकेलिये स्पष्टविधान कराहै ॥

हेभ्रातः—श्रुतिस्मृतिओंसें विरुद्ध चलनाही, मनका दासहोनाहै

पूर्वपक्षी०—यदि आप कहें कि—जब आप दूधपीते, हवामें श्वासलेते और जल पीतेहैं, तो इनमें शतशः जीव मरतेहैं, तो फिर आप अहिंसाका झंडा कैसे उठाए फिरतेहो, तो यह आपकी दलील तुच्छहै क्या हम थोड़ेदोषसें न बचसकें तो क्या सारादोष शिरपर उठालियाकरें ॥

क्या चूहोंसें अन्न नहीं बचासकें तो चोरोंसेंभी अन्नकी रक्षा न करें, यदि चलते फिरते वस्त्र मैले होतेहैं तो क्या वस्त्रोंपर और कीचड लगालेना चाहिये ॥

जिनजीवोंकी हिंसा यत्नकरनेपरभी नहीं रुकसक्ती उसकेलिए प्रायश्चित्तरूप नित्यकर्मसन्ध्याऽऽदि, कियेजातेहैं, और अपरिहार्य्य नित्यकीहिंसादोषके हटानेवास्ते मनुजीनें प्रायश्चित्तरूप पंचमहायज्ञोंका करनाभी गृहस्थीकेलिये नित्यका विधानकियाहै ॥

आस्तिक०—दूधवायु जलपानसें जो असंख्यजीवोंकी हिंसाहोतीहैं, वह अविहितहिंसाहैं वृथाहिंसाहैं, अतः उनका प्रायश्चित्तकरना ठीकहींहै, परन्तु जो अजशशहारिणादिकोंकी विहितहिंसाहैं वह देखो प्रमाणांक ४६

आदिकोंमें अहिंसारूपही मानीहैं, अतः उनविहितहिंसासें दोष नहीं होसक्ता' प्रत्युत देखो प्रमाणांक ६९ आदिकोंमें विहितहिंसाका दोनोंको श्रेष्ठगतिकी प्राप्तिरूपश्रेष्ठफलही दिखलायाहै, तो तुम क्यों नास्तिकतासें श्रुतिस्मृतिओंके मतको बदलतेहो ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—यदि आप कहो कि-इनबकराऽऽदिपशुपक्षीओंने मरना तो अवश्यहीहै, तो फिर हमनें कुछ मारादिये तो क्या हानिहै सच पूछो तो हम ईश्वरका काम करतेहैं, तो यह कथनभी समीचीन नहीं क्योंकि-क्या आपने नहींमरना तो आपको पहिलेही यदि सिंहादि मारनेको उद्यत-होवे तो क्यों घबरातेहो ॥

आस्तिक—यिह पूर्वपक्ष तथा उत्तर पक्ष भी समीचीननहीं, क्योंकि-सर्वशक्तिमान्परमेश्वरका काम स्वल्पशक्तिमान्जीव करही नहींसक्ता, किंतु परमन्यायकारी सर्वकर्मफलप्रदाता परमेश्वरका काम परमेश्वरही करसक्ताहै ।

आस्तिकपुरुष श्रुतिस्मृतिओंकी आज्ञाका पालनकरतेहैं इस्सें उनकी कुछहानि नहींहोसक्ती, किंतु उनको लाभही होताहै ॥

और सिंहसर्पादिक मारणेको उद्यतहो तो घबराना युक्तहीहै, क्योंकि-ऐसामृत्यु अपमृत्युहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—तुम भलीभांत सोचलो कि-सारीसृष्टिही परमात्माकी लीलामात्रहै, जैसे बालकके लीलाकेवास्ते बनाएहुए मट्टीके घोडेऽऽदिकों-को, कोई तोडदे तो बालकके मनको अतिदुःखहोताहै, यदि बालक अपने आप तोडदे तो कुछभी खेद नहीं मानता इसीप्रकार परमात्माभी अपनी-लीलाकेलिये बनाएहुए पशुपक्षीआदिक शरीरके नाशकरनेमें अतिक्रोधही-

नहीं करता किंतु नाशकर्ताको नरकमेंभी डालताहै, एवं माली अपनेलगाए बागमें किसीभी बूटेके उखाडनेवालेपर कभीभी प्रसन्ननहींहोता, इसीप्रकार अपनेलगाएहुए संसारवनके पशुआदिवृक्षके नाशकरनेवालेमें परमात्मास्वरूपमाली कदापि प्रसन्न नहीं होता ॥

आस्तिक०—हेमित्र–बालक तो अतिमूढ अज्ञानी होताहै, और ईश्वर नित्यतृप्तप्रसन्न सर्वज्ञहै, अतः ईश्वरमें बालकका दृष्टान्तदेना योग्य नहींहोसक्ता, फिर "इसको तोड़दे" ऐसे बालकके कहनेसे, यदि कोई बालकके खिलौनेको तोडदे, तो बालकके मनको दुःख नहीं किंतु हर्षहोताहै, ऐसेही परमेश्वरकी पशुबलिदानविषयक और विहितमांसभक्षणविषयक श्रुतिस्मृतिरूप आज्ञाहैं, इसेंसे परमेश्वर क्रोध नहीं किंतु अपनीआज्ञाके पालनकरनेवालेको श्रेष्ठफलही देताहै

और मालीभी अपनेबागेंमें श्रेष्ठश्रेष्ठपेडोंके उखाडने वालेपर प्रसन्न नहींहोता परन्तु जिनजिन घासबूटीभंग ,पनवाडआदिक निकृष्टपेडोंके उखाडनेकर, वो आम्रलीचीआदिउत्तम २ पेड पलतेहैं पुष्टहोतेहैं उनउनके निकालनेलिये उखाडनेलिये तो अपनेकाम्योंको वो माली आप आज्ञादेताहै; उनउनके उखाडनेसें प्रसन्नहोताहै, आधिकउखाडनेवाले काम्योंको इनाम देताहै ऐसेही श्रेष्ठजीवोंकेलिये जिनाजिन अजशशहरिणादिकोंके बलिदानकी श्रुतिस्मृतिओंद्वारा ईश्वरने आज्ञादीहै, उनउनके बलिदानकर अर्थात् आज्ञाके पालनकर परमेश्वर प्रसन्नहोताहै, देखो प्रमाणक ६९ और ५६ और ७५ को श्रेष्ठफल देताहै, ॥

परमेश्वरकी आज्ञाके न पालनकर परमेश्वर नरकमें डालताहै जैसे प्रमाणांक ८३ में वसिष्टजीने कहाहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—सच पूछो तो जिनपशुओंको तुम मारतेहो वह तुम्हारे सें भी ईश्वरको अधिक प्यारेहैं क्योंकि–वह दुर्बल और अपनेहिताहितके सोचनेकी शक्तिसें रहितहैं ।

जैसे माता उसबालकसें विशेषप्रेमकरतीहै जो अपनेआप कुछ नहीं करसकता, यह बात पशुआदिमें पाईजातीहै ॥

और बडीबात यहहै कि–यह प्रभुकी आज्ञामें रहतेहैं अर्थात् सृष्टिके आरम्भसें लेकर परमात्माने जो २ नियम इनकेलिये बान्धदियाहै उस २ को यह कभी नहीं छोडते जैसे इनका स्त्रीभोग वर्षमें एकवार रुचि प्रायः सन्तानार्थहीहोतीहै मांसाहारी मांसपरही रखतेहैं एवं घासाहारीपशु घासपर प्रेमवाले देखनेमें आतेहैं इसलिये यह प्रभुके जैसे प्रीतिपात्रहै, मनुष्य वैसे नहींहैं अर्थात् यहमनुष्य नियम तोडकर फलमांसादि सबवस्तु खानाचाहतेहैं, इसलिये प्रभुके भयसेंभी इन पशुआदिकी रक्षाकरनीचाहिये ॥

आस्तिक०—वाह आपकी विद्वत्ता, जिस्सें आप मनुष्योंसें पशुओंको ईश्वरके अधिकप्यारे ईश्वरके अधिकप्रीतिपात्र कहतेहो ॥

हेमित्र – कहो तो, जिनपर ईश्वरकी अधिकप्रीति होतीहै, वो क्या अपने हिताहितके सोचनेकी शक्तिसें रहित मूढहोतेहैं, जिनपर ईश्वरकी अधिकप्रीतिहोतीहै, वो क्या मनुष्योंके बन्धनमें पड़जातेहैं, वा बनमें दिन रात्रि भयसें व्याप्त रहतेहैं, जिनपर ईश्वरकी अधिकप्रीति होतीहै वो क्या खान पानमेंभी दीन होजातेहैं ॥

जिनपर ईश्वरकी अधिकप्रीतिहोतीहै, उनपर क्या चाबक प्रहार लाठीप्रहार मनुष्य करसक्तेहैं ॥

जिनपर ईश्वरकी अधिकप्रीतिहोतीहै, उनकी क्या वर्षाऋतुमें माखि मच्छर डंगीआदिकोंसें दुर्दशाहोसक्तीहै ।

जिनपर परमात्माकी अधिकप्रीतिहोतीहै, उनका क्या पत्रघासआदिक अतिनिकृष्ट तामसआहार होसक्ताहै।

इत्यादिक अनेकदुर्दशां ईश्वरके कोपसें होतीहैं हेबाल ईश्वरकी प्रीतिसें ऐसींदुर्दशां नहींहोसक्तीं परमेश्वरकी अधिकप्रीतिसें तो, हिताहितका सम्यक्ज्ञान, निर्बन्धनता, निरंकुशला, निर्भयता. धर्मनिष्ठश्रीमानोंके घरमें जन्म, धर्ममें निष्ठा, सात्त्विकआहारमें रुचि, इत्यादिशुभलक्षणहोतेहैं, बालकों-की माता तो अज्ञानसें रागद्वेषादिकोसें ग्रस्तहै अतः समदर्शी नहींहै तुच्छशक्तिवालीहै, और परमेश्वर तो अज्ञानरागद्वेषादिकोंसें रहितहै सर्व-शक्तिमान् परमन्यायकारी समदर्शी सत्यसंकल्पहै, वह परमेश्वर जिस २ जीवपर प्रीतिकरे वोवोजीव उच्चपदको प्राप्त होताहै, वो २ जीव पशुओंकी न्यांई दुर्दशाको नहींप्राप्तहोसक्ता॥

होरजो तुमने कहा कि—परमात्माने जो २ नियम इनपशुओंके लिये बांधदियाहै, उस २ को यह कभी नहींछोडते और मनुष्य नियम तोडकर फलमांसादि सबवस्तु खाना चाहतेहैं, यिह तुमारा कथनभी ईश्वरके लक्षणके अज्ञानसेंहै अतः असत्यहीहै, क्योंकि परमेश्वर तो सर्वशक्तिमान् सत्यसंकल्पहीहोताहै इस्सें ईश्वरके नियमको ब्रह्मा बृहस्पतिइन्द्रादिक देव-ताभी, तोड नहींसक्ते तो मनुष्यनकी क्या शक्तिहै॥

हेमित्र—ईश्वरनें अपने नियम तुम्हारे कानोंमें तो सुनाएहीनहीं, किंतु ईश्वरके नियम कार्य्योंसें जानेजासक्तेहैं॥

और इनपशुओंका स्त्रीभोग वर्षमें एकवार रुचि प्रायः सन्तानार्थ ही-होतीहै" यिहतुमाराकथनभी असत्यहीहै क्योंकि नरपशु तो स्त्रीपशुओंके पीछेपीछे हररोज फिरते, दोलत्तोंकाप्रहार खाते२ नित्य हररोज केईवार टपोसीलगाते देखनेमें आतेहैं, नरपशुओंकी संतानमें कुछप्रीतिभी देखनेमें

नहींआती, प्रत्युत मार्जारआदिकपशु बच्चेओंके विरोधी होतेहैं, स्त्रीपशुओं-कीभी सन्तानमें जबतक दूध पीताहै तबतकही प्रीतिहोतीहै और सर्पिणी-आदि अपने बच्चेओंको आपही खालेतीहै ॥

हेभ्रातः-सिंहादिपशु मांसाहारीहीहैं, और मार्जार श्वानआदिपशु मांसकोभी अन्नदधिदुग्धकोभी खातेहैं, सृगाल गीदडआदिपशु मांसकोभी घासकोभी खातेहैं, काकचिडीआदिपक्षी मांसकोभी अन्नदधिदुग्धकोभी खातेहैं, और गरुडभगवान्आदिपक्षी केवलमांसकोही खातेहैं, और मनुष्य मांसकोभी अन्नदुग्धघृतादिकोंभी पहिलेसेही खातेआएहैं, एवं जिन-जिनजीवोंलिये जिसजिसआहारका परमेश्वरने नियम बांधाहै उसउसनि-यमको देवताअसुरमनुष्योंमें कोईभी तोड नहींसक्ता ॥

शंका-यद्यपि-भूतलमें मांसाहारी मनुष्य बहुतहीहैं तथापि बहुतमनुष्य मांसको नहींभीखाते तो ईश्वरका नियम कैसेरहा समाधान=ईश्वरका नियम टूटनहींसक्ता क्योंकि-परमेश्वरने मनुष्योंकेलिये अधिकारभेदसें और अदृष्टोंकेभेदसें अन्नादि और मांस दोनोआहार बनाएहैं देखो प्रमाणांक ३१२ में विदुर जीनेंभी कहाहै ॥

और मनुष्यनलिये तो विहितमांसके खानेकी ईश्वरने श्रुतिस्मृतिरूप आज्ञादीहुईहै, अतः ईश्वरकी आज्ञाभंगके भयसेंभी गृहस्थजनोंनें विहितमांस-को अवश्यं खानाचाहिये ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—जो तुमने कहा कि-हम ईश्वरका काम करतेहैं तो क्या तुमको ईश्वरने इसकाममें लगायाहै, जब कि यह जन्ममरणका चक्र अपने अपने कर्मोंका फलहै अर्थात् परमात्माकी इच्छासें अपने अपने कर्मोंके वशही जीव शुभ वा अशुभशरीरको प्राप्तहोताहै, और त्याग-

ताहै तोफिर तुम्हारी क्या शक्तिहै कि-तुम परमात्माके नियममें हस्तक्षेप, दखलदो, क्या ईश्वरसें यह काम नहींहोसक्ता कि-जिसमें परमात्मानें तुमको अपना सहायक बनाया ॥

आस्तिक०—कह चुकाहुं कि—सर्वशक्तिमान्परमेश्वरका काम स्वल्पशक्तिमान्जीव नहींकरसक्ता ॥

हेमित्र—यद्यपि-विशेषकाममें अधिकारीजनको ईश्वरही लगाताहै तथापि तुम्हने आपही कहाहै कि-परमात्माकी इच्छासें अपने २ कर्मोंके वशहीजीव शुभ वा अशुभशरीरको प्राप्तहोताहै और त्यागताहै,, तोफिर तुमको यिहविचार नहींहोसका कि-श्रुतिस्मृतिरूप परमेश्वरकी आज्ञासें पशुबलिदानकरनेवालेका क्या दोषहै प्रत्युत, ईश्वरकी आज्ञा का पालनहै—ईश्वरके संकल्पमात्रसें सर्वकार्य्य होतेहैं परमात्माको किसीसहायककी अपेक्षानहीं और परमात्माका कोईसहायक हैभीनहीं, और होभीनहींसकता

—०—

पूर्वपक्षी०—यदि कहो कि, हम इनको इस दुःखमय योनिसें छुड़ातेहैं तो यह क्यों जिह्वाकेस्वादके वशमें होकर झूठीबातें बनातेहो यदि यही प्रयोजनहोतातो इनके मांसको हड़प्प न करजाते फिरतो चीनियोंकी तरह कुत्ताबिल्ली मैंडक छिपकलीआदिकोंभी मार २ कर क्यों नीचयोनि सें न छुड़ाते ॥

आस्तिक०—कुत्ताबिल्लीमैंडक छिपकलीआदिक जीवतो श्रुतिस्मृतिओं में भक्ष्यनहीं कहेहैं किन्तु पंचनखवालोंमें 'सेह गोह गैंडा कूर्म शश' यिह पांचही भक्ष्यकहेहैं इस्सें आस्तिकपुरुष बिल्लीकुत्ताऽऽदिकोंका बलिदान नहीं करते, नांही इनके मांसको खातेहैं ॥

हेमित्र—दुःखमययोनिसें छुड़ानेवाला तो परमात्माहै, हम आस्तिकता सें श्रुतिस्मृतिओंके अर्थको प्रकटकर्तेहैं और तुम श्रुतिस्मृतिओंका निरादर कर्तेहो जो इनके अर्थको छिपातेहो—

—:०:—

पूर्वपक्षी०—यह तुमारी भूलहै कि, मनुष्योंके दांत मांसभक्षकजीवोंकी तरहहैं क्योंकि, मनुष्यके दांत न तो मांसभक्षीपशुओंसेंही मिलतेहैं और नांहीं घासभक्षीपशुओंसेंही मिलतेहैं किन्तु इनकी दांतोंकी बनावट ठीक बानरआदि फलाहारीजीवोंके दांतोंसें मिलतीहै और बानर भूखा मरणा स्वीकारकरेगा परन्तु पासपड़ेहुए मांसकीओर ध्यानतक न देगा, और ठीक विचारें तो मांसाहारी सिंहव्याघ्रआदिजीवोंके दांत और नख मनुष्यों सें अत्यन्तभिन्नप्रकारकेहीहोतेहैं उनके दांत ऊंचे तेजछुरीओंकी तरहहोतेहैं और नख लोहेकी तेजसीखोंकी तरह होतेहैं जिसजीवको वह पंजामारतेहैं एकही पंजेसें उसका मांस उखाड़ लेतेहैं और दांतोंसें हड्डीसमेत कच्चेमांसको पीस डालतेहैं और इनकी पाचनशक्ति हड्डीसमेत भस्मकरदेतीहै परन्तु मनुष्योंके दांतोंमें यह सब उपरकही सिंहकेदांतोंकी बातें नहींदेखीजाती फिरभीमनुष्य उनसें मांसमच्छी चबातेहैं इस्सें बढकर और क्या मूर्खता होसक्तीहै इससें सिद्धहुआ कि, मनुष्य मांसाहारीजीव नहीं होसक्ता ॥

आस्तिक०—यिह तुम्हारी दांतोंकी कल्पनाभी समीचीननहीं तथाहि कहताहुं सुनिये—

१—मनुष्योंके दांत मांसभक्षीघासभक्षी पशुओंसें मत मिलें क्योंकि मनुष्य पक्कामांसखानेवाले, पशु कच्चामांसखानेवाले परमात्माने बनाएहैं ॥

२—तुमने देखेनहीं,—बानरकी दाड़ें तेजलंबीऊंची कच्चेमांसकेउखाड़ लेनेवालीहोतीहैं और नख भीइनके तेजसीखोंकीतरह होतेहैं, इसीसें जब

आश्विनकार्तिकमासमें यिह मस्तीमेंआयकर आपसमें लड़तेहैं तब बहुत जखमीहोजातेहैं इसीसें रामायणमें बानरोंके दाडां और नखरूपशस्त्रवाले विशेषण कहेहैं ॥

तथापि इनकी प्रकृति अधिकमांसखानेकी नहींहै यिहबानर वर्षाऋतुमें पंखोवाले मकौडे जूआंआदिकोंको तो खातेहींहैं ॥

३— सिंहव्याघ्रादिकोंके दांतोंसें नखोंसें और पचानेकी शक्तिसें जो मनुष्योंके दांतोंकी नखोंकी असदृशता और पचानेकी शक्ति न्यून तुमने कही सोठीकहै क्योंकि, परमात्माने सिंहादिपशु कच्चामांसखानेवाले रचेहैं इस्सें उसके अनुकूलही सिंहादिकोंको दांत व पाचनशक्ति परमेश्वरनें दीहै और मनुष्य तो अग्निसें पकाएमांसके खानेवाले बनाएहैं अतः पक्कामांसखाने के अनुकूलही दांत और पाचनशक्ति मनुष्योंको परमेश्वरने दीहै ॥

सिंहव्याघ्रादिक पशुओंके पास छुरीआदिसाधनतो होतेनहीं इससेंभी ईश्वरने उनको वैसेही योग्यदांतनख दियेहैं ॥

हेमित्र—तुमने आपही कहाहै कि, मनुष्य मांसमच्छीचबातेहैं, तो मनुष्यनके दांत उनके चबानेयोग्यहैं तबीतो मनुष्य चबासक्तेहैं चबातेहैं पचातेहैं, यदि मनुष्यनके मांसमच्छीखानेयोग्य दांत न होतेतो वो कैसे खायसक्ते ॥

जैसे गोत के घासके भुसकेखानेकी पचानेकीशक्ति परमेश्वरनें गौ भैंस आदिकोंको दीहै अतः उनकोवो खासक्तेहैं पचासक्तेहैं, और मनुष्यतो गोत घास भुसआदिको न खाएसक्तेहैं, नाहीं पचायसक्तेहैं, ऐसेही यदि पकेमांसके खानेयोग्यदांत और पाचनशक्तिपरमेश्वरनें न दीहोती तो मनुष्य पकेमांसको कैसे खायसक्ते कैसे पचाय सक्ते ॥

४–यदि पकामांसकेखानेयोग्य दांत मनुष्यनके न बनाएहोते तो वेदसूत्र स्मृतिओंमें मांसखानेका सर्वज्ञपुरुष विधानही कैसे कर सक्तेथे ॥

५--हेभ्रातृजन-जिनजीवों के सिंहादिकोंकी न्यांई दांतहोंवें वो मांसाहारी परमेश्वरने बनाएहैं, और जिनके दांत वैसे नहींहैं वो मांसाहारी नहींबनाए" ऐसा कल्पनाकरा तुमारानियम असत्यहीहै क्योंकि--गीदड़ आदिक मांसको खातेहैं उनके दांत सिंहजैसेतो नहींहै, गरुड़गीधआदिपक्षी केवलमांसाहारी ईश्वरनें बनाएहैं उनके दांत हैहीनहीं ॥

और घरोंकेभीतर छत्तोंमें दीवालोंमें जो छिपकली फिरती रहतीहैं उनके दांत सिंह जैसेतो कहां, मनुष्योंजैसेभी नहींहोते, तो भी वो केवल मांसाहारीही ईश्वरनें बनाएहैं और छत्तोंमें दीवालोंमें ताकोंमें आलयों में झरोखेरोशनदानोंमें वृक्षादिकोंमें जो लम्बी २ जंघेंवाले मकरीनामाजीव मच्छर मक्षीआदिकोंके फैसानेलिये जाल फैलायरखतेहैं वो मांसाहारीही परमेश्वरने बनाएहैं उनके सिंह जैसे दांत कहांहैं नखकहांहैं ॥

और चारपादवालेभी छिपकली, चींटी, मकौड़े, मेंडक आदिजीव, मांसाहारी ईश्वरने बनाएहैं उनकेभी दांत सिंहजैसे कहां मनुष्यजैसेभी नहींहैं ॥

इस्सें जिनके दांत, सिंहादिकोंजैसे होवें वोही मांसाहारीजीव परमेश्वरने बनाएहैं" ऐसा तुम्हारा कल्पनाकरानियम असत्य हीहै, श्रुतिस्मृतिओंके अर्थको छिपाकर दुराग्रहसें अन्यथाअर्थ प्रकटकरना इस्सेंपरे होर क्या मूर्खता होसक्तीहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी०--यदि आप कहो कि-जीवोंका भोजन जीवही सिद्धहोताहै क्योंकि-सिंहव्याघ्रादिक सबजीवोंको मार २ कर खातेहैं और समुद्रमेंभी बडी २ मछलियें छोटी २ मछलियोंको खाकरजीतीहैं, इसीसें जानाजाताहै

कि-प्रकृतिका यहनियमहीहै कि-जीवोंद्वाराही जीव जीवन लाभकरतेहैं तोफिर मनुष्योंको मांसखानेमें क्या दोषहै, तो यह आपका नियम मनुष्यों-पर नहींघटसक्ता क्योंकि-मनुष्य और पशुओंमें बडाभेदहै ॥

आस्तिक०—अपना मनोघट्टित पूर्वपक्ष लिखकर तुम चित्तचाहा उत्तर लिखडालतेहो, देखो नारदप्रभृतिमुनिओंने जीवोंकी जीवही जीविका ऐसेकहीहै

भगवद्भागवत प्र० ३१९—अहस्तानिसहस्ताना, मपदानिचतुष्पदाम् ॥ फल्गूनितत्रमहतां, जीवोजीवस्यजीवनम् ॥स्क-१॥अ.१३ ॥४६॥

इसपर श्रीधरस्वामीकी टीका प्र० ३२०—ईश्वरेणविहितावृत्तिश्च सर्वतः सुलभैवेत्याह ॥ अहस्तानि पश्वादीनि, अपदानि तृणादीनि तत्रतेष्वहस्तादिष्वपि फल्गून्यल्पानि जीवनं जीविका ॥

अर्थ जब धृतराष्ट्र गान्धारी विदुरजी हस्तिनापुरतें युधिष्ठिरजीसें चोरीही चलेगये तब, युधिष्ठिरजी अतिशोककर व्याकुल हुए तब नारदजीने आयके कहाकि, सप्तस्रोतः गंगातटपर धृतराष्ट्रजीहैं तूं शोकको त्यागदे उनकी जीविकाके निमित्तभी शोकमतकर क्योंकि, ईश्वरनें सर्वतर्फ सुलभही जीविका कीहुइहै—जैसे 'हाथवालोंकी मनुष्योंकी हाथरहितहरिणादिपशु जीविकाहै ॥

और चतुष्पाद गौभैंसहरिणादिकोंकी घासआदिजीविकाहै उन हस्त रहितजीवोंमें सर्पमेंडकगरुड़ मत्स्यादि बड़ेजीवोंकी छोटेजीव जीविकाहै, एवं

जीवकी जीव जीविकाहै यिह नारदजीने कहाहै और प्रमाणांक ३३ में मनुजीनेंभी ऐसेही कहाहै ॥

महाभारत प्र०३२१ **सत्त्वैःसत्त्वानिजीवन्ति बहुधाद्विजसत्तम** । ३॥ २०८ ॥ २८ ॥ अर्थ-हेब्राह्मण बहुधा जीवोंसें जीव जीवतेहैं ॥

यदि आप कहो कि-जो मनुष्य मांसको नहींखाते उनका तो जीवना जीवोंसेंविना होसक्ताहै, तो यिहकथनभी अयुक्तहीहै, क्योंकि-मनुष्य जो कूपआदिकोंका शुद्धजल पीतेहैं उसमेंभी अतिसूक्ष्मजीव असंख्यहोतेहैं वो वस्त्रमेंभी छनजातेहैं सो खुरदबीनसें देखेजासक्तेहैं, और श्वासलेनेंसेंभी अनेक सूक्ष्मजीव भीतरजाकर मरतेहैं, यदि मनुष्य जलको न पीवे नांही श्वासलेवे तो मनुष्योंका जीवन रहसकेनहीं, यदि जलको पीवे श्वासलेवे तो असंख्यजीव मरतेहैं, इस्से भी कहाहै कि—बहुधा जीवोंसें जीव जीवतेहैं ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—मनुष्योंका मांसाहारीजीवोंसें आकृति, शकलमें कितनाभेदहै शेरआदिको देखतेही प्राण सूखतेहैं बुद्धि बाणी और स्वभावआदिमेंभी कितनाभेदहै, इसलिये सर्वथा बराबरी न होनेसें मनुष्यकेलिये मांसका आहार हानिकारकहै ॥

आस्तिक०—आकृतिके भेदहोनेसें मांसका निषेध नहींहोसक्ता क्योंकि सिंह व्याघ्र गरुड गीध छिपकलि मकरिआदिजीवोंकी आकृतिका तो भेदहीहै परंतु यिहसब मांसाहारीही ईश्वरनें बनाएहैं ॥ और काक कुत्ता बिल्ला गीदड सर्प मकर मत्स्यादिजीवोंकीभी शकलका तो अतिभेदहीहै, परंतु

यिहसब मांसाहारी परमेश्वरने बनाएहैं, अतः मनुष्योंकीभी आकृतिका भेदहोनेकर मांसाहारका निषेधकहना तो अपनादुराग्रह प्रकटकरनाहै ॥

होर जो तुमनें कहा कि—शेरआदिकोंको देखतेही प्राण सूखतेहैं, तोहेमित्र-मांसाहारसें रहित, बनके भालूको हाथीको देखकरभी तो प्राण सूखतेहैं ॥

और छिपकलि बिल्ली काकआदि मांसाहारीजीवोंके देखनेकर तो प्राण नहींसूखते, बहुत क्या गरुडजीभी केवलमांसाहारीहीहैं उनके दर्शनसें तो पुण्यभी आस्तिकपुरुष मानतेहैं चित्तभी प्रसन्नहोताहै नेत्र भी प्रफुल्लितहोजातेहैं इस्सें सिद्धहोसक्ताहैकि—मांसाहारीजीवोंके देखनेसें प्राण नहींसूखते किंतु अपने प्राणनाशकजीवके देखनेकर प्राण सूखतेहैं वो शेरहो वा भालूहो हाथीहो वा कोईहोरहो ॥

सिंहादिकोंको देखकरभी अधीरपुरुषके प्राण सूखतेहैं, शूरजनोंके प्राण नहींसूखते, प्रत्युत शेरको देखकर अपना शिकार जानतेहुए शूरजनोंको तो हर्षहीहोताहै ॥

पशु और मनुष्योंके बुद्धिवाणीस्वभावादिमेंभी यदि भेद नहींहो तो हेबाल फिर मनुष्योंकोभी पशुही कहनाहोगा आदिगरुडजी जो महर्षिकश्यपके पुत्र विष्णुनारायणके अतिप्रियसदस्यहैं वो मांसाहारीहैं महाबुद्धिमान् मनोहरवाणी अतिसात्त्विकस्वभाववालेभीहैं हेमित्र राजसतामसस्वभाववाला तो विष्णुके समीप पहुंचही नहींसक्ता ॥

यदि मनुष्योंकेलिये मांसका आहार हानिकारकहोता, तो सात्विकस्वभाव ब्रह्मर्षि राजर्षि और रामादिअवतार मांसका आहार कबी न करसक्ते ॥

इस्से विहितमांसका आहार हानिकारक नहीं, किंतु श्रुतिस्मृतिओंसें विरुद्ध-कथन और आचरण अतिहानिकारकहै ॥

——

पूर्वपक्षी०—भेदके अनुसारही पशुओंके सदृशव्यवहार मनुष्यके साथ, वा मनुष्य के सदृश सिंहादिपशुके साथ नहींकियाजाता, जैसे सिंहादि दूसरेजीवोंके भोजनको लूट छीन और चुराकर खातेहैं पर वह डाकू और चोर नहींसमझेजाते और नांही किसीदंडके योग्यही गिनेजातेहैं परंतु यदि मनुष्य ऐसाकरे तो दंड पाताहै अतः मनुष्योंकी तुल्यता सिंहादिकोंसें किसीअंशमेंभी नहीं-होती ॥

आस्तिक०—पशुओंके साथ मनुष्यके सदृशव्यवहार न कराजाताहै नांही करनायोग्य होसक्ताहै ॥

सिंह तो किसीके भोजनको लूट छीन वा चुराकर नहींखाता, और जो कुत्ताबिल्लाऽऽदिक लूट छीन चुराकर खातेहैं उनको चोर बिल्ला लुटेरा-वानर, ऐसेकहतेहीहैं ॥ अपराध करनेकर यिह दण्डयोग्यहोतेहीहैं, इसीसे इनको लाठीआदिक प्रहारकर दंड दियाहीजाताहै, सिंहादिकोंकोभी राजे महाराजेआदि मारडालतेहैं ॥

जाति आकृति व्यवहारआदिकोंका भेद मांसाहारका बाधक नहींहै, जैसे सिंह गरुड श्वान बिल्ला छिपकलि काकआदिकोंका जातिसें आकृतिसें भेदहीहै, और इनसबके साथ व्यवहारभी भिन्नभिन्नही कराजाताहै, तो भी यिहसब मांसाहारीहीहैं,

ऐसेही—सिंहादिकोंका और मनुष्योंका जातिआकृतिव्यवहारादिकों-से भेदहै, उनमें सिंहादिपशु कच्चामांसको और मनुष्य पक्कमांसको खाने-वालेहैं ॥

पूर्वपक्षी०—देखो मांसाहारीपशु कुत्ताऽऽदिसब पानीको चप २ शब्द-कर पीतेहैं मनुष्य ऐसा नहींकर्ता ॥

आस्तिक०—जोजो चपचप शब्दकर जिह्वासें जलको पीताहै, वोवो मांसाहारीहोताहै,, ऐसानियम नहींहै क्योंकि भालू, रीछभी चप २ शब्दकर जलको पीताहै वो मांसाहारी नहींहै, और काक गरुड सर्प तथा चारपाद-वाले चीटी छिपकलिआदिक असंख्यजीव मांसाहारीहैं वो चप२ शब्दकर जलको नहींपीते, ऐसे बहुत दृष्टान्तोंसें तुम्हारा कल्पनाकरा नियम व्यभि-चारीहै ॥

——

पूर्वपक्षी०——जोजोजीव मांसाहारीहोताहै उस२ को पसीना नहीं आता ॥

——

आस्तिक०—यिह नियम नहींहै क्योंकि-सिंहादिकोंमें तुमने परीक्षा नहींकी और यहांभी कुत्ता मांसाहारीहै उसको पसीनाभी आता है ॥

——

पूर्वपक्षी०—बिडालादिमांसाहारी अपने बच्चोंकोभी खाजातेहैं परंतु मनुष्य ऐसाकरनेपर पातकी समझेजातेहैं और दंड पातेहैं क्योंकि-विधि और निषेधके योग्य केवल मनुष्ययोनिहै और नहींहै इस्सें सिद्धहुआकि सिंहादिकीन्यांई मनुष्य मांसाहारी नहींहोसक्ता ॥

आस्तिक०-बिडालआदि-ऐसेहींहैं तबी तो उनको पशु कहतेहैं, हेमित्र-जब विधिनिषेधके योग्य केवलमनुष्यहैं तो पशुबलिदानमें और विहितमांस-के खानेमें बहुतही विधिवाक्यनको मैं दिखलायचुकाहुं, और तुम आपभी "अग्नीषोमीयं पशुमालभेत,, इस वेदके विधिवाक्यको

दिखलाय चुकेहो, तो सिद्धहुआ कि–विधिविहितमांसके खानेवाले मनुष्यहैं, सिंहादिपशुओंकीन्याई अविहितमांसकेखानेवाले मनुष्य नहींहैं ॥

पूर्वपक्षी०––मांसमें स्वादका मानना यह आपकी सर्वथा भूलहै यदि वस्तुतः इसमें स्वादहोता तो कच्चेमांसमें अथवा बिनाघीमसालेके पकाकर खानेमेंभी प्रतीतहोता किंतु इसमें स्वाद तुम्हारे डालेहुए घी और मसालाऽऽदिकाहीहै जिसको तुम भूलकर मांसका मानरहेहो, जैसे कोईपुरुष कहे कि–– लड्डू मीठाहै, यह उसकी भूलहै लड्डूमें वडाहिस्सा चनेकाहै और चने मीठे नहींहोते अतः मिठास उसमें डालेहुए खंडमेवाऽऽदिकाहै चनेका नहींहै, ऐसाही मांसमेंभी जानो, क्या कभी मांसाहारीसिंहादिजीवोंने मांसके वास्ते आपकी तरह उसकेलिए मसाले घी और पकानेकेवास्ते अग्निकीइच्छाकीहै ॥

आस्तिक०––सिंहादिजीव मांसकेवास्ते घीमसालाअग्निकी इच्छा नहींकर्ते तो इस्से जानाजासक्ताहै कि–कच्चेमांसमेंभी बहुतस्वादहै ॥

और जो तुमने कहाकि–'इसमें, मांसमें स्वाद तुम्हारेडालेहुए घीमसालाऽऽदिकाहीहै, जिसको तुम भूलकर मांसका मानरहेहो, सोयिह तुम्हारा कथनभी दुराग्रह करहीहै अतः असत्यहीहै' क्योंकि=यदि घीमसालेकाही स्वादहोता, तो मांससेंविना केवल घृतमसालेके खानेकरभी वैसास्वाद प्रतीतहोता, केवल घृतमसालेके खानेसे मांसके स्वादजैसा स्वाद नहींआता अतः घृतमसालेकाही स्वाद नहींहै, किंतु रसज्ञजनोंके मनोंको हरणेवाला मांसकाहीस्वादहै, यिह प्रमाणांक ९५ में भीष्मपितामहजीनेंभी स्पष्टकहाहै ॥

हेमित्र–मूली गाजर शलगम दाल गोभी आलू मेथी पालकआदिभी, घी मसाला डालकर पकाए जातेहैं, तो उनका स्वाद पकमांसजैसा तो

नहींहोता किंतु घीमसाला डालनेसेंभी उनसबका विलक्षण २ जुदा २ ही स्वादहोताहै, भावयिह मूली गाजर आलू गोभीआदिकोंका जोजोंविलक्षण२ स्वादहै उसउसस्वादकी अधिकताका हेतु घृतमसालाऽऽदिकहैं ऐसेही मांसका स्वाद घृतमसालाऽऽदिकोंसें अधिक होजाता है और गुणभी अधिक होजाताहै, सो देखो प्रमाणांक १७७ आदिकों में कहाहीहै ॥

केवलखण्डके खानेकर लड्डुओं का स्वाद नहींआता ऐसेही मांसकाभी अपना स्वाद रसज्ञजनोंको विशेष भास्ता हीहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—जबकि—उत्तम सें उत्तमपदार्थ अनेकप्रकारके आंब अंगूर खण्ड दूध मिलाई रबड़ी दधि माखन घी लड्डू पेड़ाऽऽदिक परमात्मा की कृपासें मिलसकेहैं तो फिर मलमूत्रकेभांडे लहूवीर्य्यके परिणाम कसाई के जलसें दूषित जीवहिंसा और बन्धनसेंउत्पन्न होनेंवाले मांसमें घृणा क्यों नहीं करते ॥

आस्तिक०—मांसें आंब अंगूर घृतआदिपदार्थोंकी उत्तमतानिकृष्टता को शुद्धताअशुद्धताको, तुम क्या प्रमाणोंसें सिद्धकरी चाहते हो वा युक्तिओंसें ।

इनमें प्रथमपक्ष तो असत्यहीहै क्योंकि, अजशशहरिणादिकोंके मांसकी अशुद्धतामें अबतक तुमने कोई प्रमाणनहींकहा—हेमित्र—मैं प्रमाणांक १ आदि बहुतही प्रमाणदिखलायचुकाहुं उनमें घृत तेल शाककी न्याईं मांस को शुद्ध पवित्र कहाहै ॥

और प्रमाणांक ९५ आदिकोंमें १७६ आदिकोंमें मांसके अतिउत्तम गुण वर्णनकरेहैं, और प्रमाणांक १८६ आदिकोंमें और २४२ आदिकोंमें उपनिषद्आदिकोंसें मांसके अतिउत्तमगुण वर्णन होचुकेहैं ॥

यदि द्वितीयपक्षकहोतो, वोभीअयुक्तहीहै क्योंकि, इसकाउत्तर विस्तारसें मैं लिखचुकाहुं संक्षेपसें यिहहै कि—

मलमूत्रके भांड रक्तवीर्य्यके परिणाम तो तुमभीहो और गुजरांवाला चनोट अमृतसर लाहौर देहली आदि शहरोंमें कुत्तेबिल्लीमनुष्यघोड़ेगधे आदिकोंकाभी जो मैला म्युंसिपलकमेटीद्वारा हजारों रुपयोंका वेचाजाताहै वो सब मैला खेतोंमें बागों में गेरनेसें बाग और खेत पुष्टतियार होतेहैं उनके फलोंको अन्नशाकादिकोंको तुमभीतो खातेहोहो, रक्तवीर्य्यसें मांसनहीं बनता, रक्तवीर्य्यसेंतो बुदबुदामात्र होताहै फिर अन्नके परिपाकसें रसधातु रससें रक्तमांसादि बनतेहैं रससें ही दुग्ध पैदा होताहै, तो तुम ऐसे अन्नसें फलों सें दुग्ध सें घृणा क्यों नहीं करते ॥

इत्यादिप्रबलप्रमाणोंसें और युक्तियोंसें मांसकी शुद्धता और गुणोंसें उत्तमता सिद्धहीहै ॥

पूर्वपक्षी०— शोकहै तुम्हारे इस जिह्वाके रसपर जो आपको विचारसें कोसोंदूर लेगयाहै तुम क्या जानतेहो कि" बकरेके मांसकेपलटेमें कसाई लोग तुमको किस २ जीवका मांसखिलादेतेहैं सुनागयाहै कि कई नगरोंमें कसाईमहेरआदि कुत्तेमनुष्य और गौके मांसकोभी बेचतेहुए पकड़ेगएहैं इसपरभी तुम ऐसे खोटे कर्ममें ग्लानिनहीं करते, भला तुम यदि मांस न लो तो इतने जीव क्यों मारेजावें ॥

आस्तिक०—हेमित्र-श्रुतिस्मृतिओंमें अश्रद्धाकर दुराग्रहके वशीभूत हुए तुम श्रुतिस्मृतिओंके अनुकूल सद्विचारसें शून्य होगएहो ॥

मनुष्यका मांस तो कौन न्यायके वेचसक्ताहै तुमको किसीने झूठही कहादियाहोगा, यदि ऐसे कहीहोतो, उसको अतिदण्ड देकर हाकिम मर्यादा को स्थिर करदेतेहैं ।

होर कहीं किसीअभक्ष्यजीवके मांसका संदेहहो तो छोटा २ कटा हुआ मांस मत खरीदो जिस्सें संशय नहींरहे ॥

होमित्र-यिह योग्य नहींहोसक्ता कि, ऐसा कहीं कोई संशय होवेतो योग्यभोजनका विहितकर्मोंकाही त्यागकरदियाजावे, जैसे प्रसिद्धहींहै इस समय बड़े २ शहरोंमें प्रायः चरबीकाघृत बनाकर बेचाजाताहैतो इतनेसें घृतकेखानेका हवनका अतिथियज्ञका त्यागकरना तो योग्यनहीं होसक्ता किन्तु सम्यक् परीक्षा करके चरबीके घृतको छोड़कर शुद्धघृतका ग्रहण योग्यहै ॥

जिस विधिविहितमांसको रामादिअवतार तथा ब्रह्मर्षिराजर्षि खाते खुलातेरहेहैं उसको खोटा कर्म कौन आस्तिक पुरुष कहसक्ताहै ॥

यदि आप वैदिकमतवाले मांसको नहीं लेंगे तो इत्तरजनोंकेलिये भेडबकरादि मारेजायेंगे ॥

शंका—तो भी फिर थोड़े मारेजाएंगे ।

समाधान—ऐसे नहीं कहो-क्योंकि, जब वैदिकमतवाले नहीं लेंगे तब सस्ताहोनेकर वो गरीबभी मांसको तृप्तिकर खाएंगे जिनको पहिले बहुमूल्यरूपहेतुसें मिल नहीं सक्ताथा परंतु भेडदुम्बाबकराऽऽदिजीव तो इसीकाममें आतेहैं व आएंगे ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—जिस स्थानपर दो, एक महात्माओंने उपदेश कराहै वहांपर सहस्रोंमनुष्योंने मांसका खाना त्यागदियाहै अतः नरकमें डालने वाले इसपापकर्मसें आपभी मनको रोको ॥

आस्तिक०—अशास्त्रीयपुरुषोंको अशास्त्रीय दो साधुओंने अयुक्त

उपदेश करादिया तो, वो माननीय नहीं होसक्ता इसीसें उनमेंभी बहुत पुरुषोंने शास्त्रीयपुरुषोंसें निर्णयकर्के फिर विहितमांसको खानेलगपड़ेहैं॥

यदि तुम कहो कि-शास्त्रीयपुरुषोंकोभी उनोने उपदेश कराहै तो हेमित्र-अशास्त्रीयपुरुषोंकाभी कबी शास्त्रीयपुरुषोंको उपदेश देनेका अधिकार होसक्ताहै॥

जो अशास्त्रीयपुरुषसें उपदेश सुने उसको शास्त्रवेता कौन कहसक्ताहै॥ एकतृतीयसाधु तो यद्यपि शास्त्रीयहै तथापि प्रबलप्रमाणोंको दृष्टान्तोंको युक्तिओंको देखकरभी सुनकरभी वो यदि दुराग्रहको नहींछोडें तो सो सद्धर्मनिष्ठपुरुषोंमें माननीय नहींहोसक्ता॥

विधिविहितअर्थका अधिकारीजनोंमें प्रकटकरना तो पापकर्म नहीं, किंतु श्रुतिस्मृतिओंसें विरुद्ध असत्यभाषण नरकमें डालनेवाला अतिपापकर्महै हेभ्रातः ऐसेअतिपापकर्मसें आपभी मनको रोकें॥

पूर्वपक्षी०—यदि तुम कहो कि-जब चिकित्साशास्त्रके चरक सुश्रुत आदिग्रन्थोंमें बहुतसा मांसके गुणोंका जिकर आताहै तो फिर हम कैसे निश्चय करसक्तेहैं कि-मनुष्य मांसखानेवाला नहींहै, ऐसे यदि तुमकहो, तो तुम अपनी विचारशक्तिसें सर्वथाकाम नहींलेते, सबशास्त्र भिन्न २ मार्गका अधिकारीके भेदसे उपदेश देताहै जैसे धर्मशास्त्र धर्मके निर्णयमेंही अधिकार रखताहै, ऐसे ही नीतिशास्त्र पापपुण्यकी अपेक्षा न रखताहुआ केवल अपनी ऐहिकउन्नत्तिकाही उपदेशकर्ताहै इसीप्रकार वैद्यकशास्त्रभी, रोग रोगका कारण रोगका दूरहोना, और रोगके दूरहोनेका उपाय इनचारबातोंके उपदेशकरनेमें ही सफलहै इसपदार्थके खानेमें धर्म और इसके खाने पापहोताहै इसबातके

निरूपणमें चिकित्साशास्त्र कुछप्रयोजन नहीं रखता क्योंकि–शब्द जिस-बातके निरूपणमें प्रवृत्तहोताहै शब्दका अर्थ वहीहोताहै अतः चिकित्सा-शास्त्र पापपुण्यके निरूपणमें सर्वथा उदासीनहै ॥

आस्तिक० — महर्षिओंके साधारणकथनभी, ममूलीबातेंभी और शरीर-इन्द्रियोंकी चेष्टाभी धर्मविषयक प्रयोजनवालीहोतीहैं, तो महर्षिओंके रचित नीतिशास्त्रआदिकोंका क्या कहानाहै ॥

हेनादान—नीतिशास्त्र और चिकित्साशास्त्र तो सर्वधर्मोंके मूलहैं जिनको तुम सद्विचारसें शून्यहोकर धर्मविषयकप्रयोजनसें रहितकहतेहो ।

महाभारत—यथाराजन्हस्तिपदेपदानि, संलीयन्ते सर्वसत्त्वोद्भवानि ॥ एवंधर्मान्राजधर्मेषुसर्वान् सर्वावस्थंसंप्रलीनान्निबोध ॥ १२ ॥ ६२॥ २५॥ सर्वे-त्यागाराजधर्मेषुदृष्टाः सर्वादीक्षाराजधर्मेषुचो-क्ताः ॥ सर्वाविद्याराजधर्मेप्रविष्टाः सर्वेलोका-राजधर्मेनिविष्टाः ॥ २९ ॥ यंहिधर्मंचरन्तीह, प्रजाराज्ञासुरक्षिताः ॥ चतुर्थंतस्यधर्मस्य, राजा-भारतविन्दति ॥१२॥ ७४ ॥ ६॥ यदधीतेयद्ददाति, यज्जुहोतियदर्चति । राजाचतुर्थभाक्तस्य, प्रजा धर्मेणपालयन् ॥ ७ ॥

अर्थ--हेराजन् जैसे हाथीके पैरमें सब जीवोंके पैर समाजातेहैं ऐसेही होर सर्वधर्मोंको राजधर्मोंमें संलीन जानों अर्थात् राजधर्ममें और सर्वधर्म आजातेहैं ॥ २५ ॥ सर्वत्याग सर्वयज्ञ सर्वविद्या सर्वलोक राजधर्ममें आ जातेहैं क्योंकि राजाकर सुरक्षितहुई प्रजा जिस त्यागयज्ञआदिधर्मको करेहै, उसधर्मके चतुर्थभागको राजा प्राप्त होताहै। प्रजा जिसशास्त्रका अध्ययन करेहै, जो दान कर्तीहै, जो होम करेहै, जो पूजन करेहै, उसधर्मके चतुर्थ अंशकाभागी राजा होताहै जो राजा धर्मसें प्रजा पालिताहै ॥

और प्रसिद्धहीहै कि, बिमारीके होते विशेषधर्मकार्य्य होहीनहींसक्ता, और नाहीं सुख विशेष रहताहै-

ऐसे प्रतिबन्धकोंके निवारणद्वारा राजनीतिशास्त्र और चिकित्साशास्त्र सर्वधर्मकर्मोंके सहकारी कारणहैं ॥

और देखो प्रमाणांक ४१ में ९१ में १०३ में २३७ में २३८ आदि धर्मशास्त्रोंमेंभी प्राणांतसमयतक अशक्तपुरुषको औषधलिये मांसखानेकी आज्ञादीहै इस्सें चिकित्साशास्त्र और नीतिशास्त्रभी धर्मशास्त्रके अन्तर्गतहैं ॥

यदि मनुष्यका वास्तवसें मांसआहार न होतातो चिकित्सा शास्त्रमें परमपूज्यमहर्षिजन; व हकीमीकी कताबोंमें और मेडिकलकताबोंमें अतिलायक मान्यवरपुरुष मांसके गुणोंकाप्रतिपादन, मांसखानेका विधान कैसे करसक्ते थे अतः उनपरमपूज्य पुरुषोंके लेखसेंभी सिद्धहीहै कि, विहित मांस मनुष्यका आहारहै ॥

पूर्वपक्षी०—मनुस्मृतिआदिधर्मग्रन्थोंमें मांससें श्राद्धकरना लिखाहै तो फिर मांसमें घृणा क्यों, ऐसे यदिकहोतो, वैदिकधर्म सबस्थानमें कर्तव्यहै सबप्रकारकेमनुष्योंकी प्रकृतिकेअनुसार हुआकरताहै इसलिये जहांपर और कोईपदार्थ श्राद्धकरनेकोलिये प्राप्त न हो और वहांकेपुरुष प्रायः मांसाहारी हों वहांपर श्राद्धकरनका मांसप्रकरणहैपरन्तु हमारादेश ऐसा नहींहै ॥

आस्तिक०—शुभहुआ कि, धर्मशास्त्रोंमें मांससें श्राद्धकरनालिखाहै, वो तुमनेभी मानालिया परन्तु वैदिकधर्म सबस्थानमें कर्तव्यहै, इत्यादिक गोलमोल लेख तुमने धोखादेनेकेलिये लिखदियाहै, तथाहि कहता हुं सुनिये—

जिसदेशमें ब्राह्मणादिचारवर्णोंका व आश्रमोंका विभागहै उसदेशके सबस्थानमें वैदिकधर्म कर्तव्यहै, अथवा जिसदेशमें चारवर्ण चारआश्रमोंका विभाग नहींहै उसदेशकेभी सबस्थानमें वैदिकधर्म कर्तव्यहै ॥

इनमें द्वितीयपक्ष तो असंभवहीहै क्योंकि जहां ब्राह्मणादिवर्णोंका व आश्रमोंका विभागहीनहींहै, तो उसदेशमें वर्णआश्रमके अधिकारसें होने वाले श्राद्धप्रभृतिवैदिककर्म कैसे होसक्तेहैं ॥

यदि प्रथमपक्षकहोतो ऐसा होरकोईदेश नहींहै किन्तु ऐसायिह वर्ण आश्रमोंके विभागवाला भारतखण्डहीहै इसी देशमें मांससें श्राद्धकरनेकी धर्मशास्त्रोंमें आज्ञा कीहुई सिद्धहोतीहै ॥

होरजो कहाकि जहांपर और कोईपदार्थ श्राद्धकरनेकेलिये प्राप्त न हो, और वहांकेपुरुषभी प्रायः मांसाहारीहों वहांपर श्राद्धकरनेका मांस प्रकरणहैतो, ऐसाकहना धोखादेनाहीहै; क्योंकि, जिसदेशमें मांस मिलताहै श्राद्ध करनेकेलिये और कोईपदार्थ नहीं मिलता वहांकेमनुष्यभी मांसाहारीहैं और श्राद्धकेयोग्य ब्राह्मणादिवर्णोंका विभागभीहै ऐसा कोईभी देश नहींहै व नांहीं ऐसादेश होसक्ताहै क्योंकि, जहांपर गेहुं चावलादिअन्नभी और दुग्धघृतआलुशाकादिकभी नहीं मिलसक्तातो, केवलमांससेंही वोदेश आवाद कैसे होसक्ताहै ॥

यदि तुम कहोकि, जांगलीमनुष्यनका जंगलदेशतो ऐसाहै तो यिह तुम्हाराकथनभी अयुक्तहीहै जंगलदेशमेंभी कन्दमूलशाकआदि मिलसक्तेहैं

परन्तु उनमें ब्राह्मणादिवर्णोंका विभागही नहीं है बहुत क्या जांगलीमनुष्य तो पशुओंकीन्याईं वस्त्रोंसेंभी रहितहोतेहैं तो उनकोलिये वर्णाश्रमकेअधिकार सें करणेयोग्य श्राद्धका विधान शास्त्रकार कैसे कर सक्तेहैं ॥

हेमित्र—जहांपर मांससेंबिना और कोईपदार्थ श्राद्धकरनेके लिये प्राप्त न हो और वहां श्राद्ध करणेकराणेयोग्य ब्राह्मणादिवर्णोंका विभागभी हो ऐसा कोईदेश नहींहै इस्सें सिद्धहुआ कि, गोलमोललिखकर तुम धोखा देतेहो ॥

हेपाठक–श्राद्धकेयोग्यब्राह्मणादिवर्णों के विभागवाले इसभारतखण्डमें ही मांससें श्राद्धकरनेकी आज्ञा धर्मपुस्तकोंमें की हुईहै यिह सिद्धहुआ ॥

और कर्मभूमिभी यिह भारतखण्डहीहै इस्सेंभी इसभारतवर्षमेंही मांस सें श्राद्धकरनेकी आज्ञाहै ॥

—*०*—

पूर्वपक्षी०—इसदेशमें सर्वप्रकारके उत्तम २ पदार्थ मिलसक्तेहैं तो फिर मांसकी क्या आवश्यकता, जिसपदार्थको विद्वान्महात्मा श्राद्धमें खाने की इच्छा करें उसीपवित्र पदार्थद्वारा उनकी प्रसन्नता लेनी चाहिये ॥

आस्तिक०–प्रबलप्रमाणोंसें युक्तिओंसें मांसकी अतिस्वादुता शुद्धता और गुणोंसें उत्तमता पूर्वसिद्ध होचुकीहै ॥

और देखो प्रमाणांक १५१ आदिकोंमें पितरों का जो मासिकश्राद्धहै वो मांससेंही करनाकहाहै ॥

—*३*—

पूर्वपक्षी०–भला आस्तिकजी आपजो नित्य भेडमुरगादिके मांसको हड़प्प कियाकरतेहो, यह क्या नित्य आपकेघरमें श्राद्धहीहोता रहताहै ॥

आस्तिक०—केवल श्राद्धकर्ममेंही मांसखाने की आज्ञा नहीं किंतु

नित्यकरणीय देवयज्ञ मनुष्ययज्ञआदिकोंमेंभी मांसकी आज्ञा धर्मग्रन्थनमें कीहुईहै, वो पाहिले दिखाचुकाहुं ॥

यदि भाग्यवान्गृहस्थपुरुष नित्यहीश्राद्धकरें तो अत्युत्तमहै भाग्यवान् कर्तेही रहेहैं-देखो प्रमाणांक ७५ में पराशरजीने नित्यपंचयज्ञोंमें मांसका विधान कराहीहै इस्सें नित्यविहितमांसका हडप्पकरना तो शुभफलका हेतुहै क्योंकि धर्मपुस्तकोंके ,विधिका, हुकमका पालनहै ॥

पूर्वपक्षी०—थोडा विचार तो करो कि-जिनके तुम मांसको खातेहैं यह भेडकुक्कडआदि क्या २ खातेहैं जिनसें कि उनका शरीर बनताहै ॥

आस्तिक० ऐसा पूर्वपक्ष तुमने केईवार कराहै उसउसका उत्तर भी मैंने केईवार लिखदियाहै इस्सें पुनरुक्तिदोष तुम्हारे कथनमेंही समझनाचाहिये इसग्रन्थमें पुनरुक्तिदोष नहीं ॥

मैंने विचाराहै कि-जैसे रक्तवीर्य्यसें पाहिले बुदबुदासा होताहै फिर अन्नके रससें रक्तमांसआदि बनतेहैं उनका समुदायही शरीरहै वो जैसे मेरा तेरा शरीरबनाहै वैसेही मेडबकराऽऽदिकोंका बनाहै।

अब तुमभी विचारो कि-जो आप अन्नशाकादि खातेहो वो कहां कैसे पैदा होतेहैं अर्थात् जहां म्युन्सिपलकमेटीसें हजारोंरुपैओंका खरीदके मनुष्य गधा श्वान घोडा बिल्लाऽऽदिकोंका मैला पडताहै वहां अन्नफल-शाकादि तियार होतेहैं और ग्रामोंके समीप जो भेडें गौएं चरतीहैं वो घास को चरती २ मनुष्योंके मैलेकोभी खाजतीहैं ॥

पूर्वपक्षी०—जिनग्रन्थोंमें जिनकी मांसखानेकी कथाहैं उनको ज्ञानी मानते हो वा अज्ञानी ॥ यदि अज्ञानी मानतेहो तो क्या अज्ञानी का आचार

भी धर्ममें प्रवेश करसक्ताहै, यदि उसका आचारभी धर्महो तो अज्ञान दूरकरनेकेलिये शास्त्रोपदेश और शिष्टोंका प्रयत्न व्यर्थहोनाचाहिये ॥

आस्तिक०—आर्षग्रन्थनमें जिन ब्राह्मणोंकी और राजोंकी तथा होरकेईपुरुषोंकी, मांसखानेकी कथाहैं वो ब्राह्मण राजे महाराजे तो वेदस्मृतिआदिधर्मशास्त्रोंके ज्ञानीथे अतः वर्णआश्रमोंके धर्मोंकेभी सम्यक्ज्ञानीथे, इसीसें वेदसूत्रस्मृतिग्रन्थोंमें श्रद्धाकर विधिवाक्यनसें प्रेरेहुए वह विहितमांसको खाते रहेहैं ॥

श्रुतिस्मृतिओंके रहस्यअर्थकेज्ञानी, धर्मनिष्ठ ब्रह्मर्षिराजार्षिओंके आचारको, नास्तिकोंसेंविना अधर्मरूप कौन कहसक्ताहै, अर्थात् उनका आचार परमप्रमाणहै धर्मरूपहै, उनोंसेंभिन्नजो श्रौतस्मार्तधर्मोंको नहींजानते, अतः वृथामांसको खानेवालेहैं, वोअज्ञानीहैं उनका आचार धर्ममें प्रवेश नहींकरसक्ता, उनको धर्मज्ञानलिये शास्त्रोपदेश और श्रेष्ठजनोंका प्रयत्न सफलहै ॥

———

पूर्वपक्षी०—यदि शास्त्रके भयसें तुम अज्ञानीके कर्मको धर्म नहींसमझते तो शास्त्र मांसभक्षणका महानिषेध कर्ताहै अतः शास्त्रसिद्ध मांसकानिषेधहोनेसें फिर मांसमें क्यों प्रवृत्तहोतेहो ॥

आस्तिक०—स्मृतिआदिकोंमें वृथामांसके खानेका निषेधहै और विहितमांसखानेमें वेदसूत्रस्मृतिआदिकोंके बहुतही 'विधान, हुक्म दिखलायचुकाहुं और प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके नहींखानेसें नरकादिकोंकी प्राप्तिकहीहै, तो तुम दुराग्रहकर श्रुतिस्मृतिओंके निर्णीतअर्थको क्यों छिपातेहो ऐसेकरनेसें तुम क्या आस्तिक कहलायसक्तेहो ॥

———

पूर्वपक्षी०—जिन पुरुषनकी मांसखानेकी कथाहैं वह तुम्हारे बराबरही

ज्ञानीथे वा अधिक, यदि तुल्यथे तो जो२ उनकी इतिहासोंमें शक्ति सुननेमें आतीहैं आपमेंभी कोईवैसी होनीचाहिये जैसे महाभारतमें धर्मव्याध श्रीकृष्ण युधिष्ठिर वसिष्ट विश्वामित्रादिमें अनेकशक्तिएं सुननेमें आतीहैं परंतु आपमें तो उनशक्तिओंका नामभी नहीं पायाजाता तो फिर आप उनकेसाथ बराबरी कैसे करना चाहतेहो ॥

आस्तिक०—जिन ब्राह्मणक्षत्रियादिकोंकी मांसखानेकी कथाहैं, उनमें केईक मेरेबराबर ज्ञानीथे, और बहुत मेरेसें अधिकही ज्ञानीथे, और केई वर्णाश्रमधर्मोंके ज्ञानीभीथे अर वो योगीभीथे, और अगस्त्य-व्यासवसिष्टादिक तो परमयोगीन्द्रथे, और श्रीरामलक्ष्मणकृष्णादि अवतारथे ॥

उनमें जो ब्राह्मणक्षत्रियादिक वर्णाश्रमधर्मोंके ज्ञानीथे विहितमांसको खातेथे योगारूढ नहींथे उनमें तो कोईशक्ति नहींथी, अतः सुननेमेंभी नहींआई ॥

होर जो योगीथे और अगस्त्यादिक योगीन्द्रथे उनमें योगजन्य अनेकशक्तिएंहुईहैं ॥

भावार्थेह—सत्यसंकल्पप्रभृति शक्तिआं तो योगतपआदिकोंका फलहैं, जिनके तपयोगादि अधिकासिद्धहुएहैं उनमें अधिकशक्तिएंहुईहैं, जिनमें न्यून सिद्धहुएहैं उनमें न्यूनशक्तिएं हुईहैं ॥

परंतु जिनमें सिद्धिआंहों वोसिद्धपुरुषही मांसको खाएं, ऐसा किसीश्रुति-स्मृतिमें नियम तो नहींकररखा वा नांहीऐसानियम युक्तियुक्तहै प्रत्युत ऐसानियम हासिकेहीयोग्यहै क्योंकि—अतिपुष्टिका बलआदिकोंका हेतु होनेकर विहितमांसका खाना तो गृहस्थजनोंके लिये आवश्यकहै ॥

प्रश्न—तोसिद्धिसम्पन्न महर्षि अगस्त्यआदिक विहितमांसके खानेमें खुलानेमें क्यों प्रवृत्तहुएहैं ॥

उत्तर— सो योगीन्द्रअगस्त्यआदिक महर्षि गृहस्थथे आचार्य्य थे अतः वैदिककर्मोंके प्रवर्त्तकथे, इस्से परोहित होकर कहीं यजमानहोकर अतिथि होकर विहितमांस को खाते रहे हैं ॥

विहितमांसका खाना कोई सिद्धमहर्षिओंकी बराबरीकरनी नहींहै प्रत्युत धर्मशास्त्रोंके कर्तामहर्षिओंकी आज्ञाका पालन है ॥

——

पूर्वपक्षी०—शास्त्रमें कहाहैकि—नदेवचरितंचरेत्, देवताओं वा महानुभावोंकी बराबरी न करे ॥

आस्तिक०—किसशास्त्रमें कहाहै और इसकाअर्थ क्याहै हेमित्र—मांसभक्षणके प्रकरणमें ऐसेही गोलमाल मनोघडितअर्थलिखनेसे क्या आपको लज्जाभी नहींआती, मांसभक्षणके निर्णयमें इसतुम्हारेलेखसे यिहसिद्धहोताहै कि—देवता और महानुभावमहर्षि तो मांसको खातेहैं तुम मतखाओ, इसमें मैं तुम्हारेसे पूछताहुं कि—जब श्रुतिस्मृतिएं गृहस्थजनोंको प्रेरणा करतीहैं कि—विहितमांसको खाओ, तोफिर गृहस्थजन क्योंन खावें ॥

हेभ्रातः—बलबुद्धि गुणआदिकोंकर अपनी उनसें तुल्यता बोधनकरनी, बराबरीकरनी कहीजातीहै ॥

और जैसे धर्मशास्त्रमें विहित दुग्धघृतअन्नको ब्रह्मर्षिभी राजर्षिभी खातेहैं, वैसेही इतरगृहस्थजनभी खावें तो यिह बराबरीकरनी नहींकहलाती, ऐसेही विहितमांसको देवता ब्रह्मर्षिराजर्षिभी खातेहैं वैसेही इतरगृहस्थ जनभी खावें तो वो उनकी बराबरीकरनी नहींकहलायसक्ती किंतु श्रुतिस्मृतिओंकी आज्ञाका पालनहै आस्तिकताहै ॥

पूर्वपक्षी०—यान्यस्माक ँ सुचरितानि तानि-त्वयोपास्यानि नोइतराणि ॥ तै०उ० ॥ शिक्षापाकर घरजाते हुए शिष्यको गुरु कहताहै कि- हेशिष्य जो हमारे शुभकामहैं उनेकअनुसार वर्ताउकरो बुरेकर्मोंके अनुसार नहीं ॥

आस्तिक०—इसउपनिषद्वाक्यपर शांकरभाष्यदेखो ॥

यान्यस्माक माचार्य्याणां सुचरितानि शोभनचरिता न्याम्नायाद्यविरुद्धानि तान्येव त्वयोपास्यान्यनुष्ठेयानि नियमेनकर्त्तव्यानीतियावत् ॥ नोइतराणि विपरीतान्याचार्य्यकृतान्यपि ॥

अर्थ जो हमारेआचार्य्योंके शुभकर्महैं, वेदादिकोंके अनुसारीहैं, वो तुमनें नियमसें करनेचाहिये, औरजो उनसें विपरीतहैं, अर्थात् श्रुतिस्मृतिओंसें विरुद्धहैं, वो आचार्य्यनें करेभीहैं सो तुमनें नहींकरनेचाहिये ॥

हेमित्र—यहां तैत्तिरेयउपनिषद्में मांसका कोईप्रसंगही नहींहै, मांसका नामभी नहींहै, किंतु इसउपनिषद्वाक्यमें येही कहाहै कि-वेदादिकोंसें विरुद्धकर्मोंको मत करो, और विहितकर्मोंको करो, इससेंभी येहीअर्थ सिद्धहोताहै कि-अविहित मांसको मत खाओ, और श्रुतिस्मृतिओंसें विहितमांस को खाओ ॥

———

पूर्वपक्षी०—वेदादिशास्त्रोंका यहभी सिद्धान्तहै कि ज्ञानीके कियेहुएकर्म बन्धके कारण नहींहोते ॥

आस्तिक०—आत्मेक्षणप्रमाणार्कग्रन्थमें प्रबलप्रमाणोंसे तथा युक्तिओंसें सिद्धहोचुकाहै कि–ध्यानकी परिपक्वताहुए समाधिरूपही अतीन्द्रियपरमात्माका प्रत्यक्षज्ञानहोताहै, ऐसे ब्रह्मसाक्षात्कारवाले जो ज्ञानीहैं, सो कर्मबन्धनोंसें मुक्त होजातेहैं अतः ऐसेज्ञानीविषयक जो तुम्हारा लंबालेखहै सो इसप्रसंगमें अनुपयोगीहीहै ॥

पूर्वपक्षी०—यदि आपत्कालमें किसीने मांसभक्षण कियाभीहो तो वहसर्वदाका धर्म नहींहोसक्ता ॥

आस्तिक०—देखोप्रमाणांक २८८ में जब 'इन्द्रप्रस्थ, देहलीमें युधिष्ठिरजीने सभास्थानकी प्रतिष्ठामें दसहजारब्राह्मणोंको हरिणवराहआदिकोंके मांससें भोजन खुलायाथा, तब युधिष्ठिरका आपत्काल नहींथा और नांहीं उनब्राह्मणोंका आपत्कालथा ॥

प्रमाणांक १४१ में जब कौसल्यामहारानीने अयोध्यापुरीमें सरयुके तटपर कृपाणके तीनप्रहारकर अश्वको कटादिया तब दशरथका वा कौसल्याका आपत्काल तो नहींथा ॥

प्रमाणांक ४२ आदिमें श्रीकृष्णजी की प्रेरणासें, गिरियज्ञमें नन्दआदि गोपोंनें मांससेंबलिदान कराथा, और बहुतही ब्राह्मणोंको भोजनभी करवायाथा, तब नन्दादि गोपोंका व ब्राह्मणोंका आपत्काल तो नहींथा ॥

ऐसे२ बहुतदृष्टान्त दिखाचुकाहुं अतः आपत्कालमेंही नहीं किंतु सर्वदा विधि सें प्रेरेहुए ब्राह्मणक्षत्रियादि विहितमांसको खातेरहेहैं ॥ अनेक दृष्टान्तोंको देखतेहुएभी जानतेहुएभी तुम नास्तिकताकर दुराग्रहको यदि नहीं छोडो तो इसका क्या उपायहै ॥

पूर्वपक्षी०—मनुष्यका आहार मांस नहींहै इसमें प्रधानयुक्ति यहहै कि–जिसवस्तुको उसकी स्वाभाविकदशामें देखकर मन चाहे वही मनुष्यके

खानेयोग्यवस्तु होतीहै दूसरीनहीं, जैसे छोटेबालकके सामने एकतर्फ सुन्दर फल पड़ाहो दूसरेओर मांसका टुकड़ा पड़ाहो तब वह बालक दोनोंमेंसे फलकोही पकड़ेगा, मांसकीओर ध्यानतकभी नहींदेगा, बल्कि उसको देखतेही भय मानेगा, नहीं २ केवलयहकाम बालककाही नहीं प्रत्युत सूक्ष्म विचारसें देखाजाए तो मनुष्यमात्रही इसनीचपदार्थसें घृणा करताहै, देखो जब २ मनुष्य मन प्रसन्नकरनेकेलिये कहीं जाताहै, तो उसीतर्फजाताहै जिसतर्फ सुन्दरफूल और फल होतेहैं, और जहांकहीं मांस पड़ारहताहै वहांपर तो कौए गीध और कुत्तेही फिरते देखनेमें आतेहैं, क्योंकि–वह उनकाही आहारहै इस्सें विदित होताहै कि–मनुष्यकी रुचि मुख्य फलफूल आदिकी ओरहै ॥ देखो सब नगरोंमें पशुमारणेकेलिये स्थान शहरसें बाहर हुआकर्ताहै। मांसपर ढापनेकेलिये कपड़ा रखनेका हुकम हुआ करताहै॥

यदि मांस मनुष्योंका वस्तुतः आहारहोतातो इस्सें इतनी घृणा न होती ॥

आस्तिक०—हेबाल–यदि बाल्यावस्था मनुष्यकी स्वाभाविकदशाहैतो सिद्धहुआ कि, अब बालक न होनेसें तुम असली मनुष्यदशामें नहींहो इसीसें अपनेगोत्रप्रवर्तक महर्षिओंसें विरुद्ध वर्ताव कररहेहो ॥

हेभ्रातः–बाल्यावस्था अतितामसी मूढावस्थाहै, यिह मनुष्य की स्वाभाविकदशा नहींहै, इसीसें वासिष्टादिग्रन्थोंमें बाल्यावस्थाकी अति निन्दाकीहै "बालक फलको पकड़ेगा मांसको नहीं" यिह नियम नहींहै क्योंकि, बालकतो जिसकिसी वस्तुको पकड़लेतेहैं ॥

यदि भयकरेतो, बालक अपनी छायासेंभी भयकर्ताहै, फिर कबी अग्निआदिसेंभी भय न मानकर पकड़नेलगताहै, अतः कबी अग्निसें हाथ जलाभीलेताहै, बालकोंकी तो पशुओंकी पागलोंकीन्याई चेष्टा होतीहै ॥

जिसवस्तुको छोटाबालक पकड़ले, वो मनुष्यकेखानेयोग्य वस्तुहोतीहै यिह तुम्हारातात्पर्य्य तुम्हारेपासहीरहे क्योंकि, बालकतो अपनेमैले में हाथ भरके मुखमें डालनेलगताहै डाल लेताहै–

देखो प्रमाणांक १ आदिकोंमें परमपूज्यमहर्षिओंनें घृततेलकी न्याई मांसको शुद्धपवित्रकहाहै उनकी सन्तान तुम मांसको नीचपदार्थ कहतेहुए लज्जाभी नहींकर्ते ॥

पहिलेभी राममलक्ष्मणादिअवतार वेदवेत्ता ब्राह्मण राजेमहाराजे मांसको खातेखुलातेरहेहैं, और इससमयमेंभी योग्यपुरुष कोटिनही मांसकोखाने वालेहैं अतः मनुष्यमात्र इस्सें घृणाकरताहै, यिह तुम्हाराकथनअसत्यहीहै जब मनुष्य मन प्रसन्नकरनेके लियेजातेहैं तो नगरोंमें रहनेवाले बागों में नदीनहरके तटमें जातेहैं, और जो नदीतटमें वा बागोंमें रहनेवालेहैं वो नगरोंमें बाजारोंमें जातेहैं, ऐसे नहीं कि, बागोंमें रहनेवाले फूलोंको फलोंको ही देखतेरहतेहैं, किन्तु वो शहरोंमें जाकर हलवाईकी पसारीकी फलोंकी फूलोंकी कपड़ेकी मांसकी पानकी इत्यादिकदुकानोंको देखतेहुए चलेजातेहैं ऐसे नहीं कि, फलफूलोंकी दुकानोंपरही खड़े २ देखतेरहतेहैं ॥

कौए गीध कुत्तेआदिक कच्चा मांसखानेवालेहैं अतः वो कच्चे मांस पर जातेहैं और मनुष्य पक्कमांसको खातेहैं, इस्सें पक्कमांसकीदुकानपर व जहां सीखोंपर मांसको भुनतेहैं वहांपर जातेहैं खातेहैं ॥

यदि विचारकरदेखेंतो सबवलायतोंके मनुष्य मांसखानेवालेहैं, हिन्दुस्तानमेंभी कश्मीर नयपाल बंग मैथिल कांगड़ादिपर्वत सिन्धुआदिदेशोंके भी मनुष्य प्रायः मांसाहारीहीहैं अर्थात् बहुतथोड़ेही मनुष्य मांसनहींखाते तो हेभ्रातः यदि मनुष्यकी रुचिमुख्य फलफूलकीओर होतो वो कोटिन मनुष्य मांसको क्योंखावें, क्या उनपर कोई पातशाहीहुकम तो जारी

नहींहै कि तुम जरूरी खाओ किंतु बहुतही कोटिनमनुष्य मांसको मुख्य रुचीसेंही खातेहैं ॥

गेहूं जौआदिकोंके गाह शहरसें बाहिरही गाहेजातेहैं, वैसेही बकराऽऽदिकोंकोभी शहरसें बाहिरही मारतेहैं, तथापि श्रीकाशीपुरीमें दुर्गाकुंडमहल्ला दुर्गाके मन्दिर शरहमेंही बकरादिकोंका बलिदान कराजाताहै ॥

तथा कालीके मन्दिर कलकत्ता शहरमेंही भैंसेतक अनेक पशु मारे जाते हैं, विन्ध्यवासिनीदेवीके मन्दिर शहरमेंही अनेकबकराऽऽदिकोंका बलिदान होताहै, श्रीगुरुगोविन्द सिंहजीके जन्मस्थान पटना शहर में ही अनेक बकरोंका बलिप्रदान कराजाताहै, तथा ज्वलादेवीके मन्दिर शहरमेंही बकाराऽऽदिक मारेजातेहैं ॥

इत्यादिशहरोंमेंभी बकराऽऽदिकपशुओंका बलिप्रदान होताहीहै, और जहांपर शहरोंमें अतिआग्रहवाले जैनीभाई वा अशास्त्रीय बनीएं बहुत होतेहैं उनकी प्रसन्नताकेलिये कपड़ेसें टापनेका हुकमहोताहै जैसे अजमेर-शहरमेंहै, होरसबशहरोंमें हुकम नहींहै जैसे लाहौरआदिकोंमें नहींहै ॥

जैसे खलका गोत मनुष्योंका वस्तुतः आहार नहींहै वैसेही यदि मनुष्योंका वस्तुतः मांसआहार न होता तो धर्मशास्त्रोंके ज्ञाताब्राह्मणक्षत्रियादिक पहिले तथा इससमयके अतियोग्यपुरुषभी मांसको खायही कैसेसक्ते ॥

पूर्वपक्षी०—यवन और शूद्रोंकेसाथ इसीलिये व्यवहारका प्रचार द्विजातिलोगोंमें कमहै क्योंकि वह मांसाहारीहैं, ।

आस्तिक०—हेमित्र—क्योंअसत्यपरायणहुआहैं कश्मीर बंगाल मिथिलाऽऽदिदेशोंके विद्वान्ब्राह्मणक्षत्रिय राजेमहाराजेआदिक तो आपही मांस

को खातेहैं अतः व्यवहारका अधिकप्रचार तो भिन्नमतवालोंसें मतके भेदसें नहींकराजाता ॥

———

पूर्वपक्षी०-मांसाहारकरनेसेंही रावणआदि दुष्टस्वभावथे ।

आस्तिक०-मांसको तो रामलक्ष्मणआदिभी वेदवेताब्राह्मणक्षत्रियादिक भी खातेखलातेरहेहैं वो तो दुष्टस्वभाव नहींहुए अतः विहितमांसके खाने कर दुष्टस्वभाव नहींहोसक्ता किंतु सर्वधर्मोंकेमूल सत्यके त्याग करनेसें पढेलिखेभी दुष्टस्वभाव होजातेहैं जैसे श्रुतिस्मृतिओंके अर्थको और परम-पूज्यवृद्धोंके आचारको जानतेहुएभी तुम सत्यके त्यागकर उनके विरोधी होरहेहो ॥

———

पूर्वपक्षी०-मांसखाना पूर्वसमयमेंभी अतिबुरा समझाजाताथा देखो महाभारत- **मांसंमूत्रंपुरीषंवा, प्राश्यसंस्कारमर्हति** ॥शान्तिपर्व १६५ ॥ ७४ ॥ मांसमूत्र और विष्टाको खाकर फिर संस्कार अर्थात् यज्ञोपवीतादिहोनेसें शुद्धहोसक्ताहै अन्यथा नहीं इसवचनमें मांस का खाना मैलाखानेके बराबरबतलायाहै ॥

आस्तिक०—हेपाठको एक वो समयथा कि, जिसमें महर्षिदध्यङ्की महाराजादशरथकीन्याईं प्राणोंके त्यागको स्वीकारकरलेतेथे परन्तु सत्यका त्याग नहीं करतेथे ॥

अब ऐसासमयहै कि, धर्माधर्मके निर्णयलिये सत्यको तिलांजलिदेकर छलके शरणागत होतेहैं ॥

विचारो कि, छल कहां और धर्माधर्मका यथार्थनिर्णय कहां अर्थात् छलके होते यथार्थनिर्णयतो अत्यन्त दूरचलाजाताहै प्रत्युत छलकरनेसें आपभी पापरूपकीचड़में डूबकर अपने अनुसारीजनोंकोभी डोबनाहोताहै

देखो यहां अर्द्धश्लोक लिखाहै इसके सम्बन्धवाला अर्द्धश्लोक छोड़ दिया, यिह अशास्त्रीयजनोंको बुद्धिपूर्वक धोखादियाहै ॥

अब समग्रश्लोककों मैं लिखताहुं इसका अर्थ देखो क्याहै—

महाभारत-श्ववराहमनुष्याणां, कुक्कुटस्यावरस्यच मांसंमूत्रंपुरीषंवा, प्राश्यसंस्कारमर्हति ॥१२॥ १६५ ॥७४ ॥

अर्थ—कुत्ता ग्रामकासूर मनुष्य ग्रामकाकुकट, इनके मांसको वा मूत्र को वा विष्टाको खाकर द्विजपुरुष फिर यज्ञोपवीतादिसंस्कारके योग्यहो-जाताहै। इसवचनमें कुत्तेआदिके निषिद्धमांस खानेका प्रायश्चित्तकहाहै, हरिणबकरादिकोंके विहितमांसखानेका नहीं प्रत्युत प्रमाणांक ८१ आदिकों में विहितमांसके नहींखानेसें अतिदोष कहाहै ॥

पूर्वसमयमें विहितमांसकाखाना बुरानहीं किन्तु इच्छासमझतेरहे तबी तो रामलक्ष्मणादिअवतार और वेदवेताब्राह्मण तथा इक्ष्वाकु विकुक्षि ऋतुपर्ण अम्बरीष दलीपयुधिष्ठिरप्रभृतिमहाराजे मांसको खातेखुलातेरहेहैं तो हेबेसमझ, मांसकाखाना मैलाखानेके बराबरलिखना इस्सें अधिक अत्यन्तअयुक्तलेख होर क्या होसक्ताहै, हेबाल तुमको यिह ज्ञान नहींहुआ कि इसअयुक्तलेखकी अतिव्याप्ति तुम्हारेभी परमपूज्यजनोंमें तथा इससमय के अतियोग्यजनोंमें पहुंचेगी ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—नस्वयंहन्मिविप्रर्षे, विक्रीणामिसदान्वहम् । नभक्षयामिमांसानि, ऋतुगामीतथाह्यहम् महाभा० वनप० २०६ ॥ ३२ ॥

व्याध कहताहै कि, मैं मांस नहींखाता इस्सें विदितहुआ कि, पूर्वकाल में व्याधोंतक मांसखानेको बुरा समझतेथे ॥

आस्तिक०—हेपाठको–देखो यहांभी आधा एकका आधा एकका श्लोक लिखडालाहै, जो लिखाहै उसका अर्थभी समग्र नहींलिखा अर्थात् धोखेपर धोखादियाहै, अबमैं पहिलेका पूर्वार्द्धभी लिखताहुं व अर्थ भी लिखताहुं ॥

महाभारत प्र०३२२—परेणहिहतान्ब्रह्मन्, वराहमहिषानहम् । नस्वयंहन्मिविप्रर्षे, विक्रीणामिसदान्वहम् ॥ प० ३ ॥ २०७ ॥ ३२ ॥

अर्थ–हेब्रह्मन् मैं आपनहीं मारता दूसरेसें मारेहुए सूरोंको भैंसोंको सदा वेचताहुं ॥

—•—

अब इसीधर्मव्याधके होरभी श्लोकहैं वो भी देखो–

महाभारत प्र० ३२३—ओषध्योवीरुधश्चैव, पशवो मृगपक्षिणः । अन्नाद्यभूतालोकस्य, इत्यपिश्रूयते श्रुतिः ॥ ३ ॥ २०८ ॥ ६ ॥

इसपरटीका० प्र० ३२४—अन्नाद्यभूताः अन्नंचतद, द्यच भोग्यंभक्ष्यंचेत्यर्थः ॥

अर्थ—धान्य जौं पान दाख और पशु मृगपक्षी, यिह मनुष्योंके खाने योग्य अन्नरूपहैं यिहभी श्रुति सुनीजातीहैं ॥

—०—

महाभारत प्र० ३२५—अतुलाकीर्तिरभव, न्नृपस्य द्विजसत्तम । चातुर्मास्येचपशवो, बध्यन्तइति नित्यशः ॥ १० ॥

अर्थ—हेद्विजवर—समांसअन्नके दानकर रन्तिदेवमहाराजाकी अतुल कीर्तिहुई । और चतुर्मासमें हमेशां पशु मारियेहैं ॥

—०—

महाभारत प्र०३२६-अग्नयो मांसकामाश्च, इत्यपि श्रूयतेश्रुतिः । यज्ञेषुपशवो ब्रह्मन् बध्यन्तेसततं द्विजैः । संस्कृताःकिलमन्त्रैश्च, तेपिस्वर्गमवाप्नुवन् ॥ ३ ॥ २०८ ॥ १२ ॥

अर्थ—अग्निदेव मांसकी कामनावालेहैं, यिहभी श्रुति सुनीजातीहै, हे ब्रह्मन् यज्ञोंमें द्विजपुरुषोंनें हमेशां पशु मारियेहैं, वो मंत्रोंसें संस्कार कियेहुए पशु भी स्वर्गको प्राप्तहुएहैं ॥

—•—

इत्यादिक होरभीबहुतश्लोक उसधर्मव्याधके कहहुएहैं उसधर्मव्याधके इनवाक्यनसें स्पष्टविदितहोताहै कि, पूर्वकालमें श्रुतिवाक्यनसें यज्ञोंमें द्विज पुरुष पशुओंका बलिदानकरतेरहेहैं। सो यज्ञमें मारेहुए पशु स्वर्गको प्राप्त हुएहैं। वो धर्मव्याध सूरोंके भैंसआदिके मांसको वेचता रहाहै ॥

इत्यादिकअर्थ तुम्हारे धर्मव्याधके कथनमें स्पष्टहै, तो इसदृष्टान्तसेंभी तुम विहितमांसके खानेको बुरा कैसे कहसक्तेहो अर्थात् क्यों, दुराग्रहकर असत्यपरायणहुएहो ॥

—०—

होमित्र--देवताऽऽदिकोंको अर्पणकर्के मांसखाना विहितहै, उनको अर्पणकरेबिना मांसखाना निषिद्धहै, नीचजातिहोनेकर व्याधका अधिकार नहींथा कि, वो मांसपकाकर देवतोंके अर्पणकरे अतः देवार्पणकरनेके संकोचसें वो धर्मव्याध मांसको नहीं खाताथा ॥

पूर्वपक्षी०-छान्दोग्यउपनिषद्में कहाहै कि, जैसाअन्नखावे वैसाही उसका मन भावधारणकरताहै, इस्सें सारयहनिकला कि, उसपशुके जो स्वाभाविक गुण वा दोषहों वह कभीभी दूरनहींहोते।

किन्तु उसमांसकेद्वारा उसके दोषादि मांसखानेवालेकी बुद्धिमें अवश्य आएंगे, पशुओंमें प्रायः मांस बकरेका खायाजाताहै और बकरा माता और भगिनीके साथभी भोग कियाकरताहै तो फिर ऐसे मांसको खाकर तुम एकस्त्रीव्रत कैसे रहसक्तेहो ॥

अस्तिक०-हे पाठको देखो यिह वक्रोक्तिकर कैसा अयुक्तलेख लिखा है, विचारोकि-यिहअयोग्यआक्षेप मांसखानेवाले सबमनुष्यनपरहै ॥ मांसको पहिलेरामलक्ष्मण वेदवेत्ताब्राह्मण क्षत्रियराजेमहाराजे खातेखुलातेरहेहैं,—

इससमयमेंभी कश्मीर नयपाल बंगमिथ लाऽऽदिदेशोंके विद्वान्ब्राह्मण क्षत्रियराजेमहाराजे और यूरपआदि वलायतोंके अतिलायकपुरुषभी मांसको खातेहैं तो ऐसा अयोग्यआक्षेपकरना 'अयोग्यहीहै' नालायकीहीहै ॥

हेमित्र–रामलक्ष्मण अगस्त्य वसिष्टादिमहर्षि नलआदिमहाराजे मांस को खातेरहेहैं सो एकस्त्रीव्रतभी हुएहैं ॥

और हजारोंमनुष्यऐसेहैं जो मांसको नहीं खाते वो अतिव्यभिचारीहैं

पशुजीवका स्वभाव और स्वभावसेंहोनेवाले गुणदोष तो मृतपशुजीव के साथही चलेजातेहैं और अतिपुष्टिवलआदि जो मांसके गुणहैं वह मांस खाने वालोंको आतेहैं ॥

पूर्वपक्षी०—पशुओंमें जड़ताहोतीहै अर्थात् विचारशक्ति नहींहोती फिर उसका मांस खानेवाला निर्मलबुद्धि कैसेहोगा और उसकी बुद्धिमें पापपुण्यका विचारभी क्यों पैदाहोगा ॥

आस्तिक०—पशुओंमें अनुकूल प्रतिकूलका प्रियअप्रियका ज्ञान तो होताहै परन्तु गेहुं चावलचनाऽऽदिअन्नोंमें और दुग्धघृतफलादिकोंमें तो सर्वथाजड़ताहीहै इनमें अनुकूलप्रतिकूलादिकोंका ज्ञानभी नहींहोता अतः यिह अतिजड़है ॥

हेमित्र–तुम्हारे कथनानुसार जड़तारूपहेतुसें यदि मांस खानेवाला पुरुष निर्मलबुद्धि नहींहोता उसकी बुद्धिमें पापपुण्यकाविचारभी नहींहोता तो अतिजड़ गेहुंआदिकोंकेखानेवालामनुष्य निर्मलबुद्धि व पाप पुण्यके विचारवाला कैसे होसक्ताहै, श्रुतिस्मृतिओंसें प्रतिकूल होनेकर तुम्हारी बुद्धि विचारशक्तिसें शून्यहोगईहै उसमें इतनाभी विचारउदयनहीं हुआ कि, किसीप्राणीका चेतनआहार होसक्ताहै हेबाल—सबके आहार जड़ही होतेहैं ॥

—०—

पूर्वपक्षी०-मांसाहारीसिंहादिके मुखसें बदबू आतीहै जो मनुष्य मांस खावेगा उसकेभी मुखसें बदबू आवेगी ॥

आस्तिक०-सिंहजातिके मुखगन्धरोगहै जैसे उलूकजाति के दिवान्ध रोगहै, गण्ठा लशुन बोदार वस्तुहैं उनकेखानेकर गन्धआतीहै मांसखानेसें बदबू नहींआती यदि मांसमें बदबू होती तो सबमनुष्यादिकोंसें बदबू आनी चाहियेथी क्योंकि, सबके शरीर मांसमयहीहैं-

और मांसखानेवाले तो ब्राह्मणक्षत्रियादिक लाखों क्यों कोटिनमनुष्यहैं उनके मुखसें बदबू नहींआती किन्तु जिसके मुखगन्धरोगहै उसके मुखसें बदबू आतीहै चाहे वो लशुनादिक नहींभी खाताहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी०-मांसाहारीजीवोंमें दयागुणनहींरहता देखो आजकलके मनुष्य अपना कन्यातकका बधकरने लगपड़ेहैं ॥

आस्तिक०-क्यों असत्यबोलताहैं आजकल गवरमेंटके प्रतापसें कोई ऐसे करसक्ताहै, पहिले उत्तमजातिके मनुष्य कन्याका वध करडालतेथे ऐसे अतिघोरपापकर्मोंको ज्यादामांसाहारी अंगरेजोंनेंही हुकमन रोकदियाहै तो तुम दुराग्रहके वशहोकर क्यों असत्यभाषणकररहेहो जानबूझकर असत्य कहना ये ही कलियुगका महिमाहै ॥

—०—

पूर्वपक्षी२-मांसाहारीकें दान्तोंमें केईतरहके रोगहोजातेहैं मछलीखाने कर प्रायः शरीरपोलाहोजाताहै ॥

आस्तिक०—युक्तिप्रमाणोंसें नहीं किन्तु तुम अपनेकथनमात्रसें ही अर्थसिद्धकरा चाहतेहो ॥

यदि मांस खाने सें दांतों में रोग हों तो सिंहव्याघ्र बिल्ला ऽऽदि कोंके दांतोंमेंभी केईतरहके रोगहोनेचाहियेथे उनसें उनके दांत कमजोर होनेचाहिये प्रत्युत उनके औरज़्यादामांसखानेवाले पठानआदिकोंके दांत-भी, दृढ, मज़बूतहोतेहैं,—

और मच्छीभी वातको नशकरेहै इस्सें मच्छी खानेसेंभी शरीर पोला-नहींहोता प्रत्युत देखो प्रमाणांक ३१४—कों भातकेसाथ खाईमछली 'राजयक्ष्मको' तपदिकको दूरकरतीहै ॥

——

पूर्वपक्षी०—मांसाहारी ईश्वरपूजाके योग्य नहींरहता क्योंकि वह सदा अपवित्र रहताहै ॥

आस्तिक०— दृष्टान्तअसंख्य दिखलायचुकाहुं कि, ईश्वरपूजायज्ञोंमें अजादिसहस्रोंपशुओंका बलिदान वेदवेताब्राह्मण क्षत्रियादि कर्तेरहेहैं मांस को खातेखुलातेरहेहैं, प्रमाणांक १ आदिकोंमें घृततेलकी न्याईं मांसको शुद्ध कहाहै, ईश्वरविष्णुके समीपीगरुड़भगवान् मांसाहारीहीहैं अतः मांसाहारसें अपवित्रकहना दुराग्रहहीहै ॥

पूर्वपक्षी०—मुर्दोंको छूनेवाला स्नानकर्के शुद्धहोताहै परन्तु जो मांस खानेवालेहैं उनके पेटमेंतो हरसमय मुर्देके मांसका अंश बैठाही रहताहै तब उसका ऊपरकास्नानकरनाभी हाथीके स्नानकीतरह व्यर्थहीहै ॥

आस्तिक०—महाभारत प्र० ३२७—**जीवाहिबहवोब्रह्म-न्,वृक्षेषुचफलेषुच ॥ उदकेबहवश्चापि, तत्रकिं-प्रतिभातिते** ॥ ३ ॥ २०८ ॥ २७ ॥

अर्थ-हेब्रह्मन् वृक्षोंमें फलोंमें और जलमेंभी बहुतजीवहोतेहैं तहां

तेरेको क्या भास्ताहै । हेमित्र–दूधके जलके पीनेसें श्वासलेनेसें सूक्ष्मजीवोंका मरणा तो तुमभी स्वीकारकरचुकेहो, ॥

यदि सबजीवोंके मुर्दोंसाथ स्पर्शसें अशुद्धिहो तो जलपानआदिकोंसें और श्वासलेनेसें जो सर्वमनुष्यनके भीतर असंख्यसूक्ष्मजीव जातेहैं वो भीतरजठराग्निसें मुर्देहोजातेहैं तो सर्वहीमनुष्य हरवक्त अशुद्धकहनेचाहिये ॥

इस्सें यिह सिद्धहुआ कि–मनुष्यके मुर्देसें स्पर्शकरनेकर अशुद्धहोताहै । और मांसको तो धर्मग्रन्थोंमेंभी शुद्धहीकहाहै ॥

हेमित्र—मैलेके स्पर्शसेंभी तो मनुष्य अशुद्धहोजाताहै वो मलमुत्र मनुष्यआदिसबजीवोंके भीतर सदाहीबनारहताहै इसपरएकगाथाहै—एकमहाशय चौंकेके भीतर भोजन कररहेथे, उनोंने अपनावामाहाथ चौंकेसें बाहिर कररखाथा, तो एककिसी विचारशीलने देखकर पूछा कि,–हेमहाशयजी आप चौंकेके भीतर भोजन कररहेहो तो अपने वामेहाथको चौंकेसें बाहिर क्यों कररखाहै, तब महाशयजीने कहा कि– शौचसमय यिहवामाहाथ गुदाकेसाथ विष्टाकेसाथ लगताहै अतः यिह चौंकेके भीतर रखनेयोग्य नहींहै ॥

फिर विचारशीलने कहा कि–सबजीवोंके भीतरपेटमें मूत्र विष्टाऽऽदि मल सदाबनेही रहतेहैं, यदि जुलाबकर सबमल निकालाजावे तो जीवमें बोलनेकी बैठनेकीभी शक्तिनहीं रहती, यद्यपि आप स्नानादिकोंकर शुद्धहुए बैठेहो तोभी यदि अब आपको एकगौलीजुलाबकी दीजावे तो देखोअबी आपकेशरीरसें कितनामल निकसताहै–अब विचारो कि–गुदाभी चौंकेके भीतरहीहै और तुम्हारे शरीरके भीतर पडाहुआ विष्टाभी चौंकेके भीतरहीहै तो वामेहाथका बाहिरकरना कैसे युक्तहोसक्ताहै ॥

हेमित्र—सबशरीरोंके भीतर मलमूत्ररुधिरआदि बनेरहतेहैं उसका स्पर्श तो क्या उसम लमूत्रादिकों तुमभी उठाएफिरतेहो तो उस्सें अशुद्धि नहींकहते किंतु जिसमांसको धर्मग्रन्थोंमें घृततेलकीन्याई शुद्ध कहाहै उसमांसको अशुद्धकहतेहुए तुम लज्जाभी नहींकर्ते ॥

बकराऽऽदिकोंका मांस तो धर्मपुस्तकोंमें शुद्धपवित्रही कहाहै अतः विहितमांसके स्पर्शसें खानेसे अशुद्ध नहींहोसक्ता किंतु वेदसूत्रस्मृतिओंसें विरुद्धकहनेकर अशुद्धहोताहै उसका स्नान हाथीकीतरह व्यर्थहीहै क्योंकि—वह चित्तसें वाणीसें अशुद्धहै ॥

पूर्वपक्षी०—थोडासोंच कि—हमारेवस्त्रकेसाथ थोडे लोहूके लगनेसें हमें कितनी ग्लानिहोतीहै, जबके माताके रजसें लोम लोहू और मांस, एवंपिताके वीर्य्यसें नाडी हडी और चर्बी पैदाहोतीहै अब बताओं कि—इनवस्तुओंमें कौनसीपवित्रहै जिसको तुम खानाचाहतेहो ॥

आस्तिक०—शुद्धिअशुद्धिमें केईवार तुमने पूर्वपक्षकरा उस २ का उत्तरभी केईवार दियागया अबफिर उसीमें पूर्वपक्षकरतेहो अतः पुनरुक्ति दोष तुम्हरेही कहनेमें रहा, तथापि अब संक्षेपसें उत्तरकहताहूं ।

हे मित्र—चनोट गुजरांवाला लाहोर देहलीआदिशहरोंका सब मैला जमीनोंमें बागोंमें गेराजाता तुमदेखतेहीहो और शहरोंके मैलेपानीके बदररौभी झलारोंद्वारा खेतोंमें पड़ते तुम देखतेहीहो तो वहांपर पैदाहोनेवाले गेहूं चावल चना आलु गोभी शाक फलादिकोंमें कोनसीवस्तु पवित्रहै जिसको तुम खानाचाहतेहो ॥

हे भ्रातः—जिसको धर्मशास्त्रोंमें शुद्ध पवित्रकहाहै और पूज्यपुरुषोंनें स्वीकारकराहै वोही शुद्ध मानाजाताहै, जैसे कस्तूरी मृगकोनाभीका रुधिर

विशेषहै, और जैसे लाखोंजीवोंको मारकर रेशम निकालाजाताहै वो शुद्धहै, और जैसे लोहूमांस नाडीचर्वीआदिकोंका समुदायरूप सब शरीर हैं हेमित्र त्वक्रक्तमांसनाडीअस्थिआदिकोंमें कोनसीवस्तु पवित्रहै जिससें आप जगत्में पवित्र और उत्तम कहलायरहेहो, विस्तारसें उत्तर तो पहीलेलिखचुकाहूं प्रमाणांक १ आदिधर्मशास्त्रोंमें घृततेल औरमांसको शुद्ध पवित्रकहाहै अतः विहितमांस को रामलक्ष्मणादिकअवतार वेदवेताब्राह्मण राजेमहाराजे भी खाते खुलातेही रहेहैं इससें आस्तिकगृहस्थजनोंने अवश्यं खानाचाहिये ।

पूर्वपक्षी०—मांसकेखानेसें शरीर कभी नीरोग नहींरहता बल्कि-दिमाग कमजोरहोताहै, इसीतरह औरभी केईरोग उत्पन्नहोतेहैं जैसे पाचन नहोकर रातको खराब डकार आतेहैं, प्रायः खून बिगडजाताहै, शरीर पीलाहो-जाताहै हाथपैर सूखजातेहैं गलेमें गांठ पेदाहोजातीहैं और दिक्क गंठियाहैजा आदिरोग पैदाहोतेहैं ।

आस्तिक०—यिह पूर्वपक्ष नहींहै किन्तु हारेहुएमनुष्यका प्रलापहै—हेमित्र—यदि मांसके खानेसें शरीर कबी नीरोग नहींरहता तोज्यादा मांस खानेवाले पठान औरकश्मीर नयपाल मिथिलाऽऽदिदेशोंकेलाखोंब्राह्मण क्षत्रियराजे महाराजेआदि कोटिनमनुष्य मांसको खातेहैं तो उनसबदेशोंके मनुष्यनके शरीर क्या कभी नीराग नहींरहते ।

पहिले ब्रह्मर्षि राजर्षि महानुभाव जो मांसको खातेखुलातेरहेहैं तो क्या उनकेदिमाग तेरेसें कमजोरहुएहैं ।

इससमयमेंभी ज्यादामांसखानेवाले यूरपीनहैं देखोउनके दिमागकी शक्ति रेलगाडी तार मोटरकाट आकाशयान फोनुग्राफआदि हजारोंयन्त्र ऐसेरचे-हैं कि जिनोंसें तुम्हारे दिमाग हजारोंकोस दूरहैं,—

हेमित्र—तुम्हारे दिमागकी दुर्बलता ऐसीहै कि-अपने गोत्रप्रवर्त्तक महर्षिओंके आर्षमतको जानतेहुएभी तुम छिपातेहो, लज्जाकरतेहो, अनुपयोगीप्रमाण असद्दृष्टान्त असत्युक्तिओंसें बदलतेहो, मानों अपने पैरोंपर आपही कुहाड़ा मारतेहो क्योंकि-आर्षमतके महत्त्वको तुम्हारा दिमाग समझही नहींसक्ता,—

मांसखानेसें केईरोग उत्पन्नहोतेहैं, यिह तुम्हारा कथनभी असत्यहोहै क्योंकि यदि ऐसेहोता तो कोटिनमनुष्य मांसको खातेहैं उनके केईरोग होनेचाहियेथे ऐसेतोहुआ नहीं प्रत्युत तुम्हारेसें अधिकनीरोग देखनेमेंआतेहैं जैसे यूरपीन वा पठान, और प्रमाणांक १०० चरकसंहितामें सर्वरोगोंका नाशक मांसका रसकहाहै इसीसें दुर्बलरोगीको मांसके रसखानेकी प्रायः डाकटर हकीम वैद्यआदिक आज्ञादेतेहैं ॥

और अपनी पाचनशक्तिसें अधिक जोभीकुछ खायाजावे तो पाचन नहोकर उससें खराबडकार आतेहैं मांसखानेसेंनहीं ज़्यादामांसखानेवाले काबल धन्दार नयपाल कश्मीरआदिदेशोंके जो कोटिनमनुष्य मांसको खातेहैं क्या उनके हाथ पैर सूखगएहैं, क्या उनका खून बिगड़ाहुआहै, क्या उनके शरीर पोलेहोगएहैं, क्या उनके गलेमें गांठहोईहैं, बहुतक्या सद्धर्मको विस्मृतकर्के दुराग्रहसें तुम प्रलापकररहेहो ॥

———

पूर्वपक्षी०—और देखो डाकटरसाहबका क्या कहना है कि—मांस प्रकृतिविरुद्ध भोजनहै इसलिये शरीरकी बीमारीओंको बढाताहै, बुखार क्षय विस्फोटआदि इसी मांसाहारकरनेसेंही विशेषपैदाहोतेहैं इत्यादिक डाकटर लूईकूने, की सम्मति-जिह्वा बडीही नमकहरामहै अच्छे२ स्वादि-

ष्टपदार्थोंके लालचमें आकर शरीरकी हानिलाभको वह बिलकुलही भूल-जातीहै जिसवस्तुको देखकर हमें घृणाहोनीचाहिये उसेही प्रसन्नतापूर्वक-खातेहैं इत्यादिक ॥

एकादिख्यात फ़िलासफ़र यूरपीनकी सम्मतिहै कि मनुष्यमें क्रूरजंतुओंसें क्रूरता प्राप्तहुईहै यदि ठीकहै तो हिंसकजीवोंसदृश हिंसा तथा मांसखानेसें मनुष्यभी एकदिन वैसेही "क्रूर वहशी होजावेगें ॥

आस्तिक०--जैसे डारवनसाहबने लिखाथा कि बन्दरोंसें मनुष्यबनेहैं सोयिह माननेमें नहींआयसक्ता क्योंकि यदि ऐसेहोता तो इतनेसमयसें फिरभी होरबन्दरोंकी कुछशकल बदलती परंतु उनकी पुच्छभी वैसीहीरही, और दोपैरोंसे चलनेभी नहींलगे, होरभी कोईलक्षण मनुष्योंजैसा नहींहुआ, अतः बन्दरोंसें मनुष्यबनना माननेमें नहींआयसक्ता और नांही इसमें कोईप्रमाण मिलताहै, ऐसेही मांसविषयमेंभी किसी२ का कुछ कहना माननेमें नहींआयसक्ता जब तक आर्षप्रमाण दृष्टान्त युक्तिओंसें सिद्ध न कराजावे ॥

विचारो कि—यूरपीनलोक डाकटरोंके रायसेंही खाना पीना करतेहैं, और फ़ौजोंमें सेहतकेलिये बड़ेबड़े लायक डाकटरोंकाही हुकम अवश्यमाना-जाताहै, हेमित्र—यदि मांसका खाना बीमारीओंके बढानेवालाहोता, इस्सें यदि मांसके खानेमें लायकडाकटरोंका राय न होता, तो फ़ौजीअफ़सर फ़ौजोंमें किसीकोभी मांस न खानेदेते और नांही फ़ौजोंमें मांस आनापाता होरयूरपीनलोकभी कभी मांसको न खाते, ऐसे तो किया नहींजाता इस्सें निःसंशय जानाजाताहै कि—यूरपीनबडेलायक डाकटरोंका राय मांसके गुणोंमें और खानेखुलानेमेंहै ॥

और जो कहा कि, 'मांसखानेसें मनुष्यभी एकदिन वैसेही क्रूर वह शी होजावेंगे' सो यिह कथनभी अयुक्तहीहै क्योंकि, सूर्य्यवंशीय चन्द्रवंशीय

क्षत्रियराजमहाराजे आदिसमयसें अबतक शिकारमारते मांसको खाते खुलाते रहेहैं और यूरपीनलोकभी मांसको खातेहीरहेहैं तो यिह क्रूरवहशी तो नहींहोगये प्रत्युत ज़्यादामांसखानेवालोंके ऐसी दिमागीतक्तहुईहैं कि, जिससें आकाशयानआदि बनाएहैं=

होरजो कहाकि, जिसवस्तुको देखकर हमे घृणाहोनी चाहिये उसेही प्रसन्नतापूर्वक खातेहैं,, सो इसमें घृणाकी कोईबात नहींहै क्योंकि, विहित मांसके खानेलिये वेदसूत्रस्मृतिओंमें प्रेरणाकीहुईहै फिर उसको अवतार ब्राह्मणक्षत्रियादिक उत्तमपुरुष आदिसें खातेखुलातेरहेहैं तो अब उसमेंघृणा क्यों होंनी चाहिये, यदि मांसकी उत्पत्तिकी दृष्टिसें कहोतो दुग्धगेहुंशाक आदिकोंकी उत्पत्तिकोभी विचारो पहिले केईवार लिखचुकाहुं ॥

पूर्वपक्षी०-मांसाहारनेंही इससमय घीदूधआदिपदार्थोंका अभावकर दियाहै क्योंकि, बकराआदिके मांसको खाकर उसकेमांसको दुर्लभ कर दियाहै जिसका फल यह हुआहै कि, मांसाहारीलोगोंने गौमाताकामारना प्रारम्भकरदियाहै जिससें कि, आप इसलोकमें दूधघीके न मिलनेसें दुर्बलता पूर्वक दुःखमयजीवन व्यतीतकर्के परलोकमें नरकके घोरदुःखके भागी बन रहेहो ॥

आस्तिक०-दूधघीआदिपदार्थोंका अभावनहींहै किन्तु उनका बड़ा मूल्यहोगयाहै वोभी मांसाहारसें नहीं किन्तु अन्नके निरखपरही सबखाद्य वस्तुओंका निरखहोताहै अन्न वलायतोंमें बहुतजाताहै इस्सें अन्नका निरख तेज रहताहै उससें दुग्धघृतका निरखभी बढ़गयाहै ॥

जब गेहुं बीससेर एकरुपैकाथा तब दूधभी चार पैसेका एक सेरथा जब गेहुं तेरासेरहुआ तब दुग्धभी दोआनेका सेरहोगया, इसीतरह जैसा जैसा अन्न मैहंगाहुआ वैसा २ दूधघृतभी मैहंगा होगया ॥

इससमय-खण्डभी एकरुपैका २॥ सेरहै, अब आपकहो कि, मांसाहार सें खण्डतो इतना मैहंगा नहीं होना चाहिये था वो इतना मैहंगा क्यों होगया अर्थात् अन्नके निरखपरही सब खाद्यवस्तुओंका निरख होताहै ॥

नयपाल कश्मीरआदि हिन्दुओंकी रियासतोंमें भेडबकरोंकाही मांस खाने में आता है तो वहां भेडबकरे खतम नहींहोगए, होरदेशोंमेंभी बकरे आदिका मांसभी दुर्लभ नहींहै किन्तु अन्नमैहंगा होनेसें वोभी मैहंगाहोगया है बडेबडे अफ़सरोंको वो दुलर्भनहींहै तथापि उनकी जिदर रुचिहै उदर वो प्रवृत्त होरहेहैं ॥

पापात्माकों पहिलेभी दुग्धघृतआदिक दुर्लभहीथे और पुण्यात्माजनों को अबभी वो सुलभहीहैं ॥

धर्मशास्त्रोंसें निषिद्धकर्म और विहितकर्मके करणेंसेही पापपुण्य पैदाहोतेहैं, पापोंसें दुर्बलता और दुःखमयजीवन होताहै, और पुण्योंसें बल व सुखमयजीवन होताहै अतः श्रुतिस्मृतिओंसें विरुद्धभाषणकर विरुद्ध कर्मोंकर परलोकमें नरकका घोरदुःख दुर्निवारहीहै ॥

—*०*—

पूर्वपक्षी०— जो विचारी महाउपकारकरनेवाली गौ यदि आपके मांस भक्षणकी आदतको छोड़नेंमात्रसें यवनोंकी छुरीसें बचसक्तीहै तो क्यों इस बुरे व्यसनको नहीं छोड़ते ॥

आस्तिक०—रामलक्ष्मणअवतारआदि परमपूज्यपुरुषोंनें धर्मबुद्धिसें करे आचरणको हेबाल बुरा व्यसन कहताहैं मांसभक्षणके त्यागसें गोरक्षा नहीं होसक्ती क्योंकि, यहांसें मांस वलायतोंमें भेजाजाताहै और यहांभी गरीबजनोंको मांस दुर्लभहीहै, परन्तु श्रुतिस्मृतिओंसे विहितधर्मके त्याग-रूप नास्तिकताको क्यों नहीं तुम छोड़ते ॥

पूर्वपक्षी०-ऐऋषिकुलप्रसूत थोड़ा अपने बड़ोंकी ओर ध्यानदो कि, वह कैसे दयालु और पवित्रमनथे, महाभारत अनुशासनपर्वमें लिखाहै कि, अम्बरीष गय आयुनाथ अनरण्य दिलीप भरतआदिअनेक महाराजोंने मांस नहींखाया और यहसब महापराक्रमी सदाचारी और यशस्वी आपके ही बड़ेथे-एतैश्चान्यैश्चराजेन्द्र पुरामांसंनभक्षितम्

महा० भा० ॥इनसबमहाराजोंनें पहिले मांस नहींखाया ॥

आस्तिक०-हेऋषिकुलजात-थोड़ा अपने बड़ोंकी ओर ध्यानदो कि, सत्यधर्मकी रक्षालिये दध्यङ्महर्षिने अपना सिर कटवाया, उद्दालकने अपना पुत्र नचिकेता मृत्युको देदिया और महाराजादशरथने प्राणोंका व प्राणोंजैसाप्रियपुत्रका त्यागकरदिया परन्तु सत्यको नहीं छोड़ा, भगवद् व्यासजीने अपनीजन्मकथा लिखते २ असत्यकथन व छल नहींकरा, श्री मनिवर भरद्वाजजीनें प्रयागराजपर अपने आश्रममें नानाविधमांसोंसे भरतजीका आतिथ्यकराथा परन्तु श्रुतिस्मृतिवाक्यनका उल्लंघन नहींकिया कष्टहै कि, उनमहर्षिओंकी सन्तान तुम सर्वधर्मोंके मूल सत्यधर्मका अनादर कर्के नानाछलोंसें असत्यअर्थ सिद्धकरना चाहतेहो ॥

प्रश्न-यहां क्या छल करागयाहै, ॥

उत्तर-देखो-अर्द्धश्लोकलिखाहै इसका उत्तरार्द्ध इसके सम्बन्धवाला घोड़दियाहै अध्यायांक श्लोकांकभी नहींलिखा अबमैं उत्तरार्द्धभी लिखताहुं देखो समग्रश्लोकका क्या अर्थहै ॥

महाभारत प्र० ३२८-एतैश्चान्यैश्च राजेन्द्र पुरामांसं नभक्षितम् ॥ शारदंकौमुदंमासं, ततस्ते स्वर्ग

माप्नुवन् ॥१३॥११५॥७६॥ अर्थ—इनमहाराजोंने होरनोंनेभी पहिले शरत्ऋतुका कार्तिकमास मांस नहींखाया ॥इसकहनेसें अर्थात् आगेपीछे सदा मांस खातेरहेहैं, यिहअर्थ स्पष्टहीहै तोतुमने कार्तिकमासरूपाविशेषणका बोधक अर्द्धश्लोकको छोडकर अर्द्ध श्लोकमात्र लिख दिया इस्सें अर्थका अनर्थकरदिखलाया, इस्सें होर अधिक क्या छलहोसक्ताहै,

शंका—जब उनोंने कार्तिकमास मांस नहींखाया तो अभक्ष्य जानकरही नहीं खायाहोगा ॥

समाधान—ऐसे नहीं होमित्र—जब एकादशी नवरात्रेआदिकोंके व्रतमें अन्न नहींखाते वा निराहार करेंतो दुग्धभी नहींपीते, तो तब अभक्ष्यजान कर अन्नका दुग्धका त्यागनहीं कराजाता, किन्तु एकदिनका वा नवरात्रका 'व्रतकरनेसें' नियमविशेषकरनेसें नियमके पालनालिये तब अन्नको वा दुग्ध आदिकोभी नहींखातेपीते नियमसमयसें अनन्तर वैसेही अवश्यं खातेपीतेहैं व्रतउपारणकरना आवश्यकहै, इसीप्रकार अम्बरीषप्रभृति महाराजोंनें कार्तिक मास व्रतकिया अर्थात् आगेपीछे वो सबमहाराजे मांसको खातेंहीरहेहैं ॥

शंका—यदि—सदाकेलिये मांसकेत्यागका व्रतकरें तो होर अधिक फलहोगा ॥

समाधान—सदाकेलिये मांसके त्यागकाव्रत निवृत्तिमार्गवाले वानप्रस्थ संन्यासआश्रमीओंका धर्महै प्रवृत्तिमार्गवाले गृहस्थाश्रमीओंका धर्मनहींहै अतः उनकेलिये अधिकफलका हेतु नहीं प्रत्युत हानिकारकहै तथाहि कहताहुं सुनिये—

१—वानप्रस्थके धर्मोंमें जैसे मांसका त्यागकहाहै वैसेही यदि गृहस्थ

के लियेभी कहो तो वेदसूत्रस्मृतिआदिकोंमें जो मांसभक्षणके विधायक हजारोंवाक्यहैं उनके अधिकारी कोन होसक्तेहैं अर्थात् गृहस्थहैं अतः सदा केलिये मांसके त्यागका व्रत गृहस्थजनोंका धर्म नहीं हो सक्ता ॥

२-प्रमाणांक२७ में, २८ में ,८१ आदिकोंमें, विहितमांसके नहींखानेकर अति दोषकहेहैं अतः-उक्तव्रत गृहस्थोंका धर्म नहीं प्रत्युत हानिकारक सिद्धहोसक्ताहै ॥

३--यदि उक्तव्रत गृहस्थजनोंका धर्महोता तो उक्त अम्बरीष आयुनाथ अनरण्य दिलीप भरतआदिमहाराजे और वेदवेताअगस्त्यादि मुनिजन तथा सीतारामलक्ष्मणादिक और स्वधर्मनिष्ठ युधिष्ठिर भीमअर्जुन नकुल सहदेवआदिक उसधर्मको क्यों न धारणकर्ते उनोंने सदाकेलिये मांसखानेके त्यागका व्रत धारण नहींकरा प्रत्युत विहितमांसको खाते खुलाते रहेहैं अतः वो गृहस्थजनोंका धर्मनहीं किंतु वानप्रस्थसंन्यासआश्रमीओंका धर्म सिद्धहोसक्ताहै ॥

४--यदि उक्तव्रत गृहस्थोंका धर्महोता तो प्रमाणांक १८३ और २४२ आदिवेदसूत्रग्रन्थोंमें उत्तमसंतानालिये मांसके खाने का, छीमहीनेके बच्चेको नानामांसोंके खुलानेका विधानही कैसेकरसक्ते ॥

और जो तुमने कहा कि--थोडा कृष्णजीकी लीलाकीओर ध्यानदो कि--महाराजनें बाल्यावस्थामें गौओंकी स्वयं सेवाकरके समस्तजगत्को गौओंकी सेवाकरनेकी शिक्षादी, सो यद्यपि जब मथुरापुरीमें क्षत्रियवंशमें कृष्णजीगए तबसें गौएं नहींचराई और नांही अपने पुत्रपौत्रोंसें गौएं चरवांई और नांही श्रीरामचन्द्रादिकोंने गौएं चराई तथापि जब कृष्णजी

नन्दगोपके गृहमें गोपालवेष धारेरहेहैं तबही गौएं चराईहैं इस्सें शिक्षादी कि—गौएं चारनी गोपोंका मुख्यकर्महै और घरघरमें गौएं रखनी तो सबमनुष्यनको योग्यहै, ऐसेही गोरक्षाहोसक्तीहै, और घृत दुग्धादिकभी सुलभहोसक्तेहैं॥

पूर्वपक्षी० – प्रमाणांक १७४ में जो कहाहै कि--अपनेबलसें मारेहुए जंगलीमृगोंके मांसको खाताहुआ जिससें दोषवाला नहींहोता वोहेतु यिहहै, इत्यादिलेखसें जानाजाताहै कि–शिकारकर मांसखाना क्षत्रियोंको योग्यहै, होरबकराऽऽदिकोंका नहीं ॥

आस्तिक०—यिह आपका कथन असत्यहीहै क्योंकि वहां तात्पर्य्य यिहहै कि–जंगलमृगोंके मारणेंमें देवताऽऽदिकोंके उद्देशकी अपेक्षा नहीं, क्योंकि महर्षिअगस्त्यजीनें तपोबलसें सर्वदेवतोंनिमित्त जंगलीमृग प्रोक्षित करदियेहुएहैं, और भेडदुम्बाबकरोंको देवताऽऽदिकोंके उद्देशकर बलिदान करें, जैसे कि–गोरक्षीआ व ठाकुर करतेहैं।

यदि दुम्बाभेडबकरोंके बलिदानका व उनके मांसभक्षणका क्षत्रियोंको अधिकार न हो तोफिर धर्मपुस्तकोंमें उसका विधान किसकेलिये कराहै देखो श्राद्धके प्रमाणप्रकरणमें जो मेढाबकराऽऽदिकोंका मांसबनाना लिखाहै वो प्रायः क्षत्रिय व वैश्यजनोंके लियेही कहाहै, और प्रमाणांक १६३ आदिमेंभी क्षत्रियराजाके भोजनलिये बडाबकरा पकाना लिखाहै, ।

बहुत क्या यद्यपि प्रमाणांक १०४ आदिकोंमें ब्राह्मणोंकाभी अधिकार कहाहै, अतः देवताऽऽदिके उद्देशकर चारोंवर्णोंका अधिकारहै, तथापि क्षत्रियोंका अधिकार मुख्यहै आवश्यकहै, देखो प्रमाणांक २०० आदिकोंमें हररोज बकराऽऽदि पशुके बलिदानका विधानहै परन्तु, क्षत्रियादिकोंके चित्तमें जो जैनी भाईओंने हौआ घुसेड़ दियाहै, वो झूठाही हौआ अधोऽधः गिरारहाहै ॥

अहिंसादिग्दर्शनमें जैनीविजयधर्मसूरिजीने बंगमगधआदिदेशोंके मनुष्योंको कातर कहाहै सो वहांकेभी नतो सबमनुष्य कातरहैं, नांही सबवीरहैं ॥

होर जो लिखाहै कि—छपरेजिलेके आदमी प्रायः सत्तुही खाकर गुजर करतेहैं, तो हेभ्रातः छपरेजिलेमें क्या गेहुं चावलादि अन्न और मांसघृतदुग्धादिकपदार्थ नहींहोते, यदिहोतेहैं तो वो कहां गेरेजातेहैं और वहांके क्षत्रियठाकुरलोक तो मांसको खातेहीहैं ॥

होरजो लिखाहै कि, एकपुरुषने कहाकि, कुछदिन पहिले मैंने एक बड़ेसुन्दरबकरेको पालाथा, वह मुझे अपना प्रेम पुत्रसेंभी अधिक दिखलाता था और मैंभी उसमें बहुतप्रेम करताथा अतएव वह प्रायः दानाचारा मेरे हाथसें दिये बिना नहीं खाताथा, और जब मैं कहींबाहर चलाजाताथा और आनेमें दोचार घण्टेकी देरहोजातीथी तो वह रास्तेको देख २ कर ब्यां२ किया करताथा, अगर कहीं एकदो दिन लग जाताथा तो चारापानी बिलकुल नहींखाताथा और मेरेआनेपर बड़ाआनन्द प्रकट करताथा, इत्यादिकलेखभी बनावटीहै क्योंकि-पशु प्रेमकरेंगे तो चटने लगपड़ेंगे पूछली हलानेलगेंगे, ऐसे तो होताहीहै परन्तु बकराऽऽदिक पशु दोदिन भूखेरहें और दूसरेके हाथसें चारापानी न खावें नाहींपीवें, ऐसे नहींहोसक्ता अतः इत्यादि बनावटीबातेहैं माननीय नहींहोसक्तीं—

और जो लिखाहै कि—अगर मछलीमांसको छोडकर्के दालभातकाही आहार रक्खाहोता तो आजदिन बंगालवगैरह देश बुद्धिबलमें बहुतही बढजाते, अतएव इंगलैण्ड जो आजकल बुद्धिबलमें तेजहै वहभी भातकाही प्रतापहै ॥

सो हेपाठको विचारो तो विजयधर्मसूरीजीका यिहलेखभी हासिकेही-योग्यहै, इंगलेण्ड बुद्धिबलमें तेजहै तो क्या इंगलेण्ड मांसको नहींखाता, दालभातहीकेवल खाताहै हेभ्रातः अब जैनीविजयधर्मसूरीजीसे पूछाचाहिये कि-मांसाहारसें बहुतपुश्तोंतें निवृत्तहुए दालभातखानेवाले तुमजैनीभाई यूरपइंगलेण्डकीन्यांई बुद्धिबल कलाकौशल्य राज्यप्रताप आदिकोंमें तेज क्यों न होगए ।

शोकहै कि—भक्ष्याभक्ष्यके निर्णयमें विजयधर्मसूरीजीने कैसीकैसी असत्ययुक्तिबनाकर लिखीहै, हेपाठको-वो यथार्थनिर्णयलिये नहीं किन्तु ऐसे २ असत्यलेख यथार्थनिर्णयसें गिरानेवाले अर्थात् धोखादेनेवालेहोतेहैं ॥

——

भीमज्ञानत्रिंशिकाग्रन्थमें जैनीआत्मारामजीने लिखाहै कि—ब्राह्मणोंके धर्मको वेदमार्गको तथा यज्ञमेंहोतीहिंसाको खराधक्का इसीधर्मनें लगायाहै, यहमहादयारूप प्रेमरूप धर्म तो जैनकाहीहुआ कुलहिंदुस्तानसें पशुयज्ञ निकलगयाहै फक्तछेक दक्षणमें जहां बौध या जैनोंकी छाया पड़ नहीं सकीहै वहांही कायमहै ॥

और श्रीमान् बालगंगाधरतिलकजीके भाषणसेंभी आत्मारामजीने लिखाहै तिलकजी का प्र० ३२९—पहिले ब्राह्मण और जैन-धर्मका बडाझगडा चलताथा अहिंसातत्त्वके निकालनेमें बडाविवाद हुआथा, ब्राह्मण कहते थे कि-वेदमें पशुयज्ञकरनेकी आज्ञाहै तो हम किसतरह छोडें, जैन उपदेशकोंने जुबाब दिया

कि--वेदमें हिंसाहोवे तो वहवेद और हिंसा सें तृप्तहोनेवाले देवता हमको मान्य नहींहैं मतलब कि--वेदमें पशुयज्ञ फरमाने वाला जो श्रौत प्रकरणहै उससेंही जैनोंको वेद प्रमाणभूत नहीं माननेका कारणमिलाहै, अंतमें ब्राह्मणोंने जैनोंका अहिंसाधर्म स्वीकार किया ॥

जैनधर्मका तत्त्वज्ञान यद्यपि आज प्रचारमें नहींहै तथापि जैनोंके अहिंसाऽऽदिआचारकी छाप आज ब्राह्मणधर्मपर पूर्णरूपसें बैठीहुई है--पंचद्रविडआदिब्राह्मणोंमें मांसभक्षण दूर-हुवाहै वो जैनोंकाही प्रतापहै, वैष्णवधर्ममें यज्ञकरनेसमय पिष्टपशु हवनकरनेका प्रकारहै वोभी जैनधर्मकी ब्राह्मण उपरहुई असरसें उत्पन्नहुवा, जीतेहुए पशुके बदले पिष्टपशुका रूपान्तरहै ॥

इत्यादि तिलकजीका भाषण और आत्मारामजीका लेख ठीकहै अर्थात् वेदसूत्रस्मृतिआदिकोंमें अजशशहरिणादिपशुओंके बलिदानका और विहितमांसके भक्षणका विधान तो हजारों वाक्यनसें कराहुआहै, सो जैनीउपदेशकोंनेंही बलात्कारसें उपदेशकर२ के बलिप्रदानका विहितमांसके

खानेका त्यागकरवादिया अर्थात् वैदिकमतवालोंको वैदिकमतसें गिरादिया यिह सत्यहै परन्तु ऐसे करने कर ' **आप डूबे परोहिता यजमानभी गाले**" इस कहावतको जैनीभाईओंने चरितार्थ करदिया और श्रुतिस्मृतिओंको परमप्रमाणरूप व उनके कर्ताओंको सर्वज्ञ सिद्धकरदिया वो कैसे तथाही कहताहूं सुनिये ॥—

जैसे अदृष्टफलके हेतु जो कर्महोतेहैं उनका उसीसमय फल नहींहोसक्ता किंतु किसीका जन्मान्तरमें किसीका बहुतजन्मपीछे फलहुआकरताहै, ऐसे ही जैनीभाईओंके प्रयत्नसें श्रौतस्मार्तकर्मोंके त्यागका फलभी उससमयमें तो होहीनहीं सक्ताथा फिर उससमयके व्यतीतहुए उसका फल कैसाहुआ हेभ्रातः-प्रत्यक्षदेखलीजिये कि हिंदुस्तान पठनोंका शिकारगाह उसमें हिन्दु तथा जैनीभाईजी शिकारबनगए गज़नीसें कितनीदूर दक्षिणमें सोमनाथकी मूर्त्तिको तोडकर, बहुतही जवाहरात लेकर वहांकेही हिन्दुओंको जबरदस्ती वगारी पकड़कर अफ़गाहनस्तानको लेगए, उनोंसें बोझउठाना, घास खुदवाना वगैरह नीचकाम लियेगए, उनको खानेलिये चने दियेजातेथे हरसाल काबुल गजनी वगैरहसें आयकर पठानलोक पंजाब सिन्धु देहली मथुराआदिसें धनवगैरहलूटकर और नवीनयुवा लटकीआं लटकोंको पकडलेजातेरहे इसीसें कहावतेंबनीकि **खायापीया लाहका रैंदा-ऐमदशाहका,,**

बहुत क्या हजारों नहीं किंतु लाखों लटकीआं लटकेवगैरह जबरदस्ती पकडकर लैगए, वह गोलीएं गोले बनाएगए ॥

हेपाठको-विचारो कि--जब किसीकुलीनपुरुषकी स्त्री वा कन्याकीतर्फ कोईपुरुष कुदृष्टिसें देखे तब उसको ऐसादुःखहोताहै कि—इसको अबी मारडालूं और जब किसीएकभ्राताकी कन्या दूसरेभ्राताके घरमें एकदोदिन

रहजावे और उसको यिह खबर नहोकि-"मेरी कन्या कहांहै,, तो इतनेसें उनको मरणदुःखकीन्यांई गोतेआनेलगपड़तेहैं इस्सें भी अत्यन्तअधिक जब सास ससुर मातापिताऽऽदिकोंके देखतेदेखते कन्यांको युवास्त्रीओंको छै छै फिटलम्बे हृष्टपुष्टजवानपुरुष जबरदस्ती होथोंसें पकड़ लेगए तब उनकीं और उनके मातापिताऽऽदिकोंकी कैसीअत्यन्तदुर्दशाहुईहोंगी ॥

शंका-इत्यादि दुर्दशां तो बेइतफ़ाकीसें दुर्बलतासें हुईहैं, समाधान— ठीकहै परन्तु वो बेइतफ़ाकी व दुर्बलताभी क्यों हुई क्यों होरहीहै, अर्थात् आर्षमतके छुटजानेसें मन्दबुद्धि होनेकर हुई, जहां २ मन्दबुद्धि होतीहैं वहां २ ही अपने घरमें बेतइफ़ाकी दुर्बलता उस्सें दुर्दशा होतीहैं ॥

जैनीभाईओंकी बडी बुद्धिमत्तासें श्रौतस्मार्त धर्मोंके छुटवानेकर इत्यादिक महाअनर्थरूपफल प्राप्तहुए और जैनी तो क्या हिन्दुभी मरी हुईकोम कहीजानेलगी वो हैभीठीक ॥

इत्यादिक महाअनर्थरूपफलमिलनेकर सिद्धहुआ कि-श्रुति स्मृतिओंके प्रवर्त्तकपुरुष महादीर्घदृष्टि सर्वज्ञहुएहैं, उनके रचित वेदसूत्रस्मृतिग्रन्थ परमप्रमाणहैं ॥

फिर बहुतकालपीछे गवरमिएटअंगरेजके प्रतापसें हिन्दुओंकी दुर्दशां दूर तो हुई परंतु पेशावर बन्नू कुहाट आदिकोंतर्फ-बनीहीरहीं तथापि हिन्दुओंको गवरमिएटका सदाकृतज्ञहोनायोग्यहै, क्योंकि हिन्दुओंका माल जान व इज़्जत गवरमिएटकेही प्रतापसेंहै ॥

फिर अबी पांचवर्षहीहुएहैंजोजिलाझंगके अनेकग्रामोंमें केवलहिंदुओंको मुसलमानभाईओंनेलूटा फिर उनके घरोंको आगलगादी पुनः पितासुर-

आदिपुरुषोंको और बेटी बहुआदिस्त्रीओंको नग्नकरदिया फिर औरभी बहुत सखतीएंकीं ॥

——

पूर्वपक्षी०–हिंसासें पुण्यउदय कबीनहींहोसक्ता और हिंसाके त्यागसें पाप कबीनहींहोक्ता व नांही किसीअनर्थकी प्राप्तिहोसक्तीहै ॥

आस्तिक०–सर्वत्र यिह नियमनहींहै तथाहीसुनिये डाकूओंकी चोरोंकी 'हिंसासे' पीडादेनेसें हाकिमोंके पुण्यउदयहोसक्ताहै उनकी हिंसाके त्यागसें पाप उदयहोताहीहै रणमें हिंसाकरनेसें पाप नहींहोसक्ता किन्तु पुण्यहोताहै और औषधालय शफ़ाखाने जारीकरनेसें व्रणकृमि रुधिरकृमि मलकृमि कूपकृमि दद्रु मिरगीआदिरोंगोंकेकृमि, इत्यादिजीवोंकी औषधोंकर हिंसा करनेसें पुण्यउदयहोसक्ताहै इसीहेतुसें राजेमहाराजे पातशाह तथा होर योग्य धनी पुरुषभी धर्मार्थ ओषधालय शफ़ाखाने लाखोंरुपै खरचकर्के खोलतेहैं ॥

औषधोंके न सेवन करने, न सेवनकरनदेनेसें अर्थात् उन कृमिओंकी हिंसाके त्यागसें पाप उदयहोसक्ताहै और मनुष्यादिकोंकी क्षतिरूपअनर्थकी प्राप्तिभी स्पष्टहीहै–

इसीसें पूज्ययतिआदि जैनीभाईभी औषधोंका सेवन करते करातेहीहैं ॥

पूर्वपक्षी०––अन्यउपायोंके अभावसें ऐसेकृमिओंकी हिंसा तो गृहस्थजनोंको करनी पडतीहीहै क्योंकि–उससें विना गौ भैंस मनुष्यादिश्रेष्ठजीवोंकी हिंसाहोतीहैं परंतु भेडबकराऽऽदि पशुओंके बलिदानकी कुछआवश्यकता नहीं क्योंकि मांससेंविना अन्नादिकोंसेभी निर्वाह होसक्ताहै और दुग्ध घृतसें बलभी बहुतहोसक्ताहै ॥

आस्तिक०— गवरमिण्टके प्रतापसें निर्वाह तो होहीरहाहै अतः परमेश्वर गवरमिण्टको खुश रखे परंतु जिसजीवनमें अपनी और अपनी-

औरत लटके लटकीओंकी रक्षा न करसकें ऐसा निर्वाहमात्रकर जीवना तो पापोंकाही फलहै अर्थात् मरणसेंभी अधिकहै, ऐसेजीवनको धिक्कारहै दुग्धघृतसें बल तो होताहीहै परंतु मांससें बलभी और पौष्टिकताऽऽदि विशेषगुणभी अधिकहोतेहैं वो पाहिले प्रबलप्रमाणोंसें दिखाचुकाहूं ॥

विचारोकि--आठवर्षहुएहैं कि--कलकत्ताशहर मारवडीबाजारमें मारवाडीओंको पठानोंनेलूटा हेपाठको-वो पठान कौनथे कि-मेवादाना वेचनेवाले ममूलीआदमी, और वो मारवाडी कौनथे कि-दश २ वीस २ पचास २ लाखके धनीसेठ, जिनके पास पांच २ दश २ वीस २ नौरकभी रहतेहीहैं, बहुतलोक जानतेहीहैं मारवाडी बनीएं घृतदुग्धके ज्यादाखानेपीने-वालेहोतेहैं ऐसेरहीशोंके लाखाओंकी लूट परदेसीममूलीपठानोंनेकी, तब ठीक सुनागया कि, सेठसाहिबोंने कोई कहीं, कोई कहीं जाकर वक्तको टाला, पीछे पठानोंने जोकुछ अयोग्यसखतीएं करीं वो मैं नहींलिखसक्ता ॥

और यदि तुम कहो कि—सूर हरिणआदिक तो यद्यपि खेतका नुकसान करतेहैं तथापि निरपराध भेडबकराऽऽदिकोंकी हिंसा क्यों कीजावे तो हेभ्रातः—जलपीनसें जो जलके हजारोंसूक्ष्मजीव तुम्हारे जठराग्निमें स्वाहा होतेहैं वोभी तो निरपराधहीहैं, और कूपकृमि व्रणकृमि रोगकृमि-आदिभी तो कुछअपराध नहींकर्ते किंतु गुजरकरतेहैं तो उनहजारोंका औषधकर क्यों नाशकराजाताहै ॥

वास्तवसे देखो प्रमाणांक ६० आदिकोंको, व ३८ व १०२, व २०० व २०९ आदिकोंको जब विधाताने अजप्रभृतिपशु बलिदानालिये फिर खानेलिये रचेहैं, इसीसें सब देशोंमें यिहभेडबकराऽऽदि इसीकाममें लगाए जातेहैं, फिर उसमें धर्मग्रन्थोंके विधानभी बहुतहीहैं और इनके बलिदानसें फलभी श्रेष्ठही लिखाहै तो इस्सें संकोच करना दुराग्रहही नहीं किंतु

विधिओंके उल्लंघनसें अतिदोषभी कहेहैं अतः जैसे मूली बैंगन आदिस्थावरजीव खानेकेलिये पैदाकरेजातेहैं, वो तियारहोनेपर निरपराधभी काट पकाकर खाएजातेहैं उनके खेतकी सदारक्षा कोईभी नहींकरसक्ता।

ऐसेही ईसाई मुसलमान हिन्दु वगैरह सबभाई मिलकर एकमतिकरें कि--भेडबकरादुम्बा कोई न माराजावे तो उनकी इतनी पादैशहै कि--वो संभालेही नहींजासक्के ॥

जैसे मछीवगैरहको छोडकर एकलाहौरशहरमें ५७५ भेडबकरा व दुम्बा हररोज मारणेका औसतहै, और लाहौरजिलाके देहातमें अर्थात् तासील ठाना छोटेबड़े ग्रामवगैरहमेंभी ३०० ही रोजाना जानलीजिये, एवं ८७५ भेडबकरादुम्बा एकलाहौरजिलाभरमें हररोज मारीतेहैं, ऐसे एकमहीनेमें २६२५०, एकवर्षमें तीनलाख पंदराहजार भेडबकरा एकलाहौरजिलाभरमें बलिदान कियेजातेहैं ॥

हेपाठको—उक्तसबभाईओंकी एकमतिसें यदि वो कोईभी एकवर्षतक नहींमाराजावे तो विचारो कि-उन ३१५००० केलिये कमसेंकम ६३० बड़ेकोठे, और छैहजार तीनसौ चरवाले होनेही चाहिये, फिर उनके चरणेकेवास्ते ५० मीललम्बा अर ३१ मीलचौड़ा जंगलभी अवश्यंचाहिये, इसमें सोचिये कि—इतनाइन्तज़ाम करना एकजिलेमें तो कहां तीनजिलओंमेंभी मुश्कलहै, ॥

हेभाईओ-इतना इन्तज़ामभी एकवर्षकी रोकावटसें जरूरीचाहिये, फिर दूसरे तीसरे चौथेवर्षकी रोकावटसें तो कहांका कहां इन्तजामका हिसाब पहुंचेगा, अर्थात् तीन चारवर्षतक रोकावटसें तो दस व बाहरां लाख भेड-

बकरा एकलाहौरजिलामें होजातेहैं, इतनोंका पालन पोषण दसजिलोंमेंभी नहींहोसक्ता ॥

यदि आप कहें कि--उनमें मरेंगेभी तो बहुतही तो हेमित्र उनमें बचेभी तो लाखोंही हरसाल पैदाहोंगे ॥

शंका--संभवहै कि--भेडोंकी मरीमें बकराभेड बहुतही मरजाएंगे समाधान-ठीकहै परंतु उनसें लाभ क्या होगा, अर्थात् विधिवाक्यनकाभी पालन न हुआ, दृष्टान्तोंमें दिखलाए शिष्टाचारोंकाभी आदर न हुआ, उनभेडबकरोंकोभी केईघण्टे दुःख देखनाही पड़ा, और मांसके गुणोंका भी लाभ न मिला—

यदि आप कहें कि—लाहौरमें मनुष्यनकी आबादी बहुतहै अतः छोटेजिलओंमें इतने नहींमारेजाते, तो बडे २ जिलओंको छोडकर, छोटे २ जिलओंमेंभी तासील ठाने छोटेबडे ग्राम मिलाकर किसीजिलाभरमें १००० किसीमें ८००,किसीमें ५००, किसीमें ४००, अर्थात् किसीमें कम किसीमें ज्यादा, आप हरएक जिलामें औस्त ५०० भेडबकरा दुम्बा हररोज बलि दान किया जाता जानिये, इसाहिसाबसें ॥

हरएकजिलामें एक महीनेमें १५०००, एकवर्षमें एकलाख अस्सीहजार बलिदान होतेहैं, यदि वो एकवर्षतक कोई भी नहींमाराजावे तो उन १८०००० केलिये ३६० बड़ेकोठे, तीनहजार छै सौ चरवाले, और उनके चरणेकेवास्ते ४५ मीललम्बा अर २० मील चौड़ा जंगलभी एक २ जिलामें जरूरी चाहियेगा ॥

इसमें विचारो कि—इतना इन्तजाम एक २ जिलामें कैसे होसक्ताहै, यदि कठिनतासें एकसाल कियाभी जावे, तो फिर दूसरे तासरे चौथेवर्षकी

रोकावटसें तो सात आठ लाख भेडबकरादुम्बा जमाहोजातेहैं, सो इतने भेडबकरोंका पालन पोषण होही नहींसक्ता, अतः इनकी इतनीबहुत पादैशहोनेकर जानाजाताहै कि-यिह भेडबकरादुम्बा परमेश्वरनें बलिदान-लियेहीरचेहैं। यिह प्रमाणांक ६० आदिकोंमेंभी स्पष्टकहाहीहै ॥

———

हेपाठको—सम्यक्विचारदेखें तो अजआदिकोंके बलिदानके और विहितमांसभक्षणके त्यागकरने व करानेसें जैनीभाईओंकेभी कोईफलदेखनेमें नहींआता क्योंकि-जैनीभाईओंसें बुद्धिमें बलमें रूपमें कलाकुशलातामें धनमें वीरतामें तेजमें आराममें पादैशमें राज्यादिकोंमें मांसाहारी यूरपीन और राजेमहाराजेआदि अधिकहीहैं ॥

यदि कहोकि—जैनीओंपासभी धनबहुत होताहीहै, तो यिहकथनभी तुच्छहीहै क्योंकि-दस बीस पचासलाख रुपैआ किसी २ पासहुआ तो वो मांसाहारी राजेमहाराजोंके बराबर तो नहींहोसक्ते अर्थात् इतनाधन तो उनकीदृष्टिसें तुच्छहीहै ॥

हेभ्रातः—यदि जैनीभाईओंके धर्माभिमानको देखा जाए तो मांसाहारीओंसें हजारों दरजाअधिक बुद्धि बल रूप कलाकौशल्य वीरता तेज राज्यप्रतापआदि जैनीओंके होनेचाहिये क्योंकि यिह सब धर्मरूपवृक्षकेहीफलहैं परन्तु ऐसे देखनेमें नहींआता प्रत्युत आदिसें मांसाहारी राजे महाराजेपातशाहआदिकोंसें—

जैनीभाईओंकी हजारोंदरजान्यून सम्पदा अर्थात् अतितुच्छसम्पदाहै इस्सें जानाजाताहै कि—अधिकारभेदसें यथायोग्य धर्मोपदेश न करनेकर जैनीभाईओंका धर्म धर्माभासहीहै ॥

——

यदि जैनीभाईजी कहें कि—हम तो इनपदार्थोंकी कामना नहींकर्ते किंतु वैराग्यसें इनसबपदार्थोंका त्यागकर मुक्तिकोंही चाहतेहैं, तो सबकेलिये यिह कथनभी अयुक्तहीहै क्योंकि त्याग तो साधुजनोंका भूषणहै, गृहस्थजनोंकेलिये वो कहनाही अयुक्तहै क्योंकि गृहस्थजन तो कार व्यापार धनसंचय विवाहआदि सबकार्य्य कर्तेहीहैं ॥

मुक्तिभी कोईप्रत्यक्षपदार्थ नहींहै इसीसें सबमतोंवाले अपने २ मतमें मुक्तिका भिन्न२ रूप वर्णन कर्तेहैं, जैनमतमें शिलारोहन मुक्तिहै, वो होरसबमतोंमें ऐसीकोईशिला हैहीनहीं ॥

यदि आप कहें कि—उत्तमसंतानकेलिये विहितमांसखानेका विधान महर्षिओंनें कराहै वो मोक्षकांक्षीओंकेलिये नहीं, तो हेमित्र ऐसेविधानकाभी यिहतात्पर्य्य स्पष्ट सिद्धहीहै कि-मोक्षलिये आत्मज्ञानके साधन श्रवणमनन निदिध्यासनआदि दालभातदुग्धादि भोजनकरभी सिद्धहोसक्तेहैं परंतु उत्तमसंतानकेहोनेलिये विहितमांसका खाना आवश्यकहै, वो

अजशशहरिणादिकोंका बलिदान व विहितमांसका खाना मुक्तिमें प्रतिबंधक नहींहै क्योंकि—प्रमाणांक ४८ आदिकोंमें विहितहिंसा अहिंसारूप मानीहै, औरउक्तप्रमाणोंमें मांसको घृततेलशाककीन्याई शुद्ध पवित्र कहाहै, विहितमांसखानेसें निर्दोषता कहीहै, विहितमांसके नहींखानेसें अतिदोष कहेहैं, हेमित्र यदि वो प्रतिबंधक होता तो ऐसेलेख न लिखसक्ते,

यदि विहितमांसका खाना मोक्षमें प्रतिबंधकहोता तो श्रेष्ठपुत्रके होनेलिये प्रमाणांक १८३ वेदान्तउपनिषद्में बकरा मृगादिके मांसखाने का विधान न कर्ते, और देखो प्रमाणांक ३०७ व २९९ आदिउक्तप्रमाणोंको जीवन्मुक्तपुरुष वेदवेत्ताब्राह्मण महर्षि तथा सीतारामलक्ष्मणआदिअवतार

और इक्ष्वाकु युधिष्ठिरप्रभृति धर्मात्मामहाराजे विहितमांसके खानेमें प्रवृत्त नहोसक्के, यिहसब परमपूज्य श्रेष्ठपुरुष विहितमांसको खाते खुलाते रहेहैं अतः विहितपशुहिंसा व विहितमांसका खाना मोक्षमें प्रतिबन्धक नहींहै ॥

शंका--मांसखानेकर क्रूरता होतीहै ॥

समाधान--जगत्में कोमल वा क्रूरआदि सबप्रकारके मनुष्यहोतेहैं परंतु उनमें पादतल कंटककीन्याई कोमलमनुष्योंको अधर्मशील क्रूरपुरुष पीडित करतेहींहैं ऐसेक्रूरजनोंको क्रूरपुरुषही दमन करसक्तेहैं ।

इस्सें अधर्मशील क्रूरजनोंके दमनलिये न्यायधर्मनिष्ठ क्रूरपुरुषभी अवश्यंअपेक्षितहैं ॥

—०—

पूर्वपक्षी०—मांसभक्षणके निषेधकभी स्मृतिआदिपुस्तकोंमें बहुतही वाक्यहैं वो अप्रमाण तो नहींहैं ।

आस्तिक०—ठीकहै योगारूढहोनेसें महर्षिओंका कोईभीवाक्य अप्रमाण नहींहै, परन्तु हेपाठको उन्मत्तप्रलापवत् मूर्खपुरुषोंके वाक्य परस्परविरोधीहोतेहैं, योग्यविद्वानोंके नहीं तो योगारूढमहर्षिओंके वाक्य कैसे विरोधीहोसक्तेहैं इस्सें अविवेकीजनोंको विरोधी भास्तेहुएभी भिन्न २ विषयकहोनेसें वोदोनोंप्रकारके वाक्य परस्परविरोधी नहींहैं ।

जैसे प्रमाणांक ४५ केव्याख्यानमें श्रीशंकराचार्य्योंके वाक्यनसें दिखाचुकाहुं कि—अहिंसाके और हिंसाके विधायक वाक्यनका भिन्न २ विषयहोनेसें परस्पर विरोध नहींहै ऐसेही इनवाक्यनमेंभी जानलीजिये कि-मांसभक्षणके विधायक और निषेधक वाक्यनका भिन्न २ विषयहोनेसें वोवाक्य परस्पर विरोधी नहींहैं ।

अर्थयिह--विधायकवाक्यनका विधिविहितमांसका भक्षण विषयहै, और निषेधकवाक्यनका अविहितमांसका त्याग विषयहै ॥

इसीसें देखो प्रमाणांक ९१, व १२४, व १०३, व १९५, २१२ आदिकोंमें मांसखानेका विधानकर्के फिर प्रमाणांक २२०, व व ८२, व १२३, व ३८, व २३४, व २३८, व २१४, आदिकोमे महर्षिओंने व्यवस्था दिखलादीहै कि-विधिविना मांसको खाएंनहीं किंतु विधिविहित मांसको खाएं, स्मृतिकार महर्षिओंकी दिखलाई इस व्यवस्थासें विरुद्ध किसी भाष्यकार टीकाकारका लेख माननीय नहींहोसक्ता, और प्रमाणांक ३१, व ३७, व ३९, व ४०, व ४१, आदिकोंमें उसका प्रकारभी महर्षिओंने दिखलाय दियाहै कि-देवताऽऽदिकोंको अर्पणकर्के अर्थात्

अग्नये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा इन्द्राय स्वाहा,

ऐसे होमआदिकोंसें देवार्पणआदिकर्के मांसखानेकर कुछपाप नहींहोता, और प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके नहींखानेसें अतिदोष कहनेकर आस्तिकगृहस्थजनोंकेलिये विहितमांसकेखानेकी आवश्यकता सूचनकीहै क्योंकि- बल बुद्धि पुष्टिआदिकोंसें विना गृहस्थजनोंका जो जीवनहै वो अतिनिकृष्टजीवनहै अतः गोरसवेचें हरिमिलें एकपंथदोकाज इसदृष्टान्तसें श्रुतिस्मृतिओंके ,विधिका, हुकमका पालन, पहिलेशिष्टपुरुषोंके आचारकी अनुसारिता, और बलबुद्धिपुष्टिआदिकोंकी अधिकता, इत्यादिकार्योंके लिये गृहस्थजनोंने अजआदिकोंका बलिदान व विहितमांसका भक्षण अवश्यं-कराचाहिये ॥

हेमित्र—तुम्हारीयुक्तिओंका उत्तर तो दियागया अब मैंभी कुछक कहताहुं सुनिये ॥

१-हेभ्रातः—तुमने महाभारतमें मांसकेनिषेधक भीष्मपितामहके बहुतश्लोक दिखलाएहैं उनहीमें भीष्मजीने अपने तात्पर्य्यका दर्शक श्लोक

कहाहै वो प्रमाणांक ३८में मैंलिखचुकाहुं उसको फिर देखलीजिये उसश्लोकमें भीष्मजीने स्पष्ट कहाहै कि—वेदविधिसें मांसखानेकर दोष नहींहोता, यज्ञलिये अर्थात् बलिदानलियेही बकरेभेडआदि रचेगएहैं, ऐसे भीष्मजीके कथनसेंही भीष्मजीके मांसनिषेधक सबश्लोकोंका तात्पर्य निःसंशय सिद्धहुआ कि—वोसबश्लोक भीष्मजीने अविहितमांसके निषेधक कहेहैं, ।

इसी तात्पर्य सें भीष्म जीके उपदेश सुननेसे पीछेभी युधिष्ठिरजीने अश्वमेधयज्ञ कियाथा जिसमें श्रीकृष्ण तथा व्यासजीभी विद्यमानथे वहां ३०१ पशुओं का बलिदान करा गया इससे भी जानाजाताहै कि—पहिले भीष्मजीके सबश्लोकोंमें अविहितमांसका निषेध कराहै, नहीं तो फिर धर्मात्मायुधिष्ठिरजी ऐसायज्ञ कैसे करसक्तेथे ॥

२—पहिले जब रायबलारके मिलनेको गुरुनानकदेवजी गएथे तब रायबलारने भोजनका निमंत्रण कहा और पूछा कि— आपकेलिये बकरा बनवायाजावे तबभी गुरुमहाराजनें निषेध नहींकरा किंतु स्वीकार किया, फिर एकसमय श्रीगुरुनानकदेवजी कुरुक्षेत्रमें विराजमानथे वहांपटनाके राजकुमारने एकहरिणमृगको मारकर गुरुमहाराजकी भेटकरा तब गुरु महाराजने उसराजकुमार पर निराजगी नहींकी और नांही उसमृगमांसको वापसफेरा किंतु उसको स्वीकारकर्के बनवाया, यिह कथा जन्मसाक्षीमें प्रसिद्धहीहै इस्से जानाजाताहै कि उसकालमें मांसका आमरिवाजथा क्योंकि यदि ऐसा न होता तो सो राजकुमारजी ऐसे न करसक्ते ॥

और यिहभी जानाजाताहै कि-गृहस्थजनोंकेलिये अज हरिणादिकों का मांस श्रुतिस्मृतिओंसे विहितहै भक्ष्यहै क्योंकि-श्रीगुरुनानकदेवजीने राजकुमारको मांसखानेके निषेधका उपदेश नहींकरा प्रत्युत पंडेओंके विवादसे श्रीनानकदेवजीने पंडेओंको मांसविषयका विस्तारसे उपदेशकरा

है वो उपदेश प्रमाणांक १३१ में दिखाचुकाहूं उसउपदेशके अंतमें कहाहै कि—[एतेरस छोड होवे संन्यासी] अर्थात् इन रसों को छोडे तो संन्यासी होवे इसउपदेशकर सूचन किया कि-यिह मांसआदिकोंके रस गृहस्थ जनोंने अवश्यं सेवनकरेचाहिये ॥

३-मनुस्मृतिके ११ वें अध्यायमें दोप्रकार के पापकहेहैं एकमहापातक दूसरे उपपातक उनका पाठ बहुत होनेसें यहां नहीं लिखा, उनदोनोंप्रकारके पापोंमें मांसभक्षणका नामभी नहींहै अर्थात् न महापापोंमें मांसखाना लिखाहै, नांहीं उपपापोंमें मांसखाना कहाहै ॥

इससें जानाजाताहै कि -यदि विहितमांसखानेसें पाप होता तो उसको उनमें लिखते उनमें न लिखनेसें जानाजातहै कि विहित मांसखानेसें कुछभी पाप नहीं होतां ॥

४ यदिगृहस्थ जनोंलिये विहितमांसखानेकी अवश्यंअपेक्षा न होती और उसमें श्रुतिस्मृतिओंके विधानभी न होते तो-प्रमाणांक १आदिकोंमें मांसको घृततैलकी न्याईं शुद्ध पवित्र न कहसक्ते, और विना मांगे कोई देवे तो उसके वापसहटानेका निषेधभी नकरसक्ते और नाहीं विहितमांसखानेमेंनिर्दोषता कहसक्ते परन्तु मांसको घृत तैलजैसा शुद्ध पवित्र कहाहै ॥

वापसहटानेका निषेधकराहै विहितमांसखानेमें निर्दोषताभी कहीहै अतः उसमें श्रुतिस्मृतिओंके 'विधानभी' हुकमभी बहुतहीहैं इस्सें गृहस्थजनोंके लिये विहितमांसखानेकी अवश्यंअपेक्षा सिद्धहोतीहै ॥

५—बृहदारण्यक वेदान्तउपनिषद्में अत्युत्तमपुत्रकी कामनासें गर्भाधानलिये स्त्रीपुरुषदोनोंको मांससहितभातखाने का विधान कराहै, उस उपनिषद्मन्त्रके व्याख्यानमें श्रीशंकराचार्य्योंने तथा मिताक्षराटीकामें और स्वामीदयानन्दजीने तथा पं० राजारामजीनेभी मांसभातखाना अर्थलिखाहै

अन्नप्राशनसंस्कारमेंभी छैःमहीनेकेबच्चेको ब्रह्मतेजआदिकोंलिये पहिले ही नानाविधमांससें अन्नखुलानेकाविधान गृह्यसूत्रोंमें कराहुआहै ॥

स्वामीदयानन्दजीभी गृह्यसूत्रोंके अर्थमें छैः महीनेकेबच्चेको मांस खुलाना लिखचुकेहैं ॥

अतः श्रेष्ठपुत्रहोनेलियेभी विधिविहितमांस खानाखुलाना गृहस्थजनों को आवश्यकहै ॥

६ प्रमाणांक १७९ आदिकोंमें पशुबलिदान व मांस भक्षणविषयके संहिताभागोंके ब्राह्मणभागोंके उनके भाष्यनके बहुतही प्रबल प्रमाण दिखा चुकाहुं ॥

प्रमाणांक १९५ ऐतरेयब्राह्मणमें भाष्यमें अवश्यं मांसखानेमें प्रेरणा कीहै, और प्रमाणांक ८१ आदिकोंमें विहितमांसके नहींखानेकर अर्थात् विधि वाक्यनके उल्लंघन करनेकर अतिदोषकहेहैं अतः विधिवाक्यनके उल्लंघनजन्यदोषोंके भयसेंभी गृहस्थआस्तिकपुरुषोंनें पशुबलिदान व विहित मांसभक्षण अवश्यं कराचाहिये ॥

७— उक्तप्रमाणोंके अनुसारी वेदवेताब्राह्मणोंके महर्षियोंके पहिलेराजे महाराजओंके सीतारामलक्ष्मण आदिअवतारोंके आचरणरूप दृष्टान्तभी असंख्यदिखलायचुकाहुं, अब निर्णय करलीजिये कि—जिनके प्रमाणोंको तथा जिनके दृष्टान्तों को दिखलायागयाहै उनकेबराबर बुद्धि व विद्या तुम्हारी नहींहोसक्ती क्योंकि वह योगारूढ प्रसिद्धहीहैं योगारूढपुरुषोंका ज्ञान संशय विपर्ययदोषोंसेरहित अतीन्द्रियपदार्थोंकोभी विषयकरनेवाला महोदधिवत् महागंभीरहोताहै ॥

अतः उनसत्पुरुषोंकेविधिवाक्यनको और उनके योगजज्ञानके महत्त्व को विचारकरभी गृहस्थजनोंने अजशशहरिणप्रभृति पशुओंका बलिदान और विधिविहितमांसका भक्षण अवश्यंकराचाहिये ॥

सर्वस्वं शतवारमप्यपहृतं धूर्त्तैर्बलिष्ठैर्बलात्
निःसंख्यानवयौवनाःपरिहृताः जाताभृशंदुर्दशाः
नोखादामिपलंतथापिसुरसम् बुद्धिप्रदम्पौष्टिकं,
वेदेभ्योपिसखेस्मृतिप्रभृतितो भ्रष्टस्यकान्यागतिः

टीका-पूर्वपक्षी यद्यपि अतिबलवाले धूर्त्तजनोंनें बलात्कारसें बहुतवार सकल धन लूटलिया, तथा बलात्कारसें असंख्य नवयौवनलटकिआं लटके पकड लेगये उससें अतिदुर्दशाहोई तथापि अतिपुष्टिकारक बुद्धिदेनेवाले सुष्टु रसीले मांसको मैं नहीं खाता ॥

उत्तर सिद्धान्ती—हेमित्र वेदोंसें और स्मृतिआदिकोंसें भ्रष्टहुए पुरुषन की होर क्या दशा होतीहै अर्थात् विधिवाक्यनके उल्लंघनकरनेकर ऐसींही दुर्दशा होतीहैं ॥

—*०*—

अन्तर्यामीके अनुग्रहसें तृतीयप्रकाशकी सम्पूर्णताको बोधन कर्तेहुए परमेश्वरके स्मरणरूप मंगलाचरणको अब करेहैं ॥

आरब्धोयन्नियुक्तेन मयाऽसौतदनुग्रहात् ।
प्रकाशोऽस्यतृतीयोपि पूर्णतामगमाच्छिवम् ॥

टीका--जिस अन्तर्यामी परमेश्वरकर प्रेरेहुए मैंने यिह भक्ष्यानिर्णय

भास्कर ग्रन्थ आरम्भकराथा उस परमात्माके अनुग्रहसें इसग्रन्थका तृतीय युक्तिप्रकाशभी पूर्णताको प्राप्तहुआ ॥

* इतिशिवम् *

चौपाई--शुरूकियो पुस्तक मैं जिससें, प्रेरितहो उसकीहिकृपासें ॥
तीजोयाकायुक्तिप्रकाशा, पूर्णहुआशिवपरमविकाशा ॥

इतिश्रीहरिद्वारे पातञ्जलाश्रमनिवासिना
स्वामितेजोनाथेनोदितीकृते
भक्त्यानिर्णयभास्करे
तृतीयोयुक्ति-
प्रकाशः॥३॥

युक्तियुक्तमुपादेयं वचनं बालकादपि ॥
अन्य त्तृणमिवत्याज्य मप्युक्तंपद्मजन्मना ॥

वासिष्टे

सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था ।
विततोदेवयानः ॥

कठोपनिषद् ॥

समूलोवाएष परिशुष्यति योऽनृतमभिवदति ॥

प्रश्नोपनिषद्

समूलएवशुष्येत्स । लोकद्वयफलंविना ॥
अनृतंयोवदेत्कापि पुरुषः परिमोहितः ॥

आत्मपुराणे

अश्वमेधसहस्रंच सत्यंचतुलयाधृतम् ॥
अश्वमेधसहस्राद्धि सत्यमेवावाशिष्यते ॥

महाभारते ॥